फ्रांस-जर्मनी-युद्ध

सन् १८७०-७१ ई०

अर्थात्

आधुनिक रण-रत्न-माला

की

चौथी लड़ी

जीतनसिंह कृत

सन् १९१५ ई०

यूनियन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित

❀ समर्पण ❀

सिद्धि श्री १०८ सन्महाराजा-
धिराज श्री ५ रीवां-नरेश
के प्रति

प्रभो !

"त्वदीयं वस्तु 'राजेन्द्र'
तुभ्यमेव समर्पितं ।
गृहाण सुमुखो भूत्वा
प्रसीद 'पुरुषर्षभ' ॥"

अनुवादक

आधुनिक रण-रत्न-माला

की

भूमिका (१)

आदि कवि श्री मद्वाल्मीक-रचित रामायण, महर्षि श्रीमद्वेद-व्यास-रचित महाभारत और अष्टादश पुराणों तथा अपर अनेक प्राचीन महा-कवियों के बनाये ऐसे अनेक संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें प्राचीन काल के बड़े २ भयानक युद्धों और संग्रामों के विस्तार-पूर्वक वर्णन हैं। इन ग्रंथों में अद्भुत २ शूर-वीरों, और अद्वितीय २ योद्धावों के ऐसे २ अनूठे और अपूर्व-चरित्रों के वर्णन हैं, जिनके पढ़ते ही सारे शरीर में वीर-रस का भाव भर आता है, और सब अङ्ग स्फुरित और रोमांचान्वित होने लगते हैं। स्वयं हिन्दी में भी पृथ्वीराज-रायसो, हम्मीर-हठ, और आल्हा-खंड सरीखे दश-पांच प्राचीन काव्य-ग्रंथ हैं, जिनको लोग बड़े चाव से पढ़ते और उनमें के वीर-रस का आस्वादन कर अत्यन्त संतुष्ट और मग्न होते हैं।

किन्तु इन सब संस्कृत और हिन्दी के ग्रंथों में केवल प्राचीन शैली के युद्धों के वर्णन किये गये हैं; प्रत्येक में कई २ अक्षौहिणी सेनायें इधर-उधर से जुटी हैं; योद्धा-गण धनुष, बाण, मुद्गर, गदा, चक्र, शक्ति, तोमर, और तलवार इत्यादि लिये ललकार ललकार कर लड़े हैं; अग्नि, जल, वायु और सर्प बाणों, तथा ब्रह्म, नारायण इत्यादि दिव्य और विस्मयोत्पादक अस्त्रों की इनमें भर-मार है। वर्तमान युग में न तो ऐसे २ अनोखे शस्त्रास्त्र ही रह गये हैं, और न उनके चलाने और प्रयोग करने वाले देव-पुरुष ही। इन दिव्यास्त्रों के अनुपम गुण और गंभीर प्रभाव के चारों ओर, तथा इनके प्रयोग-कर्त्ताओं की कला-कुशलता के ऊपर, अनंत काल के व्यतीत हो जाने के कारण, इस समय, कलिकाल का कठिन कोहिरा छा गया है, अतएव यूरोपीय रीति-भांति के गवेषण के चश्मा लगाने वाले कतिपय विद्वानों की दृष्टि उसमें ऐसी मंद पड़ जाती है, कि उनको कभी २ इनके अस्तीत्व में भी सन्देह हो जाता है, इसीलिये ऐसे २ ग्रंथों की गणना ये लोग इतिहास-श्रेणी में भी बहुधा कम करते हैं। किन्तु नये २ वैज्ञानिक आविष्कारों की किरणों के आगमन से यह कोहिरा भी क्रम २ से

फटता जाता है, और ऐसी आशा होती है, कि काल पाकर उपर्युक्त विद्वान्-गण भी इन्हें वैसे ही आदर और भक्ति की दृष्टि से देखेंगे, जिसके कि वे निज प्राचीनता और सत्यता के कारण उपयुक्त पात्र हैं। हमारे इस कथन का यह तात्पर्य नहीं है, कि इन ग्रंथों के प्रत्येक वाक्य वेद-वाक्य के सदृश सत्य और ग्राह्य हैं; ये सब के सब ग्रंथ छंदों में लिखे गये हैं; इससे यह भी संभव है, कि अनुप्रास, काव्यालंकारों और सरस भावों के लाने की चिंता से, तथा वर्ण-मैत्री, और मात्रादिकों की न्यूनाधिकता को समुचित करने के उद्देश्य से, कहीं २ पर इनमें ऐतिहासिक सत्यता का हवन भी कर दिया गया हो; परन्तु क्या कोई भी दृढ़ रूप से कह सकता है, कि वर्त्तमान युग के गद्य में लिखे गये ग्रंथ सर्वथा सत्य हैं। अस्तु; अब चाहे पश्चिमीय रीति भांति के गवेषणानुयायी विद्वान् इन ग्रंथों में जितने अवगुण और दोष समझा करें, परन्तु यह बात तो उनको मुक्त-कंठ से स्वीकार करनी ही पड़ेगी, इनमें वीर-चरितावली की न्यूनता कदापि नहीं है। इस बीसवीं शताब्दी में भी जब ऐसी २ कथावों और इतिहास-मालावों को लोग बहुधा अविश्वास की दृष्टि से देखा करते हैं, इन वीर 'आख्यायिकावों' के पढ़ने से भी बहुत कुछ लाभ प्राप्त हो सकता है।

ऐसा मालूम होता है, कि सृष्टि की आदि से ही युद्ध का भी प्रारंभ है ; प्राणि-मात्र अपने स्वार्थ, मान, प्रतिष्ठा और स्थिति इत्यादि के लिये निज प्रति-स्पर्द्धी पड़ोसियों पर आक्रमण करता देख पड़ता है ; प्रकृति के अपर नियमों के सदृश यह भी एक प्राकृतिक नियम ही सा सूचित होता है । सभ्यता और ज्ञान सम्पन्न होने की डींग मारने वाली जातियां भी युद्ध करने तथा अपने २ प्रति-द्वंद्वी पड़ोसियों का गला काटने में नेक भी नहीं हिचकती हैं । आधुनिक सभ्यता के साथ २ प्रचलित शस्त्रास्त्रों तथा अपर सामरिक सामग्रियों की भी दिन-प्रति उन्नति होती जाती है, और उन्हीं के अनुसार वर्तमान युद्धों की रण-रचना (*Strategy*) और व्यूह-विधान (*Tactics*) की प्रणाली में भी पहले से दिन २ अंतर पड़ते जाते हैं । सत्रहवीं और अट्ठारहवीं शताब्दियों में जिन नियमों के अनुसार रण-रचना और व्यूह-विधान किये जाते थे, वे उन्नीसवीं शताब्दी में काम नहीं दे सकते थे ; पुनः, जो नियम पिछली शताब्दी में प्रचलित थे, तथा उपयुक्त समझे जाते थे, वे वर्तमान समय के युद्धों के लिये अब सर्वथा उपादेय नहीं हो सकते हैं ; प्रत्युत दो ही चार वर्षों के अन्तर पर के हुए युद्धों में भी बहुधा ज़मीन-आसमान का अंतर पड़ जाता है । नित्य नये २ आविष्कारों के कारण जैसे जैसे समर की व्यवहारिक वस्तुवों और शस्त्रास्त्रों में अंतर

पड़ते जाते हैं, वैसे ही वैसे रण-नियमों में भी परिवर्तन किये जाने की आवश्यकता पड़ती जाती है। प्राचीन सामरिक पुस्तकों के पाठ से हमारे हृदय में वीर-भाव निज पूर्वजों के प्रति अनुराग और मातृ-भूमि के प्रति दृढ़भक्ति इत्यादि अवश्य उत्पन्न हो सकती हैं, परन्तु उनसे आधुनिक रण-कार्य्यों के संपादनोपयुक्त समुचित शिक्षा कदापि नहीं प्राप्त हो सकती है। ऐसी शिक्षा केवल आधुनिक समर-इतिहासों के अध्ययन से ही मिलनी संभव है। इसी उद्देश से समय २ के युद्धों के इतिहास प्रत्येक ऐसे राष्ट्र को, जिसे अपनी जाति में सामयिक आवश्यकतावों के अनुसार सामरिक गुणों को जीवित रख कर अपनी स्थिति और प्रतिष्ठा, मान और मर्य्यादा इत्यादि स्थिर रखे रहने की चिन्ता रहती है, अपनी भाषा में लिखने-लिखाने की आवश्यकता होती है। इसके अभाव से वह राष्ट्र उन्नति के 'मार्च' में अपने पड़ोसी सभ्य राष्ट्रों से पीछे पड़ जा सकता है। अतएव अपने को सर्वथा सुयोग्य तथा सामयिक गुणों से भूषित रखने वाली जातियां उपर्युक्त पीछे पड़ी जाति की पीठ पर पांव रखती तथा उसको कुचलती आगे बढ़ जाती है; यों ही समय पाकर इस राष्ट्र की स्थिति ही संसार से उठ जाती है, अर्थात् दासत्व को प्राप्त होकर क्रमशः वह जाति नाश को प्राप्त हो जाती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में और वर्त्तमान के प्रारम्भ में दो चार बहुत ही भयानक समर संसार-क्षेत्र में हुए थे। उपर्युक्त उद्देश से उनके वृत्तान्त प्रायः समग्र सभ्य देशों की भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं, किन्तु हिन्दी में अभी तक इन नूतन शैली के युद्धों के ऐसे इतिहास शायद कोई भी नहीं लिखे गये हैं, जिनमें रण-रचना और व्यूह विधान संबंधी आलोचना-प्रत्यालोचनावों के साथ २ उनका पूरा २ और सत्य २ वृत्तान्त इस भाषा-भाषी पाठकों को मिल सके। जिस समय वे युद्ध हो रहे थे, तब उनके कुछ २ अधूरे और अर्द्ध-प्रमाणित समाचार हिन्दी के किञ्चित् साप्ताहिक पत्रों में इधर-उधर अवश्य प्रकाशित हुए होंगे; पर वे पत्र प्रथम तो प्रायः अब अलभ्य हैं, दूसरे समाचारों के सप्रमाणित न होने, उनके वर्णन क्रमानुगत पुस्तक के रूप में न मिल सकने, तथा पुस्तकों के मिलने पर भी उनके समालोचना-रहित होने इत्यादि से वे लभ्य होकर भी उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये निरर्थक हो जाते हैं। इसी अभाव की पूर्ति के लिये इस 'आधुनिक रण-रत्न-माला' के गूंथने का विचार किया गया है।

आधुनिक भयंकर शस्त्रास्त्रों अर्थात् प्रचलित बंदूकों और तोपों से किये गये नूतन शैली के युद्धों का

ऐसा वर्णन, जिनमें रण-रचना और व्यूह-विधान संबंधी घटनाओं पर समालोचनायें की गई हों, संभव है, इसी माला में प्रथम ही प्रथम गूंथा जाकर हिन्दी-भाषा-भाषियों के हृदय-स्थलों के सुशोभित करने के लिये आज उन्हें अर्पण किया जा रहा हो। रीवां राज्य की सेना को वर्त्तमान रीति-भांति के युद्धों से परिचित कराने के निमित्त ही विशेष कर इस 'ग्रन्थ-माला' की रचना का विचार किया गया है। इसके अध्ययन से पाठकों को ऐसे ऐसे अनेक शूर-वीरों के साहस और स्वदेश-प्रेम का सच्चा और अनोखा वृत्तान्त मालूम हो सकता है, जो इस समय में भी—इस कराल कलिकाल में भी—साधारण अस्थि, मांस, और रक्त के शरीर में बने, उपस्थित और जीवित हैं, किम्वा जिनको जीवित अवस्था में रहते तथा इस मालोल्लेखित वीरोचित कार्य्यों को करते समय के देखने वाले अभी तक इस संसार में उपस्थित हैं। ऐसे साक्षात् उदाहरणों से इस देश के सैनिकों तथा अपर युद्ध-प्रेमियों को इतना उपदेश तो अवश्य मिल सकता है, कि वीरता और साहस के कार्य केवल कृत-युग त्रेता और द्वापर में मनुष्य-शरीर-धारी देवताओं और पुण्य-पुरुषों ही द्वारा नहीं किये जा सकते थे, किन्तु वर्त्तमान युग के साधारण मनुष्य भी, जिस समय वे चाहें, अपने साहस को प्रकट कर संसार को मुग्ध और विस्मित कर सकते हैं।

पुनः वर्तमान-काल में भी किस तरह कोई सेना, निज कर्त्तव्य-कार्य के सम्पादनार्थ, अपने अद्भुत साहस को प्रकट करती, शत्रु-सेना के सम्मुख, उत्कटता, तीव्रता और ओजस्विता के साथ तब भी बढ़ती और लड़ती चली जा सकती है, जब कि उसके ऊपर, उस समय, तोपों के भयानक और प्राण-संहारक गोले ओले के सदृश गिरते रहते हैं, जब कि बंदूकों और रैफलों की हृदय-विदारिणी, अंग-भंग-कारिणी गोलियां, मघा के घन-बूंदों के सदृश, उसपर चारों ओर से बरसती रहती हैं, तथा जब कि संगीने सरासर सरासर चल २ कर विद्युत छटा की भांति योद्धाओं की आंखों में चकाचौंध पहुंचाती तथा उनके उदरों को विदार २ कर बेचारों की अंतड़ियां खींचती रहती हैं; तथापि सच्चे वीरों और स्वदेश हितैषियों से बनी हुई वह सेना निज कर्त्तव्य की डोरी में बँधी, अपने स्थान से एक पग भी पीछे नहीं हटती है! किस प्रकार कोई २ वीर योद्धा, चाहे वह साधारण रँगरूट (*Recruit*) है, किम्वा किसी बड़े पद पर का वयो-वृद्ध रण-अभ्यस्त (*Veteran*) सुयोग्य सैनिक नायक, घायल होने पर भी, धैर्य्य धारण किये, अपनी असाधारण शूरता और अद्वितीय रण-कुशलता प्रकट करता, चौगुने चाव के साथ, निज कर्त्तव्य-कर्म के संपादनार्थ ऐसी कठिन अवस्था में भी प्रसन्न-वदन

बना रहकर निज नश्वर शरीर का निछावर कर देता है! ऐसे २ उदाहरणों के देखने और सुनने से, पुनः उनके चरित्रों के अध्ययन और मनन से, कायर से कायर पुरुष के हृदय में भी थोड़ा-बहुत वीर भाव उत्पन्न होही आ सकता है; इस तरह पर वह पुरुष भी निज कर्त्तव्य-कार्य्य के साधनार्थ, अवसर आने पर, उत्साहित और हुल्लसित होकर, उद्योग करने लग जा सकता है। ऐसी २ शिक्षा-प्रद कथायें प्राचीन ग्रंथों में भी भरी पड़ी हैं, किन्तु आधुनिक युद्धों के वर्णन पढ़ने का, और ऐसे २ शूर-वीरों के चरित्रों से परिचित होने का जैसा और जितना प्रभाव हम लोगों के हृदय-पटल पर अंकित हो सकता है, वैसा और उतना गम्भीर प्रभाव प्राचीन ग्रंथावलोकन से शायद ही पड़ सकता होगा। पूर्वोक्त वीर कर्म आधुनिक होने से हमारी ही आंखों के साम्हने हुए से प्रतीत पड़ते हैं, उनमें अविश्वास की जगह नहीं रहती है; परन्तु पौराणिक कथावों के ऊपर अत्यंत प्राचीनता का—और शायद किञ्चित् अत्युक्ति का भी—अभेद्य अंधकार छाये हुए है, उसी के कारण वे गवेषणीय नेत्रों द्वारा प्रत्यक्ष नहीं देखे जा सकते हैं; उन्हें यथा-तथ्य देखने के लिये बहुधा विश्वास के ऐनक लगाने की आवश्यकता पड़ जाया करती है। अस्तु।

रण-रचना और व्यूह-विधाना, ये दोनों ही देश और काल के अनुसार किये जाते हैं, किसी कैसे ही बहुज्ञ, प्रतिष्ठा-लब्ध तथा रण-कुशल सेनाधिपति द्वारा की गई रण-रचना के यथा-तथ्य अनुकरण करने की किसी दूसरे जेनरल को बहुत कम आवश्यकता पड़ सकती है। अपने कार्य्य में सफलीभूत होने की संभावना उसको प्रायः तभी हो सकती है, जब समर-भूमि और शत्रु-सेना की अवस्था देख कर, और अवसर को विचार कर, अपनी आभ्यंतरिक बुद्धि के अनुसार वह जेनरल अपनी निज की रण-रचना किसी विशेष रूप से करता है। अपनी और शत्रु की सैनिक संख्या और शक्ति को देखकर अपनी ही दूरदर्शी बुद्धि के अनुसार उसको इस बात का निर्णय करना पड़ता है, कि अमुक समय और अमुक अवस्था तक उसको आक्रामक बनने में अधिक सुभीता, और विशेष लाभ की संभावना है, तथा अमुक अवस्था और समय तक केवल आत्म-रक्षक बने रहने ही में उसका अधिक कल्याण है। एवं देश और काल ही के अनुकूल उसको अपने निज के व्यूह-विधान भी करने पड़ते हैं। अपनी अपूर्व और अचिंतित अवस्था पर विचार करने से उसको कभी २ प्रसिद्ध रण-विशारदों के बहु-मान्य सिद्धान्तों के प्रतिकूल चलने में भी कल्याण प्राप्त होने की संभावना देख पड़ती है। प्रत्युत सफलता पूर्वक किसी रण-कार्य के

संपादन करने के हेतु कोई भी ऐसे दृढ़ और अपेल नियम नहीं हैं, जो सब काल में और सभी अवस्था में एक रूप से कल्याण-कारक और उपयोगी हो सकते हों; इसके लिये कोई भी ऐसा राज-पथ (*Royal Road*) नहीं है, जिस पर आंख मूंद कर चलकर निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचना और विजय लाभ करना निश्चय रहा आवे। सारांश यह है, कि रण-कार्य में प्रत्येक जेनरल को निज अवस्था-विशेष के अनुसार अपनी ही बुद्धि से काम लेना पड़ता है।

तथापि मनुष्य एक अनुकरण-शील जीव है; अपर जीवों की बुद्धि प्रकृति से ही स्थायी है; परन्तु मनुष्य की बुद्धि उन्नति-शील है, और इस विषय में वह उन्नत तभी हो सकती है, जब तत्कालीन संग्राम-कथाओं के अध्ययन और मनन करने का, तथा उनमें के रण-कार्यों की आलोचना-प्रत्यालोचना करने का उसको अवसर दिया जाय; अर्थात् यह कि, अमुक जेनरल ने अमुक अवस्था में अमुक रीति से कार्य किया, इससे उसको ऐसी और इतनी सफलता हुई; पुनः, अमुक जेनरल से अमुक अवसर पर ऐसी असावधानी हो गई, जिसके कारण उसको अमुक हानि उठानी पड़ी; अथवा, यदि वह अपना कार्य्य अमुक ढंग से किये होता, तो उसको उपर्युक्त हानि के स्थान में अमुक प्रकार का लाभ-विशेष हुआ होता; किम्वा, अमुक अवसर पर उसको

अमुक रीति से रण-कार्य करना उचित था, और उस रीति से न करने ही के कारण उसको अमुक हानि उठानी पड़ी;.....इत्यादि। ये और ऐसी अनेक बातें केवल तत्कालीन सामरिक इतिहासों ही के अध्ययन और मनन से मालूम हो सकती हैं। राम-रावण-समर की रण-रचनायें, अंगद का दौत्य-कर्म, चक्रा-व्यूह और कमला-व्यूह सरीखे निरूपम व्यूह-विधान, चाहे अपने समय के जैसे अनोखे रण-कार्य रहे हों, किन्तु आधुनिक युद्धों में उनके अनुकरण की कभी भी आवश्यकता नहीं पड़ सकती है। देश और काल के अनुसार जिस तरह पर मनुष्य को अपने वस्त्रों और साधारण व्यवहार की वस्तुवों के परिवर्तन की आवश्यकता पड़ा करती है, उसी तरह नित्य-प्रति युद्ध की परिपाटी भी कालानुगत करनी पड़ती है। आधुनिक रण-रत्न-माला के गूंथने का एक यह भी प्रधान उद्देश्य है।

कितने ऐसे कारण उपस्थित हो गये हैं, जिन से भारत-वासियों की स्वाभाविक और सुप्रसिद्ध युद्ध-कलायें और राजनैतिक विद्यायें कुछ मुर्झाई सी पड़ी हैं; आशा कि इस देश के हिन्दी-भाषा-भाषी पाठकगण इस ग्रंथ-माला के प्रत्येक सूक्त का यथोचित आदर करेंगे; अधिकतर हमारा अनुरोध इस देश के सैनिक सरदारों और योद्धावों से है, कि वे लोग इस माला की

बहु-मूल्य लड़ियों के अनेकानेक अनुपम पुष्पों को विचार की दृष्टि से देखें, उनका अध्ययन और फिर मनन करें; ऐसा करने पर, यदि यहां के निवासियों के हृदय की मुर्झाई किम्वा अविकशित कलियां कुछ भी हरी-भरी और पुष्पित हुईं, और समय पाकर ऐसी २ मालाओं के सूत्रों में गूंथने और निज अपूर्व मधुर सुगंध से संसार को विमुग्ध करने के योग्य और पात्र समझी गईं, तो मै अपने सब परिश्रम को सफल समझूंगा। अस्तु।

रीवां
ता० २७ सितंबर सन् १९०९ ई०

जीतनसिंह
दर्बार हाई स्कूल

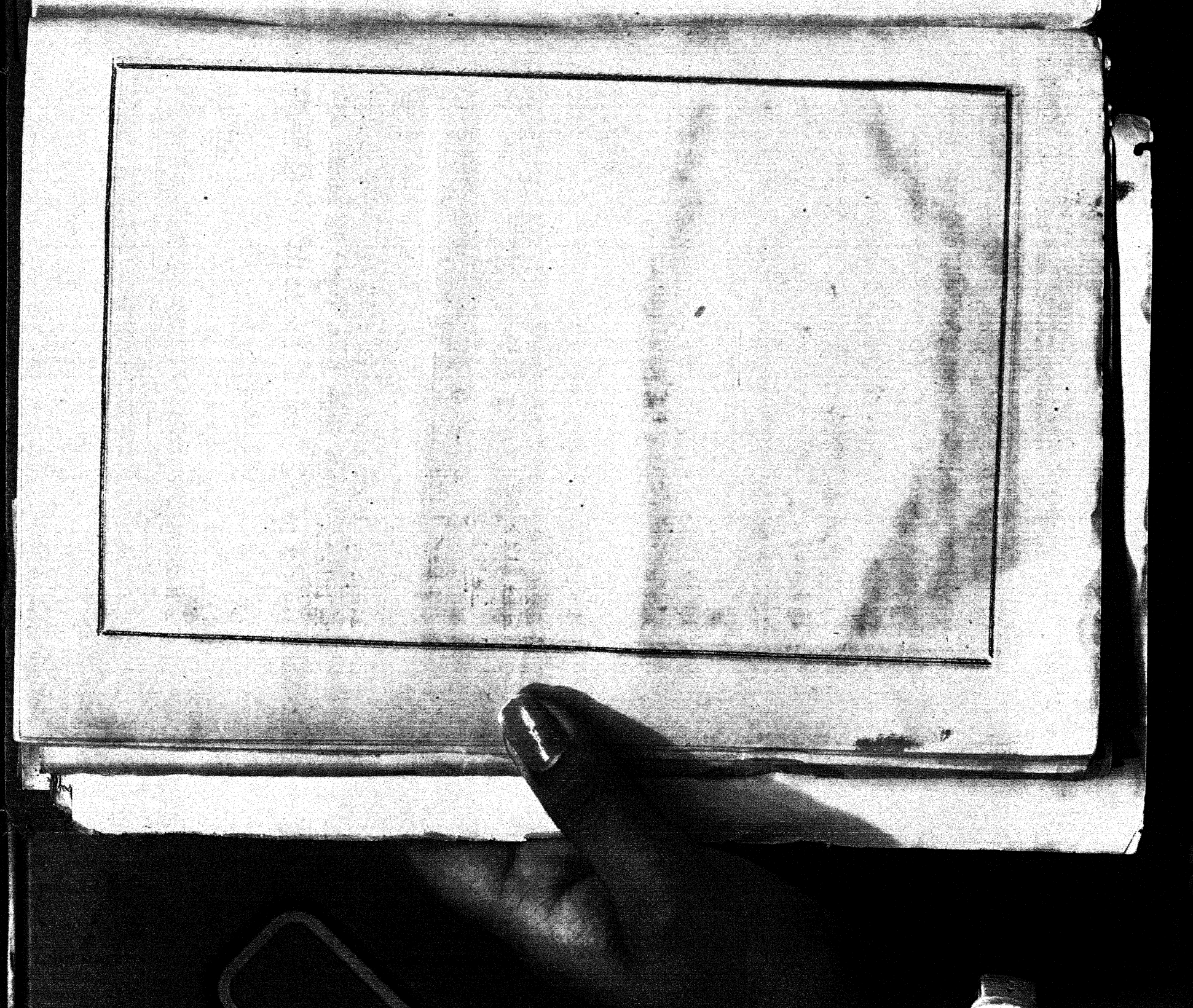

फ्रांस-जर्मनी-युद्ध

की

भूमिका (२)

(ग्रंथकार लिखित)

आधुनिक रण-विद्या में स्ट्रेटेजी (*Strategy*) यानी रण-रचना एक बहुतार्थ द्योतक शब्द है। सामरिक युक्तियां (*Plans*) सेनाओं का संक्रमण (*Combinations*), वितरण (*Deployments*), और संचालन (*Movements*) इत्यादि बातें जो युद्ध में किसी संग्राम के पूर्व की जाती हैं, वे सब केवल इस एक शब्द से प्रकट होती हैं। विजय-लाभ की संभावना को बढ़ाना और पराजय की संभावना को न्यून करना ही इसका प्रधान उद्देश है। रण-भूमि में उस विद्या का, और उस युक्ति का प्रयोग करना, जिससे शत्रु को विवश हो कर अनिच्छित युद्ध देना पड़े, रण-रचना ही का काम है। वर्त्तमान युग में, जब कि योरप की सब शक्तियां शस्त्रास्त्र धारण किये रण के लिये सर्वदा सन्नद्ध रहती हैं, नैपोलियन के समय के अनुसार सेनाओं का संगठन करना विशेष लाभ का नहीं हो सकता है। तार-द्वारा समाचार

भेजने की विद्या के आविष्कार से सहसा किसी स्थान पर सेना को पहुंचा कर शत्रु को विस्मित करके पराजित कर देना अब नितांत असंभव हो गया है; पुनः, इस ज़माने में जहां चाहे, कोई सेना भी नहीं ले जा सकता है, सेनाओं का भेजा जाना रेल-पथों पर अवलंबित है; अर्थात् देश के जिस भाग में रेल-पथ नहीं, वहां पर बड़ी २ सेनायें नहीं भेजी जा सकती हैं, अतएव उधर से आक्रमण होना असंभव रहने से शत्रु निश्चिन्त हो जाता है; और रेलवे मार्गों के तरफ़ ही वह भी अपनी शक्ति संकर्षित करता है। सारांश यह है, कि आज-कल के युद्धों में जेनरलों को किसी दूसरी और अपूर्व रण-नीति का अनुसरण करना पड़ता है। जेना के संग्राम में नैपोलियन बोनापार्ट को जैसी रण-रचना से विजय मिली थी, उससे सीडान वाली वान मोटके की रण-रचना बहुत विभिन्न और अधिक वैज्ञानिक थी। दैवी बुद्धि की जगह पर आज कल दूर-दर्शिता, सूक्ष्म गणना, और शुद्ध विचार से काम लेना पड़ता है, पुनः किसी एक व्यक्ति के प्रभाव और शक्ति से आज-कल के युद्धों में विजय नहीं मिलती; युद्ध-शास्त्र इस युग में एक विराट मेशीन (*Machine*) हो गया है, उसके प्रत्येक अंग से उपयुक्त रीति पर काम लेने ही से विजय-प्राप्ति की अधिक संभावना रहती है।

स्टोफेल (*Stoffel*) * का अपनी गवर्नमेण्ट को इस बात की सूचना देना, कि वह प्रशियन स्टाफ़ से सचेत रही आवे, बिना कारण नहीं था ; तथा जेनरल मोल्टके के अनुयायियों (*Pupils*) द्वारा जर्मन सेनायें जिस रीति से संगठित, शस्त्रादि से सुसज्जित तथा रण-भूमि में आयोजित की गई थीं, उसका विचारपूर्वक अध्ययन करना निस्संदेह अत्यंत लाभ-दायक सिद्ध हो सकता है। रण-रचना संबंधी (*Strategic*) शिक्षा के सिवाय सन् १८७०-७१ के समर से व्यूह-विधान (*Tactics*) संबंधी उन्नति की एक ऐसी अपूर्व और नवीन शिक्षा का प्रचार होता है, कि जिसके अनुभवानुसार इस युग के समरों के सिद्धांत स्थिर किये जाते हैं। इस समर की विस्तर गाथायें बहुत कम लोग अध्ययन कर सकते हैं, अतएव यह पुस्तक उन सैनिक अफ़सरों के लिये, जिन्हें इस युद्ध की बड़ी २ पुस्तकों के पढ़ने के लिये न तो समय ही है और न अवकाश ही मिल सकता है, विशेष लाभदायक सिद्ध होगी।

हस्ताक्षर एस. सी. पी.

* फ्रांस देश का एक राज-नीति-वेत्ता।

फ्रांस-जर्मनी-युद्ध

की

भूमिका (२)

(अनुवादक लिखित)

आधुनिक रण-रत्न-माला की इस चौथी लड़ी को मैं अत्यंत प्रेमपूर्वक अपने पाठकों को अर्पण करने में अपना सौभाग्य समझता हूँ। हिन्दी साहित्य के अपर अनेक अंगों के साथ ही साथ जिस प्रेम और उदारता के साथ श्री १०८ सम्राट् रीवां-नरेश इस अंग को पुष्ट और अलंकृत कर रहे हैं, वह सर्वथा सराहनीय और प्रशंसनीय है; हिन्दी, हिन्दोस्थान और हिन्दू जाति इसके लिये आपका सर्वदा कृतज्ञ रहेगी, इसमें किञ्चित् संदेह नहीं है।

इस ग्रंथावली में युद्ध के इतिहास के साथ ही साथ स्थान २ पर सेना-नायकों की रण-रचनावों (*Strategy.*) और व्यूह-विधानों (*Tactics*) के संबंध में समालोचनावों के संग्रह करने का भी क्रम रखा गया है; इसमें उनके वीरोचित और दूरदर्शी कार्य्यों की स्तुति है, और साथ ही साथ उनसे जो अनवधानतायें और भूलें हो गई हैं, उनको

प्रकट करके यह दिखलाया गया है, कि वैसी अवस्था में उनको किस रीति से रण-कार्य्य करना चाहिये था। इस गूढ़ विषय को स्पष्ट करने के लिये पुस्तक-माला में स्थान २ पर रण-भूमियों के विविधि नक़शे भी लगा दिये गये हैं। मेरे कतिपय सुयोग्य समालोचक मित्रों ने मुझपर यह आक्षेप किया है, कि सामरिक शिक्षा पाये, ऐसे २ प्रतिष्ठा-लब्ध जेनरलों के रण-कार्य्यों की समालोचनायें करने का मुझको अधिकार नहीं। ऐसे सज्जनों से नम्रतापूर्वक मेरा यही निवेदन है, कि इस ग्रंथावली में जितनी समालोचनायें गुंथी हैं, वे मेरी नहीं, वे सामरिक शिक्षा-प्राप्त सुयोग्य जेनरलों ही की सम्मतियां हैं, मै उनका केवल अनुवादक और संग्रह-कर्ता मात्र हूं।

कतिपय सज्जनों ने मेरे लेख में व्याकरण संबंधी भूलें दिखलाई हैं। इसमें संदेह नहीं, कि बहुत सी भूलें मेरी अनवधानता किम्वा अज्ञानता से हो गईं हैं, और उनको मै सादर स्वीकार भी करता हूं। हिन्दी-भाषा अभी बन रही है, इसमें कोई प्रतिष्ठित व्याकरण और कोष नहीं हैं, जिनकी सहायता से हिन्दी लिखने में सुगमता हो। हिन्दी में क्रियायें कहीं पर कर्त्ता और कहीं पर कर्म के लिङ्ग और वचनानुसार लिखी जाती हैं। शब्दों के लिङ्ग-ज्ञान में मुझ अल्पज्ञ को निरंतर संदेह बना

रहता है। इसके लिये जब तक हिन्दी शब्द-सागर नहीं तय्यार हो जायगा, तब तक बहुधा लोग लिङ्ग अपने २ मन का ही लिखते रहेंगे। अतएव आशा कि सुहृद् पाठक-गण ग्रंथावली के मूल उद्देश को देखकर ऐसी भूलों पर तीव्र दृष्टि न डालेंगे।

हिन्दी शब्दों के वर्ण-विन्यास (*Spelling*) लिखने में मुझसे अनेक स्थानों पर, संभव है, बहुत सी भूलें हो गई हों। इस विषय में भी मेरा निवेदन यही है, कि अभी तक हिन्दी लेखन-शैली यथोचित रीति से संस्थिर नहीं हो पाई है। बहुधा लोग अपने २ मन से ही शब्दों को लिखते हैं। हिन्दी भाषा में यह भी एक त्रुटि है, और ज्यों २ साहित्य की उन्नति होती जायगी, त्यों ही त्यों वर्ण-विन्यास भी परिष्कृत और संस्थिर हो जायगा।

हिन्दी संसार में समालोचकों की सृष्टि भी शायद अभी थोड़े ही दिनों से हुई है। इस ग्रंथ-माला की लड़ियों को भी कतिपय सुयोग्य हिन्दी समालोचकों के कर-कमलों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, परन्तु इसमें संदेह है, कि उनमें से किसी ने इसमें के खोटे-खरे रत्नों की यथोचित परीक्षा की है। बहुतों ने तो केवल इतना ही लिखना अलम् समझा है, कि 'छपाई, काग़ज़ अच्छा, जिल्द सुन्दर, पृष्ठ-संख्या इतनी, नक़शों

और चित्रों से पुस्तक की शोभा बढ़ गई है।' जिन समालोचकों ने गुण-दोष दोनों का दिखलाना अपना नियम कर लिया है, उन लोगों ने पुस्तकावलोकन का बिना कष्ट उठाये उपर्युक्त छपाई इत्यादि गुणों के साथ दो चार साधारण दोष भी प्रकट कर दिये हैं, जैसे, 'प्रूफ-संशोधन अच्छी तरह से नहीं किया गया है ; हिन्दी लिखने में व्याकरण के नियमों पर इतस्ततः ध्यान नहीं दिया गया है, शब्द-योजना ठीक नहीं, ..." हिन्दी के सुयोग्य समालोचकों से मेरा नम्रतापूर्वक यह अनुरोध है, कि किसी पुस्तक की समालोचना करते समय उनको यह भी देखना चाहिये, कि वह पुस्तक किस उद्देश से लिखवाई और प्रकाशित कराई गई है, और उस उद्देश की पूर्त्ति करने में ग्रंथकर्ता कहां तक कृत-कार्य्य हुआ है। आशा कि हमारे भावी समालोचक सज्जन मेरे इस अनुरोध से रुष्ट न होकर इस 'माला' के ग्रंथों की यथार्थ समालोचना करने की कृपा करेंगे। मेरी यह इच्छा नहीं है, कि इस में के दोष प्रकट न किये जांय, केवल गुणों ही का दिग्दर्शन कराया जावे। मनुष्य-कृति में गुण-दोष दोनों रहते हैं। गुण के प्रकट होने से वह संतुष्ट होता है, और दोष से परिचित किये जाने पर भविष्य में वह उसको यथा-साध्य दूर करने का प्रयत्न करता है।

यह पुस्तक लेफ्टि० कर्नल एस. सी. प्राट कृत 'ज़ारब्रक टु पेरिस' नामक अँग्रेज़ी भाषा की पुस्तक का भावानुवाद है। इसके पूर्व इस माला में जो तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उनमें उन २ देशों के संक्षिप्त प्राचीन इतिहास भी दे दिये गये हैं। इस पुस्तक के साथ यदि फ्रांस-जर्मनी, इन दोनों सुप्रसिद्ध देशों का इतिहास दिया जाता, तो वह, चाहे कितना भी संक्षिप्त क्यों न किया जाता, अलग ही एक बड़े आकार का ग्रंथ बन जाता। पुनः इण्डियन प्रेस प्रयाग के स्वामी की कृपा से इस समय हिन्दी भाषा में इन दोनों देशों के संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित भी हो चुके हैं। तथापि तत्कालीन यूरोपियन राजनैतिक अवस्था का दिग्दर्शन केवल हिन्दी जानने वाले पाठकों को कराना आवश्यक समझ कर इस पुस्तक के प्रारंभ में डाक्टर जूलियन वी फ्लकहार्टिंग, जो बर्लिन विश्वविद्यालय के एक सुप्रसिद्ध अध्यापक हैं, के एक लेख का भावानुवाद, टीका-टिप्पणी के साथ दे दिया गया है। वह लेख मेजर जेनरल मारिस कृत 'फ्रैंको-जर्मन वार' नामक बड़े ग्रंथ के आदि में छपा है। आशा कि इस लेख के परिशीलन से तत्कालीन यूरोपीय राजनीतिक अवस्था के समझने में पाठकों को बहुत कुछ सुगमता हो जायगी। इसके अलावे इस पुस्तक में और

भी बहुत सी उपयोगी बातें संग्रह करके रख दी गई हैं।

व्यक्ति वाचक शब्दों को समान रूप से लिखने का यथा-शक्ति प्रयत्न करते हुए भी मैं कृत्कार्य्य न हो सका, इसका मुझको बहुत शोक है। इसका प्रधान कारण तो जर्मन और फ्रेञ्च भाषाओं से मेरी अनभिज्ञता है। जितने नामों के उच्चारण मुझको वेब्स्टर्स नाम के अँग्रेज़ी कोष में मिले हैं उनके तो प्रायः वैसे ही वर्ण-विन्यास इस पुस्तक में लिख दिये गये हैं। परन्तु अनेक नाम इस पुस्तक में ऐसे आये हैं, जिनका उस कोष में उल्लेख नहीं है, अतएव विवश होकर उनका वर्ण-विन्यास मैंने मनमाना किया है। इसमें संदेह नहीं, कि वे बहुधा दोष-पूर्ण होंगे। आशा कि पाठक-वर्ग इसके लिये मुझको क्षमा करेंगे। व्यक्ति-वाचक शब्दों की एक हिन्दी-अँग्रेज़ी तालिका पुस्तक के अंत में दे दी गई है।

मनुष्य-कृति सर्वथा दोष-रहित कदापि नहीं हो सकती है, मुझ अल्पज्ञकृत संग्रह और अनुवाद में अनेक दोषों का रहा आना अधिक आश्चर्य्य की बात नहीं, तथापि मेरे दोषों की उपेक्षा करके हिन्दी-जगत ने इसके पूर्व-प्रकाशित मेरी पुस्तकों का यथेष्ठ आदर किया; इसको मैं अपना सौभाग्य समझता हूं। श्री १०८ मात्

रीवां-नरेश की आज्ञा शिरोधार्य्य कर यथा-शक्ति मै हिन्दी साहित्य के इस अंग की पूर्ति करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। स्वयं रीवांराज्य के भीतर अनेकानेक सुयोग्य और विद्वान् हिन्दी लेखकों के रहते हुए भी श्रीमान् ने अपने इस दूरस्थ प्राचीन सेवक को जो अभी तक यह आदर दे रखा है, यह उनकी अनुकम्पा और गुण-ग्राहकता है। आशा कि पाठक-वर्ग भी मेरी इस सेवा को सदा की भांति अपनाकर अपनी २ गुण-ग्राहकता का परिचय देते रहेंगे। इति शंस्तु।

कोठी राज्य
५ अप्रेल सन् १९१५ ई०

जीतन सिंह
दीवान

॥ सूचीपत्र ॥

अध्याय १

विषय			पृष्ठ
युद्ध के कारण			१
युद्ध का महत्व	...	...	३
अनादि वैर	...	...	४
फ्रांस का अभ्युदय	...	...	६
प्रशिया का अभ्युत्थान	...	...	११
जर्मनी में राष्ट्रीय बुद्धि का प्रादुर्भाव		...	१४
उत्तरी जर्मन संघति की संस्थापना	...	...	१५
फ्रांस-जर्मनी के मध्य ईर्ष्या-विवृद्धि	...	...	१७
युद्ध के प्रारंभिक कारण	...	...	२४
लक्सेमबर्ग का झगड़ा	...	...	२७
दोनों देशों में असंतुष्टता	...	...	३२
बिस्मार्क का उद्देश्य	...	...	३३
फ्रांस में उद्विग्नता	...	...	३५
नैपोलियन तृतीय के संकट	...	...	३६
भावी युद्ध के संबंध में फ्रांस के विचार	...	...	३८
युद्धागमन के चिह्न	...	...	४२
स्पेन का राज-सिंहासन	...	...	४३
स्पेन का राज-मुकुट और विलियम	...	...	५४
स्पेन का राज-मुकुट और लिवोपोल्ड	...	...	५५
स्पेन का राज-मुकुट और बिस्मार्क	...	...	५६
स्पेन में फ्रांस और जर्मनी	...	...	५७
गुप्त रहस्य	...	...	६२
रहस्य प्रकट होने पर फ्रांस का क्रोध	...	...	६५
ग्रामों की बुद्धिमत्ता	...	...	६७

विषय			पृष्ठ
ग्रामों की अदूरदर्शिता	...	...	६९
समाचार-पत्रों की उन्माद-ध्वनि	...	...	७०
विलियम और बेनेडिटी	...	...	७२
प्रिन्स की अस्वीकृति	...	...	७५
फ्रांस की मूर्खता	...	...	७६
बेनेडिटी और विलियम का अंतिम साक्षात्	...	...	७९
बिस्मार्क के मर्म भेदी प्रतिघात	...	...	८०
समस्त जर्मन का संक्षोभित हो उठना	...	...	८१
फ्रेञ्च राज-सभा में युद्ध का प्रस्ताव	...	...	८४
फ्रेञ्च राष्ट्र और युद्ध	...	...	८६
युद्ध-घोषणा	...	...	९०
जर्मन ओजस्विता	...	...	९०
जर्मन ऐक्यता	...	...	९५
बेडेन	...	...	९६
बवेरिया	...	...	९६
वर्टेमबर्ग	...	...	९८
दक्षिण जर्मनी में प्रशियन युवराज	...	...	१००
धार्मिक अस्पताल इत्यादि	...	...	१०१
युद्ध और योरप	...	...	१०२
युद्ध का परिणाम	...	...	१०६
वाग्युद्ध	...	...	१०७
प्रजा के प्रति दोनों देशों के घोषणा-पत्र	...	...	१०८
नैपोलियन की उदासीनता	...	...	१०९
बर्लिन में उत्साह	...	...	११०
युद्धार्थ विलियम का प्रस्थान	...	...	११०
शेष संग्रह	...	...	१११

अध्याय २

युद्धोपकरण			११७
प्रशिया की सैनिक व्यवस्था	...	...	१२०
सैनिक सेवा के नियम	...	...	१२२

विषय			पृष्ठ
युद्धार्थ सैन्याह्वाहन	...	...	१२४
फ्रांस की सैनिक व्यवस्था	...	...	१२६
युद्धार्थ सैन्याह्वाहन	...	...	१२७
सैनिकों में समरोत्साह (Morale)	...	...	१३०
शस्त्रास्त्र और व्यूह-विधान	...	...	१३१
समर-भूमि का विस्तार	...	...	१३६
नदियां	...	...	१३६
योज पर्वत-माला	...	...	१३८
आल्सास और लोरेन	...	...	१३९
सड़कें	...	...	१४०
फ्रांस के रेल-पथ	...	...	१४०
जर्मनी के रेल-पथ	...	...	१४१
रण-युक्तियों पर रेल-पथों का प्रभाव	...	...	१४२

अध्याय ३

विसेनबुर्ग	१४५
जर्मन समर-विधान	१४७
फ्रेञ्च समर-विधान	१५०
जर्मन सैन्य-संकर्षण	१५१
समालोचनायें	१५३
फ्रेञ्च सैन्य-संकर्षण	१५४
युद्धारंभ	१५८
ज़ारब्रकेन का संग्राम	१५९
जर्मनों का सीमा-प्रांत की ओर प्रस्थान	१६१
आल्सास की चढ़ाई	१६३
विसेनबुर्ग का संग्राम	१६४
समालोचनायें	१६५

अध्याय ४

वर्त्त	१६९
फ्रेञ्च सैन्य-संकर्षण	१७१

विषय			पृष्ठ
तीसरे दल का एडवान्स	...	...	१७२
वर्त्त के मोर्चे को अधिकार में लाना	...	...	१७४
जर्मनो की गिर्दावरी	...	...	१७५
एडवान्स गार्डों का आक्रमण	...	...	१७६
दोपहर की स्थिति	...	...	१७६
६-वें कोर का एडवान्स	...	...	१७७
११-वें कोर का एडवान्स	...	...	१७८
प्रत्याक्रमण	...	...	१७९
नीदरवाल्ड का छीना जाना	...	...	१८०
प्रत्याक्रमण	...	...	१८१
फ्राशविलर का छीना जाना	...	...	१८१
पीछे हटना	...	...	१८२
समालोचनायें	...	...	१८३

अध्याय ५

स्पायकर्न			१९१
फ्रेञ्च सैनिक स्थितियां	...	...	१९३
जर्मन दलों का एडवान्स	...	...	१९४
स्पायकर्न के मोर्चे	...	...	१९५
२७-वें ब्रिगेड का आक्रमण	...	...	१९७
ढाई बजे दिन की व्यवस्था	...	...	१९९
ढाई से साढ़े तीन बजे शाम तक का संग्राम	..	...	२०१
साढ़े तीन से पांच बजे शाम तक का संग्राम	..	...	२०२
बांये का आक्रमण, पांच से साढ़े सात बजे शाम तक		...	२०४
दहने का आक्रमण, पांच से साढ़े सात बजे शाम तक		...	२०६
पीछे हटना	...	...	२०७
समालोचनायें	...	...	२०८
समरारंभ पर समालोचनायें	...	...	२१२

अध्याय ६

विषय			पृष्ठ
बोर्नी-कोलोम्बे			२२३
फ्रेञ्च सेनाओं का पीछे हटना	...	...	२२५
अगस्त ६ से १२ तक की व्यवस्था	...	...	२२८
जर्मनो का एडवान्स	...	...	२२९
अतर्कित घटनाओं के लिये प्रबंध	...	...	२३३
बोर्नी के पहले के रण-कार्य्य	...	...	२३४
बोर्नी का संग्राम	...	...	२३६
समालोचनायें	...	...	२३८

अध्याय ७

वियानविल—मार्स-ला-टूर			२४५
जर्मनो का एडवान्स	...	...	२४७
१५ अगस्त की स्थितियां	...	...	२४९
फ्रेञ्च सेनाओं का पीछे हटना	...	...	२५०
१५ अगस्त की स्थितियां	...	...	२५२
समालोचनायें	...	...	२५२
जर्मनो का एडवान्स	...	...	२५३
वियानविल—मार्स-ला-टूर का दोपहर तक का संग्राम		...	२५५
समालोचनायें	...	...	२५८
संग्रामोत्कर्ष, १ बजे तक	...	...	२५९
संग्रामोत्कर्ष, २ बजे तक	...	...	२६०
संग्रामोत्कर्ष, ३ से ५ बजे तक	...	...	२६१
संग्रामोत्कर्ष, ५ से ७ बजे तक	...	...	२६३
समालोचनायें	...	...	२६६

अध्याय ८

ग्रावलाट—सेण्ट प्रीवाट			२७५
फ्रेञ्च सेना-संचालन, अगस्त १७	...	...	२७७
जर्मनों की भावी रण-युक्ति	...	...	२७८

विषय			पृष्ठ
समालोचनायें	...	...	२८१
फ्रेञ्च सेना की स्थिति	...	...	२८३
जर्मन एडवान्स	...	...	२८४
९-वें कोर का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक	...	...	२८६
पहले दल का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक	...	...	२८८
दूसरे दल का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक	..	...	२९२
दहने बाजू पर आक्रमण, ६ से ८ बजे तक	...	...	२९४
केन्द्र और बांयें का आक्रमण, ५ से ८ बजे तक		...	२९६
समालोचनायें	...	...	३००

अध्याय ९

शाला और रीम्ज़

			३०७
शालां में जमाव	...	...	३०९
फ्रेञ्चों की रण-युक्ति	...	...	३१३
रीम्ज़ की ओर मार्च	...	...	३१६
ता० २५ अगस्त की स्थिति	...	...	३१८
जर्मनो की रण-युक्ति	...	...	३१९
म्यज़ दल (चौथे दल) का संविधान	...	...	३२१
जर्मनो का एडवान्स	...	...	३२३
अगस्त २२	...	...	३२३
अगस्त २३	...	...	३२४
अगस्त २४	...	...	३२४
अगस्त २५	...	...	३२४
समालोचनायें	...	...	३२६

अध्याय १०

बोमां

			३२९
जर्मन एडवान्स, अगस्त २६	...	...	३३३
फ्रेञ्च-संचालन	...	...	३३४
अगस्त २७	...	...	३३६
अगस्त २८	...	...	३४०
अगस्त २९	...	...	३४१

विषय			पृष्ठ
नौआर्ट की झटापटी	...	...	३४३
अगस्त ३०	...	...	३४६
बोमां का संग्राम	...	...	३४८
समालोचनायें	...	...	३५४

अध्याय ११

सोडान			३५९
अगस्त ३१	...	...	३६१
अगस्त ३१ की घटनायें	...	...	३६२
फ्रेञ्च स्थिति	...	...	३६६
फ्रेञ्च व्यूह	...	...	३६८
आक्रमण की युक्ति	...	...	३६८
बाज़िलिस पर आक्रमण	...	...	३६९
डूक्रो और डे विम्फेन	...	...	३७०
पश्चिमीय आक्रमण, दश बजे से	...	...	३७१
दक्षिणी आक्रमण, दश बजे से	...	...	३७४
पूर्वीय आक्रमण, पाँच बजे से	...	...	३७५
पश्चिमीय आक्रमण, पांच बजे तक	...	...	३७८
युद्ध का अंत	...	...	३८१
समालोचनायें	...	...	३८३

अध्याय १२

मेज़			३९५
मेज़ का मुहासिरा	...	...	३९७
२६ अगस्त का मुहासिरा	...	...	४०२
न्वाययसेविल्ल का संग्राम, अगस्त ३१	...	...	४०४
न्वाययसेविल का संग्राम, सितंबर १	...	...	४१०
समालोचनायें	...	...	४१२
अक्तूबर का मुहासिरा	...	...	४१४
निष्करण-प्रयास, अक्तूबर ७	...	...	४१७
आत्म-समर्पण	...	...	४१८
समालोचनाय	...	...	४१९

अध्याय १३

विषय	पृष्ठ
पेरिस	४२७
साम्राजिक संस्था का पतन	४२९
पेरिस के संरक्षक मोर्चे	४२९
जर्मनो की भावी रण-युक्ति	४३२
जेनरल विनय का पीछे हटना	४३४
पेरिस पर चढ़ाई	४३५
शेटिलान का युद्ध	४३८
पेरिस का मुहासिरा	४३८
पेरिस के अध:पातन की युक्ति	४४०
समालोचनायें	४४४
तूल का अध:पातन	४४५
स्ट्रासबुर्ग का मुहासिरा	४४७
समालोचनायें	४४९

शेष-संग्रह और तालिका

शेष संग्रह	
नं० १	ऽ[illegible]
नं० २	ऽ।[illegible]
तालिका	
नं० १	ऽ॥[illegible]
नं० २	ऽ१–

नक़शों की सूची

विषय			पृष्ठ
नं० १ उभय दलों की स्थिति, जुलाई ३०	...	...	१६६
नं० २ वर्त्त	...	...	१६०
नं० ३ ज़ारब्रकेन और स्पायकर्न	...	...	२१६
नं० ४ जर्मन एडवान्स, अगस्त ६ से १२ तक		...	२४०
नं० ५ पहले और दूसरे जर्मन दलों की स्थिति—अगस्त १५,		...	२४६
नं० ६ जर्मन चमुवों की स्थिति, अगस्त १७, और उनका आक्रमणार्थ मार्च, अगस्त १८		...	३०५
नं० ७ अगस्त २५ की स्थितियां		...	३२८
नं० ८ सीडान का संग्राम		...	३६२
नं० ६ समर-भूमि का नक़शा			पुस्तक के अन्त में
नं० १० मेज़ के आस-पास की भूमि का नक़शा			

पुस्तक की पृष्ठ-संख्या

विषय.		पृष्ठ
भूमिका और सूचीपत्र इत्यादि	...	४०
युद्ध का इतिहास	...	४५८
शेष-संग्रह	...	१०
तालिका	...	१३
कुल जोड़	...	५२१

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१२	चंगल	चंगुल	१६१	१७	बेएडेल	वेएडेल
१२	८	थरसा	थैरसा(टारिस्सा)	१६३	७	सेनावों को	सेनावों की
१६	५	जमनी	जर्मनी	१६६	१७	प्रस्तुत हीं	प्रस्तुत नहीं
२१	६	पकट	प्रकट	१७३	१२	था चूंकि	था। चूंक
२३	१	वालों,का	वालों का	१७६	२	गार्डा	गार्डों
२४	१	यद्ध	युद्ध	१७६	१४	यह विशेष	विशेष
२४	६	अन्यन्यता	अनन्यता	१७६	१५	आज्ञा	यह आज्ञा
२७	१	अपनेा	अपनी	१८१	२	Canverge	Converge
२७	७	यद्ध	युद्ध	१६७	२	का ऊँची	की ऊँची
२८	१	ग्रन्ड	ग्रन्ड	१६७	५	बान	वान
२८	१६	थ	थे	२०३	१४	बेएडेल	वेएडेल
३४	१६	कर देने	करने देने	२०६	४	बाज	बाजू
३६	१	Thieuvs	Thieurs	२०८	३	क्रामेक	कामेक
३६	१२	के विचरा	के विचार	२०८	१६	क्रामेक	कामेक
५२	१२	हुए त्यों ही	हुए, त्योंही	२१६	११	बनना	बनाना
५२	२०	वर्लिन	बर्लिन	२२०	१	१२०	२२०
६१	१३	नैपेलियन	नैपोलियन को	२२७	६	मार्शेल	मार्शल
७५	१	अपना	अपने	२२६	२२	पर्व	पूर्व
८२	५	कटक्तियेा	कटूक्तियें	२३२	५	दे ३	दे २
८५	२१	अधरा	अधूरा	२३२	६	पड़ा हुई	पड़ी हुई
८६	२०	चैाम्बर्स	चैम्बर्स	२३३	१		अतर्कित
६२	२१	Uon	Von				घटनावों
६४	१६	थी	थीं				के लिये
६४	१६	गीत-भाव के	गीत के भाव				प्रबंध
६४	२४	आप नित्य	आप	२३४	६	नायड	नीड
१२३	५	Erstoz	Ersatz	२३८	८	प्लेटो	पेल्टे
१३२	४	फैर का	फैर की	२४३	७	मेज का	मेज़ के
१३६	१६	Neutras	Neutral	२५०	१७	फ्रञ्च	फ्रेञ्च
१४१	६	Besanson	Besancon	२५१	१६	नाला	वाली
१५२	१२	स्टोनमेन	स्टीनमेज	२५५	१४	लैएडमीराल्ट	लैडमीरा
१५२	१४	वाडन	वार्डन	२६०	७	दी चुकी	दी जा चुकी
१५५	८	दुर्गा	दुर्गा	२६५	१७	है	थी
१५५	१५	Cadre	Cadres	२६७	११	दिया	दी
१५७	१६	लिआस	लिआंस (लिआंज़)	२६६	६	फ्रेञ्चों	फ्रेञ्चों

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६९	१९	हटना	हटाना	३५१	१९	पहुंची	पहुंचीं
२८३	१७	आधात	आघात	३५१	१	लिटाने	लेटाने
२८८	१३	ओर दे	ओर के	३५३	१८	विलेमांटी	विलेनमांटी
२९५	१९	Maxou	Mascou	३५४	९	विलेमांटी	विलेनमांटी
३०३	१५	Strntegic	Stratagic	३५६	१	फ्रञ्च	फ्रेञ्च
३०७	५	रण-यक्ति	रण-युक्ति	३५७	११	सेना की	सेना को
३१०	७	शून्यरखो हुए	हुए	३६८	८	इन्हीं	इली
३११	६	लिअञ्ज	लिआञ्ज	३७७	९	मान्ट	फान्ड
३१३	१७	अनुलंघनीय	अनुल्लंघनीय	३८१	१०	अड़ा	अड़ी
३१७	१९	मानमेडी	मांटमेडो	३८६	१२	जाना था	जाता था
३१८	५	मानमेडी	मांटमेडी	३९८	२	फेली	फैला
३२२	९	कानफ्रांस	कानफ्लांस	४१६	८	दिन	दिनों
३२३	१	सायकाल	सायंकाल	४२१	६	सेना ने	सेना का
३२६	४	आर	और	४३०	१	भातरी	भीतरी
३३३	८	वान्नस	वारेन्नेस	४३०	१६	जहाज़ा	जहाज़ी
३३७	६	वोज़्यस	वोज़्यर्स	४३४	५	२ डिवीज़नो	२ रिसाला डिवीज़नो
३४७	१९	शत्र	शत्रु	४४८	१२	गरिज़न	गैरिज़न

इनके सिवाय मात्रा आदि के टूट जाने से भी बहुत सी अशुद्धियां हो गई होंगी, कृपया पाठक-वर्ग सुधार कर पढ़ें ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अध्याय १

❋ युद्ध के कारण ❋

युद्ध का महत्व—अनादि बैर—फ्रांस का अभ्युदय—प्रशिया का अभ्युत्थान—जर्मनी में राष्ट्रीय बुद्धि का प्रादुर्भाव—उत्तरीय जर्मन-संहति की स्थापना—फ्रांस-जर्मनी के मध्य की ईर्ष्या-विवृद्धि—युद्ध के प्रारंभिक कारण—लक्सेमबर्ग का झगड़ा—दोनों देशों में असंतुष्टता—बिस्मार्क का उद्देश्य—फ्रांस में उद्विग्नता—नेपोलियन का संकट—भावी युद्ध के संबंध में फ्रांस के विचार—युद्धागमन के चिन्ह—स्पेन का राज-सिंहासन—स्पेन का राज-मुकुट और विलियम—स्पेन का राज-मुकुट और लिवो-

पोल्ड—स्पेन का राज-मुकुट और बिस्मार्क—स्पेन में फ्रांस और जर्मनी—गुप्त रहस्य—रहस्य प्रकट होने पर फ्रांस का क्रोध—ग्रामां की बुद्धिमत्ता—ग्रामां की अदूर-दर्शिता—समाचार-पत्रों की उन्मत्त सम्मति—विलियम और बेनेडिटी—प्रिन्स की अस्वीकृति—फ्रांस की मूर्खता—बेनेडिटी और विलियम का अंतिम साक्षात्—बिस्मार्क का मर्म-भेदी प्रतिघात—समस्त जर्मनीका संक्षोभित हो जाना—फ्रेंच राज-सभामें युद्ध का प्रस्ताव—फ्रेंच राष्ट्र और युद्ध—युद्ध की घोषणा—जर्मन ओजस्विता—जर्मन ऐक्यता—बेडेन—बवेरिया—वर्टेमबर्ग—दक्षिण जर्मनी में प्रशियन युवराज—धार्मिक अस्पताल इत्यादि—युद्ध और योरप—युद्ध का परिणाम—बाग्युद्ध—प्रजा के प्रति दोनों देशों के घोषणा-पत्र—नेपोलियन की उदासीनता—बर्लिन में उत्साह—युद्धार्थ विलियम का प्रस्थान।

—०—

श्रीगणेशायनमः

फ्रांस-जर्मनी-युद्ध

(१८७०-७१)

अध्याय १

युद्ध के कारण

युद्ध का महत्व

इतिहास में अनेक युद्धों के वर्णन हैं, किन्तु इस १८७०-७१ ई० के राष्ट्रीय भयानक युद्ध के सम्मुख वे सब के सब तुच्छ और अगणनीय हो जाते हैं। यह बात इस युद्ध के भिन्न २ अंगों पर विचार करने से सिद्ध होती है :— जैसे, उभय दिशि के दलों का आधिक्य, प्रतिद्वंद्वी शक्तियों की संहति और संघातकता, उनकी गति और विभव-बाहुल्यता, योद्धाओं की संख्या और शस्त्रास्त्रों की उत्तमता, चमुवों का संगठन, अस्पताल, कमसरियट और ट्रैन्स्पोर्ट (*Transport* बारबर्दारी) इत्यादि के उत्तम प्रबंध, विजेता की अनभूत सफलता तथा पराजित की अमित हानि। इस युद्ध में संग्रामों की केवल जय-पराजय पाठकों के सम्मुख नहीं आती हैं, किन्तु सेना की सेना के तहस-नहस, जिनमें एकाएक लक्ष-हा-लक्ष जवान बंदी हो गये हैं, देखने में आते हैं।

यह युद्ध दोनों साम्राज्यों के बीच सर्वथा राष्ट्रीय समर कहा जा सकता है; इसमें दोनों राष्ट्रों के—दोनों जातियों के—गुण-विशेष प्रकट हुए थे। किसी एक नायक वा व्यक्ति-विशेष के गुण-विश्लिष्ठ और नेतृत्व-निपुणता से इस युद्ध की जय-पराजय का निर्णय नहीं हुआ था, किन्तु इसमें जाति-मात्र की शक्ति और ओजस्विता का पूर्ण प्रभाव प्रकट हुआ था।

अनादि बैर

जर्मनी और फ्रांस, ये दोनों देश योरप महाद्वीप की दो भुजायें हैं, एक ही शरीर के दो बाहुं हैं; और इस तरह पर वे एक दूसरे के निकटतम पड़ोसी हैं। यदि दोनों मित्र-भाव से रहते, और मिल जुल कर कार्य्य करते, तो ये संसार भर पर शासन कर लेते। किन्तु ब्रह्मा ने इनके ललाट में दूसरा ही लिख दिया है। जब से इतिहास का इन दोनों देशों में प्रादुर्भाव हुआ है, तभी से इनमें बैर-भाव भी चला आता है। आदि में सन् ७६८ ई० के लगभग जर्मनी का महत्व था, और फ्रांस उस समय आभ्यन्तरिक फूट से छिन्न-भिन्न हो गया था। कुछ ही दिनों के पश्चात् जर्मनी की दुर्दशा आई, और फ्रांस का सितारा चमका। पश्चात् जब फ्रेञ्च स्वदेश के भयानक राज-विप्लव से पीड़ित होकर ऐक्यता के गुणों को समझे, और उसके प्रभाव से दिन-प्रति बढ़ चले, तब जर्मनी की प्रत्येक व्यक्ति अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग

पकाता था, इसी से यह देश छोटी २ ताल्लुकेदारियों में विभक्त हो गया, और उससे जर्मन महाराज का महत्व न्यून पड़ गया। काल पाकर महात्मा लूथर का जन्म हुआ (१४८३-१५८०); उनके उपदेश से जर्मनी ने अपने आचरण सुधारने और धार्मिक बनने की चेष्टा की। प्राटस्टंट मत का जन्म हुआ। थोड़े ही दिनों में अनेक मनुष्य लूथर के अनुयायी हो गये; उधर प्राचीन कैथोलिक मतानुयायियों की भी यहां कमी नहींथी। छोटी २ ताल्लुकेदारियों में जर्मनी पहले ही से विभक्त हो चुका था। अतएव राजनैतिक विरोध के मध्य में धार्मिक विरोध ने आकर हुताशन में घी का काम दिया; सारा पितृ-देश* श्मसान-भूमि हो गया। साम्राज्य ही के नष्ट होने का भय उपस्थित हो गया।

परस्पर का यह धार्मिक विरोध दिन प्रति बढ़ता ही गया। दोनों प्रतिपक्षी एक दूसरे को कड़ी दृष्टि से देखते थे। अंत में तीस वर्ष का प्रचंड युद्ध (१६१८-४८) प्रारंभ हुआ। इस में योरप की प्रायः सब शक्तियां शामिल थीं, और इस ने सारे योरप महाद्वीप को जड़ से हिला दिया। जर्मन साम्राज्य ही का इस में तहस-नहस नहीं हुआ, किन्तु साम्राज्य के साथ ही यहां का धन,

* जर्मन लोग अपनी मातृ-भूमि को फादर लैंड (Father-land) या पितृ-देश कहते हैं।

धर्म और तेज सभी नष्ट हो गये। पारस्परिक विरोध से पितृ-देश के प्रति भक्ति का भाव, तथा स्वजाति के गौरव का ध्यान, ये दोनों ही बातें यहां के निवासियों के हृदय से लोप हो गईं। किसी ताल्लुकेदार के बुलाने से एक, किसी के निमंत्रण से दूसरी, इस प्रकार समस्त यूरोपियन शक्तियां इस प्रचंड युद्ध में शामिल थीं। "हमारा यह सहायक विदेशी है, हमारी सहायता के लिये नहीं, किन्तु स्वार्थ-साधन के लिये यह यहां आया है; पुनः, हमारा प्रतिपक्षी हमारा ही भाई जर्मन है, उसके साथ मेल करने ही से देश का कल्याण है," इत्यादि उच्च कोटि के प्राकृतिक विचार सब जर्मनों के हृदय से लुप्त हो गये।

अंत में विदेशियों ही के दबाव से यह प्रचंड युद्ध १६४८ में वेस्टाफेलिया की संधि से समाप्त हुआ। इस देश का कुछ भाग फ्रांस और स्वेडेन के हाथ जाता रहा; हालैण्ड और स्विटज़रलैण्ड दोनों स्वतंत्र हो गये, दो-तिहाई जर्मन युद्ध में काम आये, सैकड़ों नगर नष्ट हो गये, व्यापार को बहुत बड़ा आघात पहुंचा, और इस साम्राज्य—राज्य—की शक्ति अब बहुत न्यून पड़ गई।

फ्रांस का अभ्युदय

इधर जब से जर्मनी में अनर्थ का आरंभ हुआ, इसके दुर्भाग्य के दिन आये, इसकी राज्य-श्री तेज-हीन होकर अस्त हुई, तभी से फ्रांस का अभ्युदय हुआ; कुछ ही दिनों में यहां की राज्य-क्रान्ति

अत्यंत जाज्वल्यमान हो गई, और यह देश अपनी उन्नति के खमस्तक पर पहुंच गया।

जर्मनी की अस्थि-सात्कारिणी (Ossified) और स्वमताभिमानिनी (Dogmatic) धार्मिक बुद्धि ही उसके तहस-नहस का कारण हुई। परंतु इधर फ्रांस में एक अद्भुत धर्माधिकारी का प्रभाव बढ़ा; ल्यूकान का बड़ा महंत रिशलिये (Richelieu) फ्रांस के महाराज का मुख्य मंत्री हो गया। उसी ने निज बुद्धिमत्ता और शासन-चातुर्य्य से यहां पर एक-राजात्मक शासन स्थापित कर देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया। "विभक्त फ्रांस में ऐक्यता स्थापित करने, इटली को बचाने, जर्मनी को गड़बड़ में डालने, इंगलैण्ड को दिक़ करने, स्पेन को निर्बल बना देने और योरप के बड़े २ कामों के परिचालन कराने ही के लिये मानो ईश्वर ने इसे निर्वाचित करके इस भू-लोक में भेजा था"। फ्रांस में ऐक्यता स्थापित करके इसने उसको सभी बातों में अपर यूरोपियन राष्ट्रों से इतना आगे बढ़ा दिया, कि शताब्दियों तक फ्रांस सारे योरप को पीछे डाले सांसारिक विषयों का लाभ उठाता रहा।

जर्मनी की राष्ट्रीय शक्ति जब परस्पर के वैर-विरोध में नष्ट होती जा रही थी, तब इधर फ्रांस अपनी इस शक्ति को अपने पड़ोस की रियासतों के दबाने और दबोचने

किम्वा अपनी गालो-फ्रैंक जाति की स्वाभाविक कीर्ति और यश के बढ़ाने में लगा रहा था। अपने प्रावल्य से वह इस समय अपने को सारे संसार का स्वामी और नेता समझता था; अतएव प्रत्येक देश के झगड़ों में शामिल होना वह अपना कर्त्तव्य मानता था। स्वदेश-प्रेम का उसका यह मर्य्यादोपरि प्रोत्साहन, तथा निकट-वर्ती राज्यों के प्रति उसका यह द्वेष-भाव उसकी प्रारंभिक प्रबलता किन्तु अंतिम निर्बलता का कारण हुआ। लुई १४ वें के राज-काल में उपर्युक्त दोनों बातें फ्रांस भर में पूर्णतम रूप में व्याप्त हो गईं थीं। लुई के यशस्कामी स्वभाव ने उसको अपनी सीमा बढ़ाने तथा आस-पास की निर्बल रियासतों को दबाने के लिये उत्कर्षित किया। इस कार्य्य में उसने अपनी सीमा पर के अनेक देशों को तहस-नहस करने तथा वहां के निरपराध निवासियों को बध करने में कुछ भी सोच-विचार नहीं किया।

इधर ज्यों २ राजा का अत्याचार सीमान्त देशों में बढ़ता गया, त्यों २ उधर स्वयं फ्रांस की प्रान्तिक प्रजाओं का हृदय भी राजनैतिक विचारों से रहित होता गया, और क्रमशः समस्त साम्राज्य का राजस्व संकार्षत होकर केवल पेरिस राजधानी ही में आ गया। राजधानी में राजा निरंकुश होकर शासन करने लगा, और कुछ काल के पश्चात् पेरिस की प्रभा राज-सिंहासन-मात्र से

झलकती थी। क्रमशः राज-सिंहासन की प्रभा भी मंद पड़ी, और अंत में पेरिस नगर ही में सब शक्ति संकर्षित हो आई।

अब जगद्विख्यात् फ्रान्स-देशीय घोर विभ्राट प्रारम्भ हुआ (१७८९), राज-शक्ति को सर्वथा चूर्ण करके और उसके सब राजस्व को स्वयं अपने हाथ में लेकर शासन-कार्य्य में राजधानी ही प्रवृत्त हो गई। इस शासन-मण्डली के हृदय में फ्रान्स की अलौकिक शक्ति के महत्व का विचार समाया। इसके पूर्व इस देश में राजस्व को लोग अलौकिक, पूज्य और ईश्वरीय मानते थे। अब राजा को इन लोगों ने मार डाला था, तथापि वे समझते थे, कि राजा की वह ईश्वरीय शक्ति स्वयं राज्य में—अर्थात् शासनाधिकारियों में—अब भी विद्यमान है।

इसी समय इस राज-विप्लव का ज्येष्ठ तथा परम पराक्रमी पुत्र वीर नैपोलियन बोनापार्ट अपनी विजयी सेना को राइन नदी के पार जर्मन देश में उतार ले गया, और इसी वीर योद्धा के परामर्श से फ्रान्स देशीय राजसी गरुड़ * निज युवावस्था की चढ़ती हुई ओजस्विता में अपने पक्ष को समस्त मध्य और दक्षिणी योरप में फैला लिया, तथा अपने पंजों में विद्युद्-दंड को धारण किये टेगस नदी के उष्ण तटों से होते हुए, एटना

* फ्रांस देशीय सैनिक ध्वजा, जिसमें गरुड़ पक्षी का चिह्न अंकित है।

पहाड़ के जाज्वल्यमान शिखरों तक, तथा उधर हिमाच्छादित मास्को के समतल प्रदेशों पर्यंत उसने अपना भयानक तेज फैलाकर समस्त योरप को स्तब्ध और विस्मित कर दिया। जिस लोह-दंड से समस्त योरप इस समय पिसा जाता था, फ्रांस अपने लिये उसी दंड को परम स्वाभाविक और उपयुक्त मानता था। पुनः, यद्यपि फ्रांस में नैपोलियन, बूर्बों और आर्लियन वंश, प्रजा-सत्तात्मक, राजा सत्तात्मक शासनाधिकार शीघ्रता पूर्वक एक दूसरे के पश्चात् बढ़ते और बिलाते गये, परन्तु इन सब परिवर्तनों के मध्य में भी यहां वालों के हृदय में फ्रांस-देव की अलौकिक महिमा का भाव पूर्ववत् बना रहा आया, और देश की सुपूज्य मूर्ति के चरणों पर प्रत्येक शासक-वर्ग अपना २ मस्तक नवाता रहा।

फ्रांस के इस प्रभुत्व और महत्व का कारण उसके पड़ोसियों की निर्बलता और पारस्परिक विरोध था; इसको स्थिर रखना और अधिक करना, ये ही दो बातें सुचतुर रिशलिये की मुख्य विदेशीय नीति थी। इसमें वह सफलीभूत हुआ। स्पेन, जो कुछ दिनों पूर्व, स्थली और समुद्री दोनों शक्तियों में प्रबल था, अब दीन और रुज-ग्रस्त हो कर अत्यंत ही हीनावस्था को प्राप्त हो चुका था। इटली और जर्मनी दोनों ही परस्पर के विरोध और लड़ाई-झगड़ों

से फूट २ कर छोटी २ रियासतों और ताल्लुकेदारियों में विभक्त हो गये थे। इटली के लिये किसी बड़े और साहसी कार्य्य करने का सावकाश नहीं था; केवल नेपिल्स का राज्य इस देश में कुछ बड़ा था, परंतु वह भी एक तो योरप के छोर पर, तथा औरों से दूर पड़ता था, दूसरे वहां के निवासियों में पारस्परिक विरोध होने से वह अत्यंत निर्वल भी हो रहा था। परन्तु जर्मनी की दशा इस से भिन्न थी; इस साम्राज्य के दो राज्यों में, अर्थात् प्रशिया और आष्ट्रिया में, बहुत बड़ी शक्ति थी। पर ये दोनों भी अपनी सीमा को पूर्व दिशा में पोलैण्ड, हंगरी और टर्की ही की ओर बढ़ाना चाहते थे; इससे पश्चिमी जर्मन रियासतें निस्सहाय पड़ कर फ्रांस के चंगल में फँसती जातीं थीं।

प्रशिया का अभ्युत्थान

एक दूसरा वैयोगिक कारण भी यहां विद्यमान था। तीस-वर्षीय प्रचंड धार्मिक युद्ध में (१६१८-४८) जर्मनो के हृदय की साम्राज्यकीय राजनैतिक बुद्धि विनष्ट हो गई थी। प्रत्येक जर्मन राज्य—विशेषतः आष्ट्रिया—मुख्य साम्राज्याधिकार को अपने हाथ में करना चाहता था, इससे ब्रैन्डेन्वर्ग-प्रशिया की एक दूसरी प्रबल शक्ति का अभ्युत्थान हुआ, और क्रमशः उसकी उन्नति हो चली। इस तरह पर जर्मन साम्राज्य में दो प्रतिद्वन्द्वी दल उत्पन्न हो गये, दक्षिण-जर्मन राज्य,

और उत्तर-जर्मन राज्य, किम्वा हैप्सबर्ग वंशीय राजा, और होएनट्ज़ोल्लर्न वंशीय राजा। यद्यपि यही प्रतिद्वंद्विता अंत में इस साम्राज्य की संहति और ऐक्यता का कारण हुई, किन्तु उस समय वही जर्मन साम्राज्य के लिये तत्कालीन फूट और वैर-विरोध के रूप में इसकी विनाशकर्त्री कृमि हो गई !

प्रशिया के राजा फ्रेडेरिक और आष्ट्रिया की रानी मैरिया थरसा में सिलेसिया प्रांत के लिये तीन बार युद्ध हुए। अंत का युद्ध यूरोपियन इतिहास में 'सात-वर्षीय युद्ध' के नाम से विख्यात है। इंगलैण्ड की सहायता से होएनट्ज़ोल्लर्न वंशीय राजा फ्रेडरिक को इसमें विजय-विभूति तो प्राप्त हो गई, परंतु इन दोनों वंशों का विरोध और पारस्परिक अविश्वास बढ़ता ही गया। इसी विरोध के कारण योरप-विजेता नैपोलियन को प्रशिया और आष्ट्रिया दोनों को, एक एक करके, पराजित करने और अपने जगद्विख्यात साम्राज्य के स्थापित करने का सुअवसर मिल गया। इसके पश्चात् भी बहुत दिनों तक इन दोनों राज-कुलों का विरोध शान्त नहीं हुआ। बायना की महासभा में आष्ट्रिया ही ने फ्रांस से मिलकर प्रशिया को दो असंयुक्त खंडों में विभक्त करवा दिया था। अपने प्रबल पड़ोसी के प्रति ईर्ष्या और द्वेष की बुद्धि ही रखने से मेटेर्निक * और तालीरां † सदृश राजनीतिज्ञ महापुरुषों ने यह नहीं

* आष्ट्रिया का प्रधान मंत्री। † फ्रांस का प्रधान मंत्री।

समझ पाया, कि अपने इस अनिष्ट कार्य्य से इन दोनों ने प्रशिया का अनिष्ट नहीं, किन्तु भविष्य बना दिया, अर्थात् भावी जर्मन साम्राज्य का बीज बो दिया।

यदि इन लोगों ने प्रशिया के इच्छानुसार उसको उस समय कुछ पोलैण्ड की भूमि दे दी होती, तो प्रशिया दो भिन्न २ जातियों का राज्य बन गया होता और उस के लिये केवल पूर्व की ओर अपने पांव फैलाने की संभावना रह सकती, और उस दशा में इधर राइन तट के सीमा-प्रांतीय प्रदेश निर्बल पड़ जाते। ऐसा न करके इन लोगों ने प्रशिया का आधा राज्य राइन नदी के समीप कर दिया; उधर इसी राइन के दूसरे तट से फ्रांस का परम शक्तिशाली साम्राज्य प्रारंभ होता था। अतएव प्रशिया के लिये अपने दोनों विभागों के मध्य की भूमि को किसी न किसी प्रकार से अपने राज्य में शामिल कर लेने की राजनैतिक आवश्यकता पड़ गई, अर्थात् उत्तर-जर्मनी के केन्द्रस्थ भाग को कल-बल-छल से अपने राज्य में मिला लेने के लिये उसे विवश हो जाना पड़ा। सिद्धान्त यह कि उपर्युक्त दो सुप्रसिद्ध और राज-नीतिज्ञ महा मंत्रियों की अदूरदर्शिता ही ने फ्रेडेरिक दि ग्रेट (द्वितीय) को उस मार्ग पर चलने की विधि बताई, जिससे अंत में आधुनिक जर्मन साम्राज्य बन सका।

जर्मनी में राष्ट्रीय बुद्धि का प्रादुर्भाव

नैपोलियन द्वारा जर्मनो पर अत्याचार, तथा उनकी प्राचीन और प्यारी शासन-विधियों का निर्दयता के साथ उल्लंघन किया जाना, उनके हानि-लाभ की बातों पर ध्यान न दिया जाना, इत्यादिक अनुचित कार्य्यों से उनके हृदय की चिर-विस्मृत ऐक्यता तथा पारस्परिक सहानुभूति पुनः जागृत हो उठी; तब से वे लोग समझने लगे, कि वे सब के सब एक राष्ट्र हैं, और प्रत्येक की लाभ-हानि से दूसरे का घनिष्ट संबंध है। विदेशियों के शासन से मुक्ति पाने तथा स्वतंत्रता लाभ करने के लिये १८१३-१५ के नैपोलियनीय संग्रामों में इन लोगों को बहुत दिनों के पश्चात् पहलेही-पहल इस एक-राष्ट्रीयता और संहति का प्रभाव प्रकट देख पड़ा था। अपर देशों के राज-नीति-कुशल पुरुषों ने इसपर कुछ ध्यान नहीं दिया; उन लोगों ने जर्मन-संहति को वेस्टाफैलिया वाली संधि * की अप्राकृतिक कार्यवाही का प्रतिफल मात्र माना था। जर्मनो की फूट और निर्बलता आष्ट्रिया के उपकार और लालची फ्रांस की मनोरथ-सिद्धि के लिये अंतर्जातीय विधि (*International Law*) हो रही थी।

इस घटना के प्रायः पचास वर्ष पश्चात् निज बाहु-बल से प्रशिया ने उन दोनों देशों के अनुचित विचारों को भ्रंश कर योरप की आंखें खोल दीं।

* यह संधि तीस-वर्षीय संग्राम के पश्चात् सन् १६४८ ई० में हुई थी।

केनिग्ग्राट्ज़ (सैडोवा) में विजय प्राप्त करके प्रशिया ने केवल आष्ट्रिया ही को पद-दलित नहीं किया, वस्तुतः उसने फ्रांस की सापेक्षिक अंतर्जातीय शक्ति में भी धक्का पहुंचा दिया। उस समय आष्ट्रिया ने स्वभावतः अपने मित्र फ्रांस से कुछ ऐसी सहायता चाही थी, विजेता प्रशिया के ऊपर कुछ ऐसा राजनैतिक प्रभाव पहुंचाने की उसने इच्छा प्रगट की थी, कि जिसमें उसको इस पराजय से कुछ विशेष हानि न उठानी पड़े। परन्तु इधर जर्मनी के सुचतुर और राज-नीति-कुशल मंत्री प्रिन्स बिस्मार्क ने फ्रांस को इस संधि-विषयक वार्तालाप में हस्ताक्षेप करने रोक रखने का यत्न किया, और उसमें उसको सफलता भी हो गई; आष्ट्रिया को निस्सहाय संधि भी करनी पड़ गई। किसी विदेशी राष्ट्र को जर्मन साम्राज्य की एक इंच भी भूमि के बिना दिये ही * जिस योग्यता के साथ बिस्मार्क ने इस कार्य्य में अपना उद्देश्य साधन किया था, वह राज-नीतिक पटुता तथा स्वयं उसकी योग्यता का एक उत्तमोत्तम उदाहरण कहा जा सकता है।

उत्तरी जर्मन संहति की संस्थापना

यह संधि प्रेग नगर में सन् १८६६ ई० में हुई थी। मध्य योरप पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। प्रशिया और आष्ट्रिया

* पृष्ठ २४ देखो।

के पारस्परिक विरोध और लड़ाई-झगड़ों से जो इधर की छोटी २ रियासतों में अशान्ति रहा करती थी, उसका अब अंत हो गया। अब आष्ट्रिया वहां से हट गया, और प्रशिया ने अपने राज्य के दोनों विभागों के मध्य की सब छोटी २ रियासतों को अपने साम्राज्य में मिला लिया, इससे इसकी शक्ति बहुत बढ़ गई। प्रशिया की प्राचीन साम्राज्य-श्री पुनः प्रफुल्लित हुई, और निज नेतृत्व में मेन नदी के दहने किनारे की सब जर्मन रियासतों को संयुक्त करके उसने उत्तरी जर्मन-संहति नाम की एक संस्था स्थापित कर ली। केवल बेडेन, वर्टेमबर्ग और बवेरिया की तीन दक्षिणी रियासतें इस संस्था से अलग और तब भी स्वतंत्र रह गईं; परन्तु फ्रांस और प्रशिया सदृश दो शक्तिमान् साम्राज्यों के मध्य में होने से इनको भी अब अपने सहायक ढूढ़ने की राजनैतिक आवश्यकता पड़ गई। इसके लिये उत्तरी जर्मन-संहति इन्हें स्वाभाविक मित्र और उपयुक्त सहायक सूचित हुआ। प्राचीन विभक्त जर्मनी और तब के ऐसा वैर-विरोध अब यहां नहीं रह गया था; उसके स्थान पर एक नवीन जर्मन साम्राज्य का प्रादुर्भाव हो रहा था। आकार यद्यपि इसका छोटा और प्राचीन जर्मन साम्राज्य से बहुत कम था, परन्तु यहां के निवासी

सब एक जाति के थे, और सभी प्रायः एक ही भाषा के बोलने वाले थे। इनका नेता एक बहुत बड़ी शक्ति थी, जिस में इन सब को सुमार्ग पर चलाने की सामर्थ्य थी। सभी जर्मन रियासतें इस बात को समझती थीं, तथापि वे अभी तक एकी-भूत नहीं हो सकी थीं। इसके लिये किसी ऐसे सुअवसर की आवश्यकता थी, जिस पर वे सुगमता पूर्वक संमिश्रित हो जातीं।

फ्रांस-जर्मनी के मध्य ईर्ष्या-विवृद्धि

जिस संधि से प्रशिया का इतना महत्व बढ़ा, ऐसे २ उत्तमोत्तम फलों की उसे संभावना हुई, उसी को फ्रांस के महाराज नैपोलियन तृतीय ने अपनी राजनैतिक पराजय समझी। प्रेग की संधि पर हस्ताक्षर हो जाने के पश्चात् उन्होंने एक पत्र में लिखा था:—"प्रशिया के साथ फ्रांस को अब अवश्यमेव युद्ध करना होगा।" इधर प्रशिया का राज-मंत्री प्रिन्स बिस्मार्क भी यही समझता था, और उसके लिये तभी से उसने प्रबंध भी करना प्रारंभ कर दिया था। पहले तो एक संधि उसने रूस से इस विषय की कर ली, कि फ्रांस के साथ के युद्ध-समय में वह आष्ट्रिया को प्रशिया के विरुद्ध फ्रांस का साथ देने से रोक रखे। जिस घटना को—युद्ध को—नैपोलियन और बिस्मार्क अवश्यंभावी समझते थे, उसी के शीघ्र आगमन के लिये इन दोनों देशों के अनेक मनुष्य, और मुख्य कर वहां के

सैनिक नायक-गण नित्य ही प्रतीक्षा करते और हार्दिक इच्छा रखते थे। प्रशिया के जेनरल स्टाफ़ के सैनिक नायक जिस लालसा और उत्साह के साथ इस अवश्यम्भावी युद्ध के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे, वह अकथनीय है, उसका सारांश मोटके के इन शब्दों से कुछ २ प्रकट होता है :—"यदि परमेश्वर मुझको इस युद्ध में अपने योद्धाओं को शत्रु के सम्मुख उपस्थित कर देने का अवसर दे देता, तो 'पुनि न सोच तन रहै कि जाऊ'; किन्तु मोटके प्रशिया राज्य की केवल सेना का अफ़सर था, उसको राजकीय मामलों में हस्ताक्षेप करने के कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं थे, अतएव जब तक उसको इस युद्ध में चलने की आज्ञा नहीं दे दी जाती, तब तक वह शान्त बैठे रहने के सिवाय कुछ नहीं कर सकता था। युद्धाकांक्षी जर्मनी में उस समय अधिक नहीं थे, आष्ट्रिया के साथ के युद्ध के पश्चात् प्रेग की संधि में प्रतिष्ठा-लब्ध होकर वहां के लोग कुछ काल के लिये संतुष्ट हो गये थे।

फ्रांस की दशा कुछ और ही थी। लुई १४-वें ही के समय से, और विशेष कर विप्लव के समय से, फ्रांस अपने को योरप की प्रधान सामरिक शक्ति मानता, और स्थली सैनिक शक्ति में दूसरे को कुछ भी नहीं समझता था। राज-विप्लव काल में फ्रांस को जो वाटरलू के संग्राम में पराजय उठानी पड़ी थी, उस से उसकी

प्रतिष्ठा में कुछ भी बट्टा नहीं लगा था, क्योंकि उसमें प्रायः समस्त योरप की अपरम्पार सेनायें वीर नैपोलियन प्रथम के विरुद्ध हो कर फ्रांस से लड़ीं थीं। अब तक योरप महाद्वीप पर इसका प्रभाव सर्वोपरि गिना जाता था, वही अग्रगण्य माना जाता था, और जमनी! उसको तो फ्रांस कई बार पद-दलित कर चुका था, तब तक तो उस की यूरोपियन सामरिक शक्तियों में कोई दर ही नहीं थी; किन्तु इस समय तुच्छ प्रशिया छोटी २ जर्मन रियासतों को जोड़-बटोर, फ्रांस की उपेक्षा करके अपने को उसी की कक्षा का एक स्वतंत्र सामरिक शक्ति बनने का दावा करता था। यह फ्रांस के लिये असह्य था, प्रशिया के विजयों ने उस के हृदय में ईर्ष्या उत्पन्न कर दी। केनिग्ग्राट्ज़ (सैडोवा) की विजय के सामने सोल-फेरीनो * की विजय की प्रतिभा मंद पड़ गई। फ्रेञ्च राष्ट्र का कोप-शील जातीय अहंकार प्रशिया के इस दर्प को सहन नहीं सका। उस विजय को फ्रांस अपने लिये समराह्वाहन मान लिया, उसे वह अपने प्रति अपकार समझ लिया। अतएव प्रशिया के इस गर्व को—इस अहंकार को—शीघ्रता पूर्वक चूर्ण न कर लेने में उसको अब अपनी मान-हानि सूचित होती थी, इसके लिये समस्त फ्रेञ्च जाति भीतरही भीतर उद्विग्न हो कर जलती जा रही थी।

* इस युद्ध में फ्रांस ने आष्ट्रिया को १८५६ में पराजित किया था।

कोई भी बड़ी शक्ति भला ऐसी मान-हानि, ऐसी उपेक्षा कब सह सकती थी। फ्रांस ही की शक्ति उस समय भूमंडल में प्रथम गिनी जाती थी, प्रशिया का तो तब तक कोई नाम भी नहीं जानता था। मैक्सिको में फ्रांस को विजय (१८६०) मिली थी, अवश्य, परंतु उस में लाभ की अपेक्षा हानि अधिक उठानी पड़ी थी, द्रव्य बहुत व्यय करना पड़ा था। उस समय अपने साम्राज्य के लिये फ्रेञ्च सरकार को कुछ ऐसे कार्य्य कर दिखलाने की राजनैतिक आवश्यकता थी, जिसके द्वारा देश को प्रकट कुछ वास्तविक लाभ देख पड़ते। वह अपने साम्राज्य के लिये कुछ ऐसी विजय-विभूति, कुछ ऐसा गौरव प्राप्त करना चाहती थी, जिसके सम्मुख योरप की तत्कालीन घटनाओं का तेज मंद पड़ जाता। ऐसे ही विचार, ऐसे ही ध्यान, उस समय प्रत्येक फांसीसी के हृदय में उपस्थित हो रहे थे, और इन विचारों को सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ दांनां ने उसी समय इन सार-गर्भित शब्दों में प्रकट किया था :—"फ्रांस की प्राकृतिक सीमा समुद्र, राइन नदी, आल्प्स और पीरीनीज़ पहाड़ हैं।" इन शब्दों से यहां वालों की आभ्यन्तरिक लालसा राइन नदी के बांये तट के देशों और रियासतों को अपने साम्राज्य की सीमा के अंतर्गत कर लेने की सूचित होती है। इस देश के कवियों तथा एतिहासकों से प्रोत्साहित और चिरकाल से

उद्दीपित यह लोलुपता कुछ आज की नहीं थी, यह बहुत प्राचीन थी। इसी के कारण जर्मनी देश के कार्लोविंजियन वंशज राजाओं * के समय में भी फ्रांस से अनेक युद्ध हुए थे। फिलिप आगस्टस † और चार्ल्स सप्तम ‡ के राज-काल में पुनः इसीके लिये १२-वीं और १५-वीं शताब्दियों में भी युद्ध हुए थे। हेनरी द्वितीय †† के समय में पुनरपि इसकी चर्चा छिड़ी थी, और लुई १४-वें ‡‡ के समय में ख़ास तौर पर फ्रांस वालों ने इस प्रांत को दबाने के लिये अत्यन्त प्रचंडता पकट की थी। अंत में

*कार्लोविंजियन वंश:—इस वंश का अधिष्ठाता प्रसिद्ध शार्लमेन नामक प्राचीन जर्मन साम्राज्य का महाराजा था। वह ७६८ में फ्रैङ्क जातियों का राजा हुआ, और ८०० में प्राचीन रोमन साम्राज्य का महाराजा हुआ।

†फिलिप (द्वीतीय) आगस्टस (११८०-१२२३) :—यह फ्रांस का महाराजा था। इंगलैण्ड के राजा रिचार्ड क्योर डि लियन (प्रथम) के साथ इसने क्रुसेड नामक धर्म-युद्ध में योग दिया। इस से और इंगलैण्ड के राजा जान में नार्मंडी के लिये झगड़ा हुआ। अपने उत्तम शासन से इसने फ्रांस के राज्य को दूना कर दिया।

‡चार्ल्स सप्तम (१४२२-६१) :— इसके समय में फ्रांस और इंगलैण्ड में बहुत विकट अनेक संग्राम हुए; अंत में ज्वान दार्क नाम्नी एक किसान कुमारी की उत्तेजना और सहायता से इस को इंगलैण्ड के ऊपर विजय मिली, और इसी के राज्य-काल में सुप्रसिद्ध 'शत-वर्षीय युद्ध' की समाप्ति भी हुई।

††हेनरी द्वितीय (१५४७-१५५९) :—यह राजा अत्यंत युद्ध-प्रिय था; इंगलैण्ड को फ्रांस की भूमि से बिल्कुल अलग कर दिया, और जर्मनी से मेज़ (Metz) दग़ाबाज़ी से छीन लिया।

‡‡लुई १४-वां (१६४३-१७१५):—यह फ्रांस देश का बड़ा ही प्रतापी राजा हुआ। पूर्ण एक-राज-सत्तात्मक राज्य की पराकाष्ठा इसी के समय में पहुँची। इस के समय में स्पेन के उत्तराधिकार के लिये बहुत दिनों तक युद्ध होता रहा। फ्रांस की इस के राज्य-काल में बहुत उन्नति हुई; वह एक अत्यंत सभ्य, समृद्धि-शाली और शक्तिमान साम्राज्य हो गया।

विप्लव और नैपोलियन के समय में फ्रांस का यह चिरकालीन मनोरथ कुछ काल के लिये सिद्ध भी हो गया था।

यह बात सत्य है, कि नैपोलियन की विजय स्थायी नहीं हुई, तथापि उसको फ्रांस भूला भी नहीं था, और कम से कम नैपोलियन तृतीय भला उसको कब भूल सकता था, क्योंकि एक तो वह स्वयमेव वीर योद्धा था, दूसरे, विजयी नैपोलियन के नाम, सिंहासन और मुकुट धारण करने वाले को अपने उपनाम की वह उज्वल कीर्ति कैसे विस्मृत हो सकती थी! नैपोलियन तृतीय निज राज्य-काल के प्रारंभ ही से अपनी पश्चिमी सीमा को बढ़ाना चाहता था, किन्तु प्रशिया की सम्मति के बिना इस कार्य्य के करने में भय उपस्थित होने की संभावना थी; अत-एव वह अपने इस अभीष्ट को प्रशिया को मिलाकर सिद्ध करना चाहता था। १८५५ में ही उसने एक दफ़े यह कहा था:—"प्रशिया स्वार्थ समझता है; अतएव वह प्रसन्नता पूर्वक फ्रांस को बीस लाख प्रजा दे देगा, जब उसके लिये स्वयं जर्मनी में सौ, सवा सौ लाख निवासियों को अपनी प्रजा बना लेने में इधर से कुछ आपत्ति नहीं की जायगी।" नैपोलियन तृतीय को टुक इस बात पर भी विचार करना चाहिये था, कि यदि प्रशिया का कोई होएनट्ज़ोल्लर्न वंशज जर्मनो के साथ ऐसी धोखेबाज़ी करने के लिये

मिल भी जाता,, तो प्रशिया में उस वंश वालों, का शास-नाधिकार ही नहीं रह सकता था। राइन-तटस्थ प्रदेशों को स्वाधिकार में लाने की उपर्युक्त दुरभिलाषा नैपोलियन के हृदय में क्रमशः दृढ़ही होती गई; यद्यपि अपर अनेक राजनैतिक विषयों में उस के विचार बहुधा परिवर्तित भी हो गये, परंतु उसकी वह अभिलाषा, वह लालसा, कभी एक क्षण के लिये भी न्यून नहीं पड़ी; और चूंकि उस को इस में कुछ भी सफलता कभी भी नहीं हुई, इस से वह अधिकाधिक उद्विग्न होता गया, क्योंकि उसको विश्वास होता था, कि यदि उसके बदले में वह उतना ही प्रयत्न किसी दूसरी ओर किये होता, तो उस में उस को निस्संदेह सफलता हो गई होती। उसका यह लालच, उसका यह उद्योग व्यर्थ गया—'न खुदा ही मिला न वसाले सनम, न इधर के हुए न उधर के हुए'— परंतु बातों ही से उसका उद्योग होता था, बिना प्रसन्नता पूर्वक दिये वह किसी की भूमि बलपूर्वक हरण करना नहीं चाहता था। आलिवर (*Ollivier*) की यह वक्तृता बहुत असत्य नहीं थी:— "अपने इटली के युद्धों के पश्चात् (१८५९) नैपोलियन प्रायः सर्वदा शांति-भाव से शासन किया"; और उस के शांत स्वभाव ही से सुचतुर बिस्मार्क को अपने कूट प्रपंचों के रचने में सफलता प्राप्त हो गई थी।

युद्ध के प्रारंभिक कारण

प्रशिया अपना बाहु-बल प्रकट कर 'लाखों' मनुष्यों को अपनी प्रजा बना लिया, और फ्रांस को इसमें कुछ नहीं मिला! उत्तरी जर्मन संहति स्थापित हो गई; दक्षिणी जर्मन रियासतों से उसकी संधि हो गई; अपने और शेष जर्मन रियासतों के स्वार्थों में अन्यन्यता होने से प्रशिया इन रियासतों की संरक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया! ये सब बातें फ्रांस के स्वार्थ के—उसके आभ्यन्तरिक उद्देश्य के—विरुद्ध हुईं; इनसे उसके राष्ट्रीय महत्व की अवहेलना होती थी; फ्रांस इसमें अपना सर्वथा निरादर समझता था। पुनः, आष्ट्रिया और प्रशिया के मध्य जब १८६६ में संधि-विषयक बात-चीत चल रही थी, तब नैपोलियन ने मोज़ेल और राइन नदियों के बीच के प्रदेशों के एक बड़े अंश के लिये जब अपना भी दावा पेश किया, तब बिस्मार्क ने इस कटूक्ति में उत्तर दिया था :—"इससे तो यह सिद्ध होता है, कि फ्रांस भी युद्ध चाहता है।" उस समय नैपोलियन एक तो अपने शरीर ही से अस्वस्थ था, दूसरे फ्रांस भी युद्ध के लिये प्रस्तुत नहीं था, अतएव उस को विजय-प्राप्त की दृढ़ आशा नहीं थी; इसीलिये उस समय उसने अपनी तलवार मियान के बाहर खींचना उचित नहीं समझा। आष्ट्रिया और प्रशिया के मध्य का युद्ध शीघ्र समाप्त हो जाने के कारण फ्रांस को अपनी राज-नैतिक चालों के चलने

का भी कुछ समय न मिला; वहां के राजनीतिज्ञों की सब गणनायें ग़लत हो गईं। इसमें फ्रांस ने अपनी दोहरी हानि मानी, एक तो उसके अग्रगण्य और सर्व-शक्तिमान् होने के माहात्म्य में धक्का पहुंचा, दूसरे इस के बदले में, क्षति-पूर्ण के रूप में, उसको कुछ प्राप्ति भी नहीं हुई। फ्रांस को एक विशेष दुःख यह भी हुआ, कि उस समय तक वह आष्ट्रिया ही की शक्ति को अपने विरुद्ध समझता था, परन्तु तब से वह प्रशिया को भी अपना प्रतिद्वंद्वी मानने लगा। प्रत्येक जर्मन अपने को फ्रांसीसियों द्वारा घृणा की दृष्टि से देखे जाते हुए, तथा उनके मुखों से अनुचित अर्थ में "प्रशीन" कह कर पुकारे जाते हुए सुनता था। सुतरां इधर तो एक प्राचीन शक्तिशाली शक्ति अपने को उपेक्षित और अपमानित समझती थी, उधर उन्नतोन्मुखी प्रशिया के नेतृत्व में नवीन जर्मन साम्राज्य अभ्युत्थित होना चाहता था—दोनों ही को अपना २ कर्त्तव्य-साधन इष्ट था। प्रत्युत यह एक ऐसा गूढ़ राजनैतिक प्रश्न उपस्थित हो गया था, जिसके शीघ्र हल कर दिये जाने की दोनों ओर से बहुत ही बड़ी उत्कंठा थी।

इस प्रश्न का उत्तर किस के लिये लाभदायक होगा, जर्मनी अथवा फ्रांस के? इसको तो केवल भावी जान सकती थी, परंतु कम से कम पेरिस-निवासी इसे हल करने के लिये अधिक उत्सुक थे, क्योंकि उन्हें पूर्ण

विश्वास था, कि इसमें फ्रांस ही को विजय-लाभ होगा। फ्रांस की कीर्त्ति-चंद्रिका को वे संसार में छिटकाने के लिये बहुत ही व्यग्र हो रहे थे।

दोनों देशों के हाथों में तलवार चमक रही थी, दोनों ओर से युद्ध २ की प्रतिध्वनि गूंज रही थी, बारूद को प्रज्वलित करने के लिये एक अग्नि-कणिका मात्र की आवश्यकता थी।

सुतरां फ्रांस की भावी दुर्दशा का कारण फ्रांस सर्कार नहीं हुई, किन्तु वहां के समाचार-पत्रों से उद्वेगित सर्व-साधारण प्रजा का मूक आन्दोलन।

स्वयं महाराज नैपोलियन तृतीय भी युद्ध नहीं चाहते थे, क्योंकि अभी तक उनके साम्राज्य की अवस्था बहुत कुछ संतोष-प्रद थी, अब भी फ्रांस योरप में प्रथम श्रेढ़ी की सामरिक शक्ति गिना जाता था, और स्वयं वे फ्रांस के सिंहासन पर निर्विघ्न बने रह सकते थे। परन्तु युद्ध से निज साम्राज्य के ऊपर उन्हें भयंकर आपत्ति आने की संभावना सूचित होती थी; प्रत्युत विजय-लाभ से फ्रांस को विशेष लाभ और अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त होने की बहुत कम संभावना थी, परंतु पराजित होने पर साम्राज्य की हानि के सेवाय स्वयं उनकी तो अत्यंत दुर्दशा होजाने वाली थी, क्योंकि उस दशा में वे सिंहासनारूढ़ कभी भी रहने नहीं पा सकते थे। अपनी इसी संदिग्ध-चित्तता तथा बढ़ती हुई

शारीरिक निर्बलता के कारण नैपोलियन को अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरों के निरवरत आग्रह के अनुसार कार्य्य करना पड़ा। "सैडोवा संग्राम का बदला लेना चाहिये, फ्रांस को इसकी प्रति-शुद्धि करणीय है," ऐसी बातें कह २ कर फ्रांसीसी चारों ओर आन्दोलन मचाते थे। ऐसे भयोत्पादक नादों से शंकित होकर नैपोलियन को भी अपनी इच्छा के विरुद्ध 'युद्ध, युद्ध,' का यत्किंचित् आन्दोलन करना पड़ा। पुनः, यथा-संभव युद्ध के लिये समुचित प्रबंध भी किये जा रहे थे। सामाज्य की सैनिक सेवा में योग देने का जो सार्वलौकिक विधान (Universal Military Service) किया गया था, उसको कार्य्य में परिणत करने के लिये युद्ध-मंत्री मार्शल नील भी उद्योग कर रहे थे। पैदल सेना में नई तर्ज़ की रैफलें दी गईं, तोप-ख़ाने में तत्कालीन उत्तमोत्तम तोपें भी मँगा ली गईं। प्रशिया के 'अधर्मी' आक्रमण से साम्राज्य की संरक्षा के लिये उसने सेना को दूनी कर देने की भी सम्मति दी।

लक्सेमबर्ग का झगड़ा

प्रशिया के प्रतिष्ठा-लब्ध होने पर फ्रांस भी अपने लिये भूमि की दक्षिणा चाहता था, चूंकि जर्मनी ख़ास में उसको एक इंच भी भूमि मिलने की संभावना नहीं देख पड़ती थी, अतएव लक्सेमबर्ग को उसने अपनाने की इच्छा प्रकट की। उस समय हालैण्ड का राजा वहां का

भी ग्रन्ड ड्यूक कहलाता था, और चूंकि बंड (Bund) नाम की प्राचीन जर्मन-संहति का वहां एक दुर्ग था, इसलिये उस में कुछ प्रशियन गैरिज़न (दुर्गस्थ सेना) रह कर उस प्रांत पर स्वाधिकार रखता था। अब प्राचीन जर्मन-संहति नहीं रह गई थी, अतएव लक्सेमबर्ग में अपना गैरिज़न रखने का प्रशिया का कुछ स्वत्व नहीं हो सकता था। लक्सेमबर्ग के ग्रैंड ड्यूक की हैसियत से हालैण्ड के राजा पर राजनैतिक प्रभाव डाल कर नैपोलियन ने लक्सेमबर्ग की ग्रैंड डची को ख़रीद लेने का प्रस्ताव किया। प्रशिया की स्वीकृति लेकर इस ग्रैंड ड्यूक-राजा ने फ्रांस के हाथ इस प्रांत को बेंच देने का बचन भी दे दिया, परन्तु ज्योंही यह बात सर्व-साधारण पर प्रगट हुई, फ्रांस जर्मनी दोनों देशों में इस पर महा घोर आंदोलन मच गया। उत्तरी जर्मन डायट (प्रशियन पार्लियामेन्ट) लक्सेमबर्ग को प्राचीन जर्मनी का एक अंग समझता था, अतएव उसकी संरक्षा के लिये तलवार तक खींचने की वहां से सम्मति दी गई। प्रशियन जेनरल और सैनिक नायक-गण समर के लिये अत्यंत उत्सुक ही थ; परन्तु फ्रांस उस समय तक अपने को पूर्णतः तय्यार नहीं समझा, क्योंकि नई रीति के अनुसार फ्रेञ्च सेना-संगठन तब तक अपूर्ण ही रह गया था; पैदल सेना के सिपाहियों की बंदूकें भी उस समय तक वहां पर मज़िल लोडिंग

अर्थात मुंह की ओर से भरी जाने वालीं थीं; इधर प्रशिया की सेना में विजयी नीडिल गन नामक रैफलों का प्रचार हो गया था। इसलिये मोटके का यह कथन था:— "यद्यपि मुझको किसी नये युद्ध की आकांक्षा तो अभी नहीं है; परंतु फ्रांस के साथ युद्ध लेने का जो यह अवसर हम लोगों को प्राप्त हो गया है, उस को अवश्य ही स्वीकार करने की मैं सम्मति देता हूं। बात तो यह है, कि आगामि पांच बर्षों के भीतर एक न एक दिन फ्रान्स के ऊपर हम लोगों को अपनी तलवारें खींचनी ही पड़ेंगी, इसलिये इसका फैसला जितना ही शीघ्र हो जाय, उतना ही हमारे लिये अच्छा है। फ्रांस की अपेक्षा हमारे देश का सैनिक-संगठन अभी तक अच्छा है, वहां वालों की अपेक्षा हमारी सेना में शस्त्रास्त्र भी अभी अधिकतर प्रभावकारी हैं। आगामि पांच वर्षों में इन सब बातों में फ्रांन्स भी हमारे तुल्य हो जायगा, तब, वे लाभ, जो इस समय हम लोगों को प्राप्त हैं, नहीं रह जायँगे। इसी लिये मैं कहता हूं, कि जितना ही शीघ्र उन से भिंड़ जांय, उतनी ही अधिक संभावना विजय की हम लोगों के हाथ में रहेगी।" बिस्मार्क और युद्ध-विभाग के मंत्री वान रून के विचार भिन्न थे, ये दोनों महाशय अभी शान्ति चाहते थे। उत्तरी जर्मन-संहति को अपनी पूरी सैनिक शक्ति पर पहुंचने के लिये अभी तीन वर्ष के समय की आव-

श्यकता थी, इसलिये जब तक कुछ ऐसे ही प्रबल कारण उपस्थित न हो जाते, अथवा स्वदेश की मान-मर्य्यादा की संरक्षा की आवश्यकता न पड़ जाती, तब तक बिस्मार्क स्वयं रणोपचारक बनना उचित नहीं समझते थे। परंतु समझते यह बिस्मार्क भी थे, कि फ्रांस के साथ का युद्ध अवश्यं-भावी है, अतएव युद्ध के लिये उत्तमोत्तम अवसर और व्याज ही ढूंढ़ने की केवल आवश्यकता थी। सब बातों पर सोच-विचार कर प्रशियाधिराज राजा विलियम ने अपनी आज्ञा-स्वरूप इच्छा प्रकट कर दी:—"मैं युद्ध नहीं चाहता हूं।"

हेग की सभा में बिस्मार्क ने ग्रैंड ड्यूक-राजा से साफ़ २ कह दिया :—"लक्सेमबर्ग के विषय में श्रीमान् स्वतंत्रता पूर्वक जैसा चाहें, प्रसन्नता पूर्वक कर सकते हैं, किन्तु इसके बिलग हो जाने पर जर्मनो को जो हार्दिक वेदना होगी, उसपर भी श्रीमान् को कृपापूर्वक ध्यान देना उचित है।" लक्सेमबर्ग के बेचने की सम्मति हालैण्ड के राजा ने केवल फ्रांस के भय से दी थी; किन्तु बिस्मार्क की बात से अब उनको साहस हो आया, और उन्होंने फ्रांस को यह कह कर टाल दिया:—"चूंकि प्रशिया इसके विरुद्ध है, अतएव मै लक्सेमबर्ग को अलग नहीं कर सकता हूं।" पेरिस वाले बिगड़े तो बहुत, किन्तु युद्ध लेने का

साहस उनको भी अभी नहीं था। तत्पश्चात् दक्षिण जर्मन रियासतों के विषय में यथाभिलिप्सित करने की फ्रांस ने प्रशिया को स्वतंत्रता देकर अपने लिये बेलजियम पर अधिकार करने की उसने स्वतंत्रता चाही। परंतु प्रशिया ने इस प्रस्ताव को भी स्वीकार नहीं किया, और इसका भी कुछ फल नहीं हुआ।

सर्वसाधारण पर यह प्रकट करने के लिये, कि फ्रांस ने अपने लिये कुछ लाभ—राजनैतिक—प्राप्त किया है, सब प्रधान शक्तियों की लंडन नगर में एक सभा कराके महाराज नैपोलियन ने प्रशिया पर यह दबाव डलवाया, कि लक्सेमबर्ग से वह अपना गैरिज़न (सेना) हटा लेवे। इस बात को प्रशिया ने स्वीकार कर लिया, किन्तु लक्सेमबर्ग की निरपेक्षता (Neutrality) के विषय में फ्रांस को भी वचन देना पड़ा।

इस समय इसी तुच्छ लाभ से फ्रांस को संतोष करना पड़ा। फ्रांस के रुज-ग्रस्त महाराज ने इस प्रश्न के तैं हो जाने पर यह कहा था:—"अच्छा हुआ! फ्रांस की बात रह गई! यदि विग्रह कहीं बढ़ गया होता, तो समर यह महा भयानक होता।" इन शब्दों से महाराज के हार्दिक विचार साफ़ २ प्रकट होते हैं, इनसे कुछ कुछ ऐसी ध्वनि निकलती है:—"प्रशिया

से युद्ध करना बँचाओ, नहीं तो वह तुम्हारे सत्यानाश का हेतु होगा !"

दोनों देशों में असंतुष्टता

दोनों देशों के सर्व-साधारण निवासियों के विचार वहां के शासनाधिकारी नेतावों से भिन्न थे। जब कभी किसी एक ही वस्तु को दबोचने की इच्छा कोई दो दावीदार करते हैं, और जब उसका निर्णय किसी तीसरे पंच के द्वारा कराया जाता है, पुनः, यदि वह पंच दोनों दावीदारों को प्रसन्न रखना चाहता है, तो यह निश्चय है, कि वह किसी को भी सर्वथा संतुष्ठ नहीं रख सकता है। यही दशा फ्रांस और प्रशिया की हुई; लक्सेमबर्ग के फ़ैसले से दोनों में से किसी को भी प्रसन्नता नहीं हुई।

प्रशिया के उत्तरी जर्मन मित्रों ने यह समझा, कि विजयी प्रशिया फ्रांस से भय खा गया। लक्सेमबर्ग पर जर्मनी का वास्तविक स्वत्व तो कुछ था नहीं, परंतु यथार्थता पर तो किसी ने कुछ ध्यान नहीं दिया, केवल प्रशिया के दब जाने पर और उचित बात को स्वीकार कर लेने पर सब में असंतुष्ठता छा गई। फ्रांस-निवासियों के दूसरे ही ख्याल थे, उनका यह कथन था:—"प्रशिया एक प्रांत के पश्चात् दूसरा गपकता गया, और फ्रांस कुछ न बोला, अब जब फ्रांस के लिये प्रशिया

से वैसे ही अनुनय की आवश्यकता हुई, तब यह प्रशिया! यह लोलुप और असंतुष्ट प्रशिया! फ्रांस को एक टुकड़ा के लेने को भी स्वतंत्रता नहीं देता; यह अयशस्कर और निंद्य है, फ्रांसीसी सदृश बुद्धिमान्, शक्तिमान् और श्रेष्ठतम राष्ट्र की गवर्नमेण्ट का ऐसी दशा में पतित होना मंत्रि-मंडल और शासनाधिकारियों की अदूरदर्शिता और विकल्प-शीलता से संभव हुआ है। बस! अब हो चुका; प्रशिया के दिमाग़ को दुरुस्त करने की आवश्यकता है, तथा फ्रांस के हित पर इतनी न्यून दृष्टि रखने वाली गवर्नमेण्ट को ऐसे कोंचे लगाना चाहिये, जिसमें उसकी आंखें खुलैं, और बिदेशी मामलों में वह भविष्यत् में कुछ दृढ़ता और साहस प्रकट करै।" सुतरां फ्रांसीसी असंतुष्ट थे, शांति से वे बेचैन थे, उनको नवीन वस्तु और अधिक यश लाभ कर लेने की इच्छा होती थी।

बिस्मार्क का उद्देश्य

युद्धार्थ समुचित प्रकार से प्रस्तुत होने के लिये प्रशिया को अपना प्रभाव जर्मनी के दक्षिणीय भागों पर पहुंचाने की बहुत ही बड़ी आवश्यकता थी, अर्थात् दक्षिणी जर्मन रियासतों को उत्तरी जर्मन संहति में शामिल करके समस्त जर्मनी को उसे अपने नेतृत्व में एकीभूत करने की आवश्य-

कता थी। यही बिस्मार्क की हार्दिक इच्छा थी, यही उसका जीवनोद्देश्य था, और येन-केन-प्रकारेण वह अपने इस उद्देश्य को सिद्ध करना ही चाहता था। वह समझता था, कि फ्रांस इसका पूर्ण विरोध करेगा, परन्तु इस विषय में उसको उसकी कुछ विशेष परवाह भी नहीं थी। फ्रांस के साथ का युद्ध अवश्यं-भावी था, रुजग्रस्त नैपोलियन के केवल मर जाने पर फ्रांसके सिंहासन और मुख्य शासनाधिकार के लिये घरेलू झगड़े ही के उठ जाने पर इस युद्ध के कुछ दिन टल जाने की संभावना थी। इस अवश्यं-भावी घटना को, जहां तक संभव हो, टालने की इच्छा बिस्मार्क को भी निस्संदेह थी, क्योंकि जर्मनी की सेना में प्रतिवर्ष एक लाख जवान नये भरती किये जाते थे, इससे क्रमशः उसकी सैनिक शक्ति अधिकाधिक प्रबल पड़ती जाती थी। पुनः, बिस्मार्क बवेरिया और वर्टेमबर्ग की दक्षिणी जर्मन रियासतों को बल-पूर्वक, उनकी इच्छा के विरुद्ध, जर्मन संहति में शामिल करना नहीं चाहता था, वह उनका मन किञ्चिन्मात्र भी दुखाना नहीं चाहता था, उनको स्वेच्छानुसार और स्वतंत्रता पूर्वक कार्य्य कर देने की बिस्मार्क की इच्छा थी। उसका कथन यह था:—"दक्षिणी जर्मन रियासतों का 'संहति' में शामिल होना तभी संभव हो

सकता है, जब वे रियासतें स्वयमेव, बिना किसी दबाव के, 'संहति' में मिला लेने के लिये प्रशिया से निवेदन करैं।" तत्कालीन स्वदेशीय और विदेशीय समस्यावों के देखने से ऐसी दरख़्वास्त होने की संभावना शीघ्र नहीं मालूम होती थी। इसी से युद्ध के शीघ्र छिंड़ने की भी अभी कुछ अधिक संभावना नहीं सूचित होती थी। दो गदा-युद्धकारी जवानों के सदृश फ्रांस और प्रशिया दोनों एक दूसरे की चालों को ध्यानपूर्वक देख रहे थे, और प्रत्येक अपने प्रतिद्वंद्वी को कुछ भी लाभ उठाने का सावकाश नहीं देना चाहता था।

भावी युद्ध के लिये प्रशिया धीरे धीरे सब तय्यारी कर रहा था। युद्धार्थ सेना-संकर्षण-विधान, व्यूह-रचना-विधान इत्यादि समरोपयोगी युक्तियों को सुचतुर मोटके गुप्त रीति से अहर्निश सोच और सिद्ध कर रहा था। इसके विरुद्ध समस्त फ्रांस केवल बलबलाता और घोर तुमुल मात्र मचाता रहा था।

फ्रांस में उद्विग्नता

समाचार पत्रों से, पार्लियामेण्ट-भवन से, बाज़ार और चौहट्टों से, तथा स्वयं सेना से भी महाराज नैपोलियन के ऊपर बाग्वाणों की भयंकर वृष्टि नित्य प्रति बढ़ती ही जाती थी। तत्कालीन गवर्नमेण्ट और शासनाधिकारियों के विरुद्ध जो सामयिक पुस्तकें और पत्रिकायें प्रकाशित होतीं थीं,

उनमें माशियर तेयर (*M. Thieuvs*) की इस सम्मति के ऊपर कि 'फ्रांस अब एक तृतीय श्रेढ़ी की शक्ति होगया है' दिन-प्रति वाद और प्रतिवाद प्रकाशित और उद्धृत होते थे। ज्यों २ नवीन नियमानुसार सेना संगठन के कार्य्य में उन्नति होती थी, त्यों २ फ्रांस को अपनी सैनिक शक्ति और रण-दक्षता के विषय में अधिकाधिक विश्वास बढ़ता जाता था। जब से सेना में चेसेपोट्स (*Chassepots*) और मिट्रेलल्यूसेज़ (*Mitrailleuses*) नाम की नवीनतम रैफलों का वितरण हो गया, तब से तो वह अपनी सेना को अजय्य और दुराधर्ष समझने लगा। मार्शल नील के इन बातों से 'हम अब प्रस्तुत हैं, युद्ध के लिये हम लोग पूर्णतः सन्नद्ध हैं,' और "अब विलंब केहि काज", तो फ्रांस का विश्वास और भी दृढ़ पड़ गया।

नैपोलियन का संकट

महाराज नैपोलियन बहुत ही संकट में था, अपनी सेना की सब त्रुटियां तो उसको नहीं मालूम थीं, परंतु इस बात से, कि प्रशिया के साथ के युद्ध में फ्रांस को विजय-लाभ में संदेह है, वह अपरिचित नहीं था। वह उद्भ्रांत हुआ कोई अच्छा अवसर, कुछ बाहरी साहाय्य ढूढ़ रहा था। बेलजियम की रेलवे लैन को फ्रांस की लैन में मिलाने का उसका उद्योग व्यर्थ हुआ। अपने बेलजियम संबन्धी प्राचीन प्रस्ताव को उसने पुनः एक बार बर्लिन दर्बार में उपस्थित किया, किन्तु वहां से

भी सूखा उत्तर मिला। आष्ट्रिया और इटली से मित्रता (*Alliance*) करने का भी उसका उद्योग निष्फल गया। प्रत्युत इस समय जिन २ कामों में वह हाथ डालता था, उनमें से किसी में भी वह सफल-मनोरथ नहीं होता था। राजनैतिक आन्दोलन दिन २ फ्रांस में बढ़ता और मर्य्याद-रहित होता जाता था। अनेक प्रकार के मान्सिक, शारीरिक और राजनैतिक दुःखों से वह अत्यंत विदीर्ण हृदय होकर संकल्प-रहित और अस्थिर-चित हो रहा था।

फ्रांस में उस समय एक-सत्तात्मक गवर्नमेण्ट थी, अर्थात् महाराज नैपोलियन को शासन करने का निरंकुश अधिकार था। नैपोलियन समझता था, कि फ्रांस पर शीघ्र कोई भारी आपत्ति आने वाली है, उसके राज-काज में कुछ गंभीर विघ्न उपस्थित होने वाला है; अतएव उसकी जिम्मेदारी से बँचने और अपना बोझ हलका करने के लिये उसने प्रजा को राज्य-व्यवस्था (*Constitution*) का स्वत्व दे कर गर्म-दल के नेता माशियर आलिवर को प्रधान मंत्री नियुक्त कर दिया। इससे उसको आशा होती थी, कि प्रजा का आन्दोलन कुछ न्यून पड़ जायगा; पुनः, माशियर आलिवर जर्मनी का हितेच्छुक था, इसने कुछ दिन पहले अपनी ऐसी सम्मति प्रकट की थी, कि जर्मनी के स्वाभाविक अभ्युत्थान में फ्रांस को

बाधा नहीं पहुंचाना चाहिये, तथा उत्तरी और दक्षिणी जर्मनी की संहति स्वीकार करने में फ्रांस को किसी प्रकार का भय वा संदेह करना अनुचित है। आलिवर की इन बातों से महाराज नैपोलियन को आशा होती थी, कि विदेशीय कार्य्य संभालने तथा शांति स्थिर रखने के लिये आलिवर उपयुक्त पात्र होगा। अभी आलिवर ने अपना मंत्रि-मंडल (*Cabinet*) भी बना नहीं पाया था, कि इधर नैपोलियन ने फरवरी सन् १८७० ई० में योरप की सब बड़ी २ शक्तियों से अपनी २ सेनायें न्यून (*Disarmament*) करने का प्रस्ताव किया। इसको प्रशिया ने स्वीकार नहीं किया। शांति स्थिर रखने के लिये तो उसने अधीर होकर यह प्रस्ताव किया था, किन्तु इससे युद्ध की ओर एक क़दम वह और आगे बढ़ गया। फ्रेञ्च साम्राज्य की आभ्यंतरिक दशा भी अधिक धैर्य-ध्वंसिनी हो रही थी। नये मंत्रि-मंडल से नैपोलियन को और भी कम सहायता मिली; इन मंत्रियों ने तो योरप की तत्कालीन दशा में भी अपने देश की सेना तक को न्यून कर देने की सम्मति दी। चैम्बर्स अर्थात् प्रतिनिधि सभा के अधिकारी सभासदों (*Majority*) को भी इन लोगों ने अप्रसन्न कर दिया, और अंत में शासन की डोरी रैडिकलों के हाथ में देकर स्वयं ये लोग अलग हो गये। पेरिस की सड़कों और चौराहों पर के विद्वेष-पूर्ण

व्याख्यानों तथा छोटे-मोटे विद्रोहों से राजधानी की भी अस्थिर-चित्तता और उद्विग्नता सूचित होती थी। राज-सत्तात्मक शासन प्रणाली के विरोधी सभी पक्ष के मनुष्य थे, सभी समाज को उत्तेजित करते थे। इन सब बातों से प्रकट होता था, कि इस मुमूर्षु साम्राज्य में किसी दैवी ही कृपा से नवीन जीवन शक्ति पुनः प्रवेश कर सकती है। प्रशिया के मान-मर्द्दन से बढ़कर और कोई भी पराक्रम-पूर्ण कार्य्य उस समय फ्रांसीसियों का चित्ताकर्षक नहीं हो सकता था।

भावी युद्ध के संबंध में फ्रांस के विचार

फ्रांस की साधारण राजनैतिक दशा को वाह्य-दृष्टि से देखने में उसी की विजय की बहुत कुछ आशा भी प्रकट होती थी। यहां के निवासियों के हृदय में राष्ट्रीय अभिमान भरा हुआ था, उनको विश्वास था, कि राइन नदी के उस पार के देशों की तत्कालीन राजनैतिक दशा बहुत काल तक उस अवस्था में बनी नहीं रह सकती है, अर्थात् प्रशिया से समस्त जर्मनी घृणा करता है। उनको यह भी आशा थी, कि युद्ध छिड़ने पर कट्टर कैथोलिक (*Ultramontanes*), रेडिकल्स (*Radicals*) अर्थात् गर्म दल वाले लिबरल्स, पैर्टिक्यूलरिस्टस (*Particularists*) अर्थात् होम रूलर्स (*Home Rulers*), और ग्वेल्फस (*Guelph*) अर्थात् हैनोवर प्रदेश के प्राचीन शाही दल वाले अपने (फ्रांस के)

तरफ़ हो जांयगे; पुनः उनको इस बात का तो पूर्ण विश्वास था, कि दक्षिणी जर्मन रियासतें तो अवश्य ही अपना (फ्रांस का) साथ देंगी, क्योंकि इनके निवासी प्रशियन सैनिक व्यवस्था से घृणा करते थे। फ्रांस को यह भी ख्याल था, कि आष्ट्रिया और डेन्मार्क भावी युद्ध में ज़रूर ही उसका साथ देंगे, क्योंकि न तो आष्ट्रिया को अपनी सैडोवा वाली पराजय, और न डेनमार्क को अपने शेल्सविग-हाल्स्टन प्रांतों की हानि (१८६४) ही तब तक भूली थी। उस समय इटली के राजा विक्टर इमान्युएल की तथा वहां की प्रजा की सहानुभूति भी फ्रांस के साथ थी; पुनः फ्रांस को यह भी मालूम था, कि जितने दिन युद्ध टलता था, प्रशिया की सैनिक शक्ति उतनी ही अधिकाधिक बढ़ती जाती थी, और उसी के साथ २ उसको अधिक लाभ प्राप्त होता जाता था। यह भी सुनने में आया था, कि नीड्ल गन के स्थान में प्रशिया अपनी सेना में कोई अधिकतर प्रभावकारी रैफल वितरण करने वाला है। पुनरपि, प्रशिया की निकटवर्ती छोटी २ रियासतों के निवासियों को नूतन राजनैतिक परिवर्तनो के देखने और सहने का क्रमशः स्वभाव पड़ता जाता था, इससे भी फ्रांस के लिये विलंब करना अनुचित था। उत्तरी जर्मन राइस्टा (*Reichatag*) महासभा के कतिपय प्रस्तावों से उस सभा के अनेक

सभासदों ने अपनी असम्मति तथा सैनिक कार्य्य से घृणा प्रकट की थी। उस सभा में यह भी कहा गया था:— "सेना-प्रधान देश से विद्या, धन और स्वतंत्रता का नाश हो जाता है। जर्मनी को इतनी सेना रखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि संसार में शान्ति विराजमान है। पुनः, चूंकि प्रशिया ही ने प्रथम अपनी सेना बढ़ाई है, इसलिये उसी को प्रथम इसे न्यून करना भी उचित है।"

राइस्टा सभा में केवल वक्तृता ही मात्र नहीं दी गई, किन्तु वहां से सैनिक ख़र्च इत्यादि के लिये टैक्स देना भी अस्वीकार कर दिया गया। उस सभा ने गवर्नमेण्ट को दिखला दिया, कि सभा-स्वीकृत-सम्मति के विरुद्ध वह कार्य्य नहीं कर सकती है। बिस्मार्क ने व्याज-स्तुति की ध्वनि लिये उस सभा में यह कहा था :— "माननीय सभ्य-गण की समझ में शायद प्रशिया के राज-प्रबंध का गुरुत्व केन्द्र ही अपने ठीक स्थान पर नहीं रह गया सूचित होता है।" इस सभा की कटूक्तियों पर विश्वास करके बहुत से फ्रांसीसियों को जर्मनी की ऐक्यता के विषय में संदेह हो गया था, और इसी से वे उसको फ्रांस की अपेक्षा निर्बल मान लिये थे। इधर बहुत से जर्मनो का यह ख्याल था, कि अभी केवल चार वर्ष पूर्व यहां के योद्धाओं ने दो शक्ति-शाली यूरोपियन साम्राज्यों को

रण-भूमि में पद-दलित कर विजय-लाभ किया है *, अतएव उनके विचारानुसार जब तक वहां उक्त दो समरों में विजय-लाभ करने वाली सेनायें तथा उनके स्टाफ अफ़सर-गण मौजूद थे, तब तक उन्हें भय खाने, किम्वा शीघ्रता करने की कुछ विशेष आवश्यकता नहीं थी।

युद्धागमन के चिह्न

इसमें तो कोई संदेह नहीं है, कि उस समय का यूरोपियन राजनैतिक आकाश बिल्कुल निर्मल था, क्षितिज के भीतर कहीं बादल का एक टुकड़ा भी देख नहीं पड़ता था। किन्तु यह निर्मलता भावी झंझा-वायु के आगमन की सूचना देने वाली थी, क्योंकि उसकी सहचरी अत्युष्णता और उद्विग्नता उस समय लोगों के हृदय को उत्तप्त कर रही थी। इस निर्वात और उष्णता की प्रचंडता से शायद इन दोनों देशों के नेता-गण भी अनभिज्ञ थे। पहले तो पवन का एक छोटा सा झोंका आया, साथ ही उसके कुछ मेघ के टुकड़े एकत्रित होते देख पड़े, और थोड़े ही काल में काली घटा छा आकर वह घोर रक्त-वृष्टि हुई, रण-भूमि से शोणित की वह धारा बह चली, और उसमें रुंड-मुंड हुए फ्रांस और जर्मनी दोनों देशों के इतने योद्धा बह गये, कि जिससे दोनों ही देश नष्ट और जन-शून्य हो गये।

* पहला १८६४ का डेनमार्क के साथ का युद्ध, दूसरा १८६६ का आष्ट्रिया के साथ का युद्ध।

प्रशिया का राजा विलियम जल-वायु परिवर्तन के लिये एम्ज़ नगर को गया था; बिस्मार्क, रून और मोटके अपने २ इलाकों में निज २ के काम कर रहे थे; तथा फ्रांस देश का बर्लिन नगरस्थ राजदूत माशियर बेनेडेटी भी जल-वायु-सेवन के लिये वाइल्डवाड में चला गया था। १८७० के ३० जून को फ्रांस के प्रधान मंत्री ने यह कहा था :—"इस समय की भांति शांति की अविच्छिन्न आशा इसके पूर्व बहुत दिनों से कभी भी नहीं देख पड़ती थी, किसी भी दिशा में कोई भी ऐसी बात, कोई भी ऐसा झगड़ा नहीं देख पड़ता है, जिससे किञ्चिन्मात्र भी भय प्रतीत पड़ता हो।" इन शब्दों के उच्चारित होने के केवल बारह ही दिन के पश्चात् फ्रांस ने युद्ध की घोषणा दी थी!

स्पेन का राज-सिंहासन

सुदूरस्थ स्पेन में रानी इज़ैबला सिंहासन से उतार कर स्वराज्य से बाहर निकाल दी गई, और वहां एक अस्थायी गवर्नमेण्ट स्थापित कर ली गई। अब उस राज्य के लिये, जिसका शासनाधिकार किसी समय संसार के एक बहुत बड़े अंश पर था, तथा जिसका प्रभाव प्रायः समस्त भूमंडल में व्याप्त था, एक राजा की आवश्यकता हुई। इसके विषय में यहां के राज्याधिकारियों ने पहले पुर्तगाल और इटली को लिखा, किन्तु उसका कुछ फल न हुआ। तब इन लोगों का ध्यान होएन्ट्ज़ोल्लर्न रियासत के राजकुमार लिवोपोल्ड की

और गया। वह एक सुयोग्य और विशाल शरीर का श्रीमान् पुरुष था; कैथोलिक धर्मानुयायी तो था, किन्तु कट्टर कैथोलिक नहीं कहा जा सकता था; पुर्तगाल, फ्रांस और प्रशिया के राजघरों से इसका संबंध था; था तो वह प्रशिया का एक राजकुमार, किन्तु वहां का सिंहासनाधिकारी नहीं हो सकता था। उसका ज्येष्ठ भ्राता चार्ल्स महाराज नैपोलियन की अनुमति-पूर्वक रोमेनिया के सिंहासन पर बैठाया गया था, और उसका बाप, नैपोलियन और विलियम दोनों ही महाराजाओं का जातीय मित्र था। स्वदेश का राजमुकुट पहनाने के लिये स्पेन से उसके पास तीन बार दूत आये, और लौट गये, उसको अपने लिये यह प्रतिष्ठित पद अयोग्य सूचित हुआ।

भिन्न २ लोग इस युद्ध के वास्तविक कारण भिन्न २ बतलाते हैं। फ्रांसीसी तो बिस्मार्क की कुटिल नीति ही पर दोषारोपण करते हैं, किन्तु जर्मनी वाले बिस्मार्क से इसका कुछ भी संबंध नहीं बतलाते हैं। 'रोमेनिया के राजा चार्ल्स का जीवन-चरित्र' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है, उससे इस युद्ध संबंधी बहुत सी गुप्त रहस्य प्रकट होते हैं। इस पुस्तक में होएन्ट्ज़ोल्लर्न राज्य के प्रिन्स कार्ल एन्टन के तत्सामयिक पत्र भी उद्धृत है। उन पत्रों में कहीं २ व्यक्तिगत भी सम्मतियां हैं, किन्तु बातें कोई उनमें असत्य नहीं लिखी हैं। उस पुस्तकोल्लेखित

सन् १८७०-७१ की युद्ध-संबंधी सब बातों को होएन्ट्ज़ोल्लर्न के वर्तमान प्रिन्स और प्राचीन मौरूसी प्रिन्स श्रीमान् लिवोपोल्ड, जिनका जातीय संबंध इन सब घटनाओं से अधिकतम है, 'यथार्थ और सर्कारी काग़ज़ातों के अनुकूल बतलाते हैं;' अतएव उसी पुस्तक के आधार पर इस युद्ध के प्रारंभिक कारणों का संक्षिप्त उल्लेख नीचे किया जाता है।

होएन्ट्ज़ोल्लर्न के प्रिन्स लिवोपोल्ड को सन् १८६८ ई० से ही स्पेन देश के समाचार-पत्र अपने देश के सिंहासन के उम्मेदवारों और दावीदारों में गिनते चले आते थे। डान सालाज़ारे मज़ारेडो ने, जो उस देश का एक प्रधान शासनाधिकारी, मंत्री और वहां की पार्लियामेण्ट सभा का एक सदस्य था, होएन्ट्ज़ोल्लर्न के राजकुमार ही को अपने देश का राजा निर्वाचित किये जाने के लिये बहुत बड़ा ज़ोर दिया, और फरवरी १८६९ में उसने अपने विचार एक मेमोरियल में भी प्रकाशित किये। वहां के निवासियों के ऊपर इस मेमोरियल का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। सितंबर में सालाज़ार गुप्त रीति से दक्षिण-जर्मन शाखा के * होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंश के मुखिया प्रिन्स कार्ल एन्टन से मिलकर उससे यह पूंछा, कि उसका पुत्र प्रिन्स लिवोपोल्ड स्पेन के राज्य-सिंहासन पर बैठना स्वीकार करेगा कि नहीं। स्पेन राज-

* होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशज वस्तुतः दक्षिण-जर्मनो ही की एक शाखा है।

मुकुट संबंधी अनेक बाधाओं को सोच-समझ कर पहले तो इसने नापसंद किया था—'वा सोने को जारिये जासो टूटे कान'—किन्तु उस समय स्पेन का विद्रोह कुछ शांत पड़ गया था, प्रत्युत वहां की दशा कुछ सुधर चली थी; अतएव अपने कुल की प्रतिष्ठा और भावी उन्नति होती देख उसने स्पेन के मंत्री के प्रस्ताव को स्वीकार करने में कुछ विशेष आपत्ति नहीं देखी। परंतु इस प्रतिष्ठित पद के योग्य उसने अपने दूसरे पुत्र चार्ल्स को समझा। चार्ल्स उस समय रोमेनिया देश का राजा हो चुका था, अतएव उसने अपनी रोमेनियन प्रजा को छोड़ कर इस प्रतिष्ठित पद पर जाना अस्वीकार कर दिया। लिवोपोल्ड के स्वभाव को समझ कर कार्ल एन्टन ने सालाज़ार से कहा :—"यदि स्पेन मेरे पुत्र लिवोपोल्ड को हृदय से अपने सिंहासन पर बिठलाना चाहता है, तो उसको कई नियमों का प्रतिपालन करना होगा, और मुख्य कर इसका कि, समस्त देश को एक स्वर होकर लिवोपोल्ड को अपना राजा निर्वाचित करना पड़ेगा, तभी वह वहां जाना स्वीकार करेगा।"

फरवरी १८७० के अंत में सालाज़ार पुनः जर्मनी आया, और इस बार स्वराज्य का राज-मुकुट अर्पण करने के लिये वह अपने राज्य का प्रतिनिधि बनकर बर्लिन गया था। राजा विलियम ने इस विषय में अपनी कुछ सम्मति

प्रकट नहीं की, और उससे अपनी ऊपरी निरपेक्षता प्रकट करने के लिये उसने स्पेन के प्रतिनिधि से मुलाक़ात तक नहीं की, तथापि कार्ल एन्टन और लिवोपोल्ड को बर्लिन बुला भेजा। इन दोनों के विचारानुसार भी इस प्रतिष्ठित पद का स्वीकार करना अनुचित सूचित हुआ। स्वयं प्रिन्स लिवोपोल्ड को तो उस मुकुट के, जिसके दावीदार तथा जिसके लिये उम्मेदवार योरप के अनेक सिंहासन-च्युत वंशज थे, धारण करने में बहुत ही बड़ी घृणा थी। और बिस्मार्क?—इसके विचार कुछ दूसरे थे; इसने ऐसे सुअवसर को हाथ से न जाने देने के लिये बहुत ही ज़ोर दिया; यहां तक कि इसके विषय में इसने राजा विलियम की सेवा में एक मेमोरियल भी उपस्थित किया, और उसमें यह दिखलाया, कि स्पेन के सिंहासन पर होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशज किसी राजकुमार के बैठ जाने से जर्मनी का प्रभाव बहुत ही बढ़ जायगा। तब तक स्पेन पर फ्रांस का बहुत ही प्रबल प्रभाव रहता आया था। मेमोरियल में बिस्मार्क ने यह भी दिखलाया था, कि इसको स्वीकार कर लेने पर फ्रांस के पृष्ठ-देश में जर्मनी का बहुत बड़ा दबाव उपस्थित हो जायगा; पुनः, इससे जर्मनी को व्यापारिक तथा राजनैतिक अनेक लाभों के प्राप्त होने की बहुत बड़ी संभावना हो जायगी। अब इस विषय पर बहुत सावधानी के साथ वाद-विवाद प्रारंभ

हुआ और अंत में प्रिन्स लिवोपोल्ड ने कहा :—"यदि इससे हमारे पितृ-देश जर्मनी और प्रशिया को लाभ हो, तथा यदि इससे स्वदेश का राजनैतिक अर्थ सिद्ध होता हो, केवल तभी मैं वहां का राज-मुकुट धारण करना स्वीकार कर सकूंगा।" ता० १५ मार्च को राज महल में एक अंतरंग सभा की गई, स्वयं राजा विलियम उसके सभापति हुए, प्रशिया का युवराज, प्रिन्स कार्ल एन्टन, मौरूसी प्रिन्स लिवोपोल्ड, बिस्मार्क, रून, मोटके, श्लेनिज, टाइल और डेलब्रक उस सभा में बहैसियत सदस्य के उपस्थित थे। बिस्मार्क ने स्पेन का राज-मुकुट स्वीकार करने के लिये बहुत ज़ोर दिया; परंतु युवराज ने कहा :—"इस कार्य्य में अनेक बाधायें उपस्थित होने की संभावना हैं, स्वयं स्पेन की अवस्था भी इस समय बहुत अस्थिर है।" अंत में इस अंतरंग सभा में बहु-सम्मति से स्पेन की प्रार्थना स्वीकार कर लेने की बात निश्चित हुई, ऐसा करना प्रशिया के प्रति भक्ति प्रकट करना और निज कर्त्तव्य-कार्य्य का साधन करना ख़्याल किया गया *। राजा विलियम ने मध्य-मार्ग का अनुसरण किया; आपने इसमें दख़ल देना अपने लिये अनुचित समझा, इसको

* बिस्मार्क ने अपनी एक पुस्तक में 'ऐसी किसी सभा का होना' अस्वीकार किया है। हैम्बर्ग के एक समाचार-पत्र का भी कथन है, कि ऐसी कोई अंतरंग सभा नहीं हुई थी। महाराज ने बिस्मार्क, मोटके और रून को अलग २ बुलाकर उनकी इस विषय में सम्मति मात्र ली थी।

स्वीकार करने वा न करने का फ़ैसला स्वयं प्रिन्स लिवोपोल्ड की इच्छा पर छोड़ दिया। इस तरह पर प्रिन्स को इस कार्य्य में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। अब यदि प्रिन्स को राज्य-सिंहासन पर बैठने की कुछ भी लालसा रही होती, तो इस तरह पर अनायास आये हुए मुकुट को वह श्रद्धापूर्वक अवश्य धारण कर लिये होता; परंतु निस्संदेह ऐश्वर्य्याकांक्षी वह नहीं था, उस सभा के दूसरे ही दिन उसने "अनेक कारणों से बहुत शोक के साथ" इस उच्च पद पर जाना अस्वीकार कर दिया। उसका पिता कार्ल एन्टन और प्रिन्स बिस्मार्क, ये दोनों तथापि निरुत्साहित न हुए। बिस्मार्क ने अप्रेल मास के प्रारंभ में अपने दो विश्वस्त दूतों को स्पेन भेज कर उनके द्वारा गुप्त रीति से वहां की स्थानीय दशा का पता लगवाया, इनमें से एक का नाम लूयर था, और दूसरा जेनरल स्टाफ का एक सुयोग्य अफ़सर था।

प्रिन्स कार्ल एन्टन ने अब अपने कनिष्ट पुत्र फ्रेडरिक से स्पेन का राज-सिंहासन स्वीकार करने का प्रस्ताव किया, परंतु उसकी इच्छा तो लिवोपोल्ड से भी कम पाई गई। उसकी इच्छा परिवर्तन करने के सब यत्न व्यर्थ हुए। राजा विलियम ने फ्रेडरिक से भी वही बातें कहीं, जो उसने लिवोपोल्ड से कहीं थीं। मैड्रिड अब शीघ्रता मचाये था; यदि प्रशियाधिराज आज्ञा दिये

होता, तो फ्रेडरिक उसकी आज्ञा अवश्य स्वीकार कर लेता, किन्तु राजा ने वैसा नहीं किया। मई मास में जर्मनी से स्पेन को इस मज़मून का एक तार भेजा गया, कि सिंहासन स्वीकार करने के लिये यदि ज़ाब्ते का निवेदन प्रिन्स से किया गया होता, तो उसको वह अस्वीकार कर दिया होता। स्पेन सर्कार के नाम यह ज़ाब्ते का तार नहीं था, किन्तु प्रिन्स कार्ल के तरफ़ से यह स्पेन के मंत्री बुकर के नाम दिया गया था, और उसने इसकी इत्तला जेनरल प्रिम को दी। इस प्रतिषेध से निराश न होकर प्रिम फिर भी आशायुक्त बना रहा; इसलिये राजा का निर्वाचन उस समय की पार्लियामेण्ट सभा में न कराया जाकर, सुअवसर आने पर, यह विषय पीछे से निर्णय किये जाने के लिये छोड़ दिया गया। इधर इसी बीच प्रिन्स बिस्मार्क बीमार पड़ गया, और उसको बर्लिन से चला जाना पड़ा। अपनी इस स्पेन वाली कार्य्यवाही में सफली-भूत न होने का उसको बहुत बड़ा पश्चात्ताप था। इसी समय प्रिन्स कार्ल एन्टन ने अपने पुत्र चार्ल्स (रोमेनिया के राजा) को लिखा था:—"होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशजों के हाथ से एक बहुत बड़ा अवसर निकला जाता है, ऐसा अवसर न तो पहले कभी इस वंश को प्राप्त हुआ है, और न भविष्य में शीघ्र आने की आशा है।"

प्रिन्स लिवोपोल्ड की अनीच्छा शीघ्र ही सब को

विदित हो गई। स्पेन के राजदूत और रोमेनिया के प्रतिनिधि को भी इस बात की ख़बर लग गई थी। यह भी निश्चय है, कि महाराज नैपोलियन इस विषय से अनभिज्ञ कदापि नहीं रहे होंगे। इस समय तक स्पेन के सिंहासन संबंधी मामले में आपने अपना हाथ कुछ भी नहीं डाला था, अब भी आप अपना रुख किसी तरफ़ का होना प्रकट नहीं करना चाहते थे। मैड्रिड में उपस्थित फ्रांस का राज-दूत भी होएन्ट्ज़ोल्लर्न संबंधी मामले में स्पेन से कुछ कहने का साहस नहीं कर सकता था; क्योंकि उसको मालूम था, कि यदि स्पेन को यह मालूम हो जायगा, कि फ्रांस इसके विरुद्ध है, तो वह उसी कार्य्य को करने का अधिक ज़िद्द करेगा। महाराज नैपोलियन ने भी अपने मैड्रिडस्थ राजदूत को बिल्कुल शान्त रहे आने की आज्ञा दे दी थी। इस बीच बिस्मार्क के दोनों विश्वस्त दूत स्पेन से जर्मनी वापस आ गये, और वहां की अच्छी दशा के विषय में इन लोगों ने बर्लिन दर्बार में इत्तला की। राजा विलियम को तो इन लोगों की अत्युक्ति पर विशेष विश्वास नहीं हुआ; किन्तु उनकी रिपोर्ट का प्रभाव प्रिन्स लिवोपोल्ड पर कुछ दूसरा ही पड़ा। बिस्मार्क और अपनी पिता की बातों में आकर आपका सरल हृदय क्रमशः द्रवी-भूत हो गया। आपने अपने मन में विचार किया :—"स्पेन वालों की प्रार्थना को अस्वी-

कार कर देना अच्छा नहीं हुआ। उन लोगों के सात्विक निवेदन पर ध्यान न देने से, वहां के निवासी, जो कि सच्चे हृदय से मेरी प्रजा बनने को उद्यत हैं, परस्पर लड़ मरेंगे, और इसका उत्तर-दाता परमेश्वर के यहां से मैं ही बनाया जाऊँगा।" यह सब सोच-विचार कर मई मास के अंत में उसने अपने पिता से कहा :—"मैं स्पेन राज्य का भार अपने ऊपर लेना कुछ नियमों के साथ स्वीकार कर सकूंगा, क्योंकि मुझको विश्वास होता है, कि इस तरह पर मुझसे अपने पितृ-देश की कुछ सेवा बन सकेगी।" प्रिन्स एन्टन द्वारा ज्यों ही कौन्ट बिस्मार्क को लिवोपोल्ड की स्वीकृति-विषयक शुभ समाचार विदित हुए त्यों ही उसने प्रिन्स लिवोपोल्ड को एक पत्र लिखा, और उसमें स्वदेश-हित मात्र के लिये स्पेन के सिंहासन को स्वीकार कर लेने के लिये उसने प्रिन्स को सलाह दी। उसी समय एक दूसरा पत्र उसने मैड्रिड को भी लिखा, और उसमें वहां के शासनाधिकारियों को यह सलाह दी :—"प्रिन्स लिवोपोल्ड को अपना राजा बनाने के लिये आप लोग अब से ज़िंगमारिंगेन दर्बार * से लिखा पढ़ी करें, इस विषय में बर्लिन दर्बार को शामिल करने की आवश्यकता नहीं है।" बिस्मार्क के इस पत्र से कुछ ऐसी ध्वनि निकलती

*होएन्टज़ोल्लर्न रियासत की राजधानी।

है, कि उसने इसको अपने राजा की सम्मति से लिखा था। राजा विलियम की भी आभ्यन्तरिक इच्छा वही थी, जो प्रिन्स बिस्मार्क की थी, किन्तु प्रकट रीति से प्रिन्स को ऐसा करने के लिये आज्ञा देने में स्वयं वह हिचकता था, प्रकट अनुमति देना वह अनुचित समझता था।

इधर स्पेन में राज्य-सिंहासन पर आसीन कराने के लिये शीघ्र किसी सुयोग्य राज-पुरुष के निर्वाचित कर दिये जाने की इच्छा दिन प्रति प्रबल पड़ती जाती थी; अतएव बिस्मार्क के पत्र द्वारा जर्मनी के समाचार विदित होने पर वहां के कार्य्याधिकारियों को बहुत बड़ी प्रसन्नता हुई।

स्पेन की तरफ़ से प्रिन्स को राज मुकुट अर्पण करने तथा कोर्टिस * की स्वीकृति प्राप्त करा देने का उन्हें बचन देने के लिये सालाज़ार पुनः अब तीसरी बार जर्मनी को प्रस्थान किया; और अब की बार वह बर्लिन न जाकर सीधे होएन्ट्ज़ोल्लर्न दर्बार में उपस्थित हुआ, और वहां वह १६ मई को पहुंचा। इस बार दर्बार से सालाज़ार का बहुत ही बड़ा सम्मान हुआ। 'बहुत ही उच्च, विश्वसनीय और प्रतिष्ठित मार्ग से' प्रिन्स लिवोपोल्ड को यह सूचना मिली, कि जर्मन साम्राज्य

* स्पेन की पार्लियामेण्ट सभा।

और पितृ-देश के हित के लिये उसको स्पेन की प्रार्थना स्वीकार कर लेना उचित है; अतएव अपने देश और राष्ट्र की सेवा के लिये प्रिन्स ने निज व्यक्तिगत विचारों को परित्याग कर देना ही उचित समझा। उसने राजा विलियम को, जो उस समय एम्ज़ में था, यह पत्र लिखाः—"मैं स्पेन के राज्य-भार को वहन करना स्वीकार करता हूं, क्योंकि इससे अपने साम्राज्य (जर्मनी) के भावी हित की मुझको आशा होती है; कृपापूर्वक श्रीमान् मुझको निज स्वीकृति और आशीर्बाद दें।" उत्तर में राजा विलियम ने उसको यह सूचना दी :—"स्वेच्छानुसार आपको कार्य्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता है, तथा मैं भी आपके इस कार्य्य को पसंद करता और आपका मंगल चाहता हूं।"

उपर्युक्त सब घटनाओं पर विचार करने से इस मामले में भिन्न २ सम्मति के दो दल बिलग २ प्रकट हो जाते हैं:—राजा विलियम और प्रिन्स लिवोपोल्ड एक तरफ, और स्पेन की गवर्नमेण्ट, प्रिन्स बिस्मार्क तथा कार्ल एन्टन दूसरी तरफ।

स्पेन का राज-मुकुट और विलियम

अंत तक राजा विलियम इसके विरुद्ध किम्वा उदासीन रहा आया। स्पेन के राज मुकुट को स्वीकार करने की अनुमति उसने न

तो कभी प्रकट प्रिन्स को दी थी, और न गुप्त रीति से ही कभी उससे कुछ कहलवाया था, परन्तु अंत में दूसरे दल के वाद-विवाद से विवश होकर उसको भी अपनी अनुमति देनी पड़ी। वस्तुतः उसको स्पेन वालों का पूर्ण विश्वास नहीं था। प्रशियाधिराज की हैसियत से केवल अपने वंश के हित-साधनार्थ उसको विदेशी झगड़ों में पड़ना अनुचित मालूम होता था। पुनः, वंश-परम्परा की दृष्टि से भी उसको इस कार्य्य में हाथ डालने की जगह नहीं थी, उस वंश के मुखिया प्रिन्स कार्ल एन्टन को ही इस कार्य्य के करने अथवा न करने की अनुमति देने का पूर्ण अधिकार था।

स्पेन का राज-मुकुट और लिवोपोल्ड

प्रिन्स लिवोपोल्ड ने इस विषय में वह निर्लोलुपता प्रदर्शित की थी, जो उसके उच्च तथा प्रतिष्ठित कुल और एक उदार-शील राज-कुमार के लिये सर्वथा योग्य थी। उसको मालूम था, कि इस कार्य्य के स्वीकार करने में उसे अनेक आपत्तियां झेलनी पड़ेंगी। राज्य-सिंहासन पर कुछ काल के लिये बैठ जाना संभव था, किन्तु स्पेन की राज-नैतिक दशा अस्थिर होने से उसको वहां का स्थायी राजा होने में बहुत कुछ संदेह था; इसी से राजा विलियम की स्वीकृति मांग कर प्रशिया को वह अपने पक्ष में करना चाहता था,

जिसमें भविष्यत् में आवश्यकता पड़ने और बाधा उपस्थित होने पर उसको जर्मनी की सहायता प्राप्त हो सके। परंतु इस विषय में युवराज प्रशिया ने उससे यह साफ़ २ कह दिया था, कि ऐसी सहायता जर्मनी उसको कदापि नहीं दे सकेगा। प्रिन्स लिवोपोल्ड के पिता, प्रिन्स कार्ल एन्टन के विचार भिन्न थे, इसको अपने पुत्रों की योग्यता और कार्य्य-दक्षता के विषय में पूर्ण विश्वास था। पुनः इस सम्मान-सूचक पद को स्वीकार कर लेने में उसको अपने वंशजों की भावी उन्नति और प्रतिष्ठा का मार्ग खुला देख पड़ा, अतएव लिवोपोल्ड से स्पेन की प्रार्थना स्त्रीकार कराने के लिये उसने यथा-शक्ति कोई यत्न शेष नहीं छोड़ रखा।

स्पेन का राज-मुकुट और बिस्मार्क

और बिस्मार्क ? इसने भी वही किया, जो जर्मनी के प्रधानमंत्री के लिये सर्वथा योग्य था—अर्थात् इसका एक मात्र उद्देश्य जर्मनी का हित-साधन था। उसके विचारानुसार प्रिन्स लिवोपोल्ड द्वारा स्पेन के राज-पद स्वीकार कर लेने में जर्मनी की बहुत बड़ी राजनैतिक आवश्यकता सधती और लिवोपोल्ड की स्वदेश-भक्ति प्रकट होती थी। इस अवसर को हाथ से निकल न जाने देने के लिये वह परम चिन्तित था, अन्यथा होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशजों के

लिये ऐसा सुअवसर, जिसके द्वारा स्पेन के ऊपर से फ्रांस का प्रभाव कम पड़ जाने की उसको संभावना देख पड़ती थी, फिर शीघ्र प्राप्त होना संभव नहीं था। प्रत्युत ऐसे २ अवसर मनुष्य या देशको नित्य २ नहीं प्राप्त होते रहते हैं। इसके द्वारा जर्मनी को प्रथम तो व्यापारिक लाभ प्राप्त हो सकते थे, अर्थात् जर्मनी की दस्तकारियों के लिये स्पेन के बड़े साम्राज्य में नये नये देशों की बाज़ारें खुल जाने की संभावना थी। पुनः, भविष्यत् में राजनैतिक लाभों के प्राप्त होने की भी आशा थी। लिवोपोल्ड के भाई कार्ल चार्ल्स के रोमेनिया राज्य में सिंहासनारूढ़ हो जाने से इस बात का, कि किसी देश में एक सुयोग्य और दृढ़-संकल्प पुरुष के शासनाधिकारी हो जाने से उस देश में कितने और कैसे २ महत्व के राजनैतिक परिवर्तन किये जा सकते हैं, पक्का प्रमाण मिल चुका था।

स्पेन में फ्रांस और जर्मनी

उपर्युक्त विचारों से यह सिद्ध नहीं होता है, कि बिस्मार्क फ्रांस से विरोध करके तथा आवश्यकता पड़ने पर उससे लड़ कर के भी किसी होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशज को स्पेन के सिंहासन पर बिठलाने के लिये तैयार हो सकता था। यह बात कभी नहीं हो सकती थी, वरंच उसने इस बात का यथा-शक्ति सर्वथा यत्न किया, जिसमें फ्रांस को जर्मनी के ऊपर युद्ध का दोष

आरोपण करने का कुछ भी अवसर न मिल सकै। ता० १५ मार्च वाली राज-महल की सभा में सभापतित्व का आसन ग्रहण करने के सेवाय राजा विलियम ने भी इस मामले में अपना कुछ भी हाथ नहीं डाला; तत्पश्चात् तो आपने अपने को इस कार्य्य से बिल्कुल ही अलग रखके सदा अपनी निस्पृहता प्रदर्शित की; तब से जब २ आपने अपनी कुछ सम्मति अथवा अनुमति इसमें दी थी, तब २ प्रशियाधिराज की हैसियत से नहीं, किन्तु एक साधारण व्यक्ति की हैसियत से, और ऐसी अवस्था में आप अपने संबंधी और मित्र को उचित सलाह देने के लिये बाद्ध्य थे। किन्तु प्रधान मंत्री बिस्मार्क का कार्य्य ऐसा नहीं कहा जा सकता था। जब से स्पेन के राज-सिंहासन संबंधी बात-चीत चली, तभी से वह होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशजों में से किसी के लिये उसे प्राप्त कराने और इस तरह पर जर्मनी के हित-साधन में वह लीन हो गया। यद्यपि, जहां तक संभव था, इस कार्य्य को उसने एक साधारण व्यक्ति की हैसियत से करने का यत्न किया, और जर्मनी के प्रधान मंत्री की हैसियत को इससे सर्वदा अलग रखने का उद्योग किया, परन्तु इसमें शायद वह कृत-कार्य्य नहीं हो सका। अपने दो विश्वस्त दूतों को उसका स्पेन भेजना, वहां के प्रधान मंत्री प्रिम को पत्र लिखना, प्रिम के अस्वीकार करने पर उसे को समझा बुझा कर पुनः राज-मुकुट स्वीकार कराने के

लिये उसका बहुत ही ज़ोर देना, ये और ऐसे अनेक कार्य्य उसने किये थे, जो एक साधारण व्यक्ति के कार्य्य की सीमा उल्लंघन कर उसके मंत्रित्व पद के कार्य्य की सीमा में प्रवेश कर गये हैं। यह भी ठीक है, कि उसने मैड्रिड स्थ प्रशियन राजदूत को इस विषय में कोई ज़ाब्ते का पत्र नहीं लिखा; तथा जब २ ज़ाब्ते के पत्र लिखने की उसको आवश्यकता पड़ी है, तब तब प्रशिया दर्बार को उसने इससे सर्वथा अलग रखा है, वहां की बिल्कुल उदासीनता और निस्पृहता (Neutrality and disinterestedness) प्रकट की है। ज़ाब्ते से इस मामले का संबंध स्पेन और होएन्ट्ज़ोल्लर्न दर्बारों में था, यदि किसी को इस विषय में कुछ जानने की आवश्यकता होती, तो उसको इन्हीं दोनों दर्बारों से ज़ाब्ते का समाचार मिल सकता था। प्रकट प्रशिया से इस मामले का कोई संबंध नहीं मालूम होता था। इसके सेवाय और भी कितनी ही ऐसी बातें थीं, जिनसे उस समय युद्ध छिड़ने के कोई विशेष लक्षण नहीं देख पड़ते थे। उधर स्वयं नैपोलियन का शारीरिक स्वास्थ्य उस समय ठीक नहीं था, अतएव अपने चित्त को उद्वेगित करने से वह यथा-संभव बँचने का यत्न कर रहा था। फ्रांस की आभ्यंतरिक दशा ऐसी थी, कि युद्ध में पराजित होने पर नैपोलियन और उसके सिंहासन दोनों के नष्ट कर दिये जाने की बहुत बड़ी आशंका थी, अर्थात्

प्रजाधिकारी-शासन-प्रणाली प्रचलित कर दिये जाने की संभावना थी; पुनः, विजय-लाभ होने पर भी अनेक अदृष्टों के आने का संदेह था। प्रधान मंत्री आलिवर का जर्मनी से सुहृद्भाव था; विदेशी मंत्री दारु था, परंतु ता० १४ अप्रैल से उसके इस्तेफ़ा दे देने पर अस्थायी रीति पर आलिवर ही उस पद का भी काम सँभाल रहा था। फ्रांस की ओर से युद्ध से वास्तविक निस्पृहता, तथा दक्षिण जर्मनी के होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशजों पर महाराज नैपोलियन का जातीय सुहृद्-भाव देखकर ऐसा ख्याल होता था, कि स्पेन के राज्य-सिंहासन के प्रति जर्मन-उम्मेदवारी वाला प्रश्न भी लक्सेमबर्ग के मामले की भांति कुछ थोड़े-बहुत निरर्थक वाद-विवाद के पश्चात् हल हो जायगा। इन सब संभावनाओं के होते हुए भी आवश्यकता पड़ने पर जर्मनी युद्ध के लिये भी असावधान नहीं था। ऐसा कहा जाता है, कि राजा विलियम ने मीटके और रून को उद्यत रहे आने के लिये सावधान कर दिया था। दिसंबर १८६८ में प्रिन्स कार्ल एन्टन ने भी अपना यह विश्वास प्रकट कर दिया था, कि फ्रांस यथा-शक्ति होएन्ट्ज़ोल्लर्न राजकुमारों के स्पेन के उत्तराधिकारी होने में बाधा उपस्थित करेगा।

होएन्ट्ज़ोल्लर्नों के शासनाधिकार में स्पेन के चले जाने पर फ्रांस के हित को निस्संदेह हानि थी, अतएव

उसका इसमें आपत्ति करना अथवा बाधा उपस्थित करना विशेष आश्चर्य की बात नहीं कही जा सकती थी। इस ओर बिस्मार्क की अधिकाधिक प्रवृत्ति देखकर पेरिस निवासियों को संदेह और आशंका होती थी। नैपोलियन ने बेनेडिटी * से कह दिया था, कि स्पेन के सिंहासन पर लिवोपोल्ड का बैठना फ्रांस कभी भी स्वीकार नहीं करेगा, इसको, जिस तरह से हो, रोकने का प्रबंध करना चाहिये। किन्तु नैपोलियन ने इस विषय में कोई ज़ाब्ते का पत्र न तो बर्लिन में भिजवाया, और न सिंगमारिंगेन दर्बार ही को लिखवाया। मैड्रिड को भी फ्रांस से इस विषय में कोई ज़ाब्ते का पत्र नहीं भेजा गया, यद्यपि सालाजार के पहली बार इसी कार्य्य के लिये जर्मनी जाने का समाचार नैपोलियन मिल चुका था। नैपोलियन के आलस्य ने भी बिस्मार्क को इस कूट-नीति के पथ पर चलने के लिये बहुत कुछ उत्साहित किया था।

इस विषय की बात-चीत होते समय प्रिन्स कार्ल ने नैपोलियन की भी अनुमति प्राप्त कर लेने का प्रस्ताव किया था, किन्तु जेनरल प्रिम ने अपनी सम्मति इसके विरुद्ध दी, और बिस्मार्क ने कहा :—"इस विषय में किसी दूसरे की सम्मति लेने की आवश्यकता नहीं है। स्पेन अपना सिंहासन स्वतंत्रता पूर्वक किसी भी

* बर्लिन दर्बार में तैनात फ्रांस का राजदूत।

व्यक्ति को अर्पण कर सकता है। वह मनुष्य जो किसी की अनुमति मांगता है, अवश्य ही कुछ उत्तर पाता है। यदि इस विषय में फ्रांस को ज़ाब्ते से कुछ लिखा जायगा, तो बहुत संभव है, कि वह अपनी अनुमति देने के बदले इसका प्रतिषेध कर बैठे। अतः ऐसे प्रतिषेधकों को स्वयमेव आहूताहन करना अनुचित होगा। गुप्त रीति से इसे करने में कृत-कार्य्य होने की अधिक संभावना होगी। अपना उद्देश्य सिद्ध हो जाने पर फ्रांस के प्रतिषेध की विशेष चिंता नहीं रहेगी।"

गुप्त रहस्य

बिस्मार्क के कथनानुसार इस कार्य्य को अत्यंत गुप्त रीति से किये जाने का प्रबंध कर दिया गया। राजा का नाम तथा उसकी स्वीकृति का विषय स्पेन की पार्लियामेण्ट (कोर्टिज़) के सभासदों के सम्मुख उस समय तक प्रकट नहीं किया जाने वाला था, जब तक उनकी सम्मति (वोट) लेने का अवसर न आ जाता, जिसमें योरप पर और विशेषतः फ्रांस पर यह बात, जब तक निर्वाचन की ज़ाब्ते की सब कार्रवाई पूरी न हो जाय, प्रकट न हो सके।

जर्मनी से स्पेन गवर्नमेण्ट को गूढ़ भाषा (*Cipher*) में जो तार दिया गया था, उसके पढ़ने और अर्थ करने में सालाज़ार के स्वदेश लौटने की तिथि में अभाग्यवश ग़लती हो गई। परमेश्वर को कुछ दूसरा ही करना

मंज़ूर था; पस अविश्रांत बहुत दिनों से कार्य्य करती रहने के पश्चात् कोर्टिज़ सभा की बैठक कुछ दिनों के लिये बंद कर दी गई। सालाज़ार के स्पेन पहुंचने के समय वह सभा बंद थी। सिंगमारिंगेन और बर्लिन दर्बारों को कोर्टिज़ सभा के खुलने तक इस गुप्त रहस्य के प्रकट न होने का विश्वास था। किन्तु ऐसा हुआ नहीं; जेनरल प्रिम ने राज-निर्वाचन के ख़ास कार्य्य के लिये ता० १७ जुलाई को उस सभा की एक असाधारण बैठक करने की विज्ञप्ति दी। इसके कई कारण थे, प्रथम तो उसकी इच्छा इस कार्य्य को, जहां तक शीघ्र संभव हो, कर डालने की थी, दूसरे उसकी समझ में ख़ास राज-निर्वाचन के लिये एक असाधारण बैठक करने से इस महत् कार्य्य का गौरव तथा स्वयं प्रिन्स लिवोपोल्ड की प्रतिष्ठा बढ़ जाने वाली थी। तीसरे ऐसे महत्व-पूर्ण रहस्य को महीनों गुप्त रखने में उसको अनेक कठिनाइयां देख पड़ीं। पुनः, चूंकि फ्रांस अब तक इस विषय में बिल्कुल मौन धारण किये रहा आया था, अतएव उसकी निस्पृहता देखकर उसको विश्वास होता था, कि वह स्पेन को—स्वात्माभिमानी स्पेन को—स्वेच्छानुसार निज राजा के निर्वाचन करने में कुछ आपत्ति नहीं करेगा।

शायद ऐसा ही हुआ भी होता, किन्तु दैवेच्छा कुछ और ही थी। अभाग्यवश उस समय फ्रांस में विदेशी मंत्री के

पद पर माशियर ग्रामां नियुक्त हो गया था; पुनः वहां की पार्लियामेण्ट सभा की उस समय बैठक भी हो रही थी, तथा ऋतु भी ग्रीष्म थी। फ्रांस के प्रचंड राज-विप्लव के समय से ही ग्रीष्म का बहुत ही बुरा प्रभाव यहां के राज-नैतिक मामलों पर पड़ता आया था। भिन्न २ दलों के कोलाहल तथा अधिकाधिक आभ्यन्तरिक कूट-नीति से आलिवर का प्रभाव क्रमशः मंद पड़ गया था। मई मास में ड्यूक डि ग्रामां, जो उसके पूर्व वायना में फ्रांस की ओर से राजदूत था, बुला लिया गया था, और वही उस समय पेरिस में विदेशी मंत्री के पद पर नियुक्त किया गया था। वह अत्यंत प्रतिष्ठा-लोलुप और ऐश्वर्याकांक्षी पुरुष था, और बिस्मार्क की राजनैतिक चालों में सफलता होती देख अत्यंत क्षुभित तथा द्वेष-पूर्ण हो रहा था। सब बातों पर विचार करके यह कहा जा सकता था, कि वह परिमित शक्ति का अविचार-शील, जल्दबाज़, क्रोधी, तथा प्रशिया के प्रति ईर्ष्या रखने वाला व्यक्ति था। फ्रांस का समर-सचिव लेवोयफ़ भी प्रशिया के विजयों से जला करता था, अतएव इन दोनों मंत्रियों में खूब पटती थी, तथा ग्रामां को समर-सचिव से इस विषय में बहुत उत्तेजना भी मिला करती थी।

जब प्रिम और कोर्टिज़ सभा के सभापति में उस सभा की असाधारण बैठक करने की बात तै हो चुकी,

तथा सभासदों को सूचना दे दी गई, तब उक्त रहस्य का गुप्त रहा आना असंभव हो गया।

रहस्य प्रकट होने पर फ्रांस का क्रोध

अतएव प्रिम ने फ्रांस के राजदूत को बुला कर इस विषय की उसे इत्तला दे दी। उस राजदूत ने प्रिम से तुरंत ही कह दिया:—"स्पेन सर्कार यह बहुत ही भयानक कार्य्य कर रही है। स्पेन के राज-सिंहासन पर प्रशिया से संबंध रखने वाले किसी राज-कुमार का बिठलाना बहुत ही अनुचित होगा, फ्रेंच राष्ट्र इसको समराह्वाहन समझेगा, महाराज नैपोलियन अपनी प्रजा की इस सम्मति का निरादर और उपेक्षा कदापि नहीं कर सकेंगे"। प्रिम यह सुन कर अत्यंत चकित हो गया। पुनः उस राजदूत ने कहा:—"इस देश के मामलों में बिस्मार्क को हाथ डालते हुए मैं कुछ दिनों से देख रहा हूं, इस अवसर पर मैं इसे कह देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं, कि यह बात किसी के लिये भी ठीक न होगी।" तत्पश्चात् फ्रेञ्च राज-दूत ने पहले तो इस विषय का संक्षिप्त पुनः सविस्तर वृत्तांत तार द्वारा पेरिस भेजा। भावी घटनाओं से सिद्ध होता है, कि राजदूत के ये दोनों तार पेरिस में पहुंच कर बारूद के मेगज़ीन में जलती दिया सलाई के स्पर्श कराने का काम किये। स्पेन संबंधी ये समाचार पहले पहल ता० ३ जुलाई को 'एजेन्स हवास' नामक पत्र में प्रकाशित हुए। ता० ४ को ही 'कन्स्टटयू-

शनेल' नामक पत्र ने सर्व साधारण को इत्तला दे दी, कि 'राजकुमार' ने स्पेन का सिंहासन स्वीकार कर लिया; तथा उसने यह भी लिखा, कि चार्ल्स पंचम का राज-दंड (Sceptre) प्रशियन राजकुमार के हाथ में चला जाना फ्रांस के लिये कम बिस्मयोत्पादक नहीं है। सुतरां समस्त फ्रेञ्च राष्ट्र ने इस घटना को इसी दृष्टि से देखा, और वह अंत तक अपने इसी विचार पर स्थिर रहा, यद्यपि दक्षिण जर्मनी के होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशजों का संबंध अनेक अपर रियासतों से वैसा ही था, जैसा कि उनका संबंध प्रशिया के राज-वंश से था। पूर्व काल में जैसा भय फ्रांस को हैप्सबर्ग से पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं से घिरते देख हुआ था, वैसा ही भय उसको इस समय होएन्ट्ज़ोल्लर्नों से भी हुआ। बस, भला अहंकारी फ्रांस यह कब सह सकता था, उसकी प्राचीन राज-नैतिक उत्तेजना तुरंत ही प्रज्वलित हो उठी। ग्रामां ने अभी तक बिदेशी मामलों को यथाभिलिप्सत मार्ग से चले जाने दिया था, परंतु इस आकस्मिक् घटना ने उसको भी उत्तेजित कर दिया। उसकी स्वाभाविक रुचि जागृत हो उठी।

ता० ४ जुलाई को बर्लिनस्थ फ्रेञ्च राज-दूत ने प्रशियन विदेशी आफिस में जाकर स्पेन संबंधी मामले में फ्रेञ्च राष्ट्र के क्षुभित विचार को प्रकट किया, परंतु उस को वहां से यह उत्तर मिला, कि प्रशिया से इस मामले

का कोई संबंध नहीं है, इसका संबंध केवल स्पेन और होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशजों से है।

ग्रामां की बुद्धिमत्ता

तत्पश्चात् ऐसी आशा होती थी, कि ग्रामां इस विषय में स्पेन का ध्यान आकर्षित करायेगा, परंतु ऐसा करने में ग्रामां को कब संतोष हो सकता था, क्योंकि उसके ऐसा करने से स्पेन तो अप्रसन्न हो जाता, परंतु प्रशिया का तो मान-मर्द्दन होता नहीं। अतएव उसने स्पेन की स्वतंत्रता में तो हस्ताक्षेप करना मुनासिब नहीं समझा, और प्रशिया पर प्रभाव पहुंचाने के लिये वह कूट-प्रपञ्च रचने लगा, जिस में इस कार्य का मूल ही विनष्ट हो जाय। उसका यह कार्य बुद्धिमत्ता का कहा जा सकता है; क्योंकि एक तो न्याय की दृष्टि से ही उसका पक्ष प्रबल था, दूसरे लोक-सम्मति भी इस मामले में उस के अनुकूल ही थी। अधिकांश योरप को स्पेन-जर्मनी का यह संबंध, यह गाढ़ सौहार्द्र बहुत ही अप्रिय हो रहा था, बहुत से जर्मनो का भी इधर कुछ प्रेम नहीं था, और कम से कम इसके लिये वे अपने देश को झंझट में डालना, अथवा युद्ध करना कदापि पसंद नहीं करते थे। ग्रामां फ्रांस की इस आकस्मिक उत्तेजना से लाभ उठा कर अपनी आभ्यंतरिक लालसा को पूरी करना चाहता था, अर्थात् प्रशिया पर वह अपना प्रभाव प्रकट कर उसे दबाना चाहता था। इस समय फ्रांस को किसी कृत्रिम किम्वा कपट-भाव से

उत्तेजित करने की उसको आवश्यकता नहीं थी; घटना ही यह ऐसी थी, कि इसको सुनते ही समस्त फ्रेंच जाति प्रज्वलित हो उठी थी। 'सुप्रतापी फ्रेञ्च राष्ट्र' की गर्वीली इच्छा के अनुसार ग्रामां को बिस्मार्क की द्वेष-पूर्ण कुटिल-नीति के नष्ट करने के लिये यह अच्छा अवसर हाथ लग गया। राजा विलियम शान्त स्वभाव का था, उधर प्रिन्स लिवोपोल्ड की भी बहुत उत्कट इच्छा स्पेन के राज्य सिंहासन के लिये नहीं थी; इसलिये ग्रामां को अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये कोई विशेष बाधा नहीं देख पड़ती थी। केवल किञ्चित् दूरदर्शिता से उस को कार्य्य करने की आवश्यकता थी।

कठिन रोग से शिथिल हो जाने के कारण महाराज नैपोलियन को इस विषय में अधिक चिंता थी। चाहे जिस व्याज से प्रशिया के साथ युद्धारंभ होता, परंतु यदि उसमें फ्रांस की विजय होती, तो नैपोलियन की समझ में उससे उसके और उसके वंशजों का अधिकार फ्रांस के सिंहासन पर स्थाई अधिकतर हो जा सकता था। १८६६ से ही जो द्वेषाचरण प्रशिया फ्रांस के साथ प्रकट करता आ रहा था, वह किसी को भी अविदित नहीं था; पुनः, तभी से फ्रेञ्च राष्ट्र नैपोलियन तथा उसकी गवर्नमेण्ट के ऊपर अपने देश की मर्य्यादा भंग करने तथा विदेशी मामलों में फ्रांस के हित पर ध्यान न देने का दोषारोपण करता

आ रहा था। अब ऐसी अवस्था को अधिक काल तक वैसी ही बनी रही आने देने की नैपोलियन आवश्यकता नहीं समझता था, अपने ऊपर से अपनी प्रजा के बुरे ख़्यालों को दूर करने का उसने इसको अच्छा मौक़ा समझा। परंतु कौन कह सकता था, कि युद्ध में उसको विजय ही मिलती और पराजय की कुछ संभावना नहीं थी? इसी बात का उसको एक बड़ा भारी खटका था, क्योंकि पराजित होने पर उसके कुटुम्बियों के साथ जो व्यवहार फ्रांस करता, वह भी उसको अविदित नहीं था।

ग्रामां की अदूरदर्शिता

इन्हीं सब कारणों से नैपोलियन की इच्छा थी, कि फ्रांस अपनी मान-मर्यादा को धारण किये हुये प्रशिया के साथ ऊपर से अपनी नम्रता और सौजन्यता प्रकट करता, जिसमें किसी तरह से युद्ध छिंड़ने का भय न रहता, और अपना उद्देश भी सिद्ध हो जाता। ग्रामां अपने महाराजा के इस उपदेशानुसार कार्य कर न सका। ता० ६ जुलाई को उसने अपने देश की पार्लियामेण्ट सभा में जो वक्तृता दी थी, उसके अंतिम वाक्य से रण-प्रसंग की तर्जना की ध्वनि निकलती है *

* इस वक्तृता के अंतिम वाक्य का भावार्थ यह है—"मेरे विचार में अपने किसी पड़ोसी राज्य के स्वत्वों, तथा उसकी स्वतंत्रता की मर्य्यादा रखने का यह अर्थ नहीं है, कि हम लोग उस विदेशी राज्य को अपने यहां के राजकुमार को चार्ल्स पंचम के सिंहासन पर बिठलाने की अनुमति दे देवैं। मुझको यह विश्वास है, कि यह बात सत्य नहीं है। कदाचित् मेरा विश्वास असत्य न हुआ, तो फ्रेञ्च राष्ट्र, बिना किसी संकल्प-विकल्प के, अपना कर्त्तव्य-कार्य्य संपादन करेगा, इसमें भी मुझको कुछ संदेह नहीं है।"

उसके उस कथन को सुनकर सब सभासदों को अनिर्वचनीय आनंद हुआ, और उसको प्रकट करने के लिये सबों ने भयंकर करताल-ध्वनि की। सभासदों की इस भयंकर ओजस्विता को दबाने के लिये आलिवर का यह कहना कि 'गवर्नमेण्ट शान्ति चाहती है, शान्ति ही की वह उत्कट अनुरागिणी है, किन्तु आत्म-गौरव को संहार कर वह शान्त्याभिलाषिणी नहीं हो सकती है' सर्वथा व्यर्थ हुआ।

समाचार पत्रों की उन्माद-ध्वनि

उपर्युक्त युद्ध-ध्वनि की प्रतिध्वनि शीघ्र ही पार्लियामेण्ट-भवन से निकल कर राजधानी की गली और कूचों में गूंज उठी। तत्पश्चात् समाचार पत्रों द्वारा प्रचारित यही यही ध्वनि निकल २ कर सारे साम्राज्य में व्याप्त हो गई। यही ध्वनि झंझा-वात के सदृश मंत्री को अपने गुम्बज में लपेट शांति-पथ से दूरातिदूर ही उड़ाती गई। अंत में फ्रांस के लिये अपने चिरकाला-भिवांछित बैर-साधन का समय समीप आ पहुंचा। गालो नामक समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ :—"आज फ्रांस की प्रतिष्ठा रह गई। यदि शान्ति बनी रही आई, तो अच्छा है, पर यदि युद्ध छिड़ जाय, तो और भी अच्छा है।" कन्स्टिटयूशनेल नामक पत्र ने लिखा:—"यदि प्रशिया युद्ध नहीं स्वीकार करेगा, तो भी हम लोग अपनी बंदूकों के कुन्दों से ठोकरें लगा २ उस

को राइन नदी के उस पार उतार कर नदीके बांये तटस्थ प्रदेश को प्रशियनों से रहित कर देंगे।" कासानक (Cassagnac) नामक सुप्रसिद्ध फ्रेञ्च लेखक और प्रकाशक ने अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक अपने 'पेज़' नामक पत्र में यह लिखा:—"प्रशिया के लिये काडाइन फार्क्स (Caudine Forks) * तय्यार है।" ता० ८ जुलाई के मानिटर नामक पत्र ने यह सम्मति दी:—"विवाद-विषय अब बढ़ा देना चाहिये। मेन नदी के दक्षिण के सब प्रदेशों से अब प्रशिया को अपना सैनिक प्रभाव हटा लेना होगा; इतने से कम में फ्रांस अब संतुष्ट नहीं हो सकता है।"

इन सब जल्पनावों के सुनने से आश्चर्य्य होता है; इनसे और स्पेन के सिंहासन से क्या संबंध था, कुछ समझ में नहीं आता है। वैर-निर्यातन की ज्वाला फ्रांस भर में प्रज्वलित हो उठी; ग्रामां उसका शमन-कर्त्ता तो नहीं, किन्तु आहुति-दाता सा सूचित होता था। कहां वह जा रहा था, उसके अंतिम उद्देश्य क्या थे, जो वस्तु वह प्रशिया से लेना चाहता था, वह कहां तक न्यायानुकूल थी, इन सब बातों से वह बिल्कुल अनभिज्ञ सा सूचित होता था; वह फ्रांस का इस समय नेता नहीं बल्कि स्वयं नीत बन गया था।

*इटली देश में पेरोला के समीप एक संकीर्ण घाटी है, यहाँ पर ईसा से ३२१ वर्ष पूर्व एक बहुत भयानक संग्राम हुआ था, जिसमें जर्मनो के पूर्वज पराजित हुए थे।

विलियम और बेनेडिटी

प्रशिया का राजा विलियम उस समय एम्ज़ में था, अतएव बर्लिनस्थ फ्रेंच राज-दूत कौन्ट बेनेडिटी को पेरिस से यह आज्ञा पहुंची कि वह तुरंत जाकर राजा विलियम से वहां मिले, और उससे वचन ले कि प्रशिया प्रिन्स लिवोपोल्ड का स्पेन में सिंहासनारूढ़ होना अनुमोदन नहीं करता है, तथा स्पेन वालों के इस दान को प्रिन्स से अस्वीकार कराने के लिये वह राजा विलियम से लिखाने का भी प्रयत्न करै। कानिग्राज़ (सैडोवा) के विजेता से ऐसी रुक्षता से तो उपर्युक्त बातें कही नहीं जा सकतीं थीं, अतएव इस सुचतुर राजदूत ने अपना अभीष्ट क्रम २ से सिद्ध करने का विचार किया। एक विदेशी शक्ति के प्रतिनिधि का साधे राजा के पास जाना, और वहां पर उससे एक गंभीर राजकीय मामले के संबंध में बात-चीत करना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता था; ऐसे कार्य्य विदेशी मंत्री के द्वारा किये जाते हैं। अतएव बेनेडिटी को प्रथम बर्लिन के विदेशी मुहक्मे में जाना चाहिये था। यदि राजा विलियम बेनेडिटी से न मिल कर उसको अपने विदेशी मंत्री के पास जाने को कहवा दिये होता, तो वह अनुचित नहीं कहा जा सकता था; परंतु उसने वैसा नहीं किया, प्रत्युत बेनेडिटी से वह यथोचित आदर

सत्कार के साथ मिला, और इस विषय में बात-चीत किया।

इस मामले को अति भयंकर रूप धारण करते देख, तथा निज न्याय प्रियता से फ्रांस के उचित आग्रह पर यथोचित रूप से ध्यान देने के लिये राजा विलियम ने इस रीति से बेनेडिटी से मिलने में कुछ हानि नहीं समझी। पुनः इस मामले का प्रशिया दर्बार से ज़ाब्ते का कुछ संबंध भी नहीं था, अतएव एम्ज़ में अकेले में फ्रेञ्च राजदूत से इस विषय की स्वयं बात-चीत करके आपने इसे अपना आत्मीय मामला बना दिया, प्रशियन दर्बार से इसका कोई संबंध नहीं होने दिया। ता० १६ जुलाई ही को राजा विलियम ने प्रिन्स कार्ल को लिख दिया था :—"मैं नहीं समझता कि कोर्टिज़ सभा की स्वीकृति प्राप्त कराने के पूर्व ही जेनरल प्रिम ने इस विषय की इत्तला फ्रेञ्च राजदूत से क्यों कर दी। फ्रांस का ज़ोश शान्त पड़ना अब भी संभव है, परंतु इस दशा में फ्रांस की स्वीकृति पहले से प्राप्त कर लेने का जो आपका प्रस्ताव था, उसी के अनुसार यदि कार्य्य किया गया होता, तो अच्छा हुआ होता।"

अब स्पेन का राज-मुकुट स्वीकार न करने के हेतु प्रिन्स को आदेश करने के लिये जब बेनेडिटी ने राजा विलियम से अत्यंत नम्रता-पूर्वक निवेदन किया, तब आपने उत्तर दिया :—"इस मामले का संबंध बहैसियत

प्रशिया के राजा के मुझसे कुछ भी नहीं है, होएन्ट्-ज़ोल्लर्न वंशीय होने से मेरा निज का संबंध प्रिन्स से है, और इसी हैसियत से मैं इसके विषय में सिगमारिंगेन दर्बार को लिख भी चुका हूं (९ जुलाई)।" इधर बेनेडिटी के पास पेरिस से इस विषय में तार पर तार पहुंचे, जिनका सारांश यह था कि 'प्रिन्स लिवोपोल्ड मात्र से स्वीकृति प्राप्त कर लेने से फ्रांस को संतुष्टि न होगी, वरंच शीघ्र, शीघ्र, अत्यंत शीघ्र उसकी पुष्टि विलियम से भी कराना उचित होगा।' इस पर बेनेडिटी ने बारंबार राजा विलियम से मिलने की पुनः याचना की, पस ता० ११ को राजा पुनः उससे दूसरी बार मिला। स्पेन विषयक वार्तालाप छिंड़ने पर विलियम ने राजदूत से पुनः वे ही बातें कहीं, जो उसने पहली मुलाक़ात में कहीं थीं। तत्पश्चात् राजदूत ने जब किंचित् ज़ोर देकर अपना अभिप्राय प्रकट किया, तब तो प्रशिया-धिराज भी कुछ अप्रसन्न हो गये, और कहे:—"आपके आग्रह से तो यह प्रकट होता है, कि फ्रांस युद्ध चाहता है, पेरिस में इसके लिये जो २ तय्यारियां हो रही हैं, उनसे मैं अपरिचित नहीं हूं; परन्तु यदि मुझको आप कुछ अवकाश देना पसंद करैं, तो शान्ति स्थिर रहना अब भी संभव है।"

बात यह थी, कि विलियम ने प्रिन्स कार्ल के पास

अपना एक गुप्त चर द्वारा फ्रांस और स्पेन की तत्कालीन तथा बेनेडिटी की बात-चीत का सारांश कहला भेजा था। इसके सेवाय प्रिन्स के पास एक पत्र में उसने यह भी लिख भेजा था :—"इस मामले से फ्रांस इतना उत्तेजित हो गया है, कि वह अब वस्तुतः युद्ध के लिये तय्यार हो रहा है; अतएव यदि आप अपने पुत्र को स्पेन के सिंहासन से अलग रखना पसंद करें, तो मैं बहैसियत प्रशियाधिराज के आप की इस इच्छा को वैसे ही स्वीकार कर लूंगा, जैसे इसके पहले सिंहासनारूढ़ होने के लिये मैंने अपनी स्वीकृति देदी थी।"

प्रिन्स की अस्वीकृति

प्रायः उसी समय पेरिसस्थ रोमेनियन राज-प्रतिनिधि (*Charge d'Affaires*) वहीं पर उपस्थित स्पेन के राजदूत के निवेदन पर सिग-मारिंगेन पहुंचा, और फ्रांस की तत्कालीन राजनैतिक अवस्था और उत्तेजना का वर्णन करके उसने भी प्रिन्स से अपने पुत्र को स्पेन के राज-सिंहासन की उम्मेदवारी से हटा लेने की सलाह दी। प्रिन्स कार्ल एन्टन बहुत ही संकट में पड़ा; उसका पुत्र लिवोपोल्ड तो पहाड़ी देशों में शिकार खेल रहा था, और वह तत्कालीन क्षोभ से बिल्कुल अनभिज्ञ था। प्रिन्स कार्ल एन्टन को उसके पास इत्तला तक देने का अब सावकाश नहीं था। परन्तु उसने अपने पुत्र को इस झगड़े से अलग रख

लेना ही इसलिये उचित समझा, कि जिसमें उसके द्वारा फ्रांस को प्रशिया के साथ युद्ध करने का बहाना न प्राप्त हो सके। पस ता० १२ जुलाई को उसने इस विषय का एक तार जेनरल प्रिम के पास मैड्रिड और दूसरा पेरिस स्पेन के राजदूत के पास भेज दिये।

फ्रांस की मूर्खता

इन तारों के मर्म जब प्रकाशित हो गये, तब सारे योरप को यह विश्वास हो गया, कि यह झगड़ा अब तैं हो गया। इस समाचार के पाते ही ग्रालिवर ने पार्लियामेण्ट-भवन में जाकर कहा :—"हम लोगों की बात रह गई, फ्रांस की इसमें विजय हुई; जो हम लोग चाहते थे, वही हुआ; अब शांन्ति निस्संदेह स्थिर रहेगी।" किन्तु पार्लियामेण्ट-भवन का कोलाहल फिर भी शांत न पड़ा। कुछ सदस्य बोल उठे :—"मंत्रि-मंडल कादर है! फ्रांस की मान-हानि हुई!" ग्रामां के विचार भी कुछ ऐसे ही थे ग्रौर रण-प्रेमी दल इसके प्रोत्साहक थे। उसी दिन सायंकाल को उसने बेनेडिटी को यह तार दिया :—"ग्राज स्पेन के राज-दूत द्वारा प्रिन्स कार्ल एन्टन की ओर से हम लोगों को यह सूचना दी गई है, कि उसका पुत्र स्पेन के सिंहासनाधिकार की उम्मेदवारी से ग्रलग कर लिया गया है; यह बात ठीक हुई, किन्तु इस मामले को यहीं पर छोड़ देना उचित नहीं सूचित होता है; इसके

पुष्टि-करण के लिये यह परमावश्यक है, कि प्रशिया-धिराज भी इसके साथ ही यह वचन दें, कि भविष्यत् में वे फिर इसका कभी अनुमोदन न करेंगे; यहां पर लोग इससे बहुत ही संक्षुब्ध हो रहे हैं।"

यही तार फ्रांस-जर्मनी-युद्ध का वास्तविक कारण हुआ। यदि फ्रांस प्रिन्स की अस्वीकृति प्राप्त कर संतुष्ठ रह गया होता, तो निस्संदेह यह उसकी राजनीतिक विजय कही जाती; यदि इतने ही लाभ से ग्रामां संतोष कर चुप रह गया होता, तो वह सुचतुर राजनीतिज्ञ कहलाने के योग्य अवश्य समझा जा सकता था, और इस राजनीतिक चाल में उसकी जीत और बिस्मार्क की पराजय समझी जाती। समाचार-पत्रों द्वारा इतनी ही जीत की अत्युक्ति की जा सकती थी :—यथा, 'फ्रांस को उत्तेजित करने का साहस न करके, एक होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशीय राजकुमार को, प्रशियाधिराज की स्वीकृति प्राप्त कर लेने पर भी, स्पेन का राज्यसिंहासन परित्याग कर देना पड़ा; स्पेन का राज-मुकुट स्वीकार करने का उसको साहस न हुआ; भला फ्रेञ्च-गरुड़ की उपेक्षा करने का साहस किसी 'प्रशीन' को कभी पड़ सकता है! स्पेन का राज-मुकुट भला 'प्रशीन' प्रिन्स के मस्तक पर कदापि सुशोभित हो सकता है!' अब युद्ध छिड़ने का भय बिल्कुल जाता रहा था; किन्तु ग्रामां की अदूरदर्शिता ही फिर से उसका कारण हो

गई । बिस्मार्क के प्रति उसकी द्रोह-बुद्धि, बिना सोचे-बिचारे सभी बातों को बिस्मार्क की करतूति कह देना, भविष्य में भी किसी कार्य्य में हाथ न डालने का एक स्वात्माभिमानी सम्राट् से वचन लेने का उद्योग करना, तथा फ्रांस-निवासियों की संक्षुब्धता, और ग्रामां की चंडता, इत्यादिक कारण ऐसे उपस्थित हो गये, कि जिनसे फ्रांस का मंत्रि-मंडल अपनी राजनीतिक चाल में चूक गया कहा जा सकता है; प्रत्युत यहां के शासनाधिकारियों की स्पेन संबंधी कार्य्यवाही अब उचित सीमा को उल्लंघन कर गई । पेरिसस्थ वृटिश राजदूत से ग्रामां ने इन सुगठित शब्दों में इस विषय में वार्तालाप किया था:—"जनरव ऐसा उद्दीपित हो रहा रहा है, कि यदि मंत्रि-मंडल स्पेन के मामले को यहीं पर तैं हुआ स्वीकार कर ले, तो वह कल्ह ही अपने शासनाधिकार से अलग कर दिया जायगा ।" इस जनरव के उग्र अभ्याघात से दब कर ग्रामां ने उपर्युक्त रीति से कार्य्य करना इसलिये और भी उचित समझा, कि अपनी पोलिटिकल चाल से फ्रांस के लिये उतनी प्रतिष्ठा तो उसने प्राप्त ही कर ली थी, अब किञ्चित् अधिक उग्रता प्रकट करके उसने अपने देश की प्रतिष्ठा कुछ और भी बढ़ानी चाही; और इसी 'कुछ और' में उसने

अपने पद की बड़ाई और नैपोलियन के सिंहासन की रक्षा समझी। किन्तु अब उसको शीघ्र ही मालूम हो जाना था, कि उसके वैसे विचार अदूरदर्शी और ग़लत थे। जिस के लिये उसने अब ज़ोर दिया था, वह बात न्यायानुकूल न होने से सर्वथा अनुपयुक्त थी। इसी 'और' को स्वीकार कर लेने से प्रशिया की प्रतिष्ठा भंग हो जाती, अतएव उस 'और' को आत्माभिमानी राजा विलियम किस तरह से स्वीकार कर सकता था। परंतु ग्रामां भी क्या कर सकता था; पेरिस तो ज्वाला मुखी पर्वत के सदृश इस समय क्रोध, द्वेष और ईर्ष्या से सर्वथा जाज्वल्यमान हो रहा था; अतएव यदि वह 'और' रूपी क्षत्र से अपनी संरक्षा नहीं करता, तो उस ज्वाला में वही भस्मीभूत हो गया होता, इधर उस 'और' के मांगने से उसको प्रशिया के साथ युद्ध स्वीकार करने की केवल संभावना मात्र थी।

बेनेडिटी और विलियम का अंतिम साक्षात्

ता० १३ जुलाई के प्रातःकाल बेनेडिटी एम्ज़ नगर के पार्क (बाग़) में इस रीति से टहलने लगा, जिसमें प्रशियाधिराज से उसका साक्षात् हो जाय। राजा को सम्मुख से आते देख नम्रता-पूर्वक सलाम करके वह शान्त-भाव से एक स्थान पर खड़ा हो गया। विलियम ने भी उससे अपना

हाथ मिलाया, और दोनों टहलने तथा वार्तालाप करने लगे। तुरंत ही स्पेन के सिंहासन के विषय में बात छिड़ गई। विलियम ने सुहृद् भाव से कहा :—प्रिंस ने सिंहासनारूढ़ होना अस्वीकार कर दिया, अब तो आपकी चिन्ता दूर हुई।" बेनेडिटी को अब अपनी गवर्नमेण्ट का नया संदेशा कहने का अवसर मिला, और उसने फ्रांस का नवीन दावा किञ्चित् उग्रता के साथ विलियम से कह सुनाया। उसको सुनते ही प्रशियाधिराज का रक्त भी उष्ण हो उठा और उसने उत्तर दिया :—"यह असंभव है, और मैं ऐसा दावा सुनना सर्वथा अस्वीकार करता हूं।" यह कहकर उसने अपने अजीटन (एडजुटेन्ट) को संकेत किया; और राजदूत की ओर से मुख फेर कर वह दूसरी ओर को चल दिया। पासा फेंक दिया गया। *

बिस्मार्क का मर्मभेदी प्रतिघात

बिस्मार्क अत्यंत चिंताकुल हुआ; बर्लिन पहुंच कर स्पेन के सिंहासन संबन्धी मामले का अंतिम फल जानने के लिये वह व्यग्र हो रहा था; अपने इतने परिश्रम को व्यर्थ होते समझ और प्रशिया की बात जाती देख उसे बहुत दुःख हो रहा था। इतने ही में बेनेडिटी और विलियम की बातचीत

* इस साक्षात् का कुछ विस्तृत वृत्तांत इस अध्याय के अंत में दिया गया है।

का समाचार उसको मालूम हुआ, तब तो उसका चित्त सहसा प्रफुल्लित हो उठा, और उसके विचार परिवर्तित हो गये। ग्रामां की राजनीतिक चाल की त्रुटि उसने शीघ्र ही समझ ली, बिस्मार्क ऐसा-वैसा राजनीतिज्ञ नहीं था, कि वह ऐसे अवसर को अपने हाथ से जाने देता; उसने तुरंत उससे लाभ उठाने का संकल्प कर लिया। दशा-चक्र परिवर्त्तित हो गया; अब प्रशिया को अपना रोष और अमर्ष प्रकट करने तथा फ्रांस से उसका प्रतिफल मांगने का अवसर आ गया। बिस्मार्क को फ्रांस की मर्म-वेदना की कुछ भी परवाह न हुई, वरंच उसका प्रतिघात अब अत्यंत ही मर्म-भेदी होने लगा; फ्रांस की राज-नीतिक पराजय सारे संसार पर प्रकट हो गई। सूक्ष्म किन्तु अर्थ-पूर्ण तारों द्वारा बिस्मार्क ने एम्ज़ की घटना का वर्णन अत्यंत शीघ्रता के साथ अपने सब विदेशी प्रतिनिधियों और राज-दूतों को दे दिया; इस तरह पर सारे संसार में फ्रांस की मूर्खता प्रकट हो गई। इस कार्य्य में समाचार-पत्रों ने भी बिस्मार्क को पूरी २ सहायता पहुंचाई।

समस्त जर्मनी का संक्षोभित हो उठना

इसमें कोई संदेह नहीं है, कि समस्त जर्मनी को इस तुच्छ सी बात पर फ्रांस के प्रति उत्तेजित कर लेना केवल बिस्मार्क की नीति-निपुणता का कार्य्य था। जर्मनी के साधारण बनिये

और किसान भी, जो राजनीतिक मामलों से सर्वदा घृणा करते थे, इस समय उत्तेजित और संक्षुब्ध हो उठे। फ्रेञ्च तो पहले ही से पाजामे के बाहर हो रहे थे, अब इधर बिस्मार्क के राजनीतिक आघातों, तथा समाचार-पत्रों की वक्तियों से वे लोग आपे से भी बाहर हो गये। जर्मन पत्रों में एम्ज़ की घटना का तुरंत सविस्तर वर्णन प्रकाशित हुआ; उनके कथन का सारांश यह था :—"इस फ्रांस !—हमारे देश के इस प्राचीन शत्रु, फ्रांस—की धृष्टता तो देखो! हमारे वृद्ध महाराज विलियम बेचारे तो राज-काज से विश्राम लेकर जल-वायु सेवनार्थ एम्ज़ को गये थे, परंतु वहां पर भी उसके राजदूत ने जाकर उन्हें तंग किया, और तंग ही नहीं, वरंच उनका अपमान भी किया।" ऐसा ही विचार समस्त जर्मनी में व्याप्त हो गया। सर्व-साधारण का जन-रव और कोलाहल अब बर्लिन नगर की सड़कों और गलियों में उसी प्रकार से प्रतिध्वनित होने लगा, जैसा कुछ दिनों पूर्व से पेरिस में हो रहा था। महाराज विलियम के प्रति जयध्वनि सारे जर्मनी में—मेन नदी से लेकर आल्पस पर्वत-के शिखरों और कन्दरावों तक—गूँज उठी। प्रशियन राज-नौका का कर्णधार प्रिन्स बिस्मार्क पतवार के समीप अपनी आंखें खोले और दृढ़-चित्त हुआ तत्पर बैठा था; उधर फ्रांस की राज-नौका भयानक लहरों में करवटें

लेती और चक्करें खाती थी, उसका मल्लाह ग्रामां ईर्ष्या-मद का पान किये अपनी आखें चारों ओर नचाता बेहोश बना था। बिस्मार्क को युद्ध से किञ्चिन्मात्र भी भय नहीं था, वह दृढ़ता के साथ उसके लिये पूर्णतः तय्यार था। ग्रामां युद्ध का कारण-भूत तो बन गया, परन्तु जब उसने समर को अपनी ओर निज भयंकर मस्तक उठाये आते देखा, तब तो वह बिस्मित और भय-भीत हो पीछे हट चला। और महाराज नैपोलियन! इन बेचारे ने तो कभी भी प्रशिया के साथ का युद्ध छिंड़ना नहीं चाहा था; परन्तु अब छिंड़ जाने पर इन्हीं बेचारे के मत्थे गई। फ्रांस में समर के चाहने वाले भी बहुत से मनुष्य थे, और उनमें से स्वयं यहां की महारानीभी एक थीं। इनके विचार दूसरे ही थे; स्त्री-जातीय संक्षुब्धता के साथ इन महारानी ने अपने पति से ऐसा कहा था :—"आप के साम्राज्य का अधःपात हो रहा है। यदि घृणित प्रशिया पराजित नहीं कर दिया गया, तो मुझको विश्वास होता है, कि हम लोगों का चिरंजीव पुत्र आपके सिंहासन पर कभी भी सुशोभित नहीं हो सकेगा।" जन समूह पेरिस की गलियों में 'युद्ध! युद्ध!!' का कोलाहल मचाता, तथा मंत्रियों और शासनाधिकारियों के मुख पर घूसे और चपत मारने

का संकेत करता फिरता था ।

फ्रेंच राज-सभा में युद्ध का प्रस्ताव

महाराज नैपोलियन के सभापतित्व में ता० १५ की रात में मंत्रियों की एक सभा हुई, और उसमें समरार्थ सेना के आह्वाहन करने का प्रस्ताव स्थिर हुआ । प्रशियाधिराज के सम्मुख से अपमान के साथ बेनेडिटी के हटा दिये जाने, तथा तद्विषयक बिस्मार्क के तारों के प्रकाशित होने का बहुत ही अनर्थ-कारक प्रभाव फ्रांस पर पड़ा । इसको वहां वालों ने अपनी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के प्रति अपमान समझा; और उन लोगों के विचारानुसार इस अपमान को सह लेना फ्रांस के लिये कभी भी उचित नहीं हो सकता था। दूसरे दिन, अर्थात् ता० १५ जुलाई को युद्ध के प्रस्ताव उस देश के चैम्बर्स और सिनेट नाम की महासभावों में उपस्थित किये गये । दोनों सभावों के सदस्य अत्यंत उत्तेजित और अमर्ष-पूर्ण हो रहे थे । ओलिवर और ग्रामां की वक्तृतावों पर सभासदों ने उन्मत्तवत् तालियां पीटीं । थोड़े से दूरदर्शी सभासदों ने उनके प्रतिवाद करने का भी साहस किया, और ऐसों में से एक वयोवृद्ध महात्मा तेयर भी थे । उस समय आप की अवस्था ७३ वर्ष की थी, और राजा विलियम की भी प्रायः यही अवस्था थी। महात्मा तेयर ने कहा —:

"१८६६ के प्रतिकारार्थ प्रशिया से किसी अवसर पर युद्ध लेना मुझको भी उतना ही अभीष्ट है, जितना किसी भी स्वदेश-गौरवाभिमानी फ्रेंच को हो सकता है, किन्तु मंत्रि-मंडल ने इस गंभीर कार्य्य के लिये जो यह अवसर पसंद किया है, वही मेरे विचार में अत्यंत निंद्य है। स्पेन वाले मामले में फ्रांस की बात जब यथोचित और यथाभिलिप्सित रीति से स्वीकार कर ली गई, तथा उसकी मर्य्यादा को सम्यकतया तुष्टि प्राप्त हो गई, तब आप लोग अपशब्दों के पीछे युद्ध के लिये तय्यार हो रहे हैं। इस देश के वीरों का रक्त-पात इस युद्ध में फ्रांस की मान-रक्षा के लिये नहीं होता है, नहीं! नहीं!! हमारे देश के मंत्रि-मंडल की मूर्खता और उद्दंडता ही इसका मुख्य कारण हो रही है!" ग्रामां ने उत्तर में कहा :—"प्रशिया के राजा ने फ्रांस के राज-दूत का अपमान करके स्वयं फ्रांस का अपमान किया है, यदि पार्लियामेण्ट इस अपमान को सहन कर सकती है, तो अच्छी बात है, परन्तु ऐसी दशा में मुझको मंत्री के पद पर पांच मिनिट भी रहना स्वीकार नहीं हो सकता है।" उसके इस उत्तर से शान्ति की अब बिल्कुल आशा शेष नहीं रह गई। एम्ज़ की घटना का विचित्र और अधरा वर्णन करके ग्रामां ने

युद्ध के लिये सभा की सम्मति सरलता से प्राप्त कर ली। लियां गाम्बेटा नामक एक सदस्य ने जब बिस्मार्क के गर्हित तार के वास्तविक शब्दों को प्रकट करने के लिये दबाव डाला, तब ग्रालिवर ने कहा :—"सभा को सर्कारी काग़ज़-पत्रों के जानने सुनने की क्या पड़ी है। माननीय सभासद गण ग्रपनी सम्मति (वोट) दें। समय यह कार्य्य करने का है, व्यर्थ वाद-विवाद का समय जाता रहा!" प्रशिया के प्रति फ्रांस की ग्राभ्यंतरिक द्रोह-बुद्धि से मंत्रि-मंडल का यह अनुचित ग्रौर महा ग्रनिष्ट-कारक प्रस्ताव शीघ्र स्वीकृत (Pass) हो गया। ग्रालिवर ग्रौर ले बोयफ़ ने सभा को विश्वास दिला दिया, कि भय करने की आवश्यकता नहीं है, फ्रांस युद्ध के लिये सर्वथा प्रस्तुत है, तथा शत्रु की अपेक्षा तय्यार होने के लिये उसको आठ दश दिन का ग्रधिक अवसर भी प्राप्त है। युद्ध करने का प्रस्ताव निश्चित हो गया, युद्ध के प्रारम्भिक व्यय के लिये पांच करोड़ फ्रांक * गवर्नमेण्ट को पहले दिया गया; पुनः ता० १८-१९ को युद्ध ग्रौर समुद्री सेना के लिये पचास करोड़ फ्रांक ग्रौर भी गवर्नमेण्ट के हाथ में दे दिये गये।

फ्रेंच राष्ट्र ग्रौर युद्ध

सिनेट ग्रौर चौम्बर्स महासभाग्रों की ग्रोर से कुछ चुने हुए प्रतिनिधि महाराज

* फ्रांस का सिक्का है, यह प्रायः साढ़े नौ ग्राने का होता है।

नैपोलियन के सम्मुख जाकर उनसे उन लोगों ने युद्ध के लिये अभ्यर्थना की। रुजग्रस्त महाराज अब कर ही क्या सकते थे, उन्होंने उत्तर में उनसे कहा :—"वह युद्ध जो देश तथा उसके प्रतिनिधिगणों की स्वीकृति से किया जाता है, अवश्य ही न्याय्य और करणीय है"। तत्पश्चात् उन्होंने अपने एक निज के पत्र में लिखा :— "मैं स्वयं इस युद्ध के बिल्कुल विरुद्ध हूं, परन्तु सर्व-सम्मति से बाध्य होकर मुझको भी अंगीकार करना पड़ता है"। निस्संदेह फ्रांस का एक बहुत बड़ा अंश शांति चाहता था, किन्तु शान्ति रह न सकी। पेरिस के नागरिकों की इच्छा दूसरी थी, यहां के अधिकांश लोग युद्ध चाहते थे। राजधानी ही से युद्ध-ज्वाला प्रदीप्तमान हुई, समाचार-पत्रों के क्रोधोद्दीपनकारी लेख इंधन-स्वरूप हुए। देश भर में मार्सेलेज़ (*Marseillaise*) * राग पुनः गाया जाने लगा, वह उस भयंकर ज्वाला के बढ़ाने में घृत का काम किया, इसने सर्व-साधारण के हृदय में रोष उत्पन्न कर दिया। नगर में रेजिमेण्टों के आने जाने से नागरिकों के शरीर की गर्मी ज्वर के दर्जे तक पहुंच गई। योद्धागण चिल्ला २ कर कहते थे, कि स्वदेश की मान-रक्षा

* यह एक प्रकार का कड़खा है, पहले पहल सन् १७९२ ई० में फ्रांस के प्रसिद्ध राज-विप्लव के समय मार्सिलिज़ नगर के वालंटीयरों ने इसे उस अवसर पर गाया था, जब कि उन लोगों ने ३०-वीं जुलाई को पेरिस नगर के राजप्रासाद 'टूलेरिज़' में प्रवेश किया था।

के लिये निज नश्वर शरीर के बलिदान कर देने से बढ़कर संसार में और कोई भी श्रेयस्कर वस्तु नहीं है। सब को युद्ध से उत्तमोत्तम परिणाम की आशा थी। प्रति-दिन सायंकाल को नगर की चौड़ी २ सड़कों से बैन्ड बाजे मारू राग गाते तथा 'बिस्मार्क की क्षय ! फ्रांस की जय ! चढ़ चलो राइन पर ! घेर लो राइन को !!' इत्यादि उत्साह दिलाने वाली बातें कहते निकलते थे। कहीं २ से किसी २ पैदल चलने वालों के मुख से 'शान्ति की जय' वाली ध्वनि भी एकाध बार सुन पड़ती थी। रण-प्रेमियों की जय-ध्वनि में पोलिस वाले भी अपना स्वर मिला रहे थे। सहस्रों मनुष्य प्रशियन राजदूत के महल को घेर कर 'प्रशिया की क्षय हो, प्रशिया का सत्यानाश हो' इत्यादि बातें कह २ कर उसके प्रति अपनी ईर्ष्या प्रकट करते देख पड़े। असत्य और निर्मूल दोषारोपण कर २ के फ्रांस के समाचार-पत्र भी वैसा ही कोलाहल मचाते थे। इन्हीं कोलाहलों के साथ २ परस्पर में विरोध उत्पन्न करने वाले कोलाहल भी इधर-उधर से सुन पड़ते थे। 'रीवील' नाम के एक समाचार-पत्र ने स्वयं महाराज नैपोलियन के प्रति यह प्रकाशित किया :—"जैसी दशा आप की शान्ति के समय में रही आई है, वैसी ही युद्धकाल में भी होनी अवश्यं-भावी है, अर्थात् जैसी दशा किसी जुवाखे लने वाले की होती है, बिल्कुल

वैसी ही आप की भी है। प्रशिया के साथ आप ने युद्ध ठान दिया, अच्छा किया। इसका व्यय तो फ्रांस की प्रजा को न देना पड़ेगा! परन्तु आप भी ध्यान रखें, आपको फ्रांस तभी क्षमा करेगा, जब आप पेरिस में विजेता बनकर लौटेंगे। कदाचित् आप पराजित होकर लौटे, तो देश की मान-रक्षा किस तरह से होगी, इसका निर्णय फ्रांस की प्रजा यथोचित रीति से कर लेगी, आपने समझा न !!"

परदे की ओट में अनेक प्रकार के कूट और प्रपंच भी रचे जा रहे थे, और इनमें शासन-प्रणाली में परिवर्तन करने की बात भी चला करती थी। उद्विग्नता से इस देश के मनुष्यों के विचारों में विचित्र परिवर्तन हो रहे थे, कभी तो उनके हृदय में कुछ और कभी कुछ विचार आते थे, कभी तो वे देश में प्रजा-तंत्र शासन-पद्धति करना चाहते थे, और कभी राज-तंत्र। युद्ध-समाचारों के जानने के लिये लोग अत्यंत उत्सुक हो रहे थे। बूर्स नामक बाज़ार में महाजनों से भरी हुई प्रायः दो सौ गाड़ियां ता० १२ जुलाई को चैम्बर्स सभा के दर्वाज़े पर इस बात की निश्चय ख़बर लेने आईं थीं, कि युद्ध का प्रस्ताव स्वीकार हुआ, या क्या ? युद्ध होगा, अथवा नहीं ? इससे उनका अभिप्राय भावों के बढ़ाने घटाने का था। प्रामिसरी नोटों के भाव में उस दिन सहसा

बहुत अंतर पड़ गया। बूर्स के महाजनों की स्वदेश-भक्ति का परिचय केवल इस बात से मिल सकता है, कि उन लोगों ने स्वार्थ-साधन के उद्देश से युद्धाग्नि के प्रज्वलित कराने के लिये पार्लियामेंट के सदस्यों तथा समाचार-पत्रों के लेखकों को साध २ कर अनेक कूट-प्रपंच रचवाया; देश की लाभ-हानि का कुछ भी विचार इन लोलुपों के हृदय में नहीं आया !!!

युद्ध-घोषणा

ता० १७ जुलाई को फ्रांस ने युद्ध की घोषणा प्रकाशित कर दी, और शीघ्रतापूर्वक इसकी इत्तला प्रशिया को दे दी गई। इत्तला देने की फ्रांस में इतनी जल्दी थी, कि तार द्वारा भी भेजने में उसे विलंब हो जाने की आशंका थी।

जर्मन ओजस्विता

इधर जर्मनी में भी ओजस्विता बढ़ती ही गई। एम्ज़ से बर्लिन लौटते समय राजा विलियम को चारों ओर से जय-नाद और हर्ष-ध्वनि सुनाई पड़ी। एम्ज़ से प्रस्थान होते समय वहां के निवासियों ने बहुत ही हर्ष-ध्वनि के साथ इनकी बिदाई की। मार्ग के प्रत्येक स्टेशन पर लोग इनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, और शाही ट्रेन के पहुंचते ही अति उच्च स्वर से लोगों ने आनन्द-सूचक ताल-ध्वनि की। बर्लिन स्टेशन पर तो नर-नारियों की बड़ी ही भारी

भीर थी, और ज्योंही इनकी ट्रेन स्टेशन में प्रवेश की, त्योंही राष्ट्रीय गीत और ताल-ध्वनि से समस्त स्टेशन-मंदिर गूँज उठा। राज-महल के सम्मुख दिन भर मनुष्यों के झुंड इधर से उधर और उधर से इधर आते जाते रहे, तथा महल के झरोखों और खिड़कियों से राजा और रानी का जब २ लोग दर्शन पाते थे, तब २ अपनी टोपियां उतार २ कर अपना हर्ष प्रकट करते थे। अन्टर डेन लिन्डेन (*Unter den Linden*) नामक राजधानी के एक प्रसिद्ध मुहल्ले में नागरिकों की ओर से राजा को एक सम्मान-पत्र (Address) दिया गया, उस पर नगर के सहस्रों धनी-मानी पुरुषों के हस्ताक्षर थे, उसमें यह लिखा था :—"इस भयानक अवसर पर देश की सारी प्रजा श्रीमान् के प्रति अपनी पूर्ण राज-भक्ति प्रकट करती भावी युद्ध में योग देने की हार्दिक इच्छा और परम ओजस्विता प्रकाश करती है। इस समय श्रीमान् की सभी प्रजा का यही एक अभीष्ट, और सिद्धांत हो रहा है, कि पितृ-देश और राजा की सेवा में परमेश्वर हम लोगों की सहायता करे।" फ्रांस के सम्राट् और वहां की प्रजा में केवल ऊपरी ऐक्यता थी, किन्तु प्रशियाधिराज और उनकी प्रजा में वास्तविक ऐक्यता झलकती थी। पेरिस के तारों से ऐसा बिश्वास होता था, कि अब युद्ध के छिड़ने में कुछ भी संदेह नहीं है। अतएव बर्लिन में भी ता० १५-१६ की

रात्रि में शासनाधिकारियों की एक सभा हुई, और युद्धार्थ सेना-संकर्षण का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। फिर तो देश के प्रत्येक नगर और ग्राम में इसकी आज्ञा तार द्वारा भेज दी गई। दक्षिणी जर्मन रियासतों में भी इसकी इत्तला दे दी गई। सैक्सोनी का राजा स्वयं अपनी सेना का नायक बना, और उसका भाई प्रिन्स जार्ज भी उसके साथ में हो लिया।

जर्मनी की समस्त प्रजा पर सेना-संकर्षण की आज्ञा का अमित प्रभाव पड़ा। स्वदेश के प्राचीन शत्रु—फ्रांस—के साथ लड़ने का सभी को बड़ा ही उमंग हुआ, विशेष कर इस कारण से, कि उसने अनायास शान्ति भंग करके प्रशिया को युद्ध के लिये ललकारा था। सभी लोगों को ऐसा विश्वास हो गया था, कि चूँकि इस युद्ध में जर्मनी को बेवश होकर जाना पड़ा है, अतएव अपने देश, गृह और बाल-बच्चों की रक्षा करना प्रत्येक जर्मन का कर्त्तव्य है। लाखों मनुष्यों के कंठ से यह भजन निकलता सुनाई पड़ा :—

"सोवो सुख से शान्ति चित्त, भो! पितृ-देश! मम प्यारो!
राइन-तट पर सावधान हैं, रक्षक पुत्र तिहारो *"

सदा की भांति इस समय भी भय और दुःख के समय में

*फान गटे (*Von Goethe*) की एक कविता का भावानुवाद। लेखक।

जर्मन जाति पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेष को भुला कर पितृ-देश की रक्षा में तत्पर हो गई। सैक्सोनी, हनोवर और हैन्सिएटिक नगरों तथा अधिकतर दक्षिणी जर्मनी में यद्यपि कहीं २ कोई २ मनुष्य राष्ट्रीयता के विरुद्ध भी वक्तृता देते देख पड़े थे, किन्तु जिस प्रकार प्रबल झंझा-वात के सम्मुख तृण का पता नहीं लगता है, उसी तरह ऐसे लोगों की बातों का भी कोई सुनने वाला नहीं मिला। जर्मनी का सर्वोच्च वक्ता, तथा जर्मन राष्ट्र का नेता—कौन्ट बिस्मार्क—इस समय अधिकतर दृढ़ता के साथ अपने कार्य्य में तत्पर हो गया। इस की दूर-दर्शिता और बुद्धि-मत्ता से इस मामले में विदेशी राष्ट्रों की सम्मति विशेषतः तो प्रशिया के अनुकूल हो गई थी, और यदि कहीं की सानु-कूल नहीं, तो उसके विरुद्ध भी नहीं थी। समस्त जर्मनी की शारीरिक, मान्सिक, आर्थिक और धार्मिक शक्तियों को समेट कर एक केन्द्र पर लाना बिस्मार्क ही सदृश प्रज्ञा-चक्षु पुरुष का कार्य्य था, वह इस समय जर्मन राष्ट्रीय शरीर का जीवन और नेता बन गया, आबाल-युवा-वृद्ध सभी का चित्त-चेतन बन कर उसने सब को अपना अनुयायी बना लिया। इसके पूर्व इस तरह पर कभी भी जर्मनी एक-सम्मति नहीं हुई थी।

१९-वीं जुलाई को, अर्थात् महारानी लुई* के मृत्यु की वार्षिक तिथि के दिन जर्मनी को फ्रांस की युद्ध-घोषणा प्राप्त हुई। फ्रांस के तरफ़ से प्रशिया को इस स्पेन वाले मामले में यही एक मात्र ज़ाब्ते का पत्र था। उसी तिथि को जर्मन डायट नाम की सभा खुली; और प्रशियाधिराज ने वहां स्वयं जाकर एक अत्यंत ओजस्वी वक्तृता में यह कहा:—"इस न्याय्य युद्ध में, जिसमें हम लोगों को बेवश होकर योग देने के लिये बाध्य होना पड़ा है, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर हम लोगों की वैसी ही सहायता इस पितृ-भूमि की रक्षा के हेतु करेगा, जैसी वह सदा से ऐसे अवसर पर हमारे पूर्वजों की करता आया

*महारानी लुई राजा विलियम की माता थीं। नैपोलियन-प्रथम के संग्राम काल में उन्हें फ्रांसिसियों के हाथ से बहुत कष्ट उठाना पड़ा था, अपने देश तथा राज-कुल का उन्हें सत्यानाश देखना पड़ा था। स्वयं नैपोलियन का कटु बचन तक उन्हें सहना पड़ा था। फान गटे (Von Goethe) नामक जर्मनी का प्रसिद्ध कवि उसके विषय में लिखता है कि उसकी भाग्य में सुख की रोटी खाने को कभी नहीं बदी रही। यह पूज्या, दीना और भाग्यहीना महारानी अपने विपत्ति के दिनों में, जब आप अपने राज्य से बाहर जंगल २ मारी २ फिरती थीं, नित्य प्रति प्रायः अधोलिखित तुलसीदास-रचित-गीत-भाव के की एक गीत गाया करती थीं:—"कृपा सेा धौं कहा बिसारी राम। जेहि करुणा सुनि श्रवण दीन दुख धावत हौ तजि धाम। नाग-राज निज बल विचारि हिय हारि चरण चित दीन्ह। आरत गिरा सुनत खग-पति तजि चलत बिलम्ब न कीन्ह..... एक एकते रिपु-त्रासित जन तुम राखे रघुवीर। अब मोहि देत दुसह दुख बहु रिपु कस न हरहु भव-पीर।" आप नित्य अपनी धर्म-पुस्तक 'बाइबिल' का पाठ नित्य किया करती थीं। स्वतंत्रता-प्राप्त्यर्थ जो संग्राम हुए, उन्हें देखने के लिये यद्यपि आप रह तो न गईं थीं, पर आपके पूज्य नाम और दशा का ध्यान करके प्रशियन वीरों को उन संग्रामों में बहुत ही उत्साह मिला था।

है।" रायस्टा सभा की भी सहानुभूति समस्त जर्मन प्रजा के साथ थी; इसके सभासदों ने फ्रांस के युद्धाह्वान को सहर्ष स्वीकार कर लिया, महाराज को अपनी सेवा और भक्ति का वचन दिया, तथा युद्ध-व्यय के लिये १२०,०००,००० टेलर्स * तुरंत मंज़ूर कर दिया।

उसी प्रसिद्ध १९-वीं जुलाई को राजा विलियम अपने ज्येष्ट पुत्र, युवराज को लेकर निज पूर्वजों की समाधि-भूमि (Churchyard) का दर्शन लेने गये। वहां पर वे दोनों बहुत बिलंब तक ठहर प्राचीन घटनावों का स्मरण तथा महारानी लुई का ध्यान करते रहे। अत्यंत नम्रता और भक्ति पूर्वक उन दोनों ने वहां परमेश्वर की भी उपासना की। गिरजा-घर से निकलने पर युवराज ने अपने पिता से कहा:— "ऐसी शुभ मुहूर्त में प्रारंभ हुए युद्ध में विजय-लाभ अवश्य होता है।"

जर्मन-ऐक्यता

जर्मनी की इस सुदशा और ऐक्यता के स्मारक में तथा स्वाधीनता के युद्ध में योग देने वाले निज योद्धावों को उनके वीर कार्य्यों के लिये पुरस्कार देने के उद्देश से विलियम ने उसी दिन ऐरन क्रास (Order of Iron Cross) नामक पद के प्रचार की पुनःआज्ञा की, उसी दिन बवेरियन पार्लियामेंट में यह प्रस्ताव स्वीकृत

*जर्मन देश का सिक्का है, प्रायः सवा दो रुपये का होता है।

हुआ, कि यह युद्ध केवल उत्तरी जर्मनी का नहीं, किन्तु समस्त जर्मनी * का होगा।

बेडेन

बेडेन रियासत की कार्य्यवाही का दक्षिण जर्मनी पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। फ्रांस के सामीप्य तथा अपने सुयोग्य और अनुभवी ग्रैंड ड्यूक के प्रभाव से इस रियासत के निवासियों के हृदय में स्वदेश-भक्ति का भाव उत्पन्न हो गया था, और वे बहुत दिनों से उत्तरी जर्मन-संहति में शामिल होने का अवसर देख रहे थे। यहां का ग्रैंड ड्यूक अपनी प्रजा का ऐसा प्रेम-पात्र हो रहा था, कि उसने अपनी पार्लियामेण्ट सभा की सम्मति प्राप्त करने के पूर्व ही ता० १६ जुलाई ही को प्रशिया की भांति युद्धार्थ सेना-संकलन की आज्ञा दे दी। इस राज्य के केल नामक नगर में राइन नदी पर जो पुल बना था, उसको तोड़वा कर फ्रांस के साथ जो एक-मात्र संबंध इस देश का शेष रह गया था, उसको भी उसने इति कर दिया।

बवेरिया

बवेरिया का नव-युवक राजा और उसके मंत्री गण परम स्वदेश-भक्त थे, उन सब

*इस बात के प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है, कि इसके पहले फ्रांस को समस्त जर्मनी से एक ही साथ कभी भी युद्ध करना नहीं पड़ा था। इसके पूर्व के फ्रांस-जर्मन युद्धों में जर्मनी की कुछ रियासतें या तो फ्रांस की सहायक ही रही आई थीं, अथवा अपने पड़ोसी को मारी जाती देख वे उदासीन (Neutral) भाव धारण किये रहती थीं। आर्मिनियस के समय से ही ट्यूटनो (जर्मनो) की फूट से लैटिन (फ्रेंच) जाति लाभ उठाती आई थी।

की नस २ से जर्मन-प्रेम की प्रभा झलकती थी। यहां के राजा ने भी युद्धार्थ सेना-संकर्षण की आज्ञा ता० १६ को प्रकाशित कर दी। यह आज्ञा मुख्यतः सैनिक थी, बवेरिया राज्य की प्रजा की, और विशेषतः वहां की राजधानी म्यूनिच निवासियों की प्रशिया के साथ अपने देश के राजा के सदृश पूर्ण सहानुभूति थी, किन्तु वहां की पार्लियामेन्ट सभा में धर्मानुयायी (Clerical) सदस्यों का आधिक्य था, केवल उन्हीं में से कुछ २ लोग प्रशिया के विरुद्ध थे।

ता० १९ जुलाई को बवेरियन पार्लियामेन्ट में युद्ध-विषयक प्रश्न उपस्थित किया गया। गवर्नमेण्ट की ओर से सैनिक व्यय के लिये ३,९०,००,००० रु० की मंज़ूरी मांगी गई। बजेट कमेटी के रिपोर्टर ने इसको अस्वीकार करके कहा, कि बवेरिया को इस युद्ध में शस्त्रीय उदासीनता (Armed Neutrality) प्रकट करनी चाहिये। प्रधान मंत्री और समर-सचिव ने इसका अत्यंत उद्दंडता के साथ प्रतिवाद किया। पश्चात् डिप्टी सेप ने ज़ोर देकर कहा :—"लिपज़िग के युद्ध * में बवेरिया शेष जर्मनी से विलग रह कर बहुत हानि उठा चुका है, अब इस नवीन राष्ट्रीय युद्ध में हम लोग अवश्य ही अपने भाइयों का

* सन् १८१३ ई० के १६, १७ और १८ अक्तूबर को लिपज़िग का युद्ध हुआ था, जिसमें नैपोलियन बोनापार्ट को बहुत ही भयानक पराजय दी गई थी, और तभी से जर्मनी सर्वदा के लिये फ्रांस के हाथ से निकल कर स्वतंत्र हो गया था।

साथ देना चाहते हैं।" सुतरां उस दिन की सभा में सभी सभासदों के हृदय से वह ओजस्विता प्रकट होती थी, जैसी वहां पर उसके पूर्व कभी भी देख नहीं पड़ी थी। युद्ध-विरोधी सभासदों ने बहुत ही दृढ़ता के साथ इसका प्रतिवाद किया, किन्तु गैलरी * में उपस्थित मनुष्यों के प्रोत्साहन से अंत में राष्ट्रीयों (Nationalists) ही की बात रही, और युद्ध में योग देने का मंतव्य स्थिर हुआ। प्रधान मंत्री ने तुरंत तार द्वारा बर्लिन को सूचना भेज दी, कि इस युद्ध में बवेरिया भी प्रशिया का साथ देगा †। इस सुसंवाद को सुनकर प्रजा ने अपने नव-युवक राजा लुई का राज-प्रासाद तथा नाटक गृह में बहुत ही ओजस्विता के साथ अभिवादन किया, और जय २ कार करके अपनी प्रसन्नता प्रकट की। इस देश के छः अपर राजकुमारों ने भी भावी युद्ध में अपनी सेना के साथ योग दिया था।

वर्टेमबर्ग

अब वर्टेमबर्ग भी किसी तरह से पीछे नहीं रह सकता था। यहां की गवर्नमेण्ट तथा पार्लियामेण्ट के अधिकांश सदस्य तो निस्संदेह उदासीन

*गैलरी (Gallery) का अर्थ बाजा या छत का दालान है, जहाँ पर सभा में भाग न लेने वाले मनुष्य बैठ कर सभा की वक्तृताओं को सुन सकते हैं।

†इस घटना के केवल चार ही वर्ष पूर्व बवेरिया ने प्रशिया के विरुद्ध आष्ट्रिया का साथ दिया था, और उसमें वह प्रशिया द्वारा बुरी तौर से पराजित किया गया था। उस अपमान को भुला कर वहाँ की राज-सभा में ऐसे मंतव्य के स्थिर होने से वहाँ की प्रजा में स्वदेशानुराग और जर्मन साम्राज्य के प्रति प्रगाढ़ भक्ति का प्रादुर्भाव हो आना सूचित होता है।

(Neutral) रहना पसंद करते थे, किन्तु वे अब स्वेच्छित रीति से कार्य्य नहीं कर सकते थे। प्रजा के स्वदेशानुराग तथा एकाएक अनेक उत्साह-प्रवर्द्धिनी घटनाओं के आगमन से प्रोत्साहित होकर यहां की पार्लियामेन्ट सभा ने भी युद्ध-व्यय के लिये समुचित द्रव्य मंज़ूर कर दिया, और भावी संग्राम के लिये यथोचित तय्यारियां की जाने लगीं।

ता० १६ जुलाई को प्रशिया के युवराज ने अपनी दिन-चर्य्या की पुस्तक में यह नोट लिखा :—"समस्त सेना के तीन दल बनाये जायँगे, मैं दक्षिणी जर्मन सेनाओं का कमाण्ड स्वयमेव लेकर सब से कठिनतम कार्य्य का भार अपने हाथ में लूंगा। मुझको एक वीर शत्रु के साथ युद्ध करना है, पुनरपि हमारे कमाण्ड की सेनायें (दक्षिण-जर्मन) भी ऐसी हैं, जो प्रशिया से एक तो प्रेम ही कम रखती हैं, दूसरे उन्हें सामरिक शिक्षा भी प्रशियन प्रणाली के अनुसार नहीं मिली है।" दक्षिण जर्मनों के संबंध में प्रशिया दर्बार के उस तिथि तक के ख़्यालात वैसे ही थे, किन्तु उसके दो ही दिन के पश्चात् यह ख़बर फैली :—"सार्वत्रिक ओजस्विता! समस्त जर्मनी एकीभूत होकर शत्रु के साथ युद्ध करने के लिये उद्यत है!" विदेशी शत्रु के भय से जर्मन साम्राज्य के प्रत्येक अंग ने प्रशिया का साथ देना स्वीकार कर लिया। इसी

में सब को अपना कल्याण सूचित हुआ। भावी विजय-लाभ के उत्साह में जो किञ्चित् पारस्परिक द्वेष की मात्रा उनमें से किसी में रह गई थी, वह विद्युत् प्रकाश के सदृश एक क्षण में लोप हो गई।

दक्षिण जर्मनी में प्रशिया का युवराज

बिरमार्क की सम्मति से युवराज प्रशिया ने दक्षिण जर्मन दर्बारों में स्वयं उपस्थित होने की अपनी इच्छा ता० २० जुलाई को प्रकट की। इस कुलीन वीर योद्धा से बढ़कर दूसरा कोई भी पात्र इस महत्कार्य्य के संपादनार्थ उपयुक्त नहीं हो सकता था। आप प्रथम तो कानिग्राज़ के विजेता ही थे, पुनः देखने में भी सुन्दर, मनोहर और चित्ताकर्षक योद्धा थे, अपने मधुर संभाषण से तुरंत सब के मन को अपने वश में कर लेने की आप में अद्वितीय शक्ति थी। आपके दर्शन से म्यूनिच निवासियों को अनिर्वचनीय आनंद प्राप्त हुआ। म्यूनिच से आप स्टटगार्ट पधारे, इस नगर से फ्रेञ्च राज-दूत उसके एक ही दिन पूर्व विदा कर दिया गया था। यहां के राज-वंश से नैपोलियन वंशजों का व्यक्तिगत संबंध था, तथापि यहां के राजा ने प्रशियन युवराज के दुर्दाह्वान को बतौर आज्ञा के सिरोधार्य्य कर लिया, क्योंकि युवराज ही समस्त जर्मन दल के प्रधान सेनापति भी थे। पुनः इस राष्ट्रीय युद्ध में इस प्रांत के निवासियों की हार्दिक सहानुभूति, राष्ट्र-भक्ति तथा अपने प्रति उनका

असीम स्नेह देखकर युवराज परम प्रसन्न हुए। स्टटगार्ट से विदा होकर कार्ल्सरूहे के मार्ग से आप स्पायरेस पहुंचे, और वहां पर पहले ही पहल आपने बवेरियन सेनाओं को युद्धार्थ मैदान में पड़ाव किये देखा।

धार्मिक अस्पताल इत्यादि

समस्त जर्मनी में चारों ओर धार्मिक सभाएं भी स्थापित होने लगीं। बीमारों और घायलों की सेवा-सुश्रूषा करना तथा उन दुखी और अनाथ कुटुम्बियों को, जिनके कमाने वाले पुत्र युद्ध में योग देने के लिये तलब कर लिये गये थे, अन्न-वस्त्र पहुंचाना इन सभाओं का उद्देश था। सेंट जान के नाइटों के ग्रैंड माष्टरी की हैसियत से राजकुमार चार्ल्स ने ता० १७ जुलाई को यह समन (आज्ञा-पत्र) प्रकाशित किया:—

"युद्ध अवश्यं-भावी है, हास्पिटलर्स के ह्वैट क्रास की सभा-मंडली में एकत्रित होकर प्रभु ईसूमसीह की अनुपम उदाहरण के अनुसार मित्र और शत्रु दोनों की सहायता करना हम लोगों का कर्त्तव्य होगा; अतएव जिस तरह से हम लोगों ने सन् १८६४ और सन् १८६६ ई० के युद्धों में अपना कर्त्तव्य-कर्म्म पालन किया था, उसी तरह अब की बार भी यथा-शक्ति बीमारों और घायलों की सेवा-सुश्रूषा करना हम लोगों का परम धर्म और मुख्य उद्देश होगा।" इस आज्ञा के अनुसार सेण्ट जान चर्च के वे सब नाइट जो इस धार्मिक कार्य्य में अपना शरीर

अर्पण करने के लिये उद्यत थे, रण-भूमि की ओर प्रस्थान करने के लिये बुला लिये गये, और जो किसी कारण से वहां जाने में असमर्थ थे, उन्हें अपर रीति से (धन इत्यादि से) इस कार्य्य में सहायता पहुंचाने की उत्तेजना दी गई। "निज पितृ-देश तथा जन्म-भूमि की सेवा करने तथा अपने में ऐसी शक्ति प्रदान करने की, कि जिसके द्वारा इस भयानक कार्य्य को हम लोग सफलता पूर्वक संपादन कर सकें, प्रार्थना हम सब को सर्व शक्तिमान् परमेश्वर से करनी चाहिये।" ता० २० जुलाई समस्त जर्मनी के गिरजाघरों में ऐसी प्रार्थना के लिये तिथि नियत की गई। उस तिथि को समस्त जर्मन राष्ट्र एक मुख से पादरियों की ओजस्वी और हृदय-ग्राही वक्तृतायें सुनने के लिये गिरजाघरों में उपस्थित हो गया। जिस भांति १८१३ में इस देश वालों ने अपनी धार्मिक प्रकृति का परिचय दिया था, उसी तरह उस तिथि को भी सबों ने परमेश्वर से प्रार्थना की; स्वभाव से ही जर्मन जाति सर्वदा से ईश्वर भक्त और धर्म-भीरु होती आई है।

युद्ध और योरप

कोई नहीं कह सकता था, कि इस युद्ध का परिणाम क्या होगा। जर्मनी ही मात्र की भावी भय-पूर्ण और संदिग्ध-रहित नहीं थी, किन्तु समस्त यूरोपियन राज-नीतिक आकाश युद्ध-भय रूपी मेघों से आवृत्त सूचित होता था। फ्रांस गर्व से फूला था। रूस का बहुत

बड़ा प्रभाव पहुंच सकता था, किन्तु निज दूर-दर्शिता और कार्य्य-पटुता से बिस्मार्क ने पूर्वोय मामले में उसकी कुछ मदद करके उसे अपनी ओर मिला लिया था। रूस सम्राट्, महाराज अलैक्ज़ैण्डर द्वितीय का अपने मामा प्रशियाधिराज राजा विलियम के साथ में इस समय पूरी मित्रता हो गई थी, अतएव वह जर्मनी के ऊपर फ्रांस का अत्याचार नहीं देख सकता था; इसीलिये रूस स्वयं उदासीन रह कर आष्ट्रिया और डेन्मार्क को भी वैसा ही रहने के लिये विवश कर रखा। डेन्मार्क वालों के हृदय में प्रशिया के प्रति पुराने बैर की आग तब भी धधकती थी; श्चेल्सविग-हाल्स्टेन को वे पुनः स्वाधिकार में लाने के लिये अत्यंत उत्सुक हो रहे थे, किन्तु प्रशिया की वीरता, इंगलैण्ड और रूस के प्रभाव तथा अपने राजा के शांत-स्वभाव से इन लोगों ने शांति धारण करने ही में अपना कल्याण समझा। आष्ट्रिया के ऊपर रूस का इससे भी अधिक प्रभाव पहुंचा, उसने तो आष्ट्रिया से साफ़ २ शब्दों में यह कह दिया था, कि किसी भी प्रकार से उसके युद्धोपचारार्थ कारण होने को उसकी ओर से उदासीनता का अनादर किया जाना समझा जायगा, जिसका परिणाम उसके लिये अच्छा नहीं होगा। पहले के पत्र-व्यवहार से नैपोलियन को इस युद्ध में आष्ट्रिया और इटली से सहायता प्राप्त होने की पूरी २ आशा थी,

और इसी उद्देश से उसने उन दोनों शक्तियों से इस समय संधिका प्रस्ताव भी किया। प्रशिया की हेठी होने और कोनिग्राट्ज़ (सैडोवा) का बदला मिल जाने से बायना दर्बार को बहुत ही बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होती, किन्तु अवसर यह अच्छा नहीं था; दो ओर से युद्ध छिंड जाने की इसमें संभावना थी, पूर्वीय झगड़ों के भी छिंडने का संदेह था; पुनः विजयी होने पर भी उस को पेरिस अर्थात् फ्रांस के प्रभाव के नीचे दबा रहना पड़ता। विदेशी नीति संबंधी उपर्युक्त विचारों के अलावे इस समय आष्ट्रिया की आभ्यंतरिक दशा भी कुछ आशातीत नहीं थी, मगयार्स और आष्ट्रो-जर्मन* ये दोनों जातियां शांति चाहतीं थीं; इसके सिवाय न तो यहां की सेना ही युद्ध के लिये तय्यार थी, और न कोष ही की अवस्था समुपयुक्त थी। इटलीकी भी प्रायः ऐसी ही दशा थी, कोष की कृशता यहां भी थी, पुनः प्रशिया ने इटली की सन् १८६६ ई० के युद्ध में सहायता भी की थी, अतएव यहां की प्रजा और सेना ये दोनों ही प्रशिया के विरुद्ध फ्रांस का साथ देने में हिचकतीं थीं; पुनरपि फ्रांस का सहानुभूति भी इटली के शत्रु पोप के साथ रहती थी,

*आष्ट्रो-हंग्री साम्राज्य में आधी आबादी इन्हीं दो जातियों की है, धन तथा राजनैतिक विषयों में इन दोनों का प्रभाव आधे से भी अधिक है।

अतएव इटली के युद्ध-प्रेमी राजा ने भी इस समय अपनी खड्ग मियान में ही रही आने देना उचित समझा। कुछ ही दिनों के पश्चात् जब फ्रांस की पराजय पर पराजय के समाचार पहुंचने लगे, तब तो वायना और फ्लोरेन्स इन दोनों ही जगहों के निवासियों को अपने शांत रहे आने पर पूरी प्रसन्नता हो गई, और तब से ये दोनों ही राज्य सर्वथा उदासीन और निस्पृह बने रहे आये। इंगलैण्ड तो प्रारंभ ही से उदासीन बना रहा आया था, वाणिज्य पर निर्भर रहने वाले देश के लिये ऐसा उचित ही था, तथा प्रतिद्वन्द्वियों की दुर्दशा ही में तो वणिकों को अपने पाकेट गर्म करने का सुअवसर प्राप्त होता है। 'व्यापार में हानि न पहुंचे' इसी उद्देश से इंगलैण्ड ने ऐसा यत्न किया, कि जिसमें युद्ध-क्षेत्र का परिमाण न्यूनातिन्यून रहा आवे, केवल फ्रांस और जर्मनी आपस में लड़-भिड़ कर निपट लें। किन्तु फ्रांस को अपने लिये सहायकों की आवश्यकता थी, इसलिये वह युद्धाग्नि को फैलाने ही में अपना कल्याण समझता था, अतएव अपने इस कार्य्य से इंगलैण्ड ने एक तरह पर फ्रांस का अनुपकार किया। बाहरी देशों में केवल स्पेन की सहायता का प्रशिया को कुछ भरोसा हो सकता था, क्योंकि उसी के लिये उसको यह युद्ध करना पड़ा था। पुनः, अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये स्पेन को भी

प्रशिया की सहायता करना उचित भी था, किन्तु स्पेन अपने को प्रशिया का अनुग्रहीत नहीं समझता था; क्योंकि प्रिन्स लिवोपोल्ड ने वहां के सिंहासन पर बैठना अस्वीकार ही कर दिया था। पुनः उस समय स्पेन की राजनैतिक अवस्था और सेना, दोनों ही की दशा अव्यवस्थित थी, तथा वहां की प्रजा को भी फ्रांस की आज्ञाकारिणी बनने का स्वभाव सा पड़ गया था।

युद्ध का परिणाम

अतएव अब फ्रांस और जर्मनी को अकेले ही अकेले इस युद्ध में अपनी २ शक्ति की परीक्षा करना पड़ गया। संसार को तथा स्वयं जर्मनी की साधारण प्रजा को तो यह विश्वास था, कि फ्रांस की सैनिक शक्ति श्रेष्ठतर है; महाराज नैपोलियन को इसमें संदेह था; मोटके * और रून को प्रशिया ही की श्रेष्ठता

* १८७० की ग्रीष्म ऋतु में मोटके अपने संबंधियों के साथ अपनी क्रीसौ की जागीर में था। वहाँ पर वह अपने विश्राम के दिन सानंद व्यतीत कर रहा था। उसको कुछ भी ख़बर नहीं थी, कि उसके जीवन के कठिनतम कार्य्य का समय अर्थात् जर्मन सेना को फ्रांस के मुक़ाबिले में ले चलने का अवसर अत्यंत सन्निकट है। अपने भाई एडोल्फ, उसकी स्त्री, तथा उनकी दो लड़कियों को लिये वह एक खुली गाड़ी में वायु-सेवन के लिये जा रहा था; स्वयं आप ही गाड़ी हांक रहा था, और पास ही उसका भाई भी कोच बक्स पर बैठा हुआ था। उसकी गाड़ी ज्योंही पील (Peile) नदी की रपट पर पहुँची, कि त्योंही एक तार वाले लड़के ने उसको एक आवाज़ दी। मोटके ने घोड़ों को रोक कर तार ले लिया, और उसको पढ़ कर पाकेट में डाल लिया। पश्चात् उसने घोड़ों को पूर्ववत् आगे बढ़ाया, उसके बाहरी भावों से इस तार का कुछ भी महत्व प्रकट नहीं हुआ, केवल पहले की अपेक्षा उसने कुछ मौन अधिक धारण कर लिया। एक बात और सूचित हुई थी, यानी तब से उसका चित्त हवा ख़ाने में न रह कर वस्तुतः रण-कार्य्य के प्रबंध में प्रवृत्त हो गया था, क्योंकि उसकी अनुपस्थित-चिंतता सेएकबार

का पूर्ण विश्वास था। इनमें से किनका विश्वास सत्य और किनका निर्मूल था, इसका निर्णय अब शीघ्र ही रण-भूमि में हो जाने वाला था।

वाग्युद्ध

इधर जब तक तोपों और बंदूक-संगीनों से वास्तविक युद्ध प्रारंभ नहीं हुआ था, तब तक प्रशिमन और फ्रेञ्च दोनों ही गवर्नमेण्ट वाग्-युद्ध में प्रवृत रहीं थीं, प्रत्येक दूसरी को युद्ध का कारण और शांति-भंग का दोष-भागी बनाती थी। इस वाग्-युद्ध से बिस्मार्क की दूर-दर्शिता, राज-नीतिज्ञता और कार्य-पटुता, तथा उसके प्रतिद्वंद्वी फ्रांस की चपलता, और निज अभ्युदय की अत्यन्त लोलुपता खूबही प्रकट हुई। प्रशियन-तुमुल गदा-प्रहार की आघात-ध्वनि के सदृश संसार में प्रतिध्वनित होने लगा। राइन नदी के वाम तटस्थ प्रदेश के लिये फ्रांस का प्रस्ताव, आष्ट्रिया के विरुद्ध उसका संधि संबंधी प्रस्ताव, दक्षिणी जर्मन रियासतों को

गाड़ी सड़क की एक पटरी से टकरा गई, और खूब धक्का दी। एक घंटा तक वायु-सेवन के पश्चात् जब वह मकान लौटा, तब अपनी इस सत्तर वर्ष की वृद्धावस्था में भी गाड़ी पर से कूद कर पीछे २ आते हुए अपने भाई से यह कह कर वह अपने निज के कमरे में चला गया :—"यह अत्यंत असुविधा का कार्य्य है, मुझको आज ही रात में बर्लिन जाना होगा।" रात्रि में जब तक चाय पीने का समय नहीं हुआ, तब तक वहीं पर वह अपने कार्य्य में निमग्न रहा। पुनः मौन परंतु निश्चिंत भाव से वह अपने कुटुम्बियों में बैठ कर चाय-पान किया; पश्चात् सहसा उठ और मेज़ पर अपना हाथ मार कर यह कहा :—"आवै !—दक्षिण जर्मनो के साथ, किम्वा अकेले भी हम लोग उसके इस्तक़बाल के लिये तय्यार हैं !" यह कह कर फिर भी वह अपने कमरे में चला गया, और प्रस्थान समय के पूर्व वहाँ से बाहर नहीं निकला।

उत्तरी जर्मन संहति में मिलाने देने के बदले में फ्रांस का अपने लिये लक्सेमबर्ग तथा बेलजियम का मांगना इत्यादि बातों को सुनकर सारा योरप दंग और स्तंभित हो गया; इंगलैण्ड और आष्ट्रिया विस्मित हो गये, दक्षिणी जर्मन रियासतों को इस बात का सबूत मिल गया, कि उनका संरक्षक फ्रांस नहीं, किन्तु उनका बड़ा भाई प्रशिया ही है।

प्रजा के प्रति दोनों देशों के घोषणा-पत्र

ता० २३ जुलाई को महाराज नैपोलियन ने अपना घोषणा-पत्र प्रकाशित किया; आप ने उसमें प्रशिया के ऊपर दूसरे देश की भूमि को अन्याय पूर्वक अपहरण कर लेने का दोष लगा कर फ्रांस की सहनशीलता की बहुत बहुत बड़ाई गाई। उन्होंने यह भी कहा: —"जगद्विजयी फ्रेञ्च राष्ट्र का यह कीर्ति-स्तंभ, यह यशस्वी पताका, जिसको खोल कर रण-भूमि में फैलाने के लिये आज हम लोग पुनः बाध्य हुए हैं, वही है, जिसके द्वारा एक समय समस्त योरप में इस राष्ट्र की परमोच्च सभ्यता के सिद्धान्त व्याप्त हो चुके हैं, उन्हीं सिद्धान्तों के चिन्ह इसमें अब भी उपस्थित हैं, और इसके दर्शन से हम लोगों के हृदय में उसी ऐक्यता और स्वदेश-भक्ति का अब भी प्रादुर्भाव होता है।" जर्मन राष्ट्र के प्रति जो प्रशियाधिराज विलियम ने अपना पहला घोषणा-पत्र ता० २२ जुलाई को प्रकाशित किया था, उससे दूसरी ही ध्वनि निकलती थी। उसके शब्द

शब्द से पितृ-देश के प्रति असीम भक्ति, पारस्परिक प्रेम और विश्वास की सरस ध्वनि का संचार होता था। ता० ३१ जुलाई के अपने दूसरे घोषणा-पत्र में उन्होंने यह प्रकट किया :—"हम और हमारी समस्त प्रजा इस बात को जानती हैं, कि शांति-भंग और युद्ध के दोष-भागी हम लोग कदापि नहीं कहे जा सकते हैं; किन्तु युद्ध के लिये आह्वाहन किये जाने पर हम लोगों का कर्त्तव्य है, कि अपने पिता-पितामहों के सदृश परमेश्वर की सहायता का पूर्ण भरोसा रखकर जननी जन्म-भूमि को शत्रु के हाथ से परित्राण देने के लिये प्रसन्नतापूर्वक शत्रु के युद्धाह्वाहन को स्वीकार करें।"

नैपोलियन की उदासीनता

यद्यपि फ्रांस के युद्ध-सचिव ने सामरिक सब सामग्रियों के ठीक होने का महाराज को विश्वास दिला दिया था, तब भी नैपोलियन ने रण-भूमि की ओर जाने में विलंब किया; उसके हृदय में भावी अशुभ-सूचनायें उपस्थित हो २ कर मानो यह कहे देती थीं :—"तुम पुनः लौट कर अपने राज-महलों को देख न सकोगे।" ता० २३ जुलाई ही को उसने राज-महल का चार्ज तो अपनी महारानी को दे दिया, तथापि ता० २८ तक वह वहां से प्रस्थान नहीं किया। अंत में अपनी प्रजा और राज-धानी से बिदाई का अभिवादन बिना लिये ही गुप्त रीति से रेल पर सवार होकर वह मेज नगर को चला गया। कुछ

ही दिनों के पश्चात् उसका राज-महल सच-मुच ही मिट्टी में मिला दिया गया, परन्तु शत्रु के गोलों से नहीं, किन्तु पेरिस नगर के निवासियों ही के आघात से! यानी नैपोलियन की पराजय का समाचार सुनकर फ्रेञ्चों ही ने यह कुत्सित कार्य्य कर डाला !!

बर्लिन में उत्साह

बर्लिन नगर की दशा यहां से बहुत ही भिन्न थी; यहां का उत्साह अकथनीय था। ता० ३१ जुलाई के तीसरे पहर को मनुष्य स्टेशन से राज-महल तक एकत्रित हो गये। साढ़े पांच बजे राज महल का फाटक खुला, और साधारण दो घोड़े की खुली गाड़ी पर राजा विलियम अपनी रानी अगस्टा के साथ निकले। वहां से स्टेशन तक जय-जय की ध्वनि से आकाश-पाताल एक हो गया। स्टेशन की शोभा भी निराली बनी थी, राजा के प्रति अपना असीम प्रेम प्रकट करने के लिये प्रजा ने फूल, माला और पत्तियों से उसे खूब ही सजाया था।

युद्धार्थ विलियम का प्रस्थान

बिदाई की सूचना के लिये एक मेज़ पर शाहबलूत * के पत्तों की माला इस तरह पर रखी गई थी, कि उससे "परमेश्वर आपका सहायक हो", ये साधारण, किन्तु अमूल्य शब्द चित्रित

* जर्मनी वाले शाहबलूत के वृक्ष को निज राष्ट्रीय प्रकृति-विशेष का 'आदर्श-स्वरूप' समझते हैं। लेखक।

हो गये थे। उसे देखकर विलियम का हृदय द्रवी-भूत हो गया। दाहने, बांये सब लोगों से हाथ मिला २ कर आप अपनी गाड़ी में बैठ गये। सहस्रों नेत्रों से उस समय प्रेमाश्रु की धारा बह रही थी। गाड़ी में बैठ कर महाराज ने अपनी सारी प्रजा का पुनः अभिवादन स्वीकार किया, तब प्रिंस फ्रेडरिक चार्ल्स, बिस्मार्क, रून और मोटके को साथ में लेकर रण-भूमि की ओर प्रस्थान किया।

युद्ध में उस दिन आप राजा की हैसियत से पधारे थे, और अंत में समस्त जर्मन साम्राज्य का महा राजा बन कर राजधानी को लौटे। तथास्तु।

शेष-संग्रह

बिस्मार्क का जीवन-चरित्र अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है, उसके अनुसार बेनेडिटी के अंतिम साक्षात् तथा बिस्मार्क के तार-परिवर्तन की कथायें कुछ भिन्न तरह पर हैं, और वे बहुत कुछ सत्य भी मालूम होती हैं, अतएव उनका सारांश नीचे दिया जाता है :—

रानी के प्रभाव से राजा विलियम फ्रांस से युद्ध छेड़ने के लिये तय्यार नहीं होते थे। रानी ने राजा को जेना और तिलसिट के संग्रामों का ध्यान दिला कर फ्रांस से युद्ध न छेड़ने के लिये बारंबार विनय

किया था; उसने रानी की बात मान ली थी, और इसी से फ्रांस को वह राजनीतिक विजय प्राप्त हो गई थी, जिस का वर्णन ७६-वें पृष्ठ पर किया गया है। परंतु बिस्मार्क को इसका बहुत बड़ा पश्चात्ताप हुआ, और यह समझ कर कि इसका दक्षिण-जर्मनी पर अत्यंत अनिष्ठ-कारक प्रभाव पड़ेगा, उसने तुरंत अपने पद से इस्तेफ़ा दे देने का विचार कर लिया, जिसमें उसको राजा के इस कार्य्य का उत्तर-दाता न होना पड़े। तथापि एक ऐसी घटना हो गई, जिसके कारण उसने अपना यह गंभीर विचार परिवर्तन कर दिया। वह यों है :—

"यद्यपि रून ने मुझको इसके लिये बहुत कुछ कहा सुना, तथापि मैने इस्तेफ़ा देने का अब पक्का विचार कर लिया। अंत में ता० १३ जुलाई को मैने रून और मोटके को अपने यहां भोजन देने के लिये निमंत्रित किया। उन लोगों से मैने अपने विचार और अभिप्राय प्रकट किये; दोनों सुनकर बहुत ही उदास-मन हो गये... इसी वाद-विवाद के मध्य में मुझसे किसी ने कहा, कि एम्ज़ से श्रीमान् की आज्ञा से तथा प्रीवी कौन्सलर अबेकेन का हस्ताक्षरित मेरे नाम का एक गूढ़ (Cipher) तार आया है। उस तार द्वारा महाराज ने मुझको यह इत्तला दिलवाई थी :—'आज

कौन्ट बेनेडिटी मुझसे (महाराज से) मिलने के अभिप्राय से बाग़ (पार्क) में इधर-उधर टहल रहे थे। साक्षात् होने पर उन्होंने बहुत गंभीरता और ओजस्विता के साथ अपनी गवर्नमेण्ट को तार द्वारा तुरंत इत्तला देने के लिये मुझसे यह वचन मांगा, कि भविष्य में भी यदि कोई होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशज राजकुमार स्पेन का राज्य सिंहासन प्राप्त करने की पुनः इच्छा प्रकट करै, तो उसे मै अपनी अनुमति न दूं। मैंने भी किञ्चित् सर-गर्मी से यह कहकर अस्वीकार कर दिया, कि चाहे जो पड़े, प्रशिया ऐसे बंधन में नहीं पड़ सकता है। मैंने बेनेडिटी से यह भी कहा :—'अभी तक इस विषय की कुछ भी इत्तला मुझको नहीं है, और चूंकि मैड्रिड और पेरिस से इस विषय के समाचार आप को ही मुझसे पहले मिले हैं, इससे आप समझ सकते हैं, कि मेरा तथा हमारी गवर्नमेण्ट का कुछ भी हाथ इस मामले में नहीं है।' इसके पश्चात् ही महाराज के पास प्रिंस कार्ल का भी एक पत्र पहुंचा, जैसा कि श्रीमान् ने बेनेडिटी से कह भी दिया था, अर्थात् यह कि इस विषय में प्रिंस कार्ल के पास से कुछ इत्तला पाने की उनको (महाराज को) भी आशा है। अब उस पत्र के पहुंचने पर महाराज ने कौन्ट यूलेनबर्ग

की तथा मेरी (अबेकेन की) भी सम्मति से बेनेडिटी से मिलना उचित न समझ अपने एक एडीकांग द्वारा उनके पास यह इत्तला भेज दी है, कि पेरिस से जो समाचार उनको मिले थे, उसी की इत्तला अब प्रिंस के पास से उनके (महाराज के) पास भी आ गई है, तथा उसी एडीकांग द्वारा बेनेडिटी से यह भी कहवा दिया गया है, कि अब इससे अधिक महाराज को उन से कुछ भी नहीं कहना है। बेनेडिटी के इस नये आग्रह तथा अपनी अस्वीकृति की इत्तला, यदि आप (बिस्मार्क) उचित समझें, तो अपने विदेशी प्रतिनिधियों, राजदूतों तथा समाचार-पत्रों को दे सकते हैं।"

"मैं इस तार को पढ़कर अपने दोनों मित्रों को भी सुना दिया। उसको सुनकर वे दोनों ही इतने उदासीन हो गये, कि उन लोगों ने भोजन करना तक अस्वीकार कर दिया। अब मैंने उस तार को एकबार और विचार-पूर्वक पढ़ा, और बेनेडिटी के नये आग्रह को प्रकाशित अथवा न प्रकाशित करने की जो आज्ञा श्रीमान् ने मुझको दी थी, उसपर मेरा ध्यान गया। मैंने मोटके से कई एक प्रश्न किये, और उनमें से एक यह भी था, कि हम लोग युद्ध के लिये किस क़दर तय्यार हैं। उसने उत्तर दिया, कि यदि युद्ध अवश्यं-भावी है, तो

विलंब करने में प्रशिया को कुछ भी लाभ नहीं है, जितना ही शीघ्र युद्धारंभ होगा, उतनी ही अधिक प्रशिया को विजय-संभावना रहेगी।

"मोटके के इस उत्तर से निश्चिंत होकर अबेकेन द्वारा तार के प्रकाशित करने की जो आज्ञा श्रीमान् की मुझको प्राप्त हुई थी, उसको मैंने अब काम में लाना उचित समझा, तथा तार के शब्दों को बिना न्यूनाधिक किये ही केवल कुछ काट-छांट करके उसको अपने मन का बना लिया। उसको मैंने अब इस तरह पर लिख लिया" :—

"फ्रांस की शाही गवर्नमेण्ट को स्पेन की गवर्नमेण्ट से इस विषय की इत्तला मिल चुकने पर भी कि होएन्ट्ज़ोल्लर्न के मौरूसी राजकुमार ने वहां के सिंहासन की उम्मेदवारी से अब अपने को अलग कर लिया है, फ्रेञ्च राजदूत ने एम्ज़ में जाकर प्रशियाधिराज से यह आग्रह किया, कि कदाचित् भविष्य में होएन्ट्ज़ोल्लर्न वंशज कोई राजकुमार स्पेन के सिंहासन के लिये पुनः अपनी इच्छा प्रकट करे, तो प्रशियाधिराज उसको अपनी अनुमति न देने का फ्रांस को वचन दें। इसपर महाराज ने फ्रेंच राजदूत से पुनः मिलना अस्वीकार करके अपने एक एडीकांग

द्वारा यह कहला दिया, कि उससे अधिक महाराज को अब उनसे कुछ भी कहना नहीं है ।"

"अब जब मैंने उस तार के अपने इस अनुवाद को पढ़कर अपने दोनों मित्रों को सुनाया, तब मोटके ने कहा :—"इससे तो अब दूसरी ही ध्वनि निकलती है । पहले के तार से केवल वाद-विवाद की गंधि आती थी, परंतु इससे तो युद्धाहूाहन का गंभीर नाद निकलता है ।" अब मेरे दोनों मित्रों का चित्त प्रसन्न हो गया, उनकी जठराग्नि पुनः प्रज्वलित हो उठी, और दोनों ने आनंद के साथ भोजन किया ।"

एम्ज़ के तार-परिवर्तन विषय में जो उस समय अनेक किम्वदंतियां उठीं थीं, उनका संक्षिप्त किन्तु यही सत्य वृत्तांत है । कुछ लोगों का यह विश्वास था, कि बिस्मार्क ने पेरिस के किसी तार में अनर्थ-कारक परिवर्तन कर डाला था । बात यह असत्य थी; उसने अपने ही राजा के तार में कुछ ऐसे परिवर्तन कर दिये, कि जिससे विलियम को सब संकल्प-विकल्प परित्याग कर युद्ध के लिये उद्यत हो जाने के लिये विवश हो जाना पड़ा । चूंकि उसके इस कार्य्य को मोटके ने सराहनीय माना है, इससे सिद्ध होता है, कि उसकी इस कार्य्यवाही में कोई प्रपंच-युक्त और प्रतिष्ठा-रहित बात कदापि नहीं रही होगी । अस्तु ॥

अध्याय २

युद्धोपकरण

प्रशिया की सैनिक व्यवस्था—सैनिक सेवा के नियम—युद्धार्थ सैन्याह्वाहन—फ्रांस की सैनिक व्यवस्था—युद्धार्थ सैन्याह्वाहन—सैनिकों में समरोत्साह (*Morale*)—शस्त्रास्त्र और व्यूह-विधान—समर-भूमि का विस्तार—नदियां—योज़ पर्वत—अल्सास और लोरन—सड़कें—फ्रांस के रेल-पथ—जर्मनी के रेल-पथ—रण-युक्तियों पर रेल-पथों का प्रभाव।

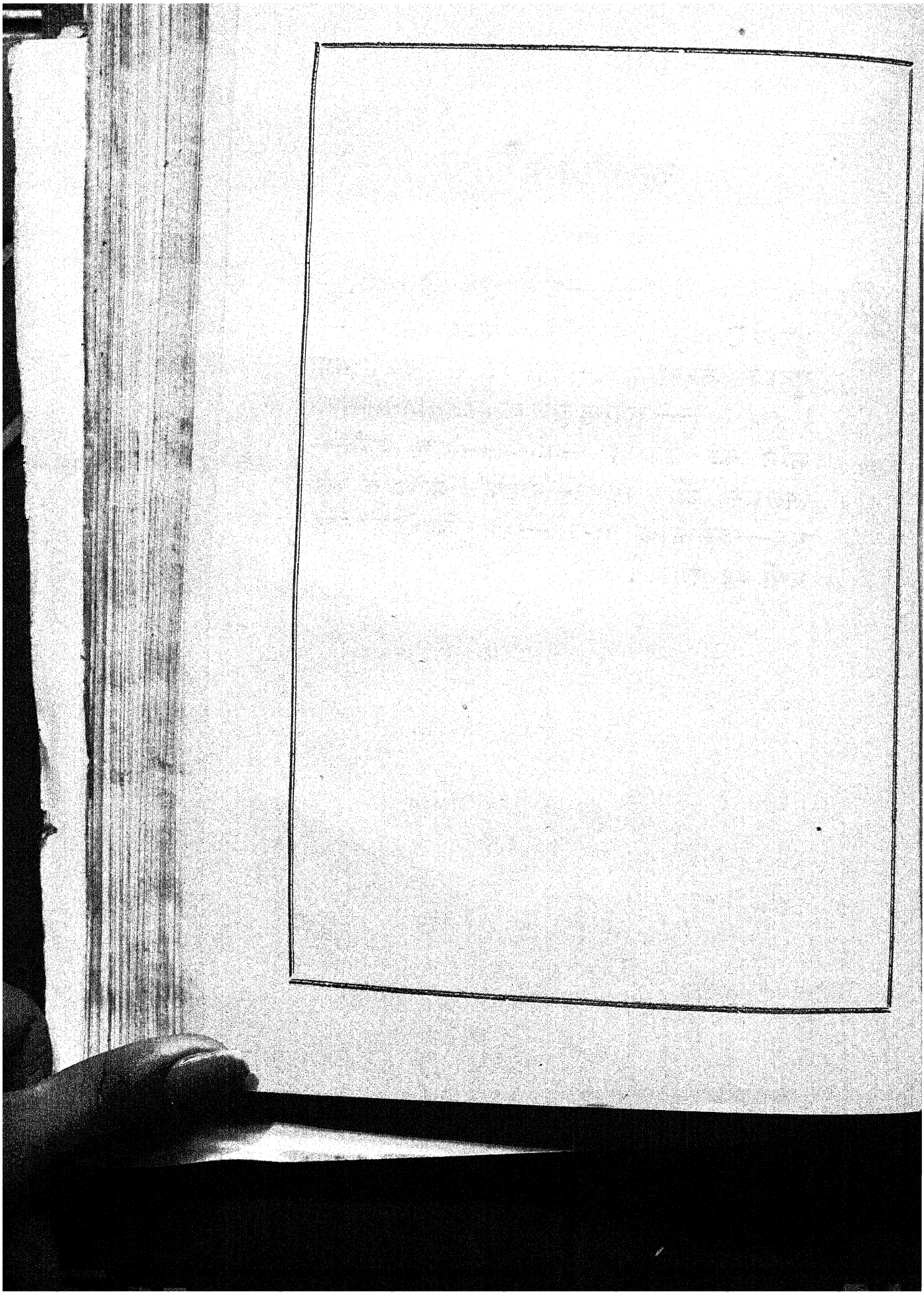

अध्याय २

युद्धोपकरण

फ्रान्सीसियों का ध्यान प्रारंभ ही से केवल राइन-तट पर पहुंचने और जर्मन साम्राज्य की भूमि में शत्रु-सेना के ऊपर विजय-प्राप्त करने के सिवाय और किसी बात पर नहीं गया। प्रशिया की नवीन सैनिक व्यवस्था और उसकी उपयोगिता और कार्य्य-दक्षता पर इन लोगों ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया; जिन मुख्य कारणों से कानिग्राज़ में आष्ट्रिया की पराजय हुई थी, उनसे भी ये लोग अनभिज्ञ ही बने रहे। शान्ति समय की तय्यारियों और उपयोगों का जितना प्रभाव इस युद्ध के परिणाम पर पड़ा, उतना शायद इसके पूर्व के और किसी समर पर न पड़ा होगा। अतएव जिन कारणों से फ्रेञ्च राष्ट्र सदृश स्वाभाविक समर-प्रिय जाति को, जिसे वीर-वर नैपोलियन की सुविख्यात युद्ध-कलावो और अद्वितीय विजयों का अभिमान तथा तब तक ध्यान बना था, परंतु जिस राष्ट्र की नैपोलियनीय ओजस्विता, नेतृत्व-शक्ति और रण-कुशलता उस समय बिल्कुल विस्मृत और नष्ट हो गई थी, जर्मनी ने कुछ ही सप्ताहों में पराजित और पद-दलित कर दिया, उनपर

विचार करने की आवश्यकता मालूम होती है।

प्रशिया की सैनिक व्यवस्था

तिलसिट की संधि के पश्चात् १८७० से प्रशिया की वर्तमान सैनिक व्यवस्था की नींव पड़ी थी, इसका आविष्कर्त्ता शार्नहोर्स्ट (*Scharnhorst*) था। इस संधि के द्वारा प्रशिया को ४२,००० से अधिक जवान अपनी सेना में रखने का अधिकार नहीं दिया गया था। देश के युद्धोपयोगी युवा पुरुषों को रण-भूमि में तलब करके १८१४ में उसने जेना के संग्राम में निज नष्ट हुई आत्म-प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त तो कर लिया, किन्तु यूरोपियन बड़ी २ शक्तियों के साथ बराबरी का दावा करने के लिये उसको अपने देश के सब नवयुवकों को बलात् सेना में भरती करने (*Conscription*) और इस तरह पर अपने सदृश निर्धन और छोटे से देश से यथा-संभव बड़ी से बड़ी सैनिक शक्ति उपस्थित करने का नियम प्रचलित करने के लिये विवश हो जाना पड़ा। १८६१ वाली प्रशियन सैनिक व्यवस्था १८६६ के युद्ध के पश्चात् समस्त उत्तरी जर्मन रियासतों में प्रचलित कर दी गई, तथा १८७० में युद्धार्थ संकर्षित हुई समस्त जर्मन संहति की सेना में भी, किञ्चित् परिवर्तन के साथ, वही व्यवस्था कर दी गई। इस व्यवस्था के मुख्य २ सिद्धांतों का सारांश अधोलिखित है :—

उदार मोक्षोपाय के साथ २ अनिवार्य्य सैनिक सेवा:

बीस वर्ष की अवस्था हो जाने पर प्रत्येक शस्त्रास्त्र-ग्रहण करने योग्य जर्मन युवा सेना में सेवा देने के लिये तलब किया जा सकता था, और उसकी जगह पर कोई स्थानापन्न नहीं लिया जा सकता था। प्रति-वर्ष सेना के लिये जितने रिक्रूटों (*Recruits*) की आवश्यकता (१८७० में १,००,०००) हुआ करती थी, वह संख्या उस राज्य के बालिग़ होने वाले युवकों की संख्या से बहुत कम थी, अतएव शेष युवकों को आवश्यकतानुसार इस सेवा से या तो सर्वथा अथवा आंशिक मुक्ति मिल जाती थी।

रिज़र्वियों का आधिक्य और थोड़े दिन की सेवा:— थोड़े दिन, जैसे तीन वर्ष के लिये भरती करने से देश के बहुतांश नव-युवकों को शीघ्रता पूर्वक सैनिक शिक्षा प्राप्त कर लेने का अवसर मिल जाता था, पश्चात् वे रिज़र्व में दाख़िल कर लिये जाते थे; फल इसका यह हुआ, कि आवश्यकता पड़ने पर सेना के साथ काम देने के लिये ऐसे रिज़र्वी पुनः बुला लिये जा सकते थे।

शान्ति समय में भी सामरिक ढांचा (*War Cadres*) का क़ायम रखना :—शान्ति समय में भी समस्त सैनिक ढांचे को यथा-तथ्य बने रहे आने देने में युद्ध-काल में, जब बहुत से रिज़र्वी एकत्रित हो आते थे, तब उस सेना के स्थायी और पुराने अफ़सर उन्हें यथा-स्थान रखने के योग्य होते थे, इस कार्य्य में कुछ भी गड़बड़ी नहीं होने पाती थी।

प्रत्येक दल का स्थान नियत रखना :—प्रत्येक सैनिक कोर (*Corps*) का संबंध किसी ख़ास प्रदेश से कर दिया गया था, और समस्त देश ज़िलों और परगनों में विभक्त था; इन्हीं स्थानों पर नवीन सैनिकों की भरती होती थी, और आवश्यकता पड़ने पर रिज़र्वियों की तलबी की जाती थी। जिस ग्राम के निवासियों का जिस सेना से संबंध होता था, उसकी सूचना के लिये प्रत्येक ग्राम के किसी सार्वजनिक स्थान पर नोटिस लगी रहती थी, जैसे, डोर्फ—क्रोनवर्ग, क्रेइस—टानस, बेज़र्क—फ्रैंकफोर्ट; ८६-वीं नसा-लैण्डवर रेजिमेण्ट, पहली बटालियन, तीसरी कंपनी।

सैनिक सेवा के नियम

शान्ति समय के लिये जर्मन सेना चार विभागों में बँटी थी :—स्थायीसेना (*Standing army*) के जवान, अर्थात् वे योद्धा, जो वस्तुतः रैंक में उपस्थित रहते थे, इन लोगों को नाम के लिये सेना में तीन वर्ष तक काम देना होता था।

रिज़र्व (*Reserve*) अर्थात् ऐसे जवान जो उपर्युक्त सेवा देकर अपने घरों में काम करते थे, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर जो फिर भी चार वर्ष तक अपनी सेना में योग देने के लिये तलब कर लिये जा सकते थे; इस तरह पर शान्तिकालीन सैनिक अवस्था युद्धकालीन अवस्था में परिवर्तित हो जाती थी।

लैण्डवर (*Landwehr*), अर्थात् वे जवान जो अपनी सैनिक और रिज़र्वी सेवा-समय समाप्त कर चुके थे, परंतु आवश्यकता पड़ने पर फिर भी पांच वर्ष तक दूसरी लैन की सेना में योग देने के लिये बाध्य किये जा सकते थे।

एर्साज़ रिज़र्व (*Ersatez Reserve*), अर्थात् वे मनुष्य जिन्हें सैनिक सेवा से पूर्ण किम्वा आंशिक मुक्ति मिल गई थी; ऐसे मनुष्यों से शान्ति समय में कोई भी सेवा नहीं ली जा सकती थी, किन्तु युद्ध के अवसर पर इनसे भी डीपो इत्यादि के ताकने का काम लिया जा सकता था।

इस प्रकार प्रत्येक जर्मन युवा को बारह वर्ष तक सैनिक सेवा देनी पड़ती थी, इस नियमानुसार जितने जवान सेना में उपस्थित किये जा सकते थे, उनके सिवाय सत्तरह वर्ष से बयालीस वर्ष पर्यंत तक के शरीर से पुष्ट मनुष्यों की भी एक सूची रहती थी, इनका संबंध लैण्डस्टर्म (*Landsturm*) अथवा लेवी एन मासे (*Levee en Masse*) नाम की सेना से रहता था, इनकी तलबी बड़े ही संकट के समय में और स्वदेश के ऊपर शत्रु के आक्रमण-काल में हो सकती थी।

एर्साज़ रिज़र्वियों के सिवाय अधिक धनी मानी और विद्वान् पुरुषों को कतिपय नियमानुसार एक-वर्षीय अथवा

तीन-वर्षीय वालंटीयर सेना में योग देने के वादे पर भी मुक्ति मिल सकती थी।

युद्धोपयोगी योग्यता स्थिर रखने के लिये शांति समय में भी युद्ध में योग देने वाले सैनिकों से निरंतर क़वायद लिया जाता था, एवं वे लोग सदा रणोपयुक्त बने रहे आते थे। स्थायी सेना की चमुओं से प्रतिवर्ष मनिवर (Manoeuvres) अर्थात् युद्ध-व्यपदेश का कार्य्य लिया जाता था, और कभी २ रिज़र्वी जवानों को भी ऐसे युद्ध व्यपदेशों में योग देने के लिये आना पड़ता था, जिसमें ये लोग भी पहले की अपनी सीखी हुई बातों को भूल न सकें।

युद्धार्थ सैन्याह्वाहन

शान्तिकालीन सेना को युद्ध-कालीन सेना में परिवर्तन करने के लिये बहुत ही युक्ति और बुद्धिमत्ता से काम लिया जाता था। समस्त अधिकार राजधानी ही के अफ़सरों में न रखकर बहुत से कार्य्यों को उपयुक्त रीति पर कर डालने के लिये स्थानीय अफ़सरों को भी स्वतंत्रता दी गई थी। रिज़र्व और लैण्डवर विभाग के प्रत्येक मनुष्य का ठीक २ पता रजिस्टरों में दर्ज रहता था युद्धाह्वाहनीय आज्ञा के पहुंचते ही उसको निकटतम सैनिक केन्द्र में उपस्थित होने की अनुलंघनीय आज्ञा थी, अन्यथा उसको कठिन दंड दिया जाता था। सहसा आह्वाहन की आज्ञा पहुंचने पर प्रत्येक सिविलियन * को मालूम

* सैनिक योद्धावों के सिवाय प्रत्येक मनुष्य सिविलियन (Civilian) कहा जाता है।

रहता था, कि उसको अमुक सेना में अमुक काम देना होगा। समस्त सैनिक केन्द्रों में उत्तमोत्तम संविधान सदा प्रस्तुत रहे आने के कारण ज्योंही युद्धाह्वाहन की आज्ञा सदर से निकलती थी, वह विविध प्रदेशों को दर्जे बदर्जे पार करके अंत में देश के प्रत्येक योग्य मनुष्य के पास अत्यंत शीघ्र पहुंचाई जा सकती थी। प्रत्येक स्थानीय केन्द्र में वस्त्र, शस्त्र, अस्त्र और अपर सैनिक सामग्रियों का भंडार (स्टोर) प्रस्तुत रहता था, और वहीं से, आये हुए मनुष्यों में तुरंत वितरण किया जा सकता था। घोड़ों के मौजूद करने, रेलगाड़ियों के तय्यार रखने तथा रसद इत्यादि के एकत्रित करने और भेजने के लिये भी वैसे ही उत्तमोत्तम प्रबंध पहले ही से सोच-विचार कर कर दिये गये थे; अतएव तार द्वारा युद्ध के लिये सेना-संकर्षण की आज्ञा पहुंचने के दो ही तीन दिन के भीतर प्रत्येक सैनिक कोर युद्ध के लिये सर्वथा सुसज्जित और प्रस्तुत होकर निर्दिष्ट स्थान पर उपस्थित हो सकता था। इस अग्र-शोची प्रबंध का फल यह हुआ, कि १८७० में फ्रांस के साथ की युद्ध-घोषणा निकलने के पंदरह दिन ही के भीतर उत्तरी जर्मन-संहति तथा उसकी अनुयायी रियासतों की ११,८०,००० जवानों की वृहत् सेना युद्धार्थ सर्वथा सुसज्जित होकर रण-भूमि में उपस्थित हो गई।

फ्रांस की सैनिक व्यवस्था

१८३२ के रिक्रूटिंग (भरती के) नियमानुसार फ्रेञ्च सेना में सैनिकों का विशेषांश सात वर्ष के लिये भरती किया जाता था। इससे रिक्रूटों की वार्षिक संख्या बहुत बड़ी होती थी, किन्तु जितने की प्रति वर्ष आवश्यकता समझी जाती थी, साधारणतः उतने ही जवान सेना में भरती किये जाते थे, शेष को आवश्यकता पड़ने पर सात वर्ष तक पुनः तलब कर लिये जाने की शर्त पर घर चले जाने की छुट्टी मिल जाया करती थी। सैनिक सेवा से मुक्ति पहले 'दाम देने पर, प्राप्त हो सकती थी, किन्तु पीछे से एवज़ देने पर भी मुक्ति मिल जाने लगी। संविधान-रहित अशिक्षित रिज़र्व रखने का फल १८५९ के ही युद्ध में प्रकट हो चुका था, अर्थात् नाम के लिये तो ४,००,००० सेना उस समय फ्रांस में कही जाती थी, परन्तु महाराज नैपोलियन बहुत कठिनता से केवल १,४०,००० जवान रण-भूमि में उपस्थित कर सके थे। १८६१ से कुछ अधिक संख्या के रिज़र्वियों को सेना में रहकर शिक्षा प्राप्त करने और शेष रिज़र्व के जवानों को सैनिक शिक्षा देने का संविधान करके युद्धकालीन सेना की संख्या ६,००,००० कर दी गई। १८६६ के युद्ध से प्रकट हो गया, कि इतनी संख्या-शक्ति भी समुचित नहीं है अतएव ८,००,-००० सेना रखने का विचार स्थिर किया गया। बजट में इतनी सेना के लिये अधिक द्रव्य की गुंजायश न होने के

कारण सेवा-काल को न्यून कर देने तथा शिक्षित रिज़र्वियों की संख्या अधिक करने की आवश्यकता समझी गई। १८६८ के रिक्रूटिंग क़ानून के अनुसार प्रत्येक जवान को स्थायी सेना के साथ सेवा देने का समय पांच वर्ष, तत्पश्चात् रिज़र्व-समय चार वर्ष नियत किया गया। सेना की दूसरी लैन में गार्ड्स मोबाइल्स (*Gardes mobiles*) थे, इन्हें युद्ध-काल में सेना के पृष्ठ-भाग में, अथवा दुर्गादि के गैरिज़न में काम देना पड़ता था।

उस समय १८६८ के क़ानून के प्रचलित हुए अभी बहुत कम दिन हुए थे, अतएव फ्रेञ्च रिज़र्वियों की संख्या तब तक बहुत ही कम हुई थी, और उपस्थित रिज़र्वियों में भी आधे से अधिक अशिक्षित थे; गार्ड्स मोबाइल्स सुतरां सैनिक वर्दियां धारण किये हुए साधारण सिविलियन्स थे, इनको सैनिक संविधान में कार्य्य करने का ढंग भी नहीं मालूम था; सारांश यह कि जर्मन लैण्डवर अथवा लैण्डस्ट्रम रिज़र्वियों के सम्मुख ये कुछ भी नहीं थे।

युद्धार्थ सैन्याह्वाहन

शीघ्रतापूर्वक सैन्य-संकर्षण में भी यहां अनेक बाधायें थीं। सर्वथा सुसज्जित सैनिक केन्द्र यहां नहीं थे, सैनिक सामग्रियों और निज शस्त्रास्त्रों के लिये प्रत्येक रिज़र्वी को पहले सैनिक डीपो कम्पनियों में, चाहे वे कितनी ही दूर हों, जाना पड़ता था, पश्चात

उसको अपनी रेजिमेण्ट में, जो बहुधा उसके घर के समीप ही रहती थी, आना पड़ता था। कुछ थोड़े से के सिवाय उच्च कोटि के व्यूह-विधान की शिक्षा शांति समय में कहीं रचकर नहीं दी जाती थी, अतएव संकर्षित सैनिक कोरों और डिवीज़नों में ऐसे स्टाफ़ और चमुएं उपस्थित थीं, जिनको मिल जुल कर रण-कार्य्य करने का कभी अभ्यास नहीं कराया गया था। सामग्रियों के डीपो (भंडार) थे तो बहुत बड़े २, किन्तु उनकी संख्या कम थी, अतः सहसा कार्य्य उपस्थित होने पर उन्हें सामान मुहैया करना कठिन पड़ गया। अधिकार-संकर्षण (Centralization) की उच्चतम कोटि की प्रथा यहां पर प्रचलित थी, क्षुद्र २ बातों की इत्तला भी पेरिस के समर-विभाग में देनी और वहां से उसके करने की आज्ञा मांगनी पड़ती थी। शांति समय में तो इस प्रथा के अनुसार कार्य करने में कुछ विशेष कठिनता नहीं पड़ती थी, किन्तु समर की आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिये यह बहुत ही अनुपयुक्त सूचित हुई। स्थायी सेना की जो चमुएं जैसी अवस्था में थीं, वे वैसी ही सीमा-प्रांतस्थ रण-भूमि की ओर भेज दी गईं, और वहीं पर उनके कमाण्डों का संविधान किया गया। जिस तरह पर बन पड़ा, रिज़र्वी जवानों को शस्त्रास्त्र धारण कर करके अपनी २ बटालियनों में हाज़िर होना पड़ा।

इनटेन्डैन्स (Intendance) अर्थात् कमसरियट विभाग

बिल्कुल स्थानीय था, शीघ्रतापूर्वक चलती हुई सेनाओं को रसद इत्यादि पहुंचाने के लिये वह सर्वथा अयोग्य पाया गया; शांति समय में केवल स्थिर सेनाओं को वह रसद मुहैया कर सकता था। सारांश यह कि फ्रेञ्च सेना सीमा प्रांत में पहुंच कर युद्धार्थ सुसज्जित हुई, इसके विरुद्ध जर्मन सेना अपने २ प्रांत के ज़िलों में शीघ्रतापूर्वक संकर्षित तथा युद्ध के लिये सर्वथा सुसज्जित, सुगठित और चमू-वद्ध होकर रण-भूमि में पहुंची। जर्मनी के स्थानीय सैनिक अफ़सरों को सेना-संगठन करने तथा सैनिकों को शस्त्रास्त्र इत्यादिक उपयुक्त सामग्रियों से सुसज्जित करने का स्वतंत्र अधिकार था ऐसी बातों के लिये उन्हें सदर से आज्ञा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी; इसके विरुद्ध फ्रांस में प्रत्येक क्षुद्र बात की इत्तला सदर में करनी पड़ती थी तथा उसकी वहां से मंजूरी लेनी पड़ती थी। जर्मनी में अधिकार-वितरण (Decentralization) की, तथा फ्रांस में अधिकार-संकर्षण की प्रथा प्रचलित थी।

युद्ध छिड़ने के समय ५,६७,००० योद्धाओं के रण-भूमि में उपस्थित कर दिये जाने का लेखा किया गया था। किन्तु इनमें से अल्जीरियन सेना और डीपो में नियुक्त की गई चमुओं के निकाल देने पर केवल ३,३०,००० जवान युद्ध में योग

देने के लिये शेष बचते थे; पुनः इनके पश्चात् दूसरी लैन के लिये कुछ भी शिक्षित रिज़र्व सेना शेष नहीं रह जाती थी। इनके मुक़ाबिले में जर्मनी दश लक्ष से ऊपर सुशिक्षित योद्धा उपस्थित कर सकता था, तथापि उसको अपने एर्साज़ किम्वा लैण्डस्ट्रम रिज़र्वियों को तलब करने की आवश्यकता नहीं थी।

सैनिकों में समरोत्साह *MORALE*

संख्या ही मात्र में फ्रेञ्च सेना जर्मनों से न्यून नहीं थी, किन्तु यहां के सैनिकों में युद्धोत्साह की मात्रा भी उतनी नहीं थी। जेनरल अफ़सरों को बड़ी २ सेनाओं के नेता बनने का अनुभव और अभ्यास नहीं था, स्टाफ़ अफ़सरों को उपयुक्त शिक्षा नहीं मिली थी, अपने कमाण्ड की सेना के ऊपर रेजिमेण्टल अफ़सरों की यथोचित हुकूमत नहीं थी; एवज़ देने की हानिकारक प्रथा का साधारण सैनिकों पर बुरा प्रभाव पड़ गया था, अलजीरियन और मैक्सिकन युद्धों के शैथिल्य-कारक प्रभावों, तथा समस्त सेना के प्रत्येक रैंकों में प्रजा-तंत्रीय सिद्धांतों के अनिष्टकारक प्रचार से सैनिक संयमता में कुछ शिथिलता आ गई थी। फ्रेञ्च सेना के रेजिमेण्टल अफ़सर दो भिन्न २ कक्षा के थे, प्रथम तो वे जो रैंक से क्रमशः उन्नति पाकर उस पद पर पहुंच पाते थे, ऐसे लोग कदाचित् ही फील्ड अफ़सर के पद पर पहुंच सकते थे; दूसरे वे जो सैनिक विद्यालय से उच्च कोटि की शिक्षा पाकर

अफ़सरी के पद पर एकाएक नियुक्त कर दिये जाते थे, ये लोग प्रायः रेजिमेण्टल कार्रवाइयों से अनभिज्ञ रहते थे, अतः उन्हें वे अपने नीचे दर्जे के अफ़सरों के भरोसे छोड़ देते थे। जर्मनी की सेना में ऐसी कोई विभिन्नता नहीं थी, वहां के उच्च-वंशज अफ़सरों को पूर्ण शिक्षा लाभ करने के पश्चात् निज पदोन्नति के लिये सैनिक कार्रवाइयों में भी कठिन परीक्षा 'पास' करनी पड़ती थी। स्टाफ़ पद पर दोनों ही दलों में सुयोग्य अफ़सर चुने जाते थे, किन्तु परीक्षा पास करने पर फ्रेञ्च सेना के स्टाफ़ में सिफ़ारिश से भी भरती हो जाती थी, यहां के स्टाफ़ अफ़सरों में पुस्तकीय ज्ञान विशेष होता था, परंतु अमली कार्रवाइयों में वे प्रायः बालिश ही रहते थे; इनके विरुद्ध जर्मन स्टाफ़ योरप भर में अद्वितीय था, पूर्ण वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्हें स्टाफ़ और रेजिमेण्टल कार्रवाइयों का अनुभव प्राप्त करना पड़ता था और ऐसा अनुभव निरंतर युद्ध-व्यायदेशों (Manoeuvring) में केवल अभ्यास ही से प्राप्त होना संभव है।

शस्त्रास्त्र और व्यूह-विधान

ब्रीच लोडिंग रैफल की उपयोगिता की परीक्षा इसी समर में पहले पहल होने वाली थी। जर्मन पैदल सेना में नीड्ल गन (Needle Gun) नाम की बंदूक वितरित थी, सैडोवा की रण-भूमि में इस बंदूक को बहुत बड़ाई मिल चुकी थी; अस्तु यह उत्तम और

स्थायी तो था, किन्तु ६०० मीटर* से आगे इसका बहुत कम प्रभाव पहुंच सकता था। इसके मुक़ाबिले में फ्रेञ्च पैदलों के पास चासेपोट (Chassepot) नामक १२०० मीटर तक के मार की बंदूकें थीं, फैर की चपलता, रेञ्ज और मार की गुरुता में यह रैफल अपने समय का अद्वितीय और परमोत्तम अस्त्र था। अपनी पैदल सेना में दूर के रेञ्ज की फैर वाली बंदूक होने से फ्रांस को बहुत बड़े फल-प्राप्ति की आशा थी। प्रशिया वालों को अपने प्रत्येक योद्धा के विषय में यह अभिमान था, कि वह निकट से ठीक २ निशाना लगा सकता था।

जर्मन तोपखाने में फ़ौलाद की ब्रीच लोडिंग तोपें थीं, जिनसे प्रायः नौ और पंदरह पौंड तक के वज़न के परकशन (Percussion) अर्थात् टकराने पर फूटकर उड़ने वाले गोले चलाये जाते थे। फ्रांस में उस समय तक मज़िल लोडिंग अर्थात् मुँह की ओर से ही भरी जाने वाली तोपें प्रचलित थीं, इनसे भी प्रायः उतने ही वज़न के गोले चलते थे, किन्तु इनमें परकशन और टैम फयूज़ (Time Fuse) †इन दोनों क़िस्म के गोले काम में लाये जाते थे। इस युद्ध में फ्रेञ्च तोपों से कुछ आपनेल

* मीटर अँग्रेज़ी गज़ से ३$\frac{1}{3}$ इंच के क़रीब बड़ा होता है।

†हमारे देश के आतिशबाज़ी के बम्ब गोलों के सदृश जो गोले कुछ देर तक जलते रहने के बाद फूटते हैं, उन्हें टैम फ्यूज़ गोले कहते हैं।

(Shrapnel) * गोले भी चलाये गये थे। टैम फयूज़ गोले बहुत ही वाहियात सिद्ध हुए, इनके उपयोग से फ्रांस को बहुत कम लाभ हुआ। सारांश यह है, कि सब प्रकार से प्रशियन तोपख़ाने अधिकतर प्रभावोत्पादक सिद्ध हुए। फ्रेञ्च अपनी इस त्रुटि को निज मिट्राल्येज़ (Mitraileuse) † नामक परम प्रसिद्ध ब्रीच लोडिंग तोपों से पूरी करना चाहते थे; इन तोपों के लगाने के लिये जब कभी ऐसा मौक़ा मिल जाता था, कि वे अदृश्य और शत्रु के गोलों से सुरक्षित रखी जा सकें, तब तो निस्संदेह शत्रु-सेना का इनसे भयंकर संहार हो जाता था, किन्तु मार इनकी थोड़ी दूर की थी, अतः जब कभी इनसे मैदानी (Field) तोपों का काम लिया जाता था, तब दूर के रेञ्ज के जर्मन तोपखानों के मुक़ाबिले में ये बिल्कुल निकम्मी पड़ जातीं थीं।

इन दोनों दलों की रण-दक्षता की परीक्षा उनके शस्त्रास्त्रों की उत्तमता से उतनी नहीं हुई, जितनी व्यूह-बिधान की निपुणता और रण-रचना की चातुर्य्यता से प्रकट हुई थी। १८६६ के युद्ध से जर्मनी ने कुछ थोड़ी सी शिक्षा ग्रहण की थी, परन्तु फ्रांसीसियों ने तो उसको उपेक्षा की दृष्टि से देखा था। दोनों ही दलों की अनेक चमुवों

*रूस-रूम-युद्ध दूसरा भाग पृष्ठ ३६६ का फुट नोट देखो।

†मिट्राल्येज़ एक प्रकार की ब्रीच लोडिंग मेशीन तोप होती है, इससे अत्यंत शीघ्रता के साथ गोलियों की घोर वृष्टि की जा सकती है। पहले पहल इसी युद्ध में फ्रांस वालों ने इस जाति की तोप से काम लिया था।

को पुरानी प्रचलित प्रथा के अनुसार शिक्षा मिली थी, और यद्यपि युद्ध छिंडने के कुछ पूर्व प्रचलित रीति के व्यूह-बिधान और रण-रचना की शिक्षा अनेक क़वायद की पुस्तकों तथा सर्क्यूलरों के द्वारा सब सेनावों को देने का बहुत कुछ उद्योग किया गया था, तथापि बहुत सी व्यूह-बिधान संबंधी शिक्षायें इनको रण-भूमि ही में वास्तबिक युद्ध के अवसर ही पर ग्रहण करनी पड़ीं।

प्रशियन बिधान में आक्रामक होना (Offensive) युद्ध में परमोपयोगी समझा जाता था; अफ़सर और सिपाही सभी यथा-संभव आक्रामक बनना ही सर्वोपरि समझते थे। फ्रांसीसियों के विचार इसके बिल्कुल विरुद्ध थे, जब तक प्रत्याक्रमण करने का सुअवसर प्राप्त न हो सके, तब तक आत्म-संरक्षक (Defensive) बने रहकर अपनी दूर के रेञ्ज की रैफलों से काम लेना वे उत्तम समझते थे। अभाग्यवश यह रण-नीति फ्रांसीसी योद्धावों की परंपरा-प्राप्त-प्रकृति और जातीय स्वभाव के बिल्कुल विरुद्ध थी; पहले ही से आत्म-संरक्षक बने रहने के विचार रखने से इस समर की अनेक रण-भूमियों में उनके व्यूह-बिधान पर बहुत ही हानिकारक प्रभाव पड़ा। जर्मनो ने अनुभव से शीघ्र मालूम कर लिया, कि श्रेढ़ी-बद्ध (Formation in Columns) होकर आक्रमण करने में हानि होती है, किन्तु फ्रांसीसियों को अपनी नई आत्म-संरक्षक प्रणाली को परि-

वर्तन करने में बहुत ही कठिनता पड़ी।

जर्मन रिसाले और तोपख़ाने के लिये जो कार्य्य-विधान १८६९ में वहां प्रचलित किये गये थे, वे ही इस युद्ध में उनके विजय-लाभ के मूल कारण हुए। रिसाले स्वतंत्र डिवीज़नों में विभक्त थे, तथा फ्रेडरिक और नैपोलियन के समय में जैसे कर्य्य इनसे लिये जाते थे, वैसे ही काम अब भी लिये गये अर्थात् जिस चमू के संवरण (Cover) में ये नियुक्त रहते थे, उसके फ्रंट (सम्मुख) और फ्लैंक (पार्श्व) में दूर २ तक जाकर शत्रु का आहट लेना, और इस तरह पर अपनी चमू का आंख-कान बनना इसका मुख्य कर्त्तव्य था। फ्रांसीसियों ने गिरदावरी (Reconnaissance) और गश्त (Patroling) का काम रिसाले के कुछ डिवीज़नल स्क्वाड्रनों के जिम्मे कर दिया था, और उनके एक बहुत बड़े भाग को इन लोगों ने रण-भूमि में युद्ध के एक ख़ास अवसर पर चार्ज अर्थात् धावा करने के लिये रिज़र्व कर रखा था। १८६६ के युद्ध के अनुभव से प्रशियन तोपख़ाने मार्च की लैन में बहुत आगे तक बढ़ाये रहते थे, अतएव शीघ्रता पूर्वक इनसे गोले बरसवा कर पैदलों के आक्रमणार्थ मार्ग साफ़ कर लिया जाता था; तोपों को एकत्रित करके गोलों की वृष्टि संकर्षित कराने का जो नैपोलियन का सिद्धांत था, उसका प्रशियनों ने पूर्णतः अनुकरण किया। फ्रेञ्च तोपख़ाने के कार्य्यकर्त्ता अशिक्षित और

उनकी गोलंदाजी वाहियात होती थी, प्रत्युत इनके कार्य्य और माल दोनों रद्दी, भद्दे और पुराने थे।

समर-भूमि

युद्धारंभ में मध्य-राइन और मोज़ेल नदियों की बेसिन (Basin)* ही समर-भूमि रही आई थी; इस मैदान में योज़ (Vosges)पर्वत की शृंखलायें चारों ओर फैली हुई हैं। सीमा-प्रदेश की रेखा स्विटज़रलैंड देश के बाज्ले (Basle) † नगर से प्रारंभ होकर राइन नदी के किनारे २ लौटरबर्ग (१०६ मील) तक चली गई थी, वहां से वह पश्चिम लौटर नदी के किनारे किनारे ज़ार्गेम्यैन्ट (Saargemund) (५५ मील) तक गई थी, इसके एक तरफ़ फ्रांस और दूसरी ओर बवेरियन पलैटिनाट की रियासत थी; तत्पश्चात् वह रेखा उत्तर पश्चिम सेर्क (Sierck) की ओर (३५ मील) तक घूमी थी, इसका एक छोर प्रशिया के रेनिश प्रदेश को स्पर्श करता था, और अंत में लक्सेमबर्ग और बेलजियम की उदासीन (Neutras) रियासतों से वह रेखा जा मिली थी।

नदियाँ

इस प्रदेश में राइन नदी २०० गज़ से लेकर ५०० गज़ तक चौड़ी है, और इस पर

*वह भूमि जो किसी नदी और उसकी सहायक नदियों से सींची जाती है, उस नदी की बेसिन कही जाती है।

† इसका फ्रेञ्च उच्चारण बाल होता है।

बाज्ले, स्ट्रासबुर्ग, मावसौ, मैनहिम, मिन्ट्स (Maintz) और कावलेन्ट्स में रेल के पुल बने हैं। मुख्य २ नगरों के समीप नौकावों के अस्थायी पुल भी बने रहते हैं। स्ट्रास-बुर्ग के आगे के प्रायः सब मुख्य २ पुलों पर जर्मनो का अधिकार था। सीमा-प्रांत के निकट इस नदी के बांये भाग की ओर की इसकी सहायक नदियां और नाले कोई भी ऐसे नहीं हैं, जो सैनिक आवागमन के लिये कुछ कठिन अवरोधक हो सकैं, और उन सबका बहाव प्रायः पश्चिम से पूर्व की ओर को है।

मोज़ेल नदी वोज़ पर्वत से निकल कर २९० मील पर्यंत बहुत ही वक्र मार्ग से बहती है, और इसका पार करना पहले पहल टूल (Toul) नगर के निकट से कुछ कठिन होता है। इस नगर और सेर्क के मध्य में फ्रौआ-र्ड, मारबाचे, ड्यूलुआर्ड, पान्ट-आ-मौसोन, कार्नी और आर्स में इस नदी पर स्थायी पुल बने हैं, तथा इसके आगे मेज़ (Metz) और तिआनविल (Thionville) के दुर्गों के प्रभावान्तर (Rayon) में भी ऐसे ही कई एक पुल हैं। सूखी ऋतु में घाटों के पास यह नदी पायाब हो जाती है, किन्तु इसमें अक्सर सैलाब आया करते हैं। फ्रौआर्ड और मेज़ के मध्य इस नदी की घाटी की औसत चौड़ाई प्रायः २,००० क़दम है, तथा इसके दोनों कगार सीधी उँचाई के प्रायः ३०० से ५०० फीट तक ऊँचे

हैं। मेज़ के आगे नदी के बांये कगार की ऊँचाई क्रमशः कम पड़ती गई है, अतः पूर्वीय तट से इसकी घाटी पर पूर्ण प्रभाव पहुंचता है। फ्रांस पर चढ़ाई करने वाली सेना को मर्त (Meurthe) सील और ज़ार (Saar) * नामक इस नदी की सहायक नदियां उतरनी पड़ती हैं।

योज़ पर्वत

योज़ नामक पर्वत की शंखलायें बेलफोर्ट के निकट से राइन नदी के प्रायः समानांतर और उससे तीस से चालीस मील के अंतर पर चली गई हैं। लौटर नदी के उद्गम-स्थान से इस पर्वत की दो मुख्य शृंखलायें हो गईं हैं, इनमें से एक उत्तर की ओर, और दूसरी पूर्वोत्तर की ओर जाती है।

दक्षिणी योज़ पर्वतः—यह पहाड़ प्रायः तीस मील चौड़ा और गहन वन से पूर्ण है, तथा बेलफोर्ट और सावर्न के मध्य में किसी बड़ी सेना को लेकर इस पर्वत की शृंखलाओं का पार करना अत्यंत कठिन और प्रायः असंभव है। पर्वत का वह उत्तरीय भाग जो सीमा प्रांत के आस पास में है, किंचित् पतला और अधिक खुला है, और इधर से अनेक अच्छी सड़कें भी गई हैं। इस पर्वत की अनेकानेक घाटियों की पूर्वीय भुजायें पश्चिमीय भुजाओं की अपेक्षा अधिक खड़ी उँचाई की हैं, और जर्मनी की ओर से आक्रमण कियेजाने पर आत्म-रक्षा के लिये इनमें अनेक उत्तमोत्तम मोर्चे हैं।

* इसका उच्चारण 'सार' भी होता है।

आल्सास और लोरेन

राइन नदी के समानांतर एक चौड़ा, उर्वरा तथा जंगलों से भरा-पूरा मैदान है, इसकी चौड़ाई चौदह से तेईस मील तक है। दक्षिणी आल्सास की नदी और नालियां राइन नदी ही के बहाव की दिशा में बहती हैं, इन प्राकृतिक मोर्चों के ऊपर न्यू-ब्रसाच और श्लेसस्टाट के कृत्रिम दुर्गों से सैनिक प्रभाव पड़ता है। उत्तरी आल्सास में नालों के पूर्वीय और पश्चिमीय बहाव, तथा वहां के गहन बन और स्ट्रासबुर्ग का दुर्ग, ये भी बातें उत्तर की दिशा से आक्रमण करने वाले शत्रु के लिये बड़ी भारी प्रतिबाधायें हैं। लौटर नदी से लेकर वर्म्स पर्यंत का देश पहाड़ी है, पश्चिम से आक्रमण किये जाने पर जर्मन सेना के लिये इसकी घाटियों के मोर्चे आत्म-संरक्षार्थ अत्यंत उपयोगी हो सकते हैं। वर्म्स के उत्तर से एक वन-रहित उत्तरोत्तर ऊँचा होता हुआ (Undulating) अंचल प्रारंभ हो कर मेन नदी के चौड़े मैदान तक चला जाता है, मेन्ज़ के दुर्ग से इस अंचल का प्रवेश-मार्ग सुरक्षित बना है।

ज़ार और मोज़ेल नदियों के मध्य एक खुला और उत्तरोत्तर ऊंचा होता हुआ प्रदेश है, जिसके दुरूह मोर्चे मुख्य कर उत्तर और दक्षिण में हैं, वहां पर उत्तमोत्तम मोर्चेबंदी के स्थान हैं। मोज़ेल नदी की आत्म-संरक्षक लैन पर पहुंचने के पूर्व फ्रांस पर चढ़ाई

करने वाली सेना को कितनेही नदी-नालों की अनेक गहरी धारावों को पार करना पड़ता है ।

सड़कें

केवल एक को छोड़ कर राइन नदी के पार जाने वाली शेष सब सड़कें जर्मनो के अधिकार में थीं, इनको स्वाधिकार में लाना फ्रांसीसियों के लिये तभी संभव हो सकता था, जब वे शीघ्रता पूर्वक आगे बढ़ गये होते । यह बात उनसे न बन पड़ी, अतएव दोनों ही दलों को अपने ही अपने देश में संकर्षित होना पड़ा ; इनके मध्य में राइन नदी और योज़ पर्वत की कठिन और दुर्गम्य प्रतिबाधायें थीं । सीमा-प्रांत से कई एक अच्छी २ सड़कें पर्वतों को पार करती नान्सी और मेज़ की ओर गईं थीं, किन्तु इनमें से जो अच्छी थीं, उन पर छोटे २ दुर्ग बने थे, जिनसे वे प्रायः बंद सी समझी जा सकतीं थीं, ऐसे दुर्ग बिट्श, पेटिट पीयर और फाल्सबर्ग में उपस्थित थे ।

फ्रैंच रेलवे

सीमाप्रांत में सेनावों को संकर्षण करने में रेल-गाड़ियों से बहुत काम लिया गया था । दोनों प्रति-द्वंद्वियों के लाभों की तुलना प्रकट करने के लिये इनका भी यहां कुछ वर्णन कर देना उचित मालूम होता है । फ्रांस की सीमा प्रांत वाली रेलवे लैन ज़ारब्रकेन से प्रारंभ होकर, ज़ार्गेम्येन्ट, बिट्श, आगनो (Haguenau) से होती हुई स्ट्रासबुर्ग और म्येलहौज़ को निकल गई

थी, और जर्मन रेलवे लैनों से इसका संबंध ज़ारब्रकेन, विसेनबुर्ग, काल (Kehl) और बाज़ले में होता था।

मेज़येर—तिआनविल और शालां—फ्रौआर्ड की शाखा लैने मेज़ से जार्गेम्येन्ट वाली रेलवे लैन की पोषक (Feeders) थीं, अर्थात् उन्हीं शाखा लैनों से आये हुए मुसाफिर और माल इसके द्वारा आते-जाते थे। शालां वाली रेल, फ्रौआर्ड और सावर्न से होकर आनेवाली रेल, लांग्र (Langres) और बेलफोर्ट से होकर शोमां (Chaumont) वाली रेल, तथा बेज़ानशां (Besanson) और बेलफोर्ट से होकर डीजान वाली रेल, ये सब की सब स्ट्रासबर्ग में जुटीं थीं, तथा लुनविल और श्लेस-स्टाट, तथा नैन्सी-एपीनाल और म्येलहौज़ के बीच की अधूरी बनी पोषक रेलों से भी इस युद्ध में काम निकला था।

जर्मन रेलवे

रेनिश सूबों को पार करती हुई मुख्य मुख्य चार रेलवे लैने राइन नदी से सीमा प्रदेश की ओर आती हैं:—(१) कोलोन-ट्रीव्ज-ज़ारलुई (इसका ट्रीव्ज़ के उत्तर का भाग तब तक तय्यार नहीं हो पाया था), (२) बिंग्येन-न्वायन कीवर्येन-ज़ारब्रकेन,(३) न्वायस्टाट-होमबुर्ग-ज़ारब्रकेन, (४) न्वायस्टाट-विसेन-बुर्ग।

देशांतर्गत नौ रेलवे लैनों से इन चारों रेलों के लिये माल वगैरः गिरता था, इनमें से छः तो उत्तरी

जर्मनी से, तथा तीन दक्षिणी जर्मनी से आईं थी। इनमें से एक लैन तो उत्तरी जर्मन-संहति के प्रथम दल के लिये, और चार लैने शेष दो जर्मन दलों के लिये निर्धारित कर दी गईं थीं। एक रेलवे लैन राइन नदी के दहने किनारे २ बाज्ले से मायेन्स तक गई है, उसी के द्वारा उस नदी के तटस्थ सब दुर्गों में संबंध होता है। कृष्णबन (Black Forest) के उत्तर में इस रेलवे लैन का देश की भीतरी कई रेलों से संबंध होता है, पुनः अधिक दक्षिण के पहाड़ी ज़िलों से भी इधर आने के लिये बहुत अच्छी २ पक्की सड़कें बनी हैं।

रण-युक्तियों पर रेल-पथों का प्रभाव

फ्रांस-जर्मन-समर के प्रति विकराल रूप धारण करने की आशा पहले ही से की गई थी, अतएव बड़ी २ सेनाओं को शीघ्रता पूर्वक रण-भूमियों में पहुंचाने के लिये रेलवे से अधिक काम लेने की भी आवश्यकता होगी, इसका पहलेही से अनुमान कर लिया गया था।

रेल-पथों पर विचार पूर्वक देखने से यह तुरंत प्रकट हो जायगा, कि जर्मन सेनायें सरलता पूर्वक राइन नदी के किनारे २ कार्ल्सरूए से कोलोन पर्यंत एकत्रित की जा सकतीं थीं, और शत्रु से रुकावट न पहुंचने की दशा में पलाटिनेट प्रदेश की रेलों द्वारा सेनायें कुछ और भी आगे बढ़ाई जा सकती थीं।

उच्चस्थ राइन प्रदेश में शीघ्रता पूर्वक सेना-संकर्षण असंभव था, किन्तु उधर से शत्रु द्वारा आक्रमण होने की भी बहुत कम आशंका थी, क्योंकि उधर से आक्रमण करने में शत्रु को राइन नदी और कृष्ण बन के पार सेनायें निकालने में बहुत कठिनता पड़ती, इसके सिवाय आक्रामक के पार्श्व (Flank) के भी सुरक्षित रहने की संभावना नहीं रह सकती।

फ्रेंच रेलवे लैनों से पूरा २ काम निकालने के लिये वहां सेनाओं को दो गरोह में करके उन्हें मेज़ और स्ट्रासबुर्ग के आस-पास में संकर्षण करने की आवश्यकता पड़ती थी। पुनः, इन दोनों स्थानों पर एकत्रित हुई सेनाओं में सीधा आवागमन (Direct Communication) संबंध एक ऐसी रेलवे लैन से होना संभव था, जो शत्रु के सीमा-प्रांत के बहुत ही समीप से गई थी; साधारण सड़कों तथा अपर बक्र पगडंडियों को काम में लाने से भी इनमें आवागमन संबंध होना संभव था। दोनों ही देशों के दल चाहे जिस युक्ति और उद्देश से संकर्षित किये जाते, परंतु यह निश्चय था, कि उनके एडवान्स और व्यूह-विधान पर थोड़ा या बहुत रेल-पथों का प्रभाव पड़ना अवश्यंभावी था।

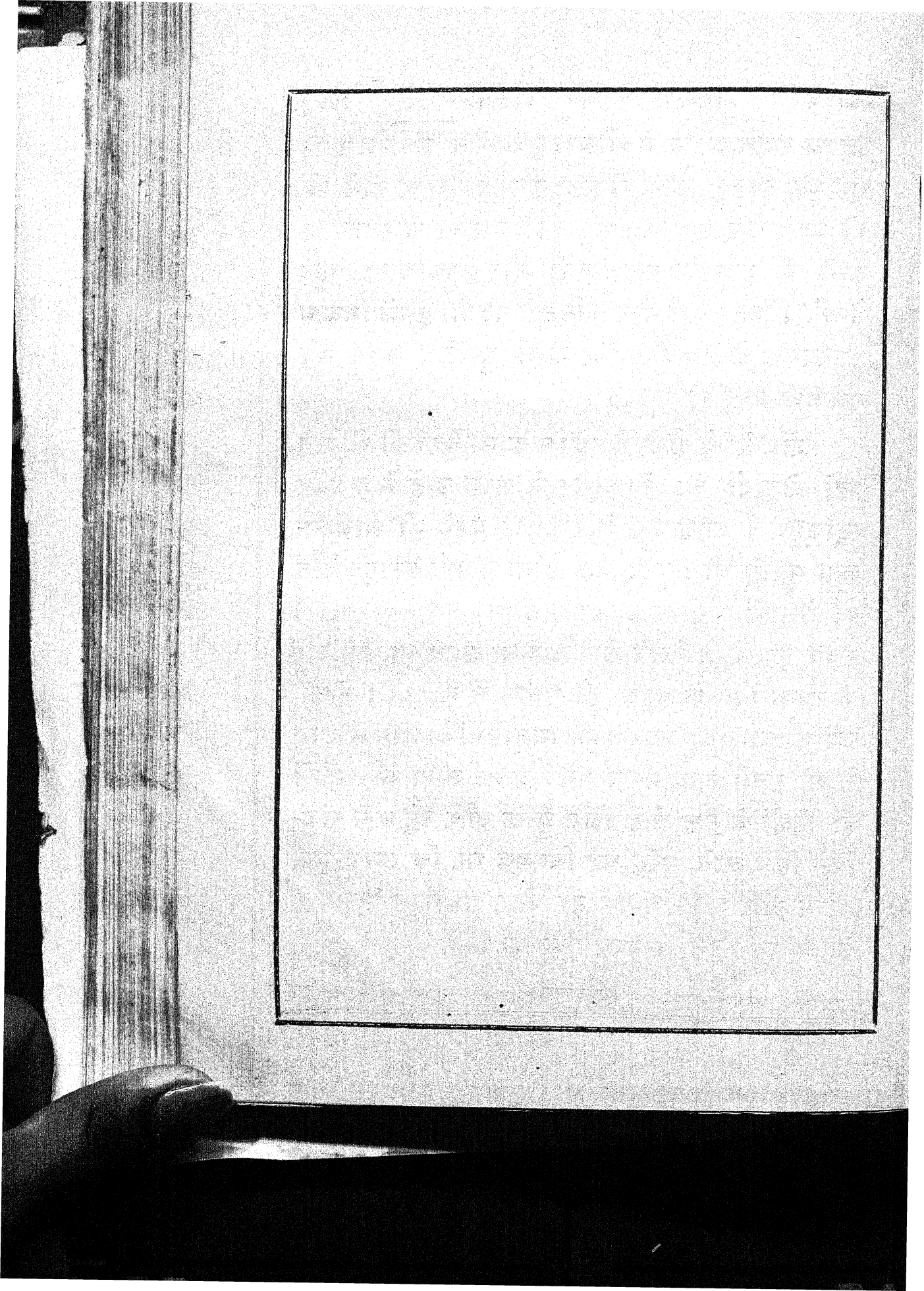

अध्याय ३

विसेनबुर्ग

जर्मन समर-विधान—फ्रेंच समर-विधान—जर्मन सैन्य-संकर्षण—समालोचनायें—फ्रेंच सैन्य-संकर्षण—युद्धारंभ—ज़ारब्रकेन का संग्राम—जर्मनो का सीमा प्रांत की ओर प्रस्थान—आल्सास की चढ़ाई—विसेनबुर्ग का संग्राम—समालोचनायें।

अध्याय ३

विसेनबुर्ग

जर्मन समर-विधान

प्रशिया वाले अपनी संख्या और संगठन संबंधी विशिष्ठता और प्रावल्य से पूर्णतः परिचित थे, अतः वे जर्मन भूमि में आकर शत्रु के रण-रंग मचाने के कैसे ही भी उद्योग के लिये सर्वथा सन्नद्ध थे। गुप्त रीति से दक्षिणी जर्मन रियासतों से यह पहले ही तैं पा चुका था, कि किसी ख़ास स्थान, जैसे कृष्ण-बन की संरक्षा के लिये तो प्रशिया बाध्य नहीं था, किन्तु उन रियासतों की संरक्षा का सब से उत्तम उपाय आक्रामक बन कर राइन प्रदेश से आल्सास प्रांत में चढ़ जाना था। प्रशिया की शक्ति में पूर्ण विश्वास करके बवेरिया, वर्टेंमबर्ग, बेडेन और हेसे की रियासतों ने अपनी २ सेनायें प्रशियाधिराज की सेवा में कर दीं। अपना आरंभोक्रम (Initiative) रचने के लिये युक्ति सोचने में प्रशिया को बहुत संकल्प-विकल्प भी नहीं करना पड़ा; क्योंकि उसको यह मालूम था, कि फ्रांस को रेनिस प्रदेशों में बढ़ने, किम्वा राइन नदी को उसके ऊपरी भाग में पार करने के लिये विवश होना था, क्योंकि लक्सेमबर्ग और स्विट्ज़रलैण्ड की रियासतें उदासीन भाव धारण

करने की घोषणा दे चुकी थीं, इसी से उन रियासतों के भीतर से फ्रेंच सेनायें निकाली नहीं जा सकतीं थीं। फ्रेञ्च सैन्याहाहन में बहुत विलंब होने की भी संभावना थी; पूर्वीय कैम्पों और दुर्गों के गैरिज़नो के लिये सेना रख लेने के बाद फ्रांस के पास केवल थोड़ी सी शाही सेनायें शीघ्रता पूर्वक रण-भूमि में पहुंचने के लिये शेष रह जातीं थीं। अब प्रशियन सदर-स्टाफ़ को इस बात पर विचार करना था, कि राइन नदी के ऊपरी किम्वा अधो भाग में किस युक्ति से शत्रु के भावी आक्रमणों को उसे रोकना चाहिये था, तथा उसी समय निज सैनिक संख्या के आधिक्य से लाभ उठा कर किस तरह पर अपने को भी आक्रामक बनाने के लिये समुचित सैनिक शक्ति का बचा रखना उसके लिये संभव हो सकता था।

जेनरल वान मोटके की युक्ति के अनुसार समस्त जर्मन सेनायें तीन दलों में विभक्त होकर तीन भिन्न २ मार्गों से पलाटिनेट प्रांत में संकर्षित की जाने वालीं थीं; जहां कहीं शत्रु मिलते, वहीं उन पर आक्रमण करना, तथा अपनी सैनिक संख्या की अधिकता से अपने तीनों दलों में संबंध बनाये रखना ही उपर्युक्त युक्ति का मूल सिद्धांत था। रेनिश प्रदेशों में शत्रु-सेना के मिल जाने पर उसका मुक़ाबिला तीनों जर्मन दलों द्वारा किया जाने वाला था; और यदि महाराज नैपोलियन ऊपरी राइन में उतर कर आगे बढ़ते, तो उस दशा में उनके पार्श्व में जर्मन

दल पड़जाता, पस उससे उनके आवागमन और अधिक आगे बढ़ने में बहुत बाधा पहुंचाई जा सकती थी। फ्रेञ्च दल के सम्मुख में कृष्ण बन था, और जर्मन सेनाओं का केन्द्र रस्टाट में था; अतएव राइन नदी ही की घाटी की समर-भूमि में भावी जय-पराजय का निर्णय होने वाला था।

अपनी रेलवे लैनों से यथा-संभव पूर्ण लाभ उठाने के लिये फ्रेञ्च सेनाओं का दो दलों में विभक्त होकर मेज़ और स्ट्रासबुर्ग में जमा होने की अधिक संभावना थी; इस से इन दोनों दलों के मध्य में योज़ पर्वत की दुरूह शृंखलाओं का पड़ना अवश्यंभावी था। पलाटिनेट प्रांत में पहुंच कर जर्मन सेनायें अपनी इच्छानुसार इन दोनों में से किसी एक, अथवा दोनों पर यथेप्सित रीति से आक्रमण कर सकती थीं।

यदि जर्मन सदर से आत्म-रक्षक बन (On defensive) कर रहने का विचार तै पाता, तो उन्हें आल्सास प्रांत को अवश्यमेव खाली करदेना पड़ता, अन्यथा जर्मन-संहति की सेनाओं के मध्य में योज़ पर्वत की शृंखलायें पड़ जातीं, पस उन से होकर संरक्षक लैन के पृष्ठ-भाग में शत्रु-सेना के पहुंच जाने की आशंका रहती।

किन्तु युद्धारंभ में जर्मन सेनाओं के विलग पड़ जाने से कुछ विशेष भय भी नहीं था। पहले दल का एक

बाजू लक्सेमबर्ग की उदासीन रियासत से संरक्षित था, और जिस देश से उसको मार्च करना था, वह पहाड़ी होने से मार्च के लिये सर्वथा उपयुक्त था, अतएव वह दल अपने संकर्षण के निर्दिष्ट स्थान को ओर निर्बाध बढ़ सकता था। दूसरे और तीसरे दलों का रेल-पथ राइन के तट से इति हो जाता था, परंतु वे अपनी क्रमशः बढ़ती हुई संख्या से शत्रु के कठिन से कठिन भी आक्रमण के रोकने के योग्य थे।

फ्रेंच रण-विधान

फ्रेंच सर्कार को जर्मन जाति के पारस्परिक प्राचीन बैर से लाभ प्राप्त कर लेने की बहुत कुछ आशा थी, तथा आक्रामक बन कर शीघ्रता पूर्वक आगे बढ़ जाने में उसको उम्मेद थी, कि दक्षिणी जर्मन रियासतें स्तब्ध होकर रण-कार्य्य से अपना हाथ अवश्यमेव खींच लेंगी। १,५०,००० योद्धा मेज़ में, १,००,००० स्ट्रासबुर्ग में, तथा ५०,००० जवान रिज़र्व में शालां में रखने का विचार महाराज ने किया था। मेज़ और स्ट्रासबुर्ग वाली सेनाओं को संयुक्त करके तथा माक्सो में उन को नदी पार करा कर महाराज नैपोलियन जर्मन रियासतों को उदासीन भाव धारण करने के लिये विवश करने वाले थे; तत्पश्चात् मेन की ओर बढ़कर आपने प्रशियन दलों से युद्ध लेने का विचार किया था। इस विचार को कार्य्य-रूप में परिणत करने के लिये प्रशियन दलों के पहुंचने के

पूर्व ही समस्त फ्रेंच अनियों को राइन नदी के उस पार उतर जाना चाहिये था। ऐसी अवस्था में भी—अर्थात् अनियों के वहां पहुंच जाने पर भी—यह नहीं समझ में आता है, कि आगे महाराज नैपोलियन को सफलता किस तरह से प्राप्त हो सकती थी। दक्षिण जर्मन रियासतों को स्तब्ध करने तथा उसी के साथ ही साथ राइन तटस्थ जर्मन दुर्गों को आवृत रखने में फ्रेंच आक्रामक दल का एक बहुत बड़ा अंश ख़र्च हो जाना था। पृष्ठ-देश में अनेक दुर्गादि-पूर्ण नगरों के होते, फ्लैंक में मेञ्ज के समीप बहुत बड़ी शत्रु-सेना के उपस्थित रहते, तथा फ्रंट में अपनी से अधिक संख्या की सेना को दबाते हुए बर्लिन की ओर आगे बढ़ जाने की आशा केवल दुराशा मात्र थी; इस से उन की अदूर-दर्शिता तथा नितांत मूर्खता सूचित होती है।

जर्मन सैन्य-संकर्षण

युद्ध की अवश्यं-भावी की सूचना मिलते ही दोनों ही राष्ट्र युद्ध के लिये प्रस्तुत होने लगे थे। ता० १५ जुलाई के सायंकाल में उत्तरी जर्मन-संहति की सेनाओं के लिये समराह्वाहन और संकर्षण की आज्ञा भेज दी गई; चूंकि इस भयंकर और राष्ट्रीय युद्ध के लिये प्रत्येक प्राप्य मनुष्य की आवश्यकता समझी गई, इस लिये लैन के योद्धाओं और लैण्डवर रिज़र्वियों की तलबी के लिये भी एक-बारगी उसी समय आज्ञा भेज दी गई। दश दिन के भीतर स्थानीय सैन्य-संकर्षण समाप्त होगया, और तत्पश्चात्

उनका रेलों द्वारा सीमा-प्रांत की ओर भेजा जाना भी प्रारंभ हुआ। कौन सी सेना किस मार्ग से भेजी जायगी, वह कहां से प्रस्थान करेगी, किस तारीख को कितने बजे रेल पर सवार होगी, कितना समय उसको मार्ग में लगेगा, और कहां पर वह रेल से उतरेगी, ये और ऐसी अनेक आवश्यकीय बातें पहले ही से सोच-विचार कर तैं की जा चुकी थीं। जुलाई मास के व्यतीत होते २ तीनों जर्मन दल सर्वथा सुसज्जित और सुगठित बने राइन नदी के तट और उसके दूसरे पार के पलाटिनेट प्रदेश में पहुंच गये। ता० ३१ जुलाई को जर्मन चमुएं अधो लिखित स्थानों पर उपस्थित थीं :—

पहला दल—जेनरल स्टीनमेन कमाण्डर

७-वें और ८-वें पैदल कोर
३-रा रिसाला डिवीज़न
५०,०००पैदल
४,८०० रिसाला

७-वां कोर.....ट्रीव्ज़ में,
८-वां कोर वाडन की सड़क पर समानांतर फ्रंट खुला (Echeloned खड़ा था, इसमें की कुछ चमुएँ ज़ार नदी पर तैनात थीं

दूसरा दल—प्रिन्स फ्रेडरिक चार्ल्स कमाण्डर

३-रा, ४-था, ६-वां, १० वां, १२ वां, और गार्ड कोर पैदल,
५-वां और६-वां रिसाला डिवीज़न,
१,५२,००० पैदल,
२२, ००० रिसाला।

३-रा और ४-था कोर फ्रंट लैन मेज्ज के दक्षिण-पश्चिम में; १०-वां विगेन में, दहने बाजू के पृष्ट भाग में; गार्ड कोर मैनहिम में, बांयें बाजू के पृष्ट भाग में; तथा ६ वां और१२वां कोर केन्द्र के पृष्ठ-भाग में उपस्थित थे।

तीसरा दल—युवराज प्रशिया कमाण्डर

५-वां, ११-वां, और दो बवेरियन कोर, बेडन और वर्टेमबर्ग के डिवीज़न, पैदल;
४-था रिसाला डिवीज़न
१,२६०००पैदल
१४,८०० रिसाला

५-वां और ११-वां कोर तथा बवेरिया का एक डिवीज़न फ्रंट लैन में लैएडो-जर्मर्स-हिम में; बवेरिया का शेष डिवीज़न दूसरी लैन में, दक्षिण-जर्मन सेनायें नदी के दहने तट पर थीं।

थोड़े ही दिनों के बाद पहला कोर और रिसाले का पहला डिवीज़न पहले दल में आ मिले; दूसरा कोर दूसरे दल में, तथा ६-वां कोर और रिसाले का दूसरा डिवीज़न तीसरे दल में शामिल हो गये; इस तरह पर तथा १९-वें पैदल और चार लैण्डवर डिवीज़नो को मिलाने पर, कुल मीज़ान ४,६२,००० पैदल, ५६,८००, रिसाला और १,५८४ तोपों का हो गया।

समालोचनायें

मध्य जुलाई मास में रेनिश प्रदेश बिल्कुल अरक्षित रहे थे, इसलिये राइन नदीके तटों पर रेल द्वारा सेनाओं के भेजने में अधिक सावधानी रखने की आवश्यकता पड़ी थी। नदी के दूसरे तट पर पहुंच जाने के बाद सब चमुएं मार्च कराकर आगे बढ़ाई गई थीं; तीनों दल चापाकार मार्ग से आगे बढ़ रहे थे, इन में से पहले और तीसरे दलों के कोरों से तो चाप के आगे के निकले हुए छोर बने थे, और दूसरे दल से चाप का मध्य भाग। फ्रेञ्च सेना के आक्रामक बनने की दशा में ट्रीवज़ के आस पास के पहाड़ी देश में पहले दल के लिये शत्रु को रोक देने में कुछ विशेष कठिनता नहीं पड़ी होती।

तीसरे दल का फ्रंट-देश बिल्कुल खुला था, अतः इस पर आक्रमण होना सुगम था। दूसरे दल को कैसरस्लाटर्न की घाटी से होकर जाना था, और उसी से होकर फ्रेञ्च सेनाओं का भी आगे बढ़ना संभव था। इन सब आगंतुक आपत्तियों के निवारणार्थ आत्म-संरक्षक मोर्चों के यथोचित संविधान सावधानी के साथ कर लिये गये थे।

फ्रेंच सैन्य-संकर्षण

पहले यह कहा जा चुका है, कि फ्रांस की रेलवे लैनें इस तरह पर बनी थीं, कि वहां की सेनाओं को पहले पहल दो दलों में होकर मेज़ और स्ट्रासबुर्ग में एकत्रित होने के लिये विवश होना पड़ता था। रिज़र्वियों को तलब करने तथा उनके लिये ट्रैन्सपोर्ट (बारबर्दारी) और शस्त्रास्त्र मुहैया करने ही में फ्रांस के लिये बहुत कठिनता पड़ गई। प्रति दिन की सैन्याह्वाहनीय घटनाओं से फ्रेञ्च समर-विभाग की अधूरी तय्यारी और वहां के संविधान के दूसरे अंतर्जात दोष प्रकट होते जाते थे। रिज़र्वियों से भरी हुई ट्रैनें रेलवे लैनों पर जगह ब जगह पड़ीं मार्ग को अवरुद्ध किये थीं; अनेक दोषों से इनका आगे बढ़ना दुस्साध्य हो रहा था; रेजिमेन्टों और कोरों के ट्रैन्सपोर्ट अधूर थे; रसद पहुंचाने के परमावश्यकीय कार्य्य के लिये तोपख़ानों के घोड़ों तक को अलग कर लेना पड़ा था; रोटी और मांस ऐसे भोजन के नितांत आवश्यकीय पदार्थ भी बहुत

से पड़ावों पर दुष्प्राप्य हो रहे थे। रण-भौमिक कुप्रबंधों के साथ ही साथ दुर्गादिकों की दशा भी कुछ संतोष-जनक नहीं थी। मेज़ के आस-पास के दुर्गों की न तो मरम्मत ही हुई थी, और न वे नवीनतम प्रचलित शस्त्रास्त्रों से ही समन्वित किये गये थे; दुर्गागारों में यथोचित रसद भी उपस्थित नहीं थी; और मुहासिरा होने पर वे बहुत दिनों संभल भी नहीं सकते थे। स्ट्रासबुर्ग और दूसरे छोटे २ दुर्गों की दशा भी इन से कुछ अच्छी नहीं थी। प्राचीन अप्रचलित ढंग की तोपों से सजे तथा सेना और सामान में भी न्यूनता होने से युद्ध के अवसर पर यहांके वीर कमाण्डरों को अनुचित दुर्गति उठानी पड़ी थी।

युद्ध-घोषणा प्रकाशित होने के बाद इधर एक ओर तो सेनायें सीमा-प्रांत की ओर शीघ्रता पूर्वक बढ़ाई जातीं थीं, उधर सीमा-प्रांत के निकट पहुंच जाने पर उनके कोरों के स्टाफ का संविधान और केडरों (*Cadre*) की पूर्त्ति की जाती थी। इस देश के समर-विभाग में जो सर्वाधिकार-संकर्षण (Centralization) की प्रणाली प्रचलित थी, उसके दोष, तथा यहां के कमसरियट विभाग की अयोग्यता इस समय प्रकट होकर अत्यंत दुखदायक सूचित हुई। प्रारंभिक प्रस्तावानुसार आक्रामक बनने के हेतु अपनी दोनों ओर की अनियों को संयुक्त करने के लिये अब समय नहीं रह गया था, तथा, मालूम होता है, कि आत्म-

संरक्षक बनने के लिये पहले से कुछ विचार न होने से कोई संभावी प्रबंध तक नहीं सोचा गया था। सिवाय इसके कि मेज़ के आस-पास शत्रु-सेना कहीं संकर्षित हो रही है, शत्रु के विषय में भी यहां वालों को कुछ विदित नहीं था।

उपर्युक्त बातों से दोनों देशों की संकर्षण-प्रणाली का अंतर स्वतः प्रकट हो जाता है योद्धाओं, अश्वों, तथा अपर सामरिक सामग्रियों से अपने ज़िलों के भीतर ही सर्वथा सुसज्जित और सुगठित कर २ के प्रत्येक जर्मन सैनिक कोर रण-भूमि में पहुंचा था; अर्थात् जिस दल में वह योग देने वाला था, उसके लिये सर्वथा समरोपयोग्य बना कर वह भेजा जाता था। इसके विरुद्ध फ्रेंच सेनायें अधूरी ट्रेनो के होने, तथा सामरिक सामग्रियों की न्यूनता भी रहने से वस्तुतः सीमा प्रदेश ही में पहुंच जाने के बाद युद्धोपयोगी बनाई गईं। समस्त प्रकार की भावी आपत्तियों के निवारणार्थ जर्मनो ने उपाय सोचकर उन्हें हल कर लेने का सुचिन्तित प्रबंध कर लिया था; प्रत्येक कोर के कमाण्डर को उसकी इत्तला थी। फ्रेंच सदर के स्टाफ़ अफ़सरों के सिवाय शायद दूसरे किसी सैनिक नायक को इस बात की इत्तला नहीं थी, कि उनकी ओर से भावी रण-रचना का किस युक्ति से संविधान किया जाने वाला था। भावी अनेकानेक अपत्तियों की ओर तो यहां किसी का ध्यान भी नहीं गया था।

जुलाई मास के अंत में फ्रेञ्च सेनायें वस्तुतः दो

चीफ़ कमाण्डरों की मातहती में थीं; इन दोनों में न तो आवागमन ही की कुछ विशेष सुविधा थी, और न कुछ अधिक संबंध ही रखे जाने का प्रबंध कर लिया गया था। इन में से दहना विंग (Wing) वोज़ पर्वत के पूर्व में मार्शल मैकमाओं की मातहती में उपस्थित था, तथा बायां विंग सेण्ट एवोल्ड में स्वयं महाराज नैपोलियन की निगरानी में था। समस्त सेना सात कोरों में विभक्त थी; ये कोर बहुत शिथिल रीति से तिआनविल से लेकर स्ट्रासबुर्ग पर्यंत के सीमा प्रदेश में इधर-उधर समानांतर लैनों में पड़े हुए थे; इनके सिवाय शालों में एक कोर रिज़र्व में भी रखा गया था।

ता० ३१ जुलाई को इन कोरों की स्थिति अधो लिखित स्थानों में थी :—

दहना विंग—कमाण्डर मार्शल मैकमाओं

पहला कोर स्ट्रासबुर्ग और आगनो में, रिसाला फ्रंट में ७-वां कोर बेलफोर्ट और लिआस में	४७,०००

बायां विंग—कमाण्डर महाराज नैपोलियन

२-रा कोर फार्बाक में ३-रा कोर सेण्ट एवोल्ड में ४-था कोर बोले, बोज़ानविल और सिरेक में ५-वां कोर ज़ार्गमंड और बिट्श में गार्ड सेना मेज़ में	१,२८०००

रिज़र्व सेना

६-वां कोर शालां में	३५,०००

मीज़ान ९२५ तोपें और २,१०,००० योद्धा

किसी भी कोर की संख्या-शक्ति पूरी नहीं थी; अधिक रिज़र्वियों के पहुंच जाने से अगस्त मास के प्रारंभ में योद्धाओं की संख्या २,७०,००० तक पहुंच गई थी।

स्थान २ पर थोड़े २ योद्धाओं की छोटी २ औट-पोष्ट चौकियों की ओट में अपने तीनों दलों को संगठित और समरोपयुक्त बना कर जर्मन सेना आगे सीमा-प्रांत की ओर बढ़ी, उधर उसके मुक़ाबिले में संख्या और शक्ति में निर्बल सामान से न्यून तथा कमाण्डरों की उलटी पुलटी आज्ञाओं के कारण कभी आगे कभी पीछे जाते हुए वियुक्त (Detached) फ्रेञ्च सैनिक कोर पड़े हुए थे।

युद्धारंभ

अगस्त मास के लगते ही जर्मन रिसाले के थोड़े २ से सवार निर्भीत आगे बढ़ २ कर शत्रु-सेनाओं का पता लगाने के लिये गिर्दावरी करना प्रारंभ कर दिये, और इस तरह पर सेन्ट एवोल्ड के आस पास मुख्य फ्रेंच सेनाओं के होने तथा आगनो के आगे के आलसास प्रदेश में किसी भी शत्रु-सेना

के न रहने का पता उन लोगों ने लगा लिया। इधर फ्रेंच रिसाला निष्प्रयोजन बैठा था, शत्रु-दल की स्थिति के विषय में फ्रेंच सेनाधिपों को कुछ भी ज्ञान नहीं था।

ज़ारब्रकेन का संग्राम

दूसरी अगस्त तक दोनों दलों के बीच कोई भी बड़े मुक़ाबिले नहीं पड़े। उसी तारीख़ को सीमा प्रदेश में आकर महाराज नैपोलियन ने सब सेना का कमाण्ड अपने हाथ में लिया, और एक बड़ी सी सेना को ज़ारब्रकेन की ओर बढ़ा कर आपने शत्रु-सेना का पता लेने का विचार किया। इसके दो उद्देश्य थे, एक तो शत्रु की वास्तविक अवस्था का पता लगाना, दूसरे विजय-समाचार सुनने के लिये बहुत काल से व्यग्र हुए फ्रेंच राष्ट्र को संतुष्ठ करना। युद्धार्थ अप्रस्तुत होने के कारण महाराज की इस युक्ति (Plan) का यथोचित परिपालन न हो सका, किन्तु इसके विरुद्ध दूसरे कोर को लेकर जेनरल फ्रास्सर्ड को आक्रामक बनजाना पड़ गया। अभी तक पहले और दूसरे जर्मन दलों में से किसी को भी सीमा-प्रांत की ओर बढ़ने की आज्ञा नहीं की गई थी, ज़ारब्रकेन नगर की रक्षा में केवल थोड़ी सी सेना पहरे (Outpost duty) में तैनात थी। यद्यपि इस छोटी सी सेना के शूर योद्धाओं ने अत्यंत वीरता

के साथ बढ़ती हुई फ्रेञ्च अनियों के धारा-प्रवाह को रोकने का प्रयन्त किया, किन्तु अंत में असमर्थ और लाचार होकर उनको वह नगर खाली करके पीछे हट जाना पड़ा। इस आकस्मिक विजय से फ्रेञ्च सेना ने कुछ भी लाभ नहीं उठाया, पीछे हटती हुई जर्मन सेना का तनिक भी दूर तक उसने पीछा न किया, बल्कि तुरंत ही नगर के समीपस्थ टीलों पर पड़ाव कर दिया। बहुत सेना लेकर गिर्दावरी करना प्रायः सर्वदा असंतोष-प्रद होता है, और इस अवसर पर तो महाराज का रण-व्याज प्रकट करना (Military démonstration) भी व्यर्थ था, क्योंकि आक्रामक बन कर न तो उनकी सेनायें आगे ही बढ़ सकीं, और न शत्रु-सेना का वे पता ही लगा सकीं, प्रत्युत शांति धारण कर ज़ार नदी के तट पर पड़ रहीं। समर-कार्य्य तो प्रारम्भ हो गया, किन्तु फ्रेञ्च सदर में अब तक यह निर्णय न हो पाया, कि उनकी वास्तविक सैनिक अवस्था कैसी है, तथा आक्रामक बन कर अथवा आत्म-संरक्षक रह कर रण-कार्य्य करना उनके लिये श्रेयस्कर होगा!

इधर पहला जर्मन दल ट्रीव्ज के दक्षिण में संकर्षित होता चला आता था, दूसरा दल कैसरस्लाटर्न की घाटी को शीघ्रता पूर्वक पार कर रहा था, तथा तीसरा

दल लैण्डो में, जो सीमांत रेखा से केवल एक ही मंज़िल पर था, एकत्रित हो रहा था।

बांये विंग की फ्रेञ्च चमुएं सेण्ट एवाल्ड के समीप एकत्रित हो रहीं थीं, तथा मार्शल मैकमाआं उत्तरी आल्सास की ओर मार्च कर रहे थे।

जर्मनो का सीमा प्रांत की ओर प्रस्थना

चूंकि फ्रेञ्च चमुएं ज़ारब्रकेन से आगे नहीं बढ़ीं, इसलिये ता० ३ अगस्त को जर्मन समर-सदर से यह आज्ञा निकली, कि आगे बढ़ कर कैसर-स्लाटर्न के सम्मुख युद्ध देने को लिये अब दूसरा दल तय्यार हो जाय, तथा उसको संभालने के लिये पहला दल भी प्रस्तुत रहे। तीसरा दल तुरंत सीमान्त रेखा पार कर जाय।

किस लैन से पहला और किस लैन से दूसरा दल एडवान्स करे, यह बात पहले से निर्णीत करके उनके मार्ग सीमाबद्ध नहीं कर दिये गये थे। दूसरे दल में अनेक चमुएं थीं, उन सब को एक साथ ही आगे बढ़ाने के लिये मार्ग संकीर्ण पड़ता था, अतएव उनमें से कुछ चमुवों को सेण्ट वेण्डेल से होकर बढ़ने की आज्ञा की गई थी, इससे पहले दल को अपने दहने बाज़ू की ओर कुछ दब कर बढ़ने की आज्ञा थी, जिसमें प्रिंस फ्रेडरिक चार्ल्स की चमुवों के लिये राइन-नाए रेलवे की सड़क मिल सके। इस कार्य्य में इन दोनों ही दलों की चमुवों को बहुत ही सावधानी

करने की आवश्यकता थी, क्योंकि शत्रु-द्वारा आक्रमण किये जाने पर दोनों को एक दूसरे की सहायता करना भी मंज़ूर था।

इसके लिये पहले दल को थोड़ी देर ठहर जाने की आवश्यकता हुई, जिसमें पीछे पड़ा हुआ दूसरादल भी उसी लैन में आ जाता। किन्तु जेनरल स्टीनमेज़ आदेशोल्लंघन कर दिये, अर्थात् केवल दहने हाथ की ओर वे थोड़ा हट कर रुक नहीं गये, किन्तु उसी के साथ कुछ २ सीमा-प्रांत की ओर बढ़ भी गये। इसका फल यह हुआ, कि दोनों ही दलों के एडवान्स गार्ड एक ही समय में ज़ारब्रकेन की ओर बढ़ दिये, और ता० ६ अगस्त को उनका फ्रेञ्च सेना के जेनरल फ्रास्सर्ड के कोर से अचिंतित मुक़ाबिला पड़ गया।

तीसरे दल को योज़ पर्वत के अधो भाग की पहाड़ी सड़कों के पार करने का कठिन कार्य्य इस समय पड़ गया था, तत्पश्चात् मुख्य पर्वत की घाटियों से होकर, शत्रु की चमुवों को दबाते हुए, इसको आगे बढ़ना था। इन तीनों ही दलों का निर्दिष्ट स्थान पेरिस पहुंचना था, अतः इस दल को कठिनतम पहाड़ी देशों से चलना तथा अपर दोनों दलों से अधिक फ़ासिला भी तैं करना था। इसके लिये समय की आवश्यकता थी, अतः युवराज ने रेल-गाड़ियों की प्रतीक्षा न करके अपनी चमुवों

को ता० ४ अगस्त को आगे बढ़ने की आज्ञा कर दी, और वे सब शीघ्र लाटर नदी के किनारे पहुंच भी गईं।

आल्सास पर चढ़ाई

उत्तर ओर के बढ़ने में अपने १-ले और ७-वें कोरों के अंतिम संकर्षण में आवरण के लिये मार्शल मैकमाआं ने जेनरल डूक्रो और डुए के कमाण्ड में दो डिवीज़न सेनायें आगे बढ़ा दीं। ता० ४ अगस्त को फ्रेञ्च सेनाओं की स्थिति अधो लिखित प्रकार से थी :—

१-लाकोर	२-रा डिवीज़न (डूए)	विसेनबुर्ग
	१-ला डिवीज़न (डूक्रो)	लेम्बाक के समीप मार्च कर रहा था
	३-रा डिवीज़न (रावो)	रिकशाफेन
	४-था डिवीज़न (लार्टिज़)	आगनो
७-वां कोर	१- ला डिवीज़न.....	काल्मर
	रिसाला डिवीज़न.....	सुल्ज़ और ब्रूमथ

तीसरा दल, जिसमें सब मिला कर १२८ बटालियने, १०२ स्क्वाड्रन्स, और ८० बैटरियां थीं, सीमान्त रेखा को विसेनबुर्ग और लाटरबुर्ग के मध्य में पार करने के लिये चौड़े फ्रंट में मार्च कर रहा था। अपने दहने बाजू में कुछ पार्श्व-संरक्षक अनियों को लिये ४-था बवेरियन डिवीज़न इस दल के एडवान्स गार्ड का काम कर रहा था, और वह विसेनबुर्ग की सड़क पर मार्च कर रहा था, तथा उसी के पीछे २ बवेरिया की शेष सेना भी जा रही थी। ५-वें और ११-वें कोर एडवान्स

गार्ड के पीछे २ वीनवाल्ड से होकर पूर्व की ओर कुछ अधिक दबाते हुए मार्च कर रहे थे। जेनरल वर्डर के कमाण्ड में वर्टेमबर्ग और बेडेन के संयुक्त डिवीज़न बायें बाज़ू में लाटरबुर्ग की ओर बढ़ रहे थे।

विसेनबुर्ग का संग्राम, अगस्त ४

पैदलों का एक निर्बल डिवीज़न और रिसाले का एक ब्रिगेड लिये जेनरल डूए ता० ३ अगस्त के सायंकाल में बिसेनबुर्ग में पहुंच गये थे। नगर के दक्षिण वाले टीलों पर मोर्चे जमा कर अपनी दो बटालियनो को इन्होंने नगर के पुराने दुर्ग की संरक्षा में भेज दिया था। बवेरिया के एडवान्स गार्ड के तोपखानो ने रात के आठ बजे के कुछ ही बाद नगर पर गोले बरसा कर फ्रेञ्च शिविर में विस्मय उत्पन्न कर दिया, किन्तु तत्पश्चात् तीन घंटे तक, अर्थात् जब तक वहां पर ५-वें और ११-वें कोरों की अगली लैन वाली पैदल सेनायें पहुंच नहीं गईं, तब तक उस गोलंदाजी का कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। उनके पहुंचते ही जर्मनो ने नगर पर धावा करके डूए के पहाड़ी मोर्चे को अपनी बड़ी सेना से घेर कर उस पर धावा करना प्रारंभ कर दिया। फ्रांसीसियों ने भी अत्यंत शूरता प्रकट करके उन्हें कुछ काल तक रोकने का प्रयत्न किया; स्वयं जेनरल डूए के मारे जाने पर फ्रेञ्च सेना का मुख्य अंश वहां से निकल कर वर्त्त (Woerth) के आस-पास हट जाने में सफलीभूत हो गया।

समालोचनार्थ

अनुपयुक्त रीति से सेनाओं के तितर-बितर कर देने का जो अनिष्ट-कारक फल अक्सर हुआ करता है, उसका यह एक दुखदायी उदाहरण है। अपने एक निर्बल डिवीज़न को शत्रु के समस्त तीसरे दल द्वारा पद-दलित और ध्वंश करने का अवसर देने से फ्रेञ्च सैनिक नायकों की बहुत बड़ी असावधानी और भूल सूचित होती है। यदि तीसरा दल आल्सास प्रांत में प्रवेश करता आता था, तो वह ५,००० जवानों द्वारा कदापि रोका नहीं जा सकता था; पुनः, यदि यह डिवीज़न केवल आउट-पोष्ट (अगली चौकी) का कार्य्य करने के लिये ही भेजा गया था, तो उसको इस बात की साफ़ २ इत्तला होनी चाहिये थी। मार्शल मैक-माआं का कथन है, कि उन्होंने उन दोनों डिवीज़नों का कमाण्ड जेनरल डूक्री के हाथ में दे दिया था, तथा जिस स्थान पर डूए का डिवीज़न पड़ा हुआ था, उसके बांये तरफ़ की कोल-डू-पिजन्नेर को जाने वाली पहाड़ी सड़क की रक्षा ही के लिये उन्होंने मुख्य कर डूए को आज्ञा की थी; ऐसी दशा में डूए के कमाण्ड की चमुएं सरलता पूर्वक हट कर पहले डिवीज़न से लैम्बक में संबंध कर सकती थीं। जेनरल डुक्रो का कथन है, कि डूए को जहां तक जाने का आदेश

किया गया था, उससे वे अधिक आगे बढ़ गये, विसेन-बुर्ग को स्वाधिकार में रखने की कुछ आवश्यकता नहीं थी। परंतु ऐसा मालूम होता है, कि मार्शल को जर्मन दल के उपर्युक्त आक्रमण की सूचना ता० ३ अगस्त की रात ही में मिल चुकी थी, तार द्वारा उनको वहां की वास्तविक स्थिति की इत्तला भी ता० ४ अगस्त के दिन में प्राप्त हुई थी, पुनः उसी तारीख़ के साढ़े दश बजे दिन को स्वयं उन्होंने ही डूए के पास यह सूचना दी थी, कि वे (मार्शल) स्वयं विसेनबुर्ग को आ रहे हैं विसेनबुर्ग के रसद-भंडार की संरक्षा के विषय में डूक्रो ने भी डुए का ध्यान आकर्षित कराया था; प्रत्युत नगर को स्वाधिकार में रखे रहने की समस्त युक्तियों की पूरी २ सूचना मार्शल को मिल चुकी थी, और उन्होंने उसको स्वीकार करके अपनी मंजूरी भी दे दी थी। साफ़ बात तो यह है, कि एक बड़ी सी सेना लेकर फ्रांसीसी नायकगण शत्रु दल का केवल पता मात्र लेना चाहते थे, वे युद्ध के लिये प्रस्तुत नहीं थे; अतएव इस पराजय के उत्तर-दाता केवल डुए ही नहीं हो सकते हैं। इस युद्ध से दूसरी बात यह भी प्रकट होती है, कि फ्रांस के रिसाले वालों ने शत्रु-दल का पता लगाने में बिल्कुल असावधानी की थी, यह उनसे बहुत बड़ी भूल हुई, परंतु यह भी

कहा जाता है, कि गिर्दावरी करने की उनको शायद शिक्षा ही अधूरी मिली थी। पराजित फ्रेञ्च सेना का निर्बाध सफलतापूर्वक निकल जाना सिद्ध करता है, कि जर्मन रिसाले वाले भी यथोचित सावधान नहीं थे, इससे उनकी बड़ाई में भी धब्बा लगता है।

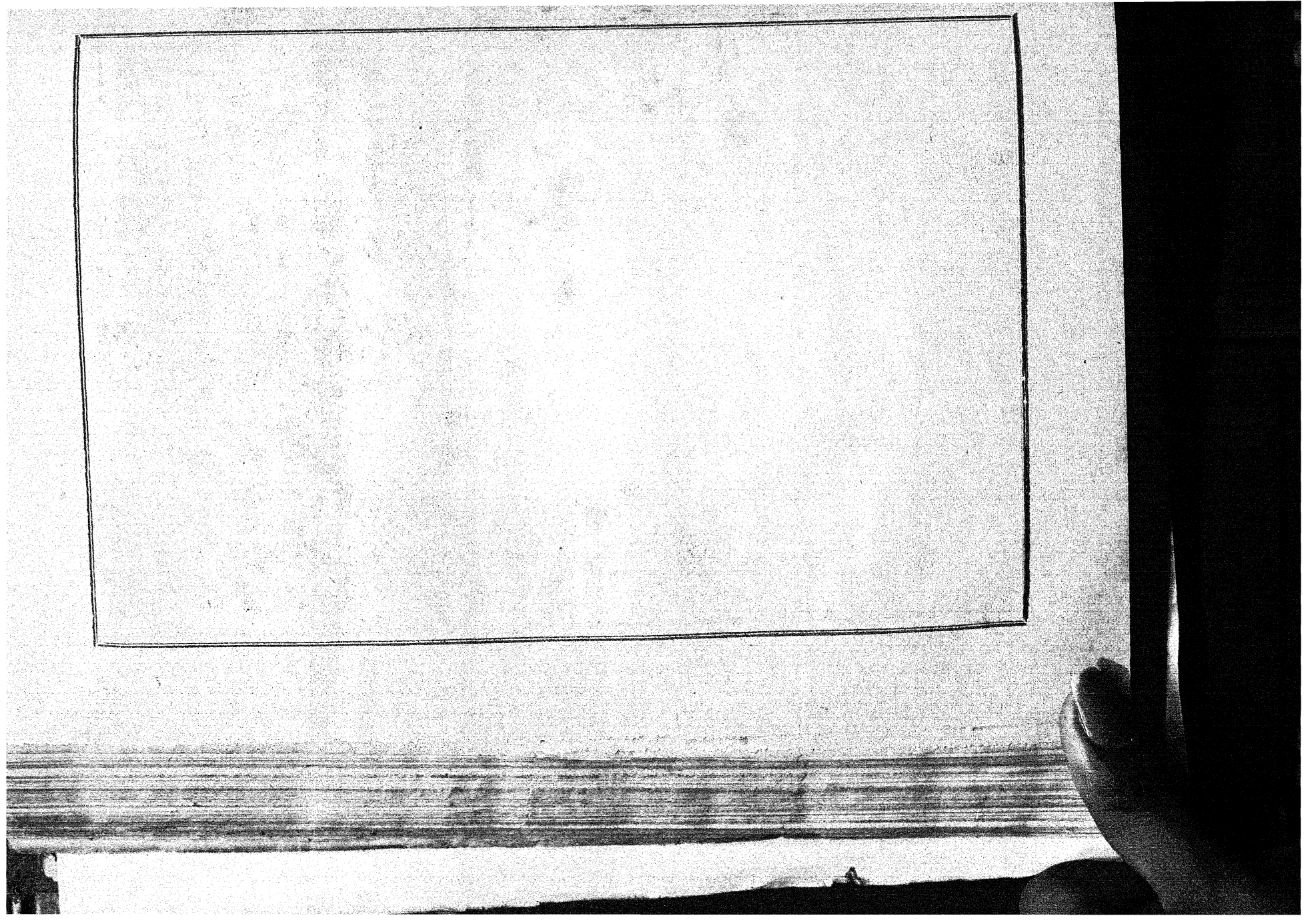

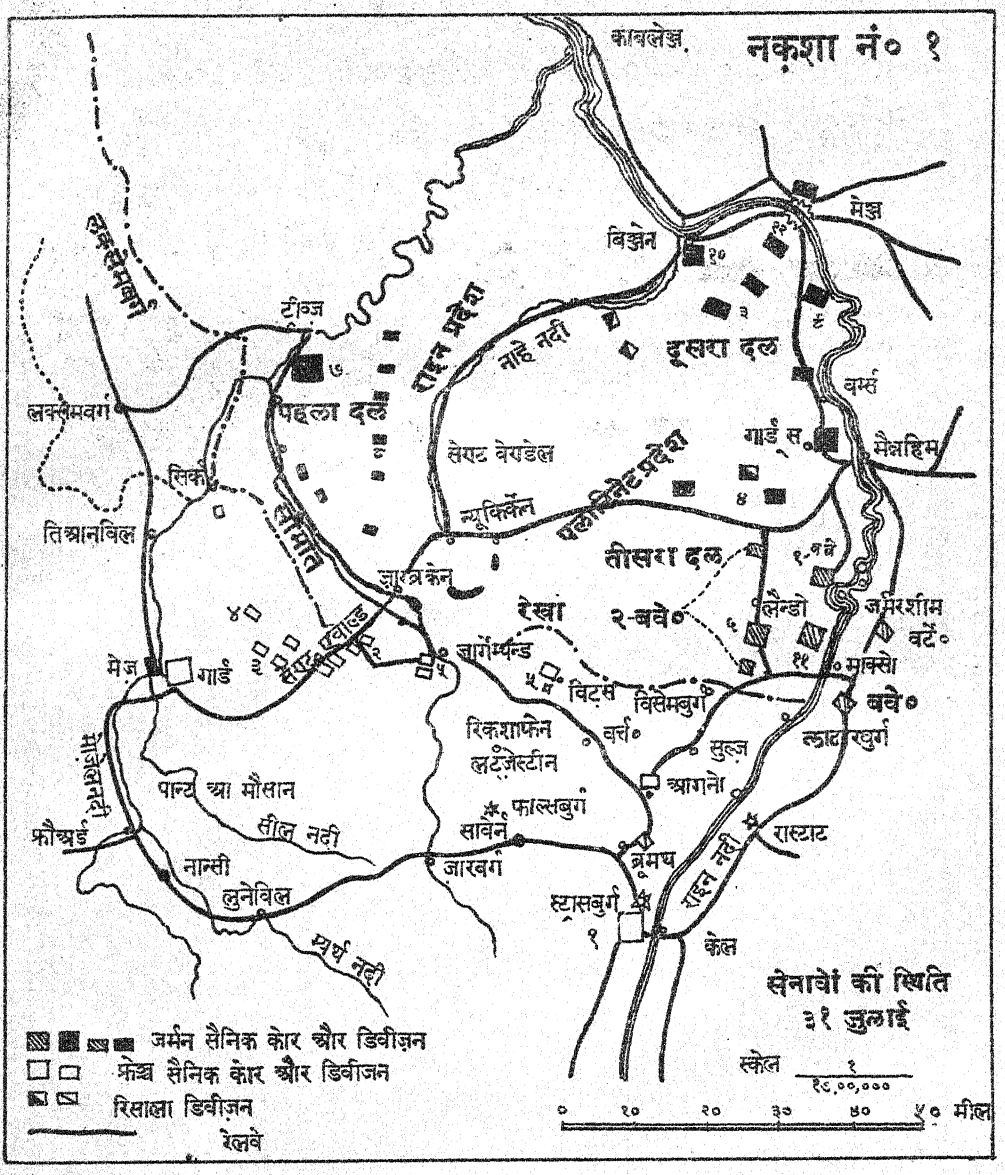
नक़शा नं० १
काबलेञ्ज
मेञ्ज
बिञ्जेन
टीव्ज
लक्सेमबर्ग
लक्सेमबर्ग
पहला दल
राइन प्रदेश
नाहे नदी
दूसरा दल
वर्म्स
गार्ड्स
मैन्नहिम
सेण्ट वेण्डेल
पलाटिनेट प्रदेश
सिर्क
तिआनविल
सीमांत
न्यूकिर्केन
तीसरा दल
ज़ारब्रकेन
रेखा
२-बवे०
लैन्डो
जर्मरशीम
वर्टे०
मेज़
गार्ड
जार्गेम्यन्ड
विट्स
विसेमबुर्ग
माक्सो
बवे०
रिकशाफेन
लट्ज़ेस्टीन
वर्त्त०
सुल्ज़
लाटारबुर्ग
आगनो
पान्ट आ मौसान
फाल्सबुर्ग
फ्रौअर्ड
सील नदी
सावेर्न
रास्टाट
नान्सी
जारबर्ग
ब्रूमथ
लुनेविल
स्ट्रासबुर्ग
राइन नदी
केल
स्पर्थ नदी
सेनावों की स्थिति
३१ जुलाई
जर्मन सैनिक कोर और डिवीज़न
फ्रेञ्च सैनिक कोर और डिवीजन
रिसाला डिवीज़न
रेलवे
स्केल १/१८,००,०००
० १० २० ३० ४० ५० मील

अध्याय ४

वर्त्त

फ्रेञ्च सैन्य-संकर्षण—तीसरे दल का एडवान्स—वर्त के मोर्चे को अधिकार में लाना—जर्मनो की गिर्दावरी—'एडवान्स गार्डों' का आक्रमण—दोपहर की स्थिति—६-वें कोर का एडवान्स—११-वें कोर का एडवान्स—प्रत्याक्रमण—नीदरवाल्ड का छीना जाना—फ्राश-विलर का छीना जाना—पीछे हटना—समालोचनायें

—:o:—

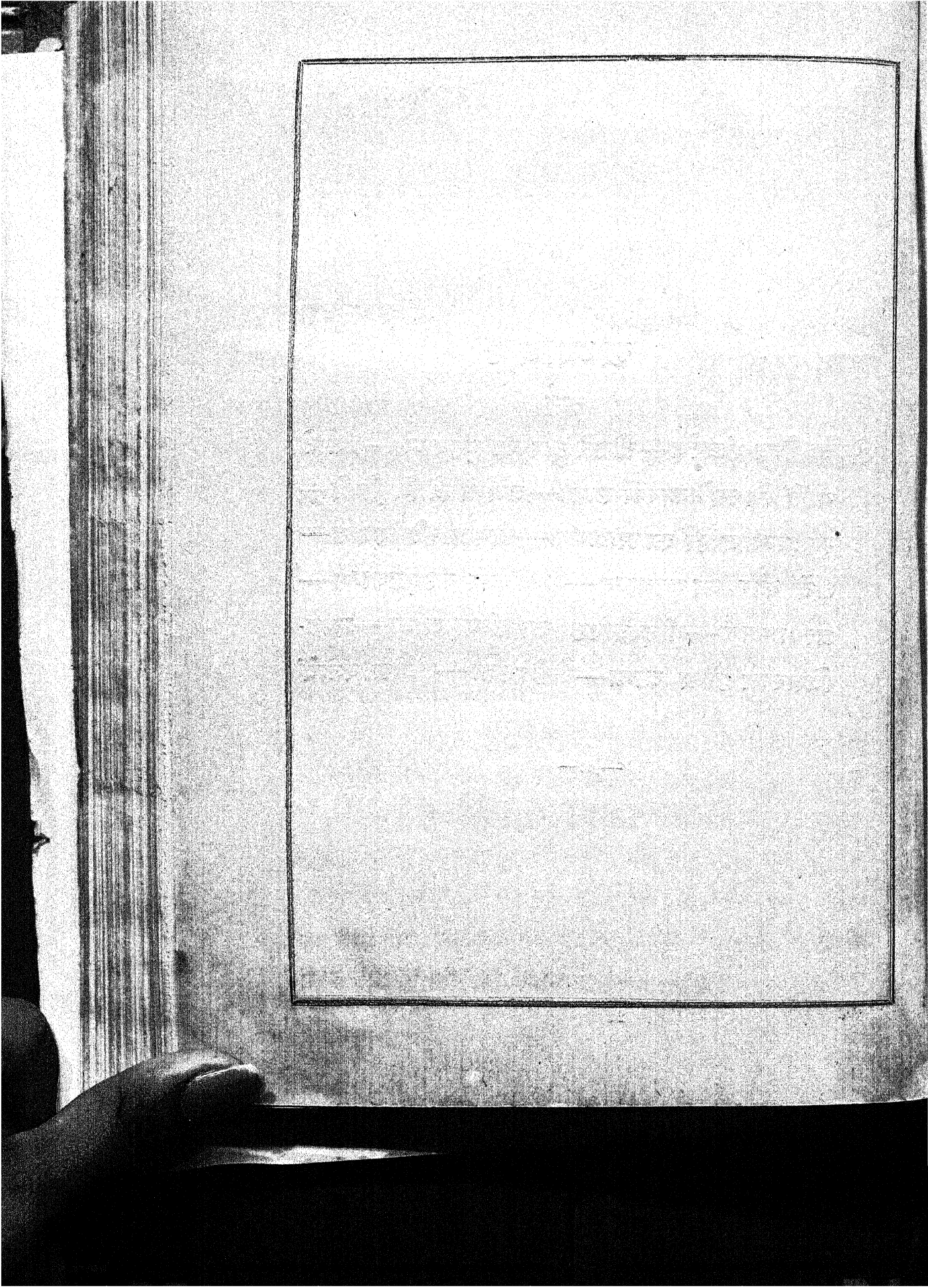

अध्याय ४

वर्त्त

फ्रेञ्च सैन्य संकर्षण

आल्सास में तीसरे दल के चढ़ आने से, तथा ज़ार ब्रकेन के उत्तर में अत्यंत शक्तिमती सेनाओं के उपस्थित होने से फ्रांसीसियों को अपनी पहली युक्ति के अनुसार रण-रचना करना असंभव हो गया। महाराज नैपोलियन अपने बांये विंग की सेनाओं को योज़ पर्वत के मार्ग से आगे नहीं बढ़ा सकते थे, क्योंकि उस दशा में उनके दोनों बाजुओं में दो जर्मन दल पड़ जाते। अतः सब उपस्थित और प्राप्तव्य चमुओं को पर्वत-शृंखला के पृष्ठ-भाग में संकर्षण करना ही अब सर्वोत्तम उपाय था; परंतु इस समय तक फ्रेञ्च चमुएं इधर उधर बिथरी हुई थीं, उनको एकत्रित करने के लिये कुछ समय की आवश्यकता थी। इसके सिवाय निज दहने विंग की सेनाओं को पश्चिम तरफ़ हटा ले आने में आल्सास प्रदेश को खाली कर देने की आवश्यकता पड़ जाती थी—परंतु यह एक ऐसा कार्य्य था, जिसको कार्य्य-रूप में परिणत करने में महाराज को बहुत संकल्प-विकल्प होता था, क्योंकि राजधानी के तुमुलकारी निवासी इस पर बहुत ही असंतुष्टता प्रकट करते। यह सब सोच-विचार

कर मार्शल मैकमाआं के पास ५-वें कोर की चमुएं भी भेज दी गईं, तथा उन को योज पर्वत की पूर्वीय भुजा के वर्त्त नामक स्थान पर अपनी सब सेना संकर्षित करके मोर्चे जमाने की आज्ञा की गई। इस तरह पर सभी पहाड़ी घाटियां संवृत्त हो जाती थीं; ऐसी दशा में शत्रु के तीसरे दल के आगे बढ़ने पर मार्शल को उसके बाजू पर आक्रमण करने का सुअवसर मिल सकता था।

ऐसा मालूम होता है, कि मार्शल ता० ७ अगस्त से आक्रमण करना चाहते थे; उनकी सब चमुएं व्यूह-बद्ध हुईं वर्त्त के सन्निकट पड़ाव किये थीं। ता० ६ के सबेरे समस्त पहला कोर तथा ७-वें कोर का एक डिवीज़न ज़ौर (*Sauer*) नदी के तट के समीपवर्ती टीलों पर एकत्रित हो गये, किन्तु ५-वें कोर का केवल एक डिवीज़न बिट्श से अभी तक प्रस्थान किये था।

तीसरे दल का एडवान्स

ता० ४ अगस्त के सायंकाल से फ्रेंच सेनाओं का कुछ पता नहीं चलता था; अतः दूसरे दिन तीसरा दल अपने रिसाले को आगे किये घुमावदार सड़कों से रिक्शाफेन और आगनो की ओर सावधानी के साथ बढ़ चला; वह पश्चिम किम्वा दक्षिण में, आवश्यकता पड़ जाने पर, शत्रु से युद्ध लेने के लिये भी तय्यार हो लिया। इसके लिये :—

दूसरा बवेरियन कोर विट्श की सड़क पर मार्च करता लेम्बाक को बढ़ गया।
५-वां कोर प्रेशडोर्फ को बढ़ गया।

ये सब चमुएं पश्चिमाभिमुख थीं।

११-वां कोर, वर्डर कोर को अपने बायें बाजू में किये हुए, आगनो की ओर सुल्ज़ में पहुंचा।
पहला बवेरियन कोर रिज़र्व में रखा गया।

ये सब चमुएं दक्षिणाभिमुख थीं

शत्रु-सेनाओं के वर्त्त के आस-पास में संकर्षित होने का पता ता० ५ के सायंकाल तक में इन को लग गया। इधर प्रेशडोर्फ में इनका ५-वां कोर उपस्थित था चूंकि इसी कोर की चमुएं वर्त्त से निकटतम होने के कारण शत्रु-सेना के प्रति समीप पड़ती थीं, इसलिये उनके सँभालने का प्रबंध कर दिया गया। ११-वें कोर और वर्डर कोर को उनके बायें बाजू की ओर प्रस्थान करने की आज्ञा दे दी गई, तथा उनके पृष्ठ-भाग में बवेरियन कोर भी पहुंच गया।

५-वें कोर के दहने बाजू में दूसरा बवेरियन कोर डँटा था, इस को उस समय तक शांत रहने की आज्ञा कर दी गई थी, जब तक शत्रु-सेना ५-वें कोर पर आक्रमण न करती, कदाचित् शत्रु-सेना उस पर आक्रमण कर

देती, तो उस दशा में इसे अपने एक डिवीज़न को ५-वें कोर की सहायता में भेज देने की आज्ञा कर दी गई थी। ता० ७ अगस्त के पूर्व न तो जर्मन ही और न फ्रेञ्च ही सैनिक नायक युद्ध करने के उत्सुक और इच्छुक थे।

वर्त्त में व्यूह-बद्ध होना

फ्राशविलर से एबरबाक तक की ऊंची भूमि पर फ्रेञ्च सेनायें अधिकार किये पड़ीं थी। बायां विङ्ग पहले कुछ पीछे हटा कर ग्रासवाल्ड में ठहराया गया था, किन्तु पश्चात् वह भी न्यूवेलर तक बढ़ा लाया गया।

पहले कोर के तीन डिवीज़न फ्रंट लैन में और एक रिज़र्व में रखे गये थे। ७-वें कोर का एक डिवीज़न दहने विंग के पृष्ठ-भाग में एबरबाक में उपस्थित था, तथा ५-वें कोर का एक डिवीज़न बिट्श से चल कर रण-भूमि की ओर बढ़ा आ रहा था। मिशेल का रिसाला-ब्रिगेड दहने बाजू के पीछे खड़ा किया गया था, तथा दो दूसरे ब्रिगेड केन्द्र के पृष्ठ-भागस्थ खुले मैदान में खड़े किये गये थे। तोपखाने लैन भर में फैला कर लगाये गये थे; लैन के साम्हने दो मिट्टी के बांध (Earthworks) और ओट दार खांईं (Shelter Trench) बना कर लैन यत्किंचित् अधिक दृढ़ कर ली गई थी।

जर्मनों की गिर्दावरी

ता० ६ अगस्त के सवेरे ५-वें कोर की एड-वान्स चमू ने वर्त्त के पुल पर आक्रमण किया, उसे बढ़ती देख समस्त फ्रेञ्च तोपख़ानों से दनादन फैर होने लगे; इस बात से आक्रामकों को मालूम हो गया, कि वहां पर कोई बहुत बड़ी फ्रेञ्च सेना उपस्थित है।

तोप-ध्वनि सुन कर पूर्वोल्लेखित आज्ञा के अनुसार ४-था बवेरियन डिवीज़न लांगेनसुल्ज़बाक से होकर आगे बढ़ा, और थोड़े ही परिश्रम के पश्चात् वह फ्रेञ्च सेना के बांयें बाजू के सम्मुखवाले बन के किनारे पहुंचने में सफलीभूत हो गया। किन्तु शत्रु के मुख्य मोर्चे के फैरों से आगे बढ़ने में असमर्थ होने पर, तथा एक ज़बानी हुक्म का मतलब न समझ सकने के कारण वह दिन के प्रायः ग्यारह बजेही रण-भूमि से पीछे हट गया।

इसी बीच में ५-वां कोर अपने दहने बाजू में तोप-ध्वनि सुन कर आगे बढ़ा, और फ्रेञ्च केन्द्रस्थ सेना से युद्ध करने लगा। इस कोर की सब तोपें सम्मुख के टीलों पर से गरजना प्रारंभ कर दीं, तथा उसी लैन में कुछ दक्षिण तरफ़ हट कर ११-वें कोर के एडवान्स गार्ड की बैटरियां भी दनदनाने लगीं।

अपने संकर्षित तोपख़ानों (१०८ तोपों) के फैर के आवरण में एक ही समय में दो ओर से जर्मन सेनाओं की पैदल बटालियनें आक्रमणार्थ आगे बढ़ीं।

एडवान्स गार्डों का आक्रमण

वर्त्त के मोर्चों पर ५-वें कोर का एडवान्स-गार्ड-ब्रिगेड भेजा गया। इस ब्रिगेड के शूर योद्धागण नदी को तैर कर, किम्वा सहसा निर्म्माण किये हुए पुलों द्वारा उसको पार कर, वहां के टीलों के समीप तक पहुंच गये, किन्तु अधिक आगे बढ़ने में असमर्थ होकर वे भी वहां से पीछे हट आये, तथा वर्त्त ग्राम और आगनो की सड़क की ओर हट गये।

११-वें कोर के एडवान्स गार्ड के पैदल ज़ौर नदी को स्पाकबाक में पार करके नोदरवाल्ड की ओर बढ़े थे; किन्तु फ्रांसीसियों ने उन्हें हटा कर शीघ्र ही पुनः नदी के पार उतार दिया।

दोपहर की स्थिति

दोपहर के समय तीन कोरों की थोड़ी २ सेनायें युद्ध कर रहीं थीं, किन्तु कुछ यह विशेष सफलता होती देख नहीं पड़ती थी; अतः युवराज ने युद्ध बंद कर देने की आज्ञा भेज दी। आज्ञा पहले पहल ५-वें कोर को मिली थी, और वहां से उसकी इत्तला बवेरिया वालों को दिये जाने पर वहां के एक डिवीज़न ने रण-भूमि को उचित समय के कुछ पहले ही ख़ाली कर दिया। रण-भूमि से हटा कर नदी को दूसरे पार में अपनी सेना के ले आने में योद्धावों के उत्साह-भंग से भविष्य में अधिक अनर्थ की संभावना समझ तथा उसी समय फ्रेंच तोपख़ानो के फैरों में कुछ शिथिलता

भी आती देख जेनरल वी किर्कबाक ने संग्राम को ज़ारी रखना ही मसलहत समझा। अतएव उन्होंने अपने दोनों बाज़ुवों के कोरों को निज सेना के साथ रण-कार्य्य में सहकार्य्य (Co-operation) करने के लिये कहला कर युद्ध की तत्कालीन दशा की रिपोर्ट युवराज के पास भेज दी। युवराज ने उनकी सम्मति स्वीकार करली, और समस्त आक्रामक चमुवों को अधिकतर एकीभूत और संयुक्त होकर विशेषतर ओजस्विता के साथ रण-कार्य्य के ज़ारी करने के लिये फिर भी आदेश कर दिया।

५-वें कोर का एडवान्स

जौर नदी के पार की चमुवों की दशा अत्यंत शोचनीय होती देख उनकी सहायता के लिये पहले ५-वें कोर का पहला, पुनः दूसरा डिवीज़न भेजा गया। अपने स्कर्मिशर्स (Skirmishers) अर्थात् डिंब-युद्ध-कारियों के आवरण में इस डिवीज़न के कंपनी-कालम अत्यंत उद्दंडता के साथ टीलों की ओर बढ़े, और बहुत बड़ी हानि उठाने के पश्चात् अंत में वे सब उस प्लेटो के किनारे तक पहुंच भी गये, जहां से अब अधिक आगे बढ़ने में वे असमर्थ थे, तथापि अपूर्व धैर्य्य धारण किये ये शूर योद्धागण वहीं पर डँटे ही रहे आये। चूंकि इधर की तोपों का फैर निर्द्दिष्ट नहीं किया जा सकता था, इसलिये सात बैटरी तोपख़ाने

नदी को उतार कर वर्त्त में पुनः लाये गये। दोनों बाजुवों के कोरों के एडवान्स करने के पश्चात् फैर करने का सुभीता मिलते ही इन तोपखानों को भी अपना कार्य्य आरंभ कर देने के लिए आज्ञा कर दी गई थी।

११-वें कोर का एड-वान्स

दोपहर को ११-वें कोर के गन्स्टेट में पहुंच जाने पर इसके अगले डिवीज़न को फ्रेंच मोर्चे के दहने बाजू पर आक्रमण प्रारंभ करने की आज्ञा हुई।

इस डिवीज़न की पांच बटालियनों ने स्पाकबाक में ज़ौर नदी को पार करके फ्रेंच स्कर्मिशरों को मार कर नीदरवाल्ड की ओर भगा दिया, और वे स्वयं उसके उत्तरी छोर पर पहुंच गईं, किन्तु उनके सम्मुखस्थ एक झाड़ी में से फ्रेञ्च सेना इतनी भयानक अग्नि वृष्टि करने लगी, कि उनका अधिक आगे बढ़ना असंभव हो गया, और वे वहीं पर ठहर गईं।

सवा पांच बटालियनें ब्रशमिल से एबरबाक की ओर बढ़ीं, और फ्रेञ्च आत्म-रक्षकों को अल्ब्रे शृहौज़रहाफ़ से मार कर हटा दीं। सवा छः बटालियनें गन्स्टेट से शत्रु के तोपखाने की भयानक अग्नि-वृष्टि का कुछ भी परवाह न करतीं खुले मैदान से आगे बढ़ीं, और पहले ही धावे

में उनसे मोर्सब्रान छीन लीं। यहां की फ्रेंच सेना बहुत निर्बल थी।

एक बजे तक में ११-वें कोर की चमुएं अपने तीन असंयुक्त आक्रमणों में सफलीभूत हो गईं, और अब नीदरवाल्ड पर पूर्ण अधिकार जमाने के लिये दहने बाजू की ओर कुछ घूमने (Wheeling) की आवश्यकता थी, जिसमें वे शत्रु के मुख्य मोर्चे को ओट पलैङ्क कर जांय, अर्थात् उनके बाजुवों को दबाकर अधिक आगे निकल जांय।

प्रत्याक्रमण

बाजुवों को दबा कर आगे बढ़ने के लिये ज्योंही कुछ सेना मोर्सब्रान से उत्तर की ओर बढ़ाई गई, त्योंही मिशेल के रिसाला ब्रिगेड ने उसपर चार्ज (धावा) कर दिया। चूंकि इन रिसाले वालों ने उस तरफ़ की गिर्दावरी पहले से नहीं कर ली थी, और न उधर की भूमि ही सवारों के धावा करने के योग्य थी, अतः जर्मन पैदलों की गोलियों से स्क्वाड्रन के स्क्वाड्रन सवार भूमिशायी हो गये; जर्मन सेना अचल अपने स्थान पर डँटी ही रही आई।

इसी बीच में फ्रांसीसियों की कुछ बड़ी सी एक पैदल सेना अल्ब्रेष्टहौज़रहाफ़ में स्वाधिकार जमाये हुई जर्मन योद्धावों को मार भगाने का प्रयत्न करने लगी, किन्तु

गन्स्टेट पहाड़ो पर के तोपख़ानो के फैर से वह ऐसा कर न सकी। कुछ नई बटालियनों की सहायता पहुंच जाने पर जर्मन योद्धा पुनः आगे बढ़े, और वहां के मकानो को फ्रांसीसियों से ख़ाली करवा लिये; तत्पश्चात् मोर्सब्रान वाली अपनी चमुवों से संयुक्त होकर इन लोगों ने फ्रांसीसियों से नीदरवाल्ड के दक्षिण वाले छोर को और एबरबाक ग्राम को भी ख़ाली करवा लिया।

नीदर वाल्ड का छीना जाना

इतने में ११-वें कोर की समस्त पैदल बटालियने ज़ौर नदी को पार कर आईं, और वे इस लंबे-चौड़े वन से होकर पग २ पर लड़तीं और शत्रु को पीछे हटातीं क्रमशः आगे ही आगे बढ़तीं गईं, और अंत में उस बन के उत्तरीय छोर पर पहुंच गईं। वहां पर शत्रु के तोपख़ानो से उनका भयंकर संहार होने लगा। प्रत्याक्रमण से कुछ काल के लिये इस छोर पर फ्रांसीसियों का अधिकार एक बार फिर भी हो गया, परन्तु शीघ्र ही समस्त वन पर जर्मनो का पूर्ण अधिकार हो गया।

इतने में पैदल बटालियनो की सहायता में कोर तोपख़ाने की आठ बैटरियां भी वहां पहुंच गईं, और उनसे गोले छूटने लगे। एल्सासहौज़ेन में आग लग गई। अब समस्त पैदल सेनाओं को चतुर्मुख से बढ़ने (*General advance*) की आज्ञा कर दी गई। शीघ्र ही ११-वें

और ५-वें कोरों के पैदलों का सम्मिलन हो गया, और दोनों कोरों के बाजू क्रमशः संकुचित(Canverge) होते गये, पस उस ग्राम पर इनके गोलियों की भयानक वृष्टि होने लगी।

प्रत्याक्रमण

अब चारों ओर की रण-भूमि से समस्त फ्रेञ्च सेनायें ग्राम तौर पर पीछे हटने लगीं; इसके लिये उनको कुछ अवकाश और समय की आवश्यकता थी। जब तक इधर पृष्ठ-देश-संरक्षक (रीअर गार्ड) सेना का निर्म्माण किया जा रहा था, तब तक में १,५०० तुर्को (*Turkos*) जवानों ने सिंगल (*Single*) लैन में थकी और अव्यवस्थित हुई जर्मन पैदल सेना पर धावा कर दिया। इस अचिंतित और साहसिक धावे के रोकने में असमर्थ होकर जर्मन सेना नीदरवाल्ड की ओर भाग चली। किन्तु दोनों बाजुवों के तोपखानो के फैरों, तथा कुछ नई पैदल सेनावों के पहुंच जाने से वह प्रत्याक्रमण रोक दिया गया। अब आगे बढ़ती हुई जर्मन सेना पर कम दूरी के रेञ्ज से फैर कराने के लिये आठ बैटरी तोपखाने आगे बढ़ा लाये गये, तत्पश्चात् बान्देमेन के क्विरासियर्स (*Cuirassiers*) नामक ज़िरहबख्तर पहने हुए सवारों से भी धावा कराया गया, परंतु फ्रेञ्च जेनरलों का यह सब प्रयोग निष्फल हुआ।

फ्राश विलर का छीना जाना

शाम के तीन बजे तक में ११-वें और ५-वें कोरों की सेनायें शत्रु के दहने विंग को

दबाने और फ्रेञ्च चमुवों को उनके अंतिम मोर्चे में हटा ले आने में सफलीभूत हो गईं । इधर बवेरियन डिवीज़न के दहनी ओर बढ़ने तक में ५-वें कोर की सात बैटरियां प्लेटो पर लगा ली गईं, बाईं ओर से वर्टेमबर्ग ब्रिगेड को आते, तथा दहने बाजू में बवेरिया की नई ताजी चमुवों को पहुंचती देखकर संग्रामार्थ जर्मनो का उत्साह फिर भी उत्तेजित हो गया, और उपर्युक्त सब जर्मन सेनायें क्रमशः संकुचित होते घेरे (Ring) में फ्राशविलर की ओर शत्रु-सेनावों को दबा ले चलीं। थोड़े काल तक अत्यंत द्वंद्व संग्राम होते रहने के पश्चात् यह स्थान भी जर्मनो के हाथ में आ गया, और यहां का युद्ध समाप्त हो गया ।

पीछे हट जाना

पराजित फ्रेञ्च सेनायें अत्यंत अव्यवस्थित दशा में रिक्शाफेन और नीदरब्रान की ओर हट गईं। मोर्चे के पृष्ठ-भाग में फाकेनस्टीन नामक नाले के ऊपर डी फेली के कमाण्ड की कुछ चमुएं कुछ काल तक खड़ी होकर जर्मनो के रोकने का साहस करती रही आई थीं, किन्तु पराजित होने पर इनका भी संगठन इतना अस्त-व्यस्त हो गया था, कि उससे कुछ लाभ न हुआ; फ्रेंच सेनावों का एक बहुत बड़ा अंश बिना रुके और विश्राम लिये सावेर्न और लुनेविल की ओर भाग गया ।

चूंकि दो में से कोई भी दल यथोचित रीति से व्यूह-बद्ध नहीं हो पाया था, कि यह संग्राम प्रारंभ हो गया, इस कारण वास्तविक युद्ध में योग देने वालों की संख्या उभय पक्ष की सैनिक संख्या के साम्हने बहुत ही न्यून थी। फ्रांस की ओर से यहां पर ३२,००० पैदल, ४,८५० सवार, १०७, मैदानी और २४ मीट्रालयेज़ नामक तोपैं थीं। जर्मनों की ओर से उस दिन के संग्राम में ७१,००० पैदल, ४२८० सवार, और २३१ तोपैं वस्तुतः योग दिये थीं। तीसरे दल को इस अपूर्व विजय की निछावर में अपने ४८१ अफ़सरों और प्रायः १०,००० योद्धावों की बलि देनी पड़ी, तथा फ्रेंच सेना के अनुमानन ८,००० योद्धा हताहत हुए।

समालोचनायें

वर्त्त का मोर्चा यद्यपि दृढ़ तो था, किन्तु उसमें दोष भी अनेक थे। यहां के टीलों से, जो घाटी से एकाएक खड़े निकले हुए थे, और बहुधा अंगूरी बाग़ों तथा अपर अनेक बाग़ैचों से ढके हुए भी थे, सम्मुख की पहाड़ियों की खुली भुजावों तथा घाटी की अधःस्थित चरागाहों पर तोपों के फैर का प्रभाव पड़ता था। खुले मैदान से शत्रु सेना की ओर बढ़ने में यद्यपि जर्मनों को बहुत बड़ी हानि तो उठानी पड़ गई थी, परन्तु वैसा होने ही से उन लोगों को अपने तोप-खानो के संकर्षित करने और उनको लगा लेने से प्रारंभिक

लाभ प्राप्त करने का सुअवर मिल गया था। पूर्वीय भुजाओं की खड़ी उंचाई भी आक्रामकों के हक्क में लाभदायक सिद्ध हुई, क्योंकि इनसे उन्हें आवरण (Cover) प्राप्त हो गया; शत्रु के गोले और गोलियां बहुधा उनके मस्तक के ऊपर से निकल जातीं थीं। बायें बाजू के बड़े बन से आक्रामकों को गुप्त रीति से आगे बढ़ने का सुभीता हो गया, पुनः मार्सब्रान के समीप की अधःस्थित भूमि से उनको अपनी समावेष्टक चाल (*Enveloping Movement*) चलने में सुगमता हो गई।

नीदरवाल्ड भी निर्बलता का एक कारण बन गया, क्योंकि इसकी भीतरी मोर्चेबंदी में असावधानी की गई थी; पुनः, जब वहां पर एक बार जर्मनों का अधिकार हो गया, तब तो वहीं के मोर्चों के भीतर उनको अपने ११-वें कोर की चमुवों को निर्बाध एकत्रित करने, तथा समुचित शक्ति की सेना उपस्थित हो जाने पर, उत्तर बगल से निकल कर स्वयं फ्रेंचों ही पर आक्रमण करने में वह सहायक बन गया। आत्म-रक्षा (Defence) का मुख्य मोर्चा प्लेटो पर बना था, लेकिन मालूम होता है, कि वास्तविक संग्राम इस मोर्चे के सम्मुख वाले मैदान में हुआ था, और प्लेटो के समीप तक पहुंचते २ में फ्रांसीसी योद्धाओं का समरोत्साह भंग हो गया था। रण-भूमि की बनावट भी ऐसी थी, कि जब तक आक्रा-

मकों के तोपख़ाने चल रहे थे, तब तक कुछ अधिक समारोह के साथ प्रत्याक्रमण करना भी असंभव था।

इस युद्ध में जर्मनो के तीन सैनिक कोरों से काम लिया गया था, किन्तु इनमें पारस्परिक सहयोगिता रहे आन का कुछ भी प्रबंध नहीं किया गया था, और इनकी संख्या-शक्ति भी ऐसी नहीं थी, जिसमें उपयुक्त फल-प्राप्ति की आशा होती। उपर्युक्त चमुवों का संकट देखकर तीसरे दल को पहले से बिना कुछ तय्यारी किये ही युद्ध में योग देना पड़ गया था। जर्मन जेनरलों ने इस समर में जो निज स्वावलंबन-(Self-reliance) प्रकृति कुछ अधिक प्रकट कर दिखलाई थी, उसका भी यहां एक अच्छा उदाहरण मिलता है। वर्टेमबर्ग के जेनरल को रेक़शाफेन जाने की आज्ञा हुई थी, और वह सैन्य वहां जाने के लिये तय्यार भी था, कि इतने में एल्सास-हौज़ेन में अपने ११-वें कोर के अत्यंत संकट में पड़ जाने का उसको पता मिला, पस उपर्युक्त आज्ञोल्लंघन की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर इस जेनरल ने उस कोर की सहायता में पहुंच कर उसको शत्रु के चंगुल से छुड़ा लिया; इस अवसर पर उसका वहां पहुंच जाना बहुत ही उपकारक हो गया। हताहत योद्धावों की संख्या पर विचार करने से प्रकट होता है, कि संग्राम का मुख्य आघात ५-वें और ११-वें कोरों के भाग में पड़ा था। इन दो में से ५-वें को तो प्रारंभ ही से कठिन युद्धाघात

सहना पड़ गया था, इसके लिये उसको अपनी अंतिम रिज़र्व सेना तक को युद्ध में योग देने के लिये तलब कर लेना पड़ा था। ११-वें कोर की चमुवों ने अपने को तीन असंयुक्त समुदायों (Groups) में विभक्त करके रण-कार्य्य किया था, किन्तु यह बड़े आश्चर्य्य की बात है, कि इसके लिये इस कोर को समुचित दंड नहीं प्राप्त हुआ। इस संग्राम में प्रतिपक्षी फ्रेंच सेना के योद्धावों के पास ब्रीच लोडिंग बंदूकें थीं, अतएव इस युद्ध में जर्मन पैदल चमुवों की जिन सेनावों ने योग दिया था, उनका व्यूह-विधान भी द्रष्टव्य है। प्रशियन रण-नियम के अनुसार युद्ध की पहली लैन में कम्पनी कालम और उनके स्कर्मिशर्स होने चाहिये थे; पुनः उनके सपोर्ट्स (Supports) अर्थात् सँभालने वाले योद्धागण बटालियन या अर्द्ध-बटालियन कालमों में संगठित रहने चाहिये थे। १८६६ के युद्ध के अनुभवानुसार कमाण्डरों को इस नियम के विरुद्ध समयोचित कार्य्य करने की भी अनुज्ञा थी। अब इस संग्राम के अवसर पर ५-वें कोर ने अपने आक्रमण में कम्पनी कालम से अधिक बड़ी सेनावों के समावेश का कुछ भी प्रयत्न नहीं किया था, तथा इस कोर की फ्रंट लैन की कम्पनियां तो बिल्कुल स्कर्मिशरों में विप्रयुक्त (Detached) हो गई थीं। इसके विरुद्ध ११-वें कोर की चमुएं कम्पनी और अर्द्ध-बटालियन कालमों का संकुचित संविधान (Closed Formation) किये

मार्सब्रान के पूर्व तरफ़ वाले खुले मैदान को पार कर जाने में समर्थवती हो गईं, यद्यपि उधर जाने में शत्रु के तोपख़ानों के फैर से इनका पूर्ण साम्हना पड़ता था।

रण-भूमि में इधर-उधर वितस्ति फ्रेञ्च बैटरियों के मुख बंद करने में एक स्थान में संकर्षित करके लगाये हुए जर्मन तोपख़ानो को बहुत कम परिश्रम करना पड़ा था। किन्तु तोपख़ानो को बढ़ा कर शत्रु सेना के समीप में लाना प्रायः उस समय प्रारंभ किया गया था, जब कि वह सेना प्रायः पराजित होकर भग चली थी। 'अपने सैनिकों के मस्तक के ऊपर से तोपों का फैर करते प्रायः असंभव एडवान्स को भी सुगम कर लेना संभव है', इसका भी इस संग्राम में एक बहुत अच्छा उदाहरण मिलता है।

अखंडित (Unbroken) पैदल सेना पर रिसाले का धावा फिर भी निरर्थक सिद्ध हुआ, तथा रण-भूमि से बहुतांश जर्मन रिसाले की अनुपस्थिति प्रकट करती है, कि इस समय तक जर्मन रिसाले वालों ने उस शिक्षा को, जिसको आगे चल कर इन लोगों ने ऐसी उत्तम रीति से प्रकट कर दिखाया था, नहीं ग्रहण कर पाया था।

बेचारे मार्शल मैकमाआं की दशा भी सहानुभति के योग्य थी, क्योंकि उनको हाल ही में एक ऐसी सेना का कमाण्ड दिया गया था, जो सीमा-प्रदेश में विट्श से ले

कर स्ट्रासबुर्ग तक विथरी हुई थी, तथा जिस के समीप ही उससे तीन गुनी बड़ी शत्रु-सेना उपस्थित थी । तथापि वर्त्त में उनका अपनी सेना को खड़ी कर रखना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता था, क्योंकि यह स्थान उनके मूल-स्थान से बहुत दूर, तथा शत्रु-सेना के समीप था; आक्रामक अथवा आत्म-संरक्षक बनने के उपयुक्त वहां पर सेना-संकर्षण करने का अब समय नहीं रह गया था । किसी निर्बल सेना का एक ऐसे स्थान पर संग्राम देना, जहां से हट आना कठिन पड़ता हो, सर्वदा अनिष्ट-कारक होता है ; और पुनः, योज़ की घाटियों की रक्षा के लिये उनका उस समय उद्योग करना, जब कि उनपर पहले और दूसरे जर्मन दलों का प्रायः अधिकार हो चुका था, ठीक नहीं मालूम होता है। यदि राजनैतिक कारणों से योज़ पर्वत के पूर्व में युद्ध प्रदान करने की आवश्यकता ही समझी गई थी, तो स्ट्रासबुर्ग को अपना मूल-स्थान (Base) रखना उचित था, क्योंकि पहले तो पर्वत-माला को पार करने वाली शत्रु-सेना के बाजू पर आक्रामकीय आघात पहुंचाने का वहां से सुअसवर प्राप्त हो सकता था, दूसरे वह स्थान आत्म-रक्षा लिये भी उपयुक्त था, तीसरे वहां से निर्बाध पीछे हट आने में भी सुगमता हो सकती थी। बहुतों की यह सम्मति है, कि आगनो बन के दक्षिण,

माडेर नदी के संवरण में भी इनका युद्ध-प्रदान करना उपयुक्त हुआ होता, क्योंकि इसमें स्ट्रासबुर्ग-नैन्सी वाली रेलवे लैन समावृत्त रही आती, तथा इधर की फ्रेंच सेना अपनी राइन प्रांत वाली सेना से अलग नहीं पड़ सकती।

फ्रेञ्च सेना के दोनों विङ्गों के सदरों से पारस्परिक प्रतिकूल आज्ञावों के निकलने के कारण जो जेनरल डी फेली (De Failly) वाला कोर रण-भूमि में नहीं पहुंच सका था, उस पर भिन्न २ आलोचनायें हुई हैं। यद्यपि पराजित चमुएं बहुत तितर-बितर हो गईं थीं, तथापि उनका इतना दूर पीछे भाग जाना अथवा घुमावदार मार्ग से पीछे हटना अनावश्यक सूचित होता है। मोज़ेल नदी के बांये किनारे से चल कर मेज़ के आस-पास में पहुंचने, अथवा दक्षिण तरफ़ बेलफोर्ट की ओर हट जाने का उनका उद्योग करना अधिक अच्छा हुआ होता। पहली दशा में दोनों ओर की फ्रेञ्च सेनायें संयुक्त हो गई होतीं, और दूसरी चाल से दक्षिण में नियत (Regular) चमुवों की एक भयंकर फ्रेञ्च सेना के उपस्थित रहे आने से जर्मनो को अपना एक डिवीज़न उधर कर देना पड़ता, इससे, कम से कम कुछ काल के लिये, उनका एडवान्स रुक अवश्यमेव गया होता।

अपनी सैनिक संख्या के आधिक्य से केवल फ्रंट से ही आक्रमण करने में जर्मन समर्थवान नहीं हुए,

किन्तु बाजुवों की ओर अपनी सेनावों को बढ़ा कर उन लोगों ने शत्रु-सेना के घेर लेने के भी प्रयत्न किये थे। ५-वें कोर का उचित समय के पहले ही आक्रमण कर देना इस कारण से समुचित समझा गया है, कि शत्रु के बाजुवों के दबा लिये जाने तक उनको अपने मुख्य मोर्चे में ही रोक रखने का विचार किया गया था। अधिक आधुनिक समाचारों से प्रकट हुआ है, कि फ्रेञ्च सेना अपने मुख्य मोर्चे से हटने के लिये तय्यार नहीं थी, अतएव विजय के लिये ५ वें कोर को इतनी बड़ी हानि उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ी होती, यदि वह कोर उस समय तक आगे नहीं बढ़ गया होता, जब तक ११-वें और बवेरियन कोरों की सेनायें शत्रु-सेना को घेरने के अर्थ अपनी आवर्त्तक चाल (Enveloping Movement) प्रारंभ नहीं किये थीं।

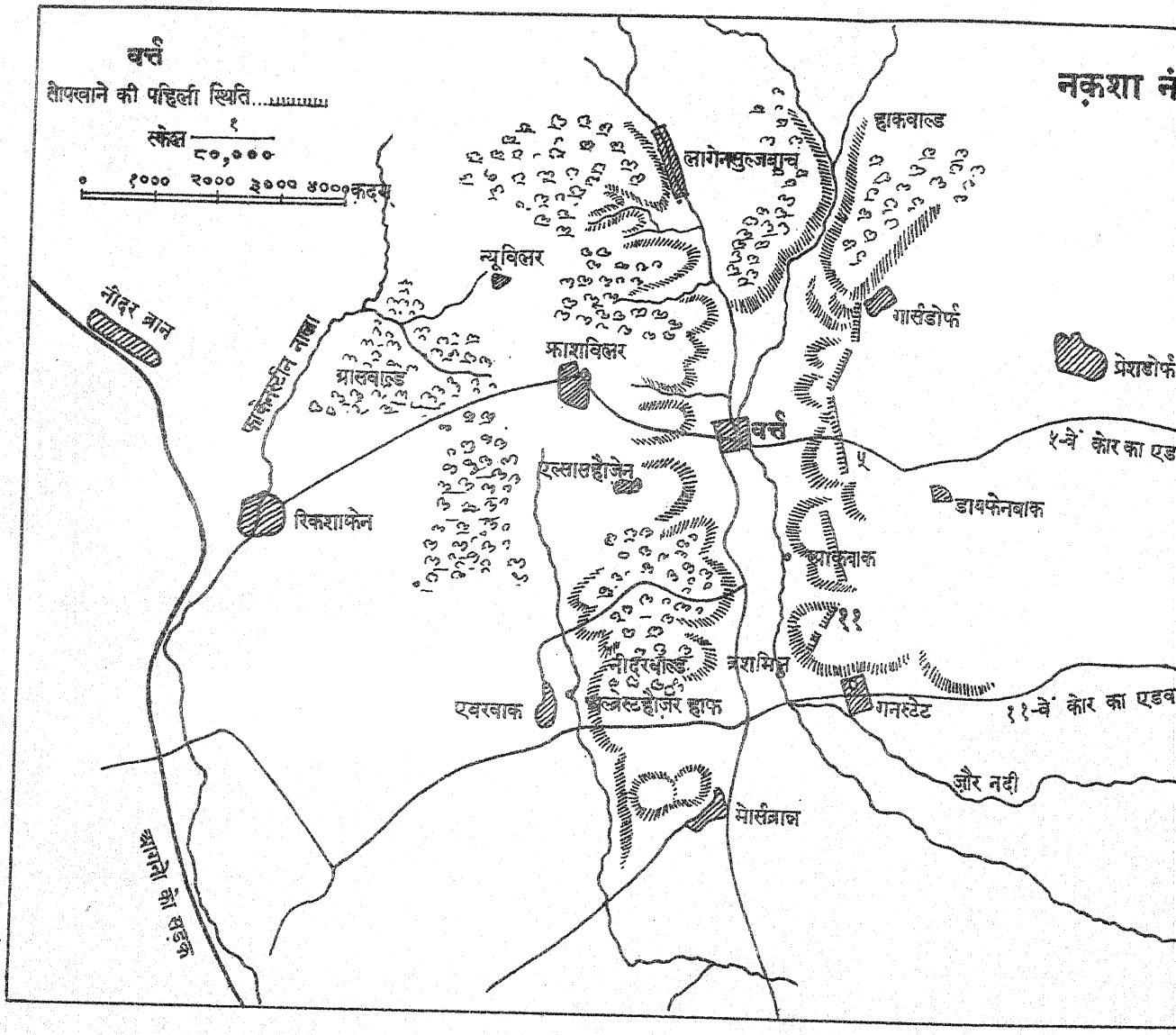

वर्त्त
तोपखाने की पहिली स्थिति
स्केल १/८०,०००
० १००० २००० ३००० ४००० कदम
नक़शा नं
हाकवाल्ड
लागेनसुल्जबाच
न्यूविलर
गार्सडोर्फ
प्रेशडोर्फ
नीदर ब्रान
फाकेनस्टीन नाला
ग्रासवाल्ड
फ्राशविलर
वर्त्त
५-वें कोर का एड
एल्सासहौजेन
डायफेनबाक
रिकशाफेन
आकबाक
११
नीदरवाल्ड
त्रशमिल
एबरबाक
गनस्टेट
११-वें कोर का एडव
ज़ौर नदी
मोर्सब्रान्न
आगनो को सड़क

अध्याय ५

स्पायकर्न

फ्रेञ्च सैनिक स्थितियां—जर्मन दलों का एडवान्स—स्पायकर्न के मोर्चे—२७-वें ब्रिगेड का आक्रमण—ढाई बजे दिन की व्यवस्था—ढाई से साढ़े तीन बजे शाम तक का संग्राम—साढ़े तीन से पांच बजे शाम तक का संग्राम—बांये का आक्रमण, पांच से सात बजे शाम तक—दहने का आक्रमण, पांच से साढ़े सात बजे शाम तक—पीछे हटना—समालोचनायें—समरारंभ पर समालोचनायें।

अध्याय ५

स्पायकर्न

फ्रेंच सैनिक स्थितियां

सीमा प्रांत के आस-पास में पहले और दूसरे जर्मन दलों के पहुंचने का समाचार फ्रेंच सैनिक सदर में अगस्त मास के प्रारंभ में पहुंचा था। स्ट्रासबुर्ग के पास कृष्ण वन में जो रण-व्यूह प्रकट किया गया था, उस पर यहां वालों ने बहुत ध्यान दिया था। विसेन-बुर्ग के संग्राम का परिणाम विदित हो जाने पर महा-राज नैपोलियन की इच्छा स्ट्रासबुर्ग में एक प्रबल गैरिज़न (दुर्ग-संरक्षक सेना) रख कर अपनी शेष सेनाओं को वोज़-पर्वत के पृष्ठ-भाग में संकर्षित करने की हुई थी, किन्तु मार्शल मैक माआं को अब तक किसी अनिष्ट-परिणाम की आशंका नहीं हुई थी, अतएव उन्हीं के विचारा-नुसार समस्त सेना दो विभागों में करके उनमें से एक का कमाण्ड स्वयं मैक माआं को और दूसरे का बाजेन को दिया गया, गार्ड्स और रिज़र्व सेनायें महाराज ही के कमाण्ड में पूर्ववत् रही आईं। ज़ार्गेम्यन्ड में ५-वें कोर की जगह ३-रे कोर का एक डिवीज़न भेजा जाने वाला था, और ५-वें कोर को ब्रिट्श में चले आने की आज्ञा थी। जेनरल फ्रारसर्ड की चमुएं ज़ारब्रकेन के

समीप पड़ीं थीं, और फ्रेञ्च दल के पश्चिमीय कोरों की शेष चमुएं सेण्ट एव्रोल्ड के समीप उपस्थित थीं। नदी के दूसरे तट पर यदि शत्रु का कोई रण-व्याज होता, तो उस को रोकने के लिये ७-वें कोर की कुछ चमुएं स्ट्रासबुर्ग के समीप ठहरा ली गईं थीं। रण-कार्य्य की इस प्रारंभिक दशा में भी फ्रेञ्च सेनावों का संचालन शत्रु-दल के संचालनो के अनुसार ही होता था। सदर से आज्ञायें बिना किसी उद्देश्य के और एक दूसरे के विरुद्ध प्रकाशित होती रहती थीं, और इसी कारण फ्रेञ्च-सेना की वितरण-प्रणाली में पूर्वापेक्षा इस समय भी कुछ विशेष अंतर नहीं पड़ा था।

जर्मन दलों का एड-वान्स

इधर अब पहले और दूसरे जर्मन दल सीमा-प्रांत की ओर आगे बढ़ चले। हार्ट की संकीर्ण घाटी से होकर दूसरा दल क्रमशः आगे ही आगे बढ़ता गया, तथा तीसरे कोर को फ्रंट लैन में किये इस समय वह कैसरस्लाटर्न बन के सामुख संगठित हो रहा था। पहला दल सब एकत्रित हो चुका था, अतएव उसको न्यूकिर्केन-सेण्ट वेण्डेल घाली सड़क से शत्रु सेनावों को भगा कर उस सड़क को साफ़ करने की आज्ञा कीगई, और इसी उद्देश्य से वह दल अब फ्रंट की ओर कुछ झुंक आया। तीसरा दल जब तक योज़ पर्वत-माला की घाटियों और सड़कों पर अधिकार न कर लेता, तब तक जर्मन सदर की इच्छा अपने अपर दो दलों को

सीमा-प्रांत लंघाने की नहीं थी; किन्तु निज रिसाले वालों से इस समाचार के मिलने पर, कि शत्रु-सेनायें पीछे हट रहीं हैं, उपर्युक्त दोनों दलों के एडवान्स गार्डों को ज़ारब्रकेन पुल की ओर शीघ्रता पूर्वक बढ़ा दिये जाने की तजवीज़ की गई। किन्तु जेनरल स्टीनमेन अति उद्दण्ड प्रकृति के थे, आप दूसरे दल के मार्च की लैन लँघया कर अपनी चमुएं आगे निकाल ले गये। आपकी अगली चमुवों का ज़ारब्रकेन की परेड-भूमि में पहुंचना था, कि स्पायकर्न के तोपों से अग्नि-वृष्टि का श्रीगणेश हो गया। इस स्पायकर्न के सिपहियाई संग्राम (Soldiers' Battle) में किसी ओर से सेनावों की न्यूनता नहीं रही थी; किन्तु जर्मन दोनों दलों की छोटी २ अनियां (Detachments) एक दूसरे के बाद अनिर्द्धारित मार्गों से भिन्न २ समय पर रण-भूमि में पहुंची थीं।

स्पायकर्न के मोर्चे

ता० ५ अगस्त के सायंकाल में जेनरल फ्रास्सर्ड ज़ारब्रकेन से हट कर स्पायकर्न के सुदृढ़ और मोर्चे-बद्ध टीलों की ओर चले आये थे। केन्द्र में रादरबर्ग का उत्तंग शृंग निकला हुआ था, तथा दोनों ओर की इसकी खंड़ी भुजायें सघन बनों से आच्छादित थीं। बांई ओर की घाटी, जिससे होकर मुख्य सड़क और रेलवे लैन फार्बाक को गई थी, स्टियरिंग-वेन्डेल के अत्यंत

दृढ़ मकानों और वहां के लोहे के कारखानों से बंद थी, और ये सब बातें आत्म-संरक्षा के लिये बहुत ही उपयुक्त हो सकती थीं।

१४-वें डिवीज़न के एडवान्स गार्डों के अगले भाग की परेड-भूमि में पहुंचते ही फ्रेञ्च तोपख़ानो से गोलों की भयानक वृष्टि प्रारंभ हो गई, अतः इस डिवीज़न की बैटरियों ने भी उनका उत्तर देना प्रारंभ कर दिया। रादरबर्ग के शृंग और उसके आगे की ऊंची भूमि पर थोड़ी ही सी पैदल सेना और तोपें देख पड़तीं थीं, तथा कुछ थोड़ी सी सेना फार्बाक घाटी में भी दिखलाई पड़ी थी। यहां पर प्रशियन स्कौट्स (Scouts) *अर्थात् जासूसी सेना अधिक से अधिक अनुमानन ७,००० जवानों और आठ तोपों की पहुंची थी; तथा वहां पर किसी प्रबल फ्रेञ्च सैनिक कोर और पंद्रह बैटरी तोपख़ानों के होने के कोई चिह्न नहीं देख पड़ते थे। मुख्य फ्रेंच सेना को पीछे हट गई समझ कर, तथा जो थोड़ी सी सेना उपर्युक्त टीलों और घाटी में देख पड़ी थी, उसको रिटायर होती मुख्य सेना का केवल रीअर गार्ड मान कर जेनरल वान

* शत्रु-सेना की स्थिति, संख्या इत्यादि का पता लगाने वाली सेना स्कौट्स या जासूसी सेना कही जाती है।

कामेक ने उस पर आक्रमण करने का विचार किया, अतः ज़ारब्रकेन के दक्षिण का ऊंची भूमि पर अपनी चार बैटरियों को लगवा कर उनसे रादरबर्ग के टीले पर उन्होंने गोले बरसवाना प्रारंभ कर दिया।

२७-वें ब्रिगेड का आक्रमण

प्रायः दोपहर को बान फ्रांशाय का २७-वां ब्रिगेड पर्वत-शृंग की दोनों भुजाओं की ओर खुले मैदान से होता आगे बढ़ा। प्रत्येक भुजा के आक्रमण में दो बटालियनें लगाई गईं, और दो बटालियनें रिज़र्व में रख ली गईं।

बांये बाजू पर आक्रमण करने वाली सेना बहुत चक्कर देकर आई, इसी से वह रादरबर्ग पर से फैर किये गये गोलों से कुछ सुरक्षित रह सकी, और क्रमशः उस टीले के मूल-भाग में पहुंच भी गई। गिफर्ट और स्टिफ्ट नामक टीलों की ऊंची भुजाओं पर अत्यंत परिश्रम पूर्वक चढ़ कर इस सेना की अगली कम्पनियां टीलों के दक्षिणी किनारे पर पहुंच गईं। शत्रु के पैदलों और तोपों की घोर अग्नि-वृष्टि के कारण वहां से इनका अधिक आगे बढ़ना असंभव हो गया; और कुछ काल के पश्चात् जो शत्रु द्वारा दूसरा आक्रमण इन पर हुआ, उससे फ्यूज़िलियर्स (Fusiliers) नामक पैदल सेना को लाचार होकर जंगल के भीतरी भागस्थ शिखर पर हट भी आना पड़ा, तथा

वहां पर भी उपस्थित रहने में उसको अत्यंत कठिनता पड़ी।

दहने बाजू पर आक्रमण करने के लिये जो बटालियने नियुक्त की गईं थीं, उनको शीघ्र ही स्टियरिंग की झाड़ियों को स्वाधिकार में लाने के लिये एक बहुत ही भयंकर संग्राम में प्रवृत्त हो जाना पड़ा। स्टियरिंग और रुपायकर्न के टीलों पर की तोपों के गोलों की झोट में शत्रु के भयंकर और उदंड प्रत्याक्रमणों से उनको वहां की सैनिक शक्ति की गुरुता का परिचय मिलता था।

उधर तो किसी न किसी तरह से दहने और बांये बाजूओं पर आक्रमण करने वाली जर्मन बटालियने अपने २ स्थानों पर डँटी अत्यंत शूरता के साथ अपना २ कार्य्य संपादन कर रहीं थीं, कि इतने में प्रायः एक बजे के क़रीब जेनरल वान कामेक ने अपनी दो रिज़र्व बटालियनो को भी सदरबर्ग पर सम्मुख से धावा कर देने का हुकम दे दिया। इस आक्रमण को सँभालने के लिये तीन बैटरी तोपखाने बढ़ा कर गालेनबर्ग में लगा लिये गये, और उनसे शिखरस्थ शत्रु-सेना के ऊपर गोले बरसवाये जाने लगे। ज्योंही यह ब्रिगेड कम्पनी-कालमों में श्रेढ़ी-बद्ध हुआ रेपर्ट्सबर्ग की दक्षिणी भुजा से उतर कर नीचे आया, कि उनके ऊपर मघा के बूंदो के सदृश गोलियों की अत्यंत घोर

वृष्टि प्रारंभ हो गई। स्टियरिंग की झाड़ियों में घाली जर्मन बटालियनो ने भी इसी समय सहायता मांग पठाई, अतः इनमें से तीन कम्पनियां तो उधर भेज दी गईं, पर शेष पांच कम्पनियां क्रमशः आगे ही आगे बढ़तीं गईं। यद्यपि शत्रु के गोलों और गोलियों के आघात से इनमें के शूर-वीर योद्धा हताहत हो २ कर गिरते जाते थे, जिससे उनकी संख्या न्यून ही न्यून पड़ती जाती थी, तथापि युद्ध के उमंग में इसका कुछ भी परवाह न करतीं ये पांचों कम्पनियां अंत में राइरबर्ग के मूल-भाग में पहुंच कर कुछ सुरक्षित हो गईं। आठ सौ पैदलों और छः तोपों के फैर के सम्मुख इन थोड़े से जर्मन जवानों का एक मील तक खुले मैदान से हो कर आगे बढ़ना कुछ कम आश्चर्य्य-पूर्ण शौर्य्य की बात नहीं है; इससे एक तो प्रशियन तोपखाने की कार्य्य-पटुता और दूसरे फ्रेञ्च योद्धाओं की बंदूक-विद्या में सामान्यता तथा अकर्मण्यता का पूरा पूरा परिचय मिलता है।

ढाई बजे दिन की व्यवस्था

ढाई बजे दिन को संग्राम की प्रायः अधो-लिखित व्यवस्था थी :—

दहनी ओर नौ प्रशियन कम्पनियां १,४०० गज़ के फ्रंट में स्टियरिंग की झाड़ियों और उसके आस-पास में डेटी

थीं, इनके लिये रिज़र्व में कुछ भी पैदल सेना शेष नहीं रह गई थी, तथा इनके मुक़ाबिले में, संख्या में इनकी दूनी सेना इन पर गोलियां और गोले बरसा रही थी। बांये बाजू में रादरबर्ग और गिफर्टवन के आक्रमण में ३,००० जवान बिना किसी सपोर्ट (Supports) अर्थात् सहायक सेना के नियुक्त किये गये थे, और उनके मुक़ाबिले में संख्या में इन की तीन गुनी सेना उपस्थित थी।

सारांश यह कि इस समय समस्त २७-वां ब्रिगेड रिज़र्व और सपोर्ट से रहित संग्राम-कार्य्य में प्रवृत्त हो गया था, तथा फ्रांसीसियों की एक बहुत ही बड़ी सेना उस का मुक़ाबिला कर रही थी। यदि यह फ्रेंच सेना कुछ साहस और ओजस्विता के साथ प्रत्याक्रमण कर दिये होती, तो इस में संदेह नहीं है, कि इस ब्रिगेड की अत्यंत दुर्दशा हो गई होती, परन्तु जेनरल फ्रास्सर्ड ने यह सुन कर कि तीन फ्रेञ्च डिवीज़न उनके पास सहायतार्थ और भी आ रहे हैं, तब तक आत्म-संरक्षक ही बने रहना उचित समझा।

इधर इसी बीच में स्टियरिंग में वाली अपनी सेना को संभालने के लिये २८-वां प्रशियन ब्रिगेड अत्यंत शीघ्रता के साथ रण-भूमि की ओर दौड़ा आ रहा था, तथा ८-वें और ३-रे कोरों के वान गार्ड्स (आगे वाले) भी ज़ारब्रकेन के समीप पहुंच रहे थे। १३-वां डिवीज़न, जो

ज़ार नदी को वाकिंजेन में पार कर चुका था, ज़ारब्रकेन बन के मध्य से फ़ार्बाक की ओर बढ़ रहा था; अर्थात् कुल ३५,००० जवानों और ६६ तोपों की एक सेना शीघ्रता के साथ रण-भूमि की ओर अत्यंत द्रुत गति से मार्च करती आ रही थी।

ढाई से साढ़े तीन बजे तक का संग्राम

ढाई बजे के थोड़ी ही देर बाद गिफर्ट बन में वाली दोनों बटालियनों पर एक प्रबल स्थानीय आक्रमण किया गया, इससे इनमें की एक बटालियन को टीले से उतर कर और घाटी को लांघ कर विण्टरबर्ग को लौट जाना पड़ा। दूसरी बटालियन की कम्पनियां अब अत्यंत संकट में पड़ गईं थीं, कि इतने में राडरबर्ग के मूल भाग में पहुंची हुई कम्पनियों ने सहसा उस टीले के शिखर पर धावा करके फ्रेञ्च सेना को संत्रस्त कर दिया, इससे उपर्युक्त बटालियन को किञ्चित् विराम मिल गया। सम्मुख से आक्रमण किये जाने की कुछ आशंका न होने से फ्रेञ्च शस्सार्स (Chasseurs) नामधारी पैदल अपने शिखर पर वाली खांइयों (Trenches) में हट गये थे, और पहाड़ी की अति उत्तंग भुजा पर कोई चौकी-पहरा नहीं रख छोड़े थे। परंतु इन फ्रेञ्च सैनिकों की संत्रस्तता शीघ्र ही जाती रही, और तुरंत ही चैतन्य होकर इन लोगों ने भी बढ़ते हुए जर्मन योद्धाओं पर एक प्रबल प्रत्याक्रमण करके उनका

अधिक आगे बढ़ना असंभव कर दिया; तथापि अपने पहुंचे हुए स्थान से जर्मन योद्धागण पीछे भी न हटे, वहीं अपने मृत नायक वान फ्रैन्शाई के शव के पास उपस्थित रह कर वे पांचो प्रशियन कम्पनियां उन्हीं खाइयों के पास, जिन पर उन लोगों ने इतने परिश्रम और अपूर्व वीरता प्रकाशित करने के पश्चात् अधिकार कर पाया था, डँटी रही आईं ।

दूसरे बाजू में २८-वें ब्रिगेड के पहुंच जाने से स्टियरिंग की झाड़ियों और ज़ारब्रकेन बन के दक्षिणी छोर पर जर्मनों का पूर्ण अधिकार हो गया ।

इस समय १४-वां डिवीज़न साढ़े तीन मील के फ्रंट में फैला हुआ था, इसका बांया विंग तो हटा दिया गया था, और दहना विंग भी शत्रु की एक बड़ी सेना द्वारा बहुत ही दबाया जा रहा था।

साढ़े तीन बजे तक का संग्राम

३-रे और ८-वें कोरों के तोपखानों के ज़ारब्रकेन में पहुंच जाने पर जर्मन योद्धाओं के हृदय में एक नवीन रणोमंग उत्पन्न हो गया, इस से संग्राम की दशा पलट गई। ५-वें डिवीज़न की बटालियनें रेल द्वारा आधे २ घंटे पर रण-भूमि में पहुंचने लगीं; उनसे संग्राम की क्षति पूरी होती रही। गिफर्ट बन के पूर्वी बाजू को पहले एक रेज़िमेण्ट ने दबा लेने का उद्योग किया, तथा रादरबर्ग और दहने बाजू में वाले

वन पर स्वाधिकार करने के लिये खुले मार्ग से बटालियन पर बटालियन भेजी गईं। अपने उन १,८०० जवानों की सहायता में, जो स्पायकर्न के टीलों पर पहुंचने में कामयाब हो चुके थे, ८,००० जवान बढ़ा दिये गये, और अत्यंत विकट संग्राम के पश्चात् अंत में वे भी राइरबर्ग के किनारे और गिफर्ट वन के पश्चिमोत्तरीय कोन में पहुंच गये। वन के केन्द्र में वाले चट्टान पर अब एक प्रबल जर्मन सेना स्वाधिकार कर ली, किन्तु वहां से अधिक आगे बढ़ने का उसका सब उद्योग निष्फल होता रहा।

इस बीच स्टियरिंग वन के छोर पर जर्मनों का अधिकार बारंबार होता और जाता रहा, और अब पांच बजे सायंकाल को ६,००० जर्मन योद्धा खूब फैल कर खड़े तो थे, परन्तु इतने काल तक अग्नि-वृष्टि करते रहने से वे अत्यंत शिथिल पड़ गये थे, अतएव स्टियरिंग-बेन्डेल के सुदृढ़ फ्रेञ्च मोर्चे को केवल घेरे ही हुए थे।

नई सेनाओं के पहुंच जाने, तथा गाल्गेनबर्ग पर एकत्रित करके लगाये हुए तोपखानों के फैरों के आवरण में, राइरबर्ग पर पश्चिम से आक्रमण करने की आदि युक्ति के अनुसार पुनः रण-कार्य्य प्रारंभ किया गया, जिससे टीलों के निम्न भागस्थ घाटी में उपस्थित चुंगी घर (Custom House) और गोल्डेनब्रेम को जर्मनों ने शत्रु से छीन लिया।

अब जेनरल फ्रास्सर्ड ने निज स्टियरिंग-वेन्डेल की चमुओं के सहायतार्थ अपने दहने बाजू से एक पैदल ब्रिगेड हटा कर भेज दिया, इसके पहुंचने पर वहां की फ्रेञ्च सेना संख्या में गिफर्ट वन में वाली आक्रमणकारी सेना के प्रायः तुल्य हो गई । पश्चिमीय पार्श्व में प्रशियन सेना फ्रेञ्च सेना की आधी थी, बहुत सी फ्रेंच बटालियनों को युद्ध में योग तक देने का अवसर नहीं मिल सका था।

बांयें का आक्रमण, पाँच से सात बजे तक

गिफर्ट वन के संग्राम में जब जिस पक्ष में कुछ नई सेना आ जाती थी, तब उसका फ्रंट कुछ आगे बढ़ जाता दिखाई देता था, पुनः दूसरे पक्ष में ताज़ी सहायता के पहुंच जाने पर पहली सेना को पीछे हटना पड़ जाता था । कुछ काल तक यही व्यवस्था रही आई, परन्तु अंत में प्रशियन सेनाओं की संमिश्रित कम्पनियों ने वन के दक्षिणी किनारे पर अपना अधिकार कर लिया, परंतु इसके दक्षिण-पश्चिम कोन मात्र पर फ्रांस वालों का अधिकार तब भी शेष रह गया था । रादरबर्ग वाली जर्मन सेनायें अधिक आगे बढ़ने में असमर्थ थीं, किन्तु गोल्डेनब्रेम से ग्रेनाडियरों की एक सेना उधर भेज दी गई, और वह उनके फ्रंट के बीच से बढ़ कर शत्रु पर चार्ज करदी, इससे उपर्युक्त जर्मन सेनाओं की स्थिति कुछ अधिक सुरक्षित हो गई, और

गिफर्ट बन के कोने में वाली फ्रेञ्च सेना भी वहां से हटा दी गई। अब प्रशियनो का अधिकार प्लेटो के उत्तरीय शृंग तथा केन्द्र की बाहरी खांइयों पर हो गया, किन्तु तब भी उनके फ्रंट में स्पायकर्न की पहाड़ी पर वाले अधिकतर सुदृढ़ मोर्चों पर फ्रेञ्च सेनायें ही स्वाधिकार किये डँटी थीं।

छः बजे के बाद एक रिसाले की रेजिमेण्ट रादरबर्ग के शिखर पर चढ़ने के लिये उद्योग की, किन्तु उसमें वह कामयाब न हो सकी, परन्तु उसके साथ के तोपखाने वालों का उद्योग सफल हो गया। पहले पहल वे केवल एक तोप घसीट कर वहां पर चढ़ा ले गये, और क्रमशः इन वीरों ने अपने दो बैटरी तोपखाने वहां पर चढ़ा कर लगा लिये।

इस बीच अपर प्रशियन तोपखाने फाल्स्टर टीलों की ओर बढ़ाकर लाये जा रहे थे, तथा बाहरी खंदकों के ऊपर से स्पायकर्न-फार्बाक टीलों पर की फ्रेंच लैन के केन्द्र पर सात बटालियनों से एक भयानक आक्रमण कराया जा रहा था; और उसमें सफलता होती भी देख पड़ती थी। अँधेरा होना प्रारंभ होते ही फ्रेंच योद्धा-गण अपने मोर्चों से निकल कर प्लेटो के ऊपर से जेनरल एडवान्स (General Advance) अर्थात् चारों ओर से आगे बढ़ना प्रारंभ कर दिये, किन्तु शत्रु-सेना के सम्मुख बढ़ने

में असमर्थ होकर निज पृष्ठ-भाग में एकत्रित किये हुए अपने तोपख़ानो के आवरण (Cover) में सहसा पीछे हट गये ।

दहने का आक्रमण, पांच से साढ़े सात बजे तक

फ्रेंच सेना के वाज़ में संग्राम की कुछ भिन्न ही अवस्था थी । नई २ सेनाओं की सहायता पहुंच जाने से आत्म-रक्षा में प्रवृत्त फ्रेंच योद्धाओं की संख्या और शक्ति बहुत ही अधिक हो गई, और इनके ओजस्विता पूर्वक बढ़ कर आक्रमण कर देने से प्रशियन लैन शीघ्र ही पीछे दबा दी गई । अंत में समस्त स्टियरिंग झाड़ियों में फ्रांसीसियों का पुनराधिकार हो गया । यदि फ्रेंच थोड़ी सी और भी ओजस्विता और शूरता प्रकट करके कुछ और भी आगे बढ़ गये होते, तो निस्संदेह इनको विजय-लाभ भी हो गया होता ।

सात बजे के कुछ ही बाद यह आक्रामकी सेना पीछे हट गई, इससे प्रशियनो को अपने स्टियरिंग में वाले पूर्व स्थान पर चढ़ने का पुनः अवसर मिल गया । प्रायः सात बजे फ्रास्सर्ड के पास इस समाचार के पहुंचने पर, कि कोई शत्रु-सेना (१३-वें डिवीज़न का एडवान्स गार्ड) वाकिंजेन-फार्बाक सड़क से उधर आ रही है, उनका पीछे हट जाना ज़रूरी हो गया, अन्यथा उनके घिर जाने का संदेह था ।

पीछे हटना

दूसरे फ्रेंच कोर का पीछे हटना प्रायः सैनिक नियमानुकूल हुआ, और वह सकुशल ज़ार्गेम्यन्ड में पहुंच गया। पश्चिमी सेण्ट एवोल्ड की तरफ़ इस कोर का हटना नहीं हो सकता था, क्योंकि उधर के मार्ग पर शत्रु-सेना के फैरों का प्रभाव पड़ता था। तीसरे दल को जितना आर्थिक लाभ वर्त्त के संग्राम में हुआ था; वैसा और उतना लाभ विजेतावों को इस संग्राम से नहीं हो सका; किन्तु एक ही समय में आल्सास और लोरेन इन दोनों ही प्रदेशों में पराजित होने का बहुत ही अनिष्ट-कारक प्रभाव फ्रेञ्च सेना और राष्ट्र के हृदय पर पड़ा। शत्रु-दलों का रोकना कुछ काल के लिये परित्याग कर दिया गया; युद्धारंभ से एक ही सप्ताह के भीतर मोज़ेल नदी पर्यन्त का समस्त देश उनके हाथ से निकल कर शत्रु के अधिकार में चला गया। इस संग्राम में, फ्रास्सर्ड के कोर के मुक़ाबिले में पहले और दूसरे जर्मन-दलों के तीन सैनिक कोरों की थोड़ी २ सी चमुएं, तथा दो रिसाले के डिवीज़न युद्ध में योग दिये थे।

इस संग्राम में योग देने वाले योद्धावों की वास्तविक संख्यायें अधोलिखित थीं:—फ्रेञ्च, २३,६७९ पैदल ७२ साधारण और १८ मिट्रेल्यूज़ेज़ तोपैं; प्रशियन, २६,४९४ पैदल और ६६ तोपैं। सैकड़े प्रति दोनों पक्षों की हानि-संख्या प्रायः समान ही रही थी।

समालोचनायें

अपनी छोटी सी सेना से शत्रु के एक ऐसे सुदृढ़ मोर्चे पर, जहां उनकी एक बहुत बड़ी सेना उपस्थित थी, जेनरल क्रामेक का आक्रमण कर देना इस आधार पर समर्थन किया जा सकता है, कि उन्होंने वहां की सेना को पीछे हटती हुई मुख्य फ्रेञ्च-सेना की संवरण करने वाली पृष्ठ-संरक्षक सेना समझा था, तथा यह कि, ऐसी सेना को संग्राम देने के लिये विवश करने की आवश्यकता समझी गई थी। अपनी शक्ति में उचित से अधिक विश्वास रख कर शत्रु-सेना के ऊपर बिना विचारे आक्रमण कर देने से जिस दुर्दशा और संकट में जेनरल क्रामेक और उनकी छोटी सी सेना फँस गई थी, उससे उनका उद्धार और त्राण केवल नई २ सहायक सेनाओं के रण-भूमि में क्रमशः पहुंच जाने ही से संभव हो सका था, तथा अंत में सफलता और विजय-लाभ होने ही से उनका यह अदूरदर्शी कार्य्य उचित समझा गया। इसके सिवाय फ्रेंच योद्धाओं की अकर्मण्यता और आलस्य-प्रकृति से ही वह प्रशियन सेना सत्यानाश होने से बच गई। सर्कारी जाब्ते की रिपोर्टों में क्रामेक का यह कार्य्य उपयुक्त ठहराया गया है, परन्तु वस्तुतः उचित यह कदापि नहीं कहा जा सकता है।

यदि पीछे हटती हुई फ्रेञ्च सेनाओं का केवल रोकना मात्र अभीष्ट था, तो उनके बांये बाजू पर आक्रमण करने से भी वही उद्देश सिद्ध हो सकता था, क्योंकि उधर ही से उनके पीछे हटने का मार्ग था। पुनः स्टियरिंग और फार्बाक के बनों से होकर आक्रमण करना जर्मनों के लिये अधिक सुरक्षित ही नहीं हुआ होता, किन्तु आगे बढ़ते हुए अपने १३-वें डिवीज़न से उन्हें उधर सहायता भी मिल सकी होती। इस आक्रमण के दूरदर्शी होने में भी बहुत कुछ संदेह है। अपने दलों को संयुक्त करके और उन्हें शत्रु से अधिक शक्तिमान बना कर शत्रु पर आक्रमण करना जेनरल वान मोटके के समर-विधान का मुख्य आदर्श था। वर्ज में पराजित होने पर भी यदि फ्रेंच सेनाओं को आवश्यक अवकाश दिया गया होता, तो मोज़ेल नदी के पूर्व तरफ़ कहीं पर संग्राम देने के लिये वे अवश्य ही संकर्षित हुई होतीं। जर्मन समर-विधान जिस युक्ति (Plan) पर किया जा रहा था, उसके लिये किसी एक विलग पड़े हुए शत्रु के कोर पर आक्रमण करके उसपर विजय लाभ कर लेने की अपेक्षा एकत्रित हुई बहुतांश फ्रेञ्च सेनाओं पर आक्रमण करना अधिकतर उपयुक्त हो सकता था।

तोपों और बंदूकों के दगने की ध्वनि सुनकर जिस प्रकार से आस-पास की जर्मन चमुएं रण-भूमि की ओर दौड़ पड़ीं थीं, उससे उनकी योग्यता, और कार्य्य-पटुता प्रकट होती है, उनका यह कार्य्य अनुकरणीय है। पुनः, युद्ध के अवसर में जर्मन सेना के कमाण्ड के बड़े २ पदों पर निरन्तर परिवर्तन होने और नये २ कमाण्डरों के आते-जाते रहने से उनके रण-कार्य्य में कुछ विघ्न और किसी प्रकार की बाधा न उपस्थित होना भी अत्यंत सराहनीय कार्य्य था। इधर फ्रेञ्चों की ओर इसी संग्राम के अवसर पर मार्शल बाजेन के अधिकार में तीन डिवीज़न सेनायें रण-भूमि से केवल दश मील के अंतर पर पड़ीं थीं, किन्तु इनसे कुछ सहायता न बन पड़ी। अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिये मार्शल यह कहते हैं, कि ज़ारलूई और ज़ार्गेम्यन्ड पर आक्रमण की आशंका होने से वहां के फ्रेञ्च कोरों का निस्सहाय छोड़ दिया जाना अनुपयुक्त हुआ होता। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है, कि यदि मार्शल जी टुक उचित गिर्दावरी कराने का कष्ट उठाये होते, तो उनको जिन भयानक आक्रमणों की आशंका हो गई थी, वे निर्मूल सिद्ध हो गये होते। मार्शल जी का यह भी कथन है, कि उन्होंने अपनी थोड़ी सी चमुएं रण-भूमि की ओर भेज भी दी थीं, किन्तु संग्राम में योग देने के लिये जेनरल फ्रास्सर्ड

द्वारा वे तलब नहीं की गईं। यदि यह बात सत्य है, तो इससे यह सिद्ध होता है, कि फ्रेञ्च सैनिक नायकों में आरंभोपक्रम लेने तथा आवश्यकतानुसार कार्य्य कर डालने की प्रथा का बिल्कुल अभाव था। संग्राम-ध्वनि सुनकर उपर्युक्त चमुवों को तो स्वयमेव रण-भूमि में पहुंच कर संग्राम-कार्य्य में योग देना चाहिये था। बाज़ेन के इस कथन से ऐसा भी सूचित होता है, कि शाही-सदर और उनके पदाधिकारियों (कमाण्डरों) में नियमानुकूल संबंध न होने से निज स्वतंत्र विचारानुसार कार्य्य करने में उन्हें बाधायें भी पहुंचा करती थीं।

१८७० के समर में शक्ति और पौरुष का नितांत अभाव ही शायद फ्रेंच जेनरलों का सब से बढ़ कर प्रकट दोष था; उधर विपक्षी जेनरलों में इसी गुण का अत्याधिक्य था। किसी भी अवसर या स्थान पर प्रशियन योद्धा-गण अपने प्रतिपक्षियों के ऊपर साहस अथवा शौर्य में अपनी विशिष्ठता नहीं प्रकट किये। देश की प्राकृतिक दशा, शत्रु की स्थिति, तथा अवस्थायें जिनमें संग्राम किया गया, ये सभी बातें आक्रामकों के लिये सर्वथा अनुकूल नहीं थीं; किन्तु अपने अफ़सरों को भिन्न २ सिद्धांतों के अनुसार कार्य्य करते देख, तथा हृदय से एक दूसरे को सहायता न पहुंचाते पाकर यदि फ्रेंच सैनिकों की आक्रमण-काल की ओजस्विता तथा

संरक्षा-समय की दृढ़ता और अभिनिवेशिता में शिथिलता प्रकट हुई थी, तो उसमें आश्चर्य्य ही क्या है! प्रशियन जेनरलों को विजय-लाभ करने की रीति में शिक्षा मिली ही थी, किन्तु इस 'सैनिकों के संग्राम' (Soldiers' Battle) में व्यूह-रचना-निपुण रेजिमेण्टल अफ़सरों तथा संयम-शील और सुशिक्षित जर्मन योद्धाओं के होने ही से सफलता प्राप्त हुई थी।

समरारंभ पर समालोचनायें

'अमुक युद्ध में आक्रामक अथवा आत्म-संरक्षक बनना तुमको श्रेयस्कर होगा, इस बात पर प्रथम पूर्ण विचार करके फिर उसी के अनुसार अपनी सेना-वितरण करना चाहिये। शत्रु के रण-कार्य्यों के देखने पर बहुधा अपनी रण-रचना-प्रणाली (Plan of operation) में परिवर्तन करने की भी आवश्यकता पड़ जाती है, ऐसे समय को अनेक आकस्मिक घटनाओं के निवारणार्थ पहले ही से सब उपाय सोच रखने चाहिये, तथा यथा-संभव सब के लिये प्रबंध भी कर रखने चाहिये; चाहे तुम आक्रामकीय अथवा आत्म-संरक्षकीय पालिसी इख्तियार किये हो, पर ऐसी घटनाओं का होना सर्वदा संभव रहता है'। उत्तरीय जर्मन-संहति की सैनिक शक्ति की प्रबलता से महाराज नैपोलियन परिचित थे, अतः उन्होंने अपनी संख्या संबंधी निर्बलता को शीघ्रतापूर्वक अपनी स्थली सेनाओं को बढ़ा कर तथा निज समुद्री

सेनाओं को बाल्टिक प्रदेश में उतार कर पूरी करना चाहा था। इधर जर्मनों को भी अपनी सैनिक-संगठन संबन्धी प्रबलता का पूर्ण विश्वास था, अतः वे भी आरंभोपक्रम (Initiative) ग्रहण करने, और उससे जो अनेकानेक लाभ होते हैं, उनसे चूकना नहीं चाहते थे।

'कटिबद्ध होकर आक्रामक बनना,' बस यही वान मोटके की सामरिकयुक्ति का मुख्य सार था। किन्तु रण-रचनाके नियमानुसार सेना-वितरण (Strategic deployment of forces) कर लेने से आत्म-संरक्षक बनने में भी वैसे ही सुभीते थे, जैसे आक्रामक होने में। अतः शत्रु-सेना का सहसा राइन नदी का उतर आना रोकने के लिये जर्मनों ने उस नदी के तटस्थ रेलवे ट्रैन्स्पोर्ट (Railway Transport) को अपने हाथ में कर लिया; पुनः सेना-संकर्षण के समय में शत्रु पैलेटिनेट प्रदेश में बढ़कर जिस में अपने ऊपर आक्रमण न कर सके, इस घटना के प्रतिबंधार्थ आत्म-रक्षा के उपयुक्त सुदृढ़ और उत्तमोत्तम स्थान चुन रखे गये थे, और पारस्परिक सहायता का भी पूर्ण प्रबंध कर रखा गया था। संकर्षित हो आने पर तीनों जर्मन-दल वियुक्त दोनों फ्रेञ्च सेनाओं की भीतरी लैन में पड़ गये, अतः वे स्वेच्छानुसार कभी एक तरफ़ वाली शत्रु-सेना पर, कभी दूसरी ओर वाली पर, किम्वा एक ही साथ दोनों ओर वाली सेनाओं पर आक्रमण कर सकते थे।

फ्रेंच सेनाओं का सीमा-प्रांत को दबाते हुए संकर्षित होना (Projected concentration) उनके आक्रामक बन कर आगे बढ़ने के लिये उपयुक्त हो सकता था, किन्तु आत्म-संरक्षा के लिये वैसा संकर्षण सर्वथा अनुपयुक्त था। 'जिस सेना का समराह्वाहन (Mobilization) केवल आंशिक हुआ है, तथा जो यथोचित रीति से शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित भी नहीं है, उसके लिये आक्रामक बनना उपयुक्त नहीं होता है'। ऐसी ही दशा फ्रेंच सेना की थी, इसको प्रभावोत्पादक बनाने के लिये समय की आवश्यकता थी, और अब समय मिलना संभव नहीं था। रण-रचना के नियमानुसार सेना-वितरण के लिये 'समय' एक परमावश्यक वस्तु है। पुनः जब दोनों ही पक्षों की सेनाओं का संकर्षण रेल-पथों ही पर अवलंबित होता है, तो सेना-वितरण देश के केवल उन्हीं विभागों में हो सकता है जिनमें रेल पथों की अधिकता होती है; ऐसी दशा में रण-रचना के अनुकूल स्थानों पर सेनाओं का भेजना दुष्कर हो जाता है।

सुप्रसिद्ध जेनरल नैपोलियन अत्यंत शीघ्रतापूर्वक तथा गुप्त रीति से अपनी सेनाओं को मार्च करा कर किसी नगर अथवा देश के अंश पर उनको इस रीति से वितरण कर देता था, कि उसके शत्रु चकित और स्तंभित हो जाते थे, और इस तरह पर उनके ऊपर वह रण-

रचना संबंधी लाभ (Strategic advantage) प्राप्त कर लेता था। अब नैपोलियन की रीति पर चकित करने का समय नहीं रह गया है; वर्तमान युग का समराहाहन और सेना वितरण रेल-ट्रैन्स्पोर्ट पर अवलंबित रहता है, अतएव उनका गुप्त रहा आना असंभव है, क्योंकि रेल-पथों को तो शत्रु पहले ही से मालूम कर सकता है। ऐसी दशा में शत्रु से अवकाश और समय का प्राप्ति से उसके ऊपर लाभ-प्राप्ति के लिये केवल अपनी सैनिक संगठन की उत्तमता पर ही भरोसा रखना पड़ता है। जय-पराजय के निर्णय होने वाले स्थान पर शत्रु की अपेक्षा अपनी सेनाओं की संख्या अधिक कर लेना, यही आज कल की रण-रचना का मुख्य उद्देश्य रहता है। सम्यराष्ट्रों के वर्तमानकालीन युद्ध में, सेना-वितरण (Deployment) संबंधी सफलता प्राप्त होना तभी संभव है, जब उसके लिये शांति समय से उपयुक्त रीति पर सेना-संगठन किया जाता रहे। इस ज़माने में नैपोलियन के सदृश दैवी बुद्धि की उतनी आवश्यकता नहीं रहती है।

किसी पर्वत-माला की दूसरी भुजा की ओर किसी बड़ी सेना के बढ़ाने में उस सैन्य की कुछ चमुओं को पर्वत की एक भुजा की ओर, और शेष को दूसरी भुजा की ओर ले जाने की बहुधा आवश्यकता पड़ जाती है, इसमें भय और बाधायें उपस्थित हो जाने की संभावना

रहती है, क्योंकि पहली भुजा पर की उपस्थित चमुवों से सहायता पहुंचने के पूर्व ही दूसरी भुजा पर की चमुवों के पराजित और विनष्ट कर दिये जाने का इसमें सदा संदेह रहता है। जर्मन दलों के आगे बढ़ने में पहाड़ों के पार करने के लिये उन्हें अपनी सेनायें खंड २ करके पार उतारनी पड़ती थीं। योज़ पर्वत-माला के पार कराते समय जर्मन सैनिक नायक पर्वत की दोनों भुजावों के प्रत्येक स्थान पर अपनी इतनी सेना रखते थे, जितनी फ्रेंच सैनिकनायक निज दूषित सेना-आह्वाहन-प्रणाली से उस स्थान पर संभवतः एकत्रित करने के योग्य हो सकते थे; इससे जर्मनों का वह भय यथा-संभव न्यून पड़ गया था। पुनः स्ट्रासबुर्ग में अपना मूल-स्थान (Base) रख कर यदि फ्रेंच सेनायें तीसरे जर्मन दल पर आक्रमण भी करतीं, तो उनकी वे सेनायें केवल निर्बल शक्ति की और कम संख्या की हो सकतीं थीं, अर्थात् स्ट्रासबुर्ग से अधिक शक्ति की सेनाएं संकर्षित करके वे जर्मनों पर आक्रमण नहीं कर सकते थे; तथा यदि मेज़ में मूल-स्थान बना करके आक्रमण करने का विचार करते, तो वहां पर पहले और दूसरे दलों की अपरम्पार सेनायें उनके पलैंक और पृष्ठ-देश में पड़ जातीं।

कदाचित् जर्मन दल एक दूसरे से वियुक्त पड़ ही जाते, तो उस दशा में, आक्रमण किये जाने पर उनको

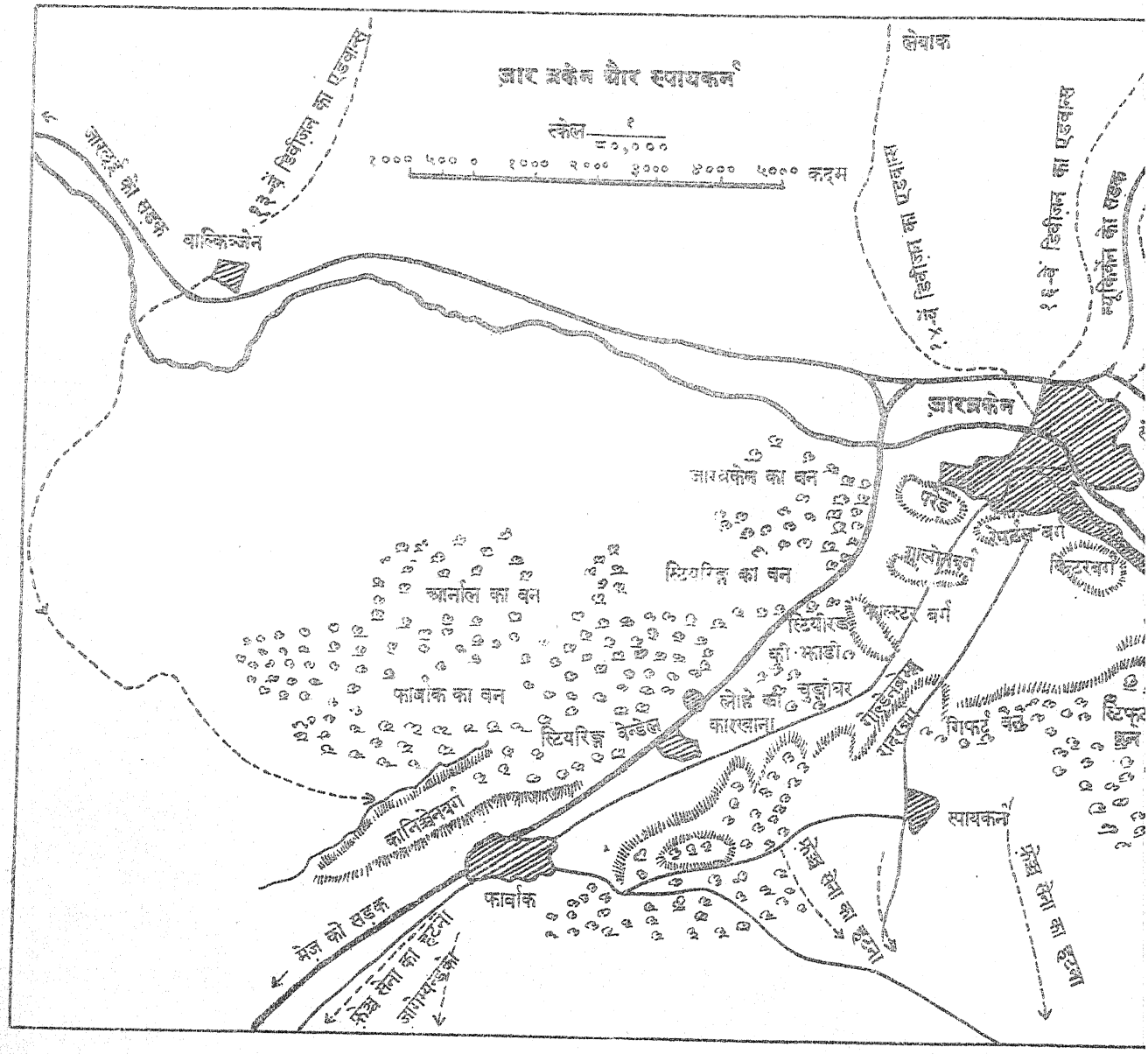

जार ब्रकेन और स्पायकर्न
स्केल १/८०,०००
१००० ५०० ० १००० २००० ३००० ४००० ५००० कदम
लेबाक
१३-वें डिवीज़न का एडवान्स
जारब्रकेन
जारब्रकेन का वन
स्टियरिङ्ग का वन
आर्नाल का वन
फार्बाक का वन
स्टियरिङ्ग वेन्डेल
लोहे की कारखाना
स्पायकर्न
फार्बाक
मेज़ की सड़क
फ्रेञ्च सेना का हटना

किस स्थान पर अड़ना चाहिये था, इसका भी उचित प्रबंध पहले ही से कर रखा गया था; इससे सिद्ध होता है, कि विलग पड़ जाने की भी आशंका जर्मन सदर में कर ली गई थी, और उसके लिये यथोचित प्रबंध भी रख लिया गया था।

जिस उत्तमता से नैपोलियन प्रथम १८१४ में अपनी सेनाओं को एक रण-भूमि से सहसा दूसरी में ले जाकर शत्रु को चकित कर लेता था, उस तरह आज कल रण-कार्य्य करना, तथा शत्रु-दल की विलग पड़ी हुई चमुओं को क्रम २ से पराजित करना, यदि असंभव नहीं, तो बहुत ही कठिन है, क्योंकि इस ज़माने में बड़ी २ संख्या की सेनाओं से काम लेना पड़ता है। इसके सिवाय आज कल तार से शीघ्रतापूर्वक समाचार भेजने की विद्या के प्रचलित हो जाने से सेनाओं को विभक्त करके, किम्वा रिज़र्व में की सेनाओं का स्थानांतर के युद्ध-स्थल में भेजना सरल हो गया है, और इस तरह पर एक स्थान की सेना से अन्यतम स्थान की सेनाओं के साथ सहकार्य्य कराना संभव हो गया है। यद्यपि कुछ काल के लिये जर्मन सेनाओं को अलग २ गरोहों में संकर्षित करना पड़ गया था, तथापि इनके एडवान्स की मुख्य २ लैनें एक दूसरे से दो मंज़िल से अधिक दूरी पर कहीं भी नहीं थीं; पुनः, आगे चल कर यह भी विदित होगा, कि,

यहां की सेनाओं के मार्च करने के मार्ग इतनी अधिक सावधानी के साथ नियत किये गये थे, कि इनमें एक दूसरे से सहायता मिलना सदा ही संभव बना रहा आया था।

जर्मन दलों की कमाण्ड-पद्धति भी द्रष्टव्य है। शाही सदर से सिद्धांत और उद्देश्य संबंधी साधारण आदेश प्रकट किये जाते थे, वहां से तत्कालीन सामरिक दशा के अनुसार जैसा कुछ उपयुक्त सूचित होता था, उसी की सूचना सैनिक कमाण्डरों को दी जाती थी। कठिन अवसरों पर बड़ी २ सेनाओं के संचालनों के विषय में भी कभी कभी सदर से ही आज्ञा देने की आवश्यकता पड़ जाती थी, और इससे सैनिक कमाण्डरों की स्वतंत्रता में कुछ काल के लिये निस्संदेह बाधायें उपस्थित हो जाती थीं, तथापि अधिकार-वितरण-प्रणाली (Decentralization) ही जर्मन सैनिक संविधान का मुख्य अंग था। वहां पर छोटे २ पदों पर के सैनिक कमाण्डरों को भी अपनी २ बुद्धि के अनुसार कार्य्य करने की स्वतंत्रता थी। यद्यपि छोटे अफ़सरों को आवश्यकतानुसार स्वबुद्धि से काम करने देने में लाभ तो निस्संदेह होता है, किन्तु ये लोग कभी २ ऐसे २ कार्य्य भी कर बैठते हैं, जो प्रधानाधिपति के रण-रचना-विधान और उद्देश्य के सर्वथा विरुद्ध और कभी २ उनके विनाशकारक भी हो जाया करते हैं; ऐसी ही दशा रणायकर्न और वर्त्त के संग्रामों में छोटे ही छोटे

जर्मन अफ़सरों ने कर डाली। परंतु जिस देश में सैनिक अफ़सरों को अपनी बुद्धि से कार्य करने देने की प्रथा का अनुमोदन नहीं किया जाता है, वहां पर, फ्रास्सर्ड के सदृश, सुचतुर सैनिक नायक के लिये दृढ़-संकल्प हो कर काम करने के अवसर भी आ जाया करते हैं; ऐसे अवसरों पर आगा-पीछा करने में हानि होती है; सदर से पूछने का समय न रहने पर वहां तो केवल अपनी ही बुद्धि से काम लेने में कल्याण रहता है।

कितना अधिकार मुख्य सेनापति को अपने हाथ में रखना चाहिये, किन २ बातों का उत्तर-दाता सैनिक कमाण्डरों को बनना चाहिये, कैसे २ अवसरों पर उन को स्वतंत्रता पूर्वक कार्य्य करने की आज्ञा दे देनी चाहिये, तथा कहां और कब तक उन्हें अपने से बड़े पदों पर के अफ़सरों से आज्ञा पाने की प्रतीक्षा करनी चाहिये, इन और ऐसी अनेक बातों का निर्णय कर उन्हें नियम और मर्य्याद के भीतर रखना कुछ सरल नहीं है। नैपोलियन और वेलिङ्गटन के ज़माने की अपेक्षा आज कल का सैनिक-संविधान एक अधिक विकट यंत्र हो गया है, इस सेना-यंत्र के भिन्न २ अंग इस तरह पर बने और गंसे रहने चाहिये, जिसमें कुंजी ऐंठ कर उसको साधारण बुद्धि के नायक भी चला सकें।

उपर्युक्त कारणों से फ्रांसीसियों के आक्रामकीय सेना-संचालन में बाधायें पहुंचीं थीं। कुछ अंश तक आक्रामक बनने में इन्हें लाभ हुआ होता या क्या, इसमें भी कुछ संदेह है। ऐसा कहा जाता है, कि जुलाई मास में कम से कम ६०,००० जवान ये लोग मास्को में भेज सकते थे। शत्रु के ऐसे सेना-संचालन से जर्मनो को राइन नदी के पार अपनी सेनायें बढ़ाने में निस्संदेह बाधायें उपस्थित हो सकती थीं। पुनः, यदि उपर्युक्त फ्रेञ्च जवानों को अंत में पीछे भी लौट आना पड़ा होता, तो कम से कम इस कार्य्य से उनको समय अर्थात् सावकाश अवश्य ही मिल गया होता, और फ्रेञ्च सेना-संगठन के लिये समय ही की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। पुनः वहां के योद्धावों की उद्दंड प्रकृति के लिये शीघ्रतापूर्वक आक्रामक बन कर बढ़ जाना भी हित-कर हुआ होता, यद्यपि शत्रु की अपरंपार संख्या की सेना के सम्मुख से अंत में उनका हटना अवश्यंभावी था, पर इसके लिये एक सुचतुर और युद्ध-कला-विचक्षण जेनरल की आवश्यकता थी, जिसका उस समय फ्रेञ्च महाराज की सेना में बहुत बड़ा अभाव था। स्पायकर्न की विजय के पश्चात् शत्रु का पीछा न करा कर वान मोटके ने भी कुछ काल तक विश्राम ले लेना उपयुक्त समझा था, उसपर अनेक आलोचनायें-प्रत्या-

लोचनायें हुई हैं। ऐसा कहा जाता है, कि उस समय पीछा कराने में उनके रण-कार्य्य-विधान में गड़बड़ी पड़ जाने की संभावना थी; विलंब करके निज तीसरे दल के लिये योज़ पर्वत-माला के उतारने का सावकाश देने ही में उनके अभीष्ठ की सिद्धि में सरलता होती थी।

वान मोटके के विलंब करने का यदि उपर्युक्त कारण उचित स्वीकार कर लिया जाय, तो स्पायकर्न में जर्मनों द्वारा शत्रु-सेना का छेंड़ा जाना बहुत ही अयोग्य और अदूरदर्शी कार्य्य कहा जा सकता है, और उस दशा में जिन अफ़सरों की भूल से वह संग्राम हो पड़ा था, वे उसके उत्तर-दाता और दोष-भागी अवश्य ठहरते हैं। यदि नियमानुकूल मंद २ एडवान्स करना ही जर्मन रण-रचना का मुख्य उद्देश्य था, तो क्षुद्र शक्ति के एडवान्स गार्डों का बिना समझे-बूझे लड़ जाना बहुत ही अयोग्य हुआ; और इसमें उतने वीर योद्धाओं का जीवन अनावश्यक कार्य्य में बलि किया गया। यदि फ्रास्सर्ड के कोर पर उस समय आक्रमण नहीं किया गया होता, तो थोड़ी ही दूर पर समस्त संकर्षित फ्रेञ्च सेनायें युद्ध देने के लिये अवश्य ही उद्यत हो जातीं, और ऐसी दशा में संयुक्त जर्मन दलों से पराजित और विनष्ट कर दिये जाने पर इस समर का शीघ्रतर समाप्त हो जाना संभव हो गया होता।

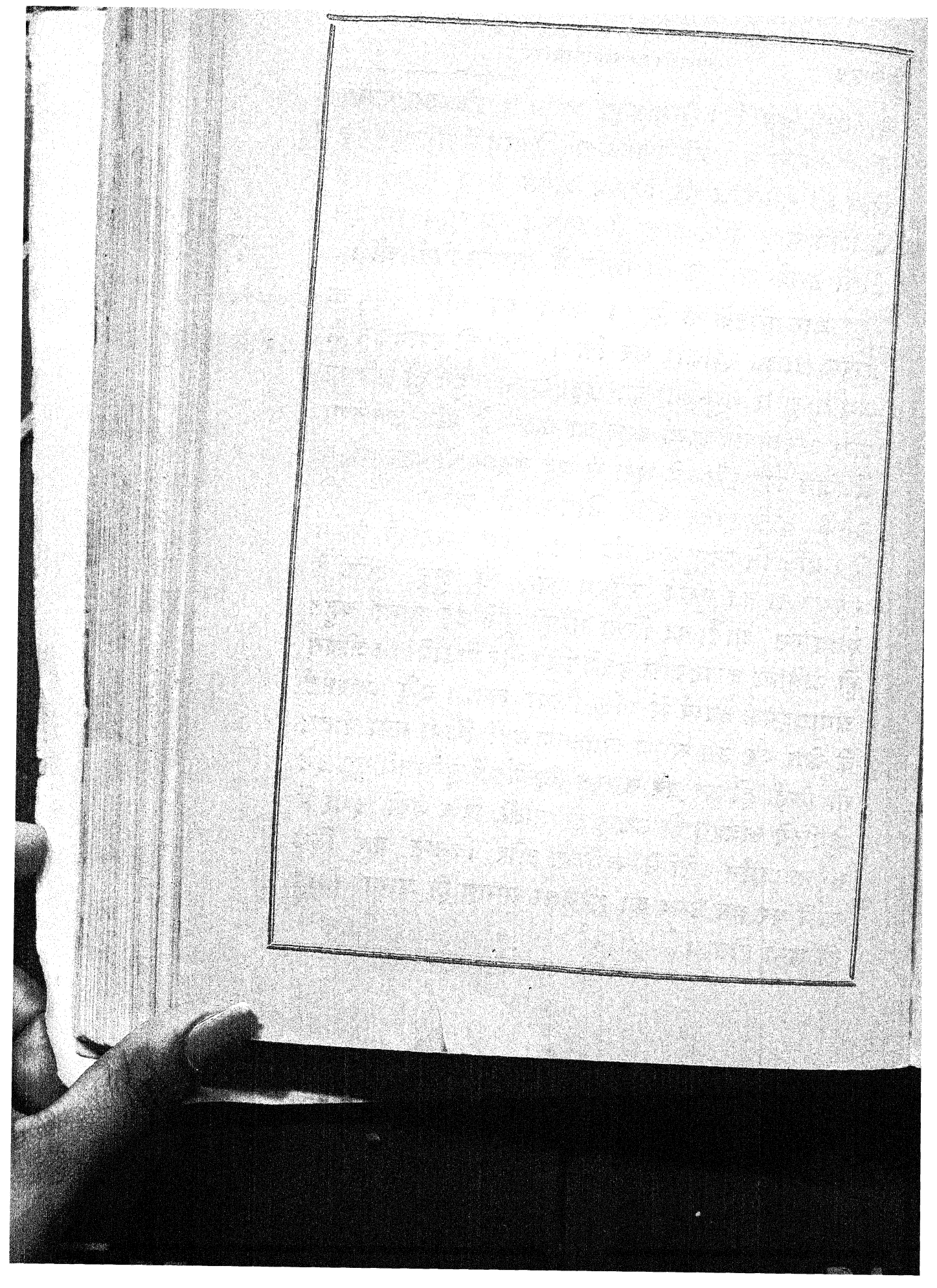

अध्याय ६

बोर्नी-कोलोम्बे

फ्रेञ्च सेनाओं का पीछे हटना—अगस्त ६ से १२ तक की व्यवस्था—जर्मनों का एडवान्स—अतर्कित घटनाओं के लिये प्रबंध—बोर्नी के पहले के रण-कार्य्य—बोर्नी का संग्राम—समालोचनायें।

अध्याय ६

बोर्नी-कोलोम्बे

फ्रेंच सेनाओं का पीछे हटना

६ अगस्त की पराजयों के पश्चात् विचलित फ्रेञ्च सेनायें दो कालमों में विभक्त होकर पश्चिम की ओर हट गईं। इनमें से एक कालम की बहुत सी चमुएं तो वर्त्त के संग्राम में बहुत ही ध्वंसित हो चुकी थीं, उनको पीछे हटने के लिये विवश हो जाना पड़ा था, तथा उसमें उनके अनेकानेक योद्धा मारे भी गये थे। किन्तु महाराज नैपोलियन की सेना की मुख्य २ चमुएं उनके बांये विंग के कालम में उपस्थित थीं, और इस कालम के एक ही कोर की चमुओं का शत्रु से मुक़ाबिला पड़ा था। निज दहने विंग के अत्यंत अव्यवस्थित हो जाने पर, तथा सामने अपरंपार संख्या की सेनायें रहने से फ्रेंच जेनरलों का आक्रामक बनने का हौसिला करना तो अब सर्वथा असंभव हो गया, अब तो तुरंत ही उन्हें स्वदेश-रक्षा के लिये अनेक प्रबंध करने की आवश्यकता पड़ गई। अपनी कम संख्या की सेना से प्रभावोत्पादक कार्य्य लेने के निमित्त इस समय उनके लिये अपनी दोनों ओर की बिथरी हुई चमुओं

को संयुक्त कर लेना परमोपयोगी था। मैकमाआं की चमुएं ऐसी दुरवस्था को प्राप्त हो चुकीं थीं, कि मोज़ेल नदी के पूर्व ही कहीं पर सेना-संकर्षण करके शत्रु के रोकने में अब कुछ भी लाभ की संभावना देख नहीं पड़ती थी, अतः चारों ओर की चमुवों को मोज़ेल पर्यंत हट जाने की निर्णीत आज्ञा कर दी गई। शालां तक एकबारगी हट आकर दोनों विभक्त दलों को संयुक्त करना, किम्वा मुख्य सेना को मेज़ में हटा ले आकर निज दहने विंग के समीप में पहुंच जाने का यत्न करना अथवा समस्त लभ्य चमुवों को एकत्रित कर मेज़ के दुर्ग के दक्षिण कहीं पर डँट कर यथा-शक्ति शत्रु-सेनावों के मोज़ेल नदी पार उतरने में बाधा पहुंचाना, इन तीनों में से किस मार्ग का अनुसरण करना फ्रेञ्चों के लिये उपयुक्त होता, इसपर वहां के सदर में बहुत वादविवाद हो रहा था। जर्मन सदर-स्टाफ़ की सम्मति में फ्रेञ्चों द्वारा उनके रोके जाने का सब से दृढ़ और उपयुक्त स्थान मोज़ेल नदी का तट हो सकता था, क्योंकि यहां पर उनके एक बाजू की संरक्षा मेज़ के दुर्ग से और दूसरे की तिआन-विल से हो सकती थी।

इसके विषय में फ्रेञ्च सदर से अत्यंत शीघ्रता के साथ आज्ञायें और प्रतिबाधक आज्ञायें प्रकाशित होने लगीं, और अंत में शालां तक का हट आना निश्चय किया गया।

मुख्य सेना फ्रेञ्च नायड नदी के तीर पर पहले कुछ २ मोर्चे-बद्ध होकर रुकी, किन्तु उस स्थान को सुरक्षित न समझ कर सहसा उसे परित्याग कर दी, और पश्चिम तरफ़ कुछ दूरी तक और हट आई। अंत में ता० १३ अगस्त को शालां वाले ६-वें कोर की थोड़ी सी चमुवों को साथ में लिये बांये विंग की सेनायें (१,७६,००० जवान और ५४० तोपें) मेज़ के पूर्व ओर वाले असंयुक्त दुर्गों के आवरण में एकत्रित हुईं, तथा महाराज ने इन सब का पूरा पूरा कमाण्ड मार्शेल बाज़ेन के हाथ में दे दिया।

सावेर्न की ओर हटने में मार्शल मैकमाओं ऐसे मार्ग का अनुसरण किये थे, कि मुख्य सेना से उनका संबंध अब बिल्कुल छूट गया था। आगनो और स्ट्रासबुर्ग की समर-भूमियों से भागे हुए जवान सावेर्न में ही आकर उनकी सेना में शामिल हुए थे। लुनेविल-मेज़ की रेल से यदि वे पीछे हटे होते, तो बाज़ेन के दल से उनका संबंध थोड़ा सा और भी पश्चिम जाने पर संभव हो सकता था, किन्तु निज १-ले कोर की चमुवों के अत्यंत दुर्व्यवस्थित हो जाने के कारण उन्हें उन चमुवों को और भी दक्षिण दबाकर पहले नशातो (Neufchateau) भेजना पड़ गया, वहां से वे रेल द्वारा शालां लाई गईं।

विट्ज़ वाले ५-वें तथा बेलफोर्ट वाले ७-वें कोरों से यहीं पर १-ले कोर की चमुओं से संबंध हुआ था।

सेकमाओं के पीछे हटने की आतुरता और उद्विग्नता ध्यान देने योग्य है। सावेर्न और फाल्सबुर्ग में पहाड़ियां खोद कर भीतर ही भीतर रेल-पथ बनाये हुये थे; आप पीछे हटते समय इतने असावधान हो गये थे, कि उन पहाड़ी रेल-पथों को ध्वंश कर देने तक की आपको सुधि न रह गई, जिसमें शत्रु-सेना के आगे बढ़ने में कुछ विलंब तो हो जाता।

अगस्त ६ से १२ तक

इधर जब तक अत्यंत शीघ्रता और उद्विग्नता के साथ दोनों ओर की फ्रेञ्च सेनायें पीछे भागती आती थीं, उधर तब तक राजधानी में स्वदेश-रक्षा के लिये गवर्नमेण्ट यथा-शक्ति पूर्ण उद्योग कर रही थी। फ्रांस भर के गार्ड्स मोबाइल्ज़ (*Gardes Mobiles*) तलब कर लिये गये। वृद्ध २ योद्धाओं तक को रैंक में उपस्थित होने की आज्ञा कर दी गई। बाल्टिक प्रदेश पर आक्रमण करने के लिये जो चमुएं भेजी जाने वाली थी, वे तथा उनके साथ के जल-सैनिक (*Marines*) भी शीघ्रता के साथ राजधानी को लौटा लाये गये। रसद इत्यादि सामरिक सामग्रियां एकत्रित किये जाने के लिये समस्त देश में बहुत जल्दी २ सब प्रकार के उद्योग किये जा रहे थे।

शत्रु-सेना के रोकने का बिना कुछ भी उद्योग किये ही मोज़ेल नदी के पूर्व में वाले सब प्रदेश का परित्याग कर देना उचित था अथवा नहीं, इसके विषय में भिन्न २ लोगों की भिन्न २ सम्मतियां हैं, किन्तु तत्कालीन दशा में उन्हें परित्याग कर देना ही शायद अच्छा था। बाज़ेन के पास जितनी सेना थी, शायद उसके लिये नायड नदी के तट पर वाले आत्म-संरक्षक मोर्चे उपयुक्त नहीं हो सकते थे, और मैकमाज़ां की सेना से वहां पर सहायता मिलनी प्रायः असंभव थी। मेज़ नगर के ऊपर अथवा बहाव की तरफ़ मोज़ेल नदी के तट पर आत्म-संरक्षक लैन बनाने में, बहुत से लोभों की संभावना थी; परंतु, उधर मेज़ के दुर्ग अत्यंत ही अरक्षित और हीनावस्था में थे, कुछ बड़ी सी सेना भेजने और उनको सुधार कर दृढ़ और अधिक सुरक्षित बनाने के लिये अनेक आवश्यकीय निवेदन कराये गये थे। नगर के मध्य से बाज़ेन की चमुवों को मार्च करा कर उस नगर का गैरिज़न प्रबल बनाने और मोर्चों के दृढ़ करने के लिये तब तक समय और अवसर मिल सकते थे।

जर्मनों का एडवांस

फ्रेञ्च सेनावों के अति शीघ्रता के साथ पीछे हट जाने से कुछ काल के लिये दोनों प्रति-द्वंद्वियों का संसर्ग बिल्कुल छूट गया, तथापि जर्मन सैनिक अफ़सर यह भली भांति समझते थे, कि यदि अधिक पर्व

में नहीं, तो फ्रेञ्च सेनायें कम से कम मोज़ेल नदी के तट पर अवश्य ही ठहरेंगी। पस रण-रचना की पारंभिक युक्ति के अनुसार कार्य्य किया जाना निश्चय किया गया, अर्थात् यह कि, तीनों दल .खूब चौड़े फ्रंट में एक ही साथ आगे बढ़ाये गये, भिन्न २ कालम एक दूसरे से सर्वदा इतने ही अंतर पर रहे आते थे, जिसमें आवश्यकता पड़ने पर वे परस्पर एक दूसरे की सहायता कर सकते।

इस कार्य्य को यथोचित रीति से संपादन कराने तथा तीनों दलों को बराबर में लाने के लिये दहनी ओर को कुछ घूमने (Wheel) की आवश्यकता थी। अतएव पहले दल को ठहरा देने की, और दूसरे को धीरे २ दक्षिण ओर बढ़ाने की आवश्यकता हुई; पुनः बाहरी बाज़ू पर वाले तीसरे दल को योज़ पर्वत की घाटियों को पार करके दूसरे दल के बांये बाज़ू में संगठित होना था।

तीसरा दल इस समय मंद २ और अत्यंत सावधानी के साथ एडवान्स करता था, क्योंकि मुख्य २ सड़कों पर शत्रु के छोटे २ दुर्ग उपस्थित थे, तथा मैकमाह्रां की चमुवों के सँभल कर फिर भी प्रति-बाधक बन जाने की संभावना थी। बिट्श के तरफ़ से जाना बरकाने के लिये उसको बहुत चक्कर लेकर मार्च करना पड़ा। शत्रु-सेना को विस्मित करके इन लोगों ने उन से लिचटेन-

वर्ग का दुर्ग छीन लिया ; लट्ज़ेलस्टीन (पेटाइट पीर) के दुर्ग को वहां के फ्रेंच गैरिज़न ने स्वयमेव ख़ाली कर दिया था ; फालसबुर्ग को भी जर्मनों ने कुछ काल के लिये मुहासिरा कर लिया था। यद्यपि वास्तविक दूरी कम थी, किन्तु उस को ही तैं करने में और समस्त जर्मन चमुवों के ज़ार नदी के तट तक पहुंचने में पांच दिन लग गये, और तब ज़ार-यूनियन से लेकर ज़ारेबुर्ग पर्यंत इनका फ्रंट उसी नदी के किनारे २ फैला हुआ था।

प्रत्येक दल के मार्च करने का विस्तार पहले ही से आज्ञा द्वारा नियत कर सीमा-बद्ध कर दिया गया था। तीसरे दल की चमुवों को ज़ार-यूनियन-ड्यूज़ रोड तथा उसके दक्षिणस्थ सड़कों से मार्च करने की आज्ञा की गई थी ; दूसरे दल की चमुवों को सेण्ट एवोल्ड-नोमेनी रोड तथा उस के दक्षिणवाली सड़कें नियत कर दी गईं थीं, तथा पहले दल की चमुवों के लिये उत्तर में ज़ारलूई-मेज़ की मुख्य सड़क तक फैल कर बढ़ने की आज्ञा दे दी गई थी। दूसरे और तीसरे दलों के चक्कर पूरा होते ही (१२ अगस्त) समस्त सेना को पश्चिम तरफ़ बढ़ने की आज्ञा थी, केवल तीसरा दल शेष दो दलों के किञ्चित् पृष्ठ-भाग में रहजाने वाला था। पहले और दूसरे दलों की फ्रंट लैन अट्ठारह मील लंबी हो गई

थी, प्रत्येक कोर खूब ही संगठित था, जहां तक सड़कों का मिलना संभव होता था, वहां तक पूरे २ एक २ डिवीज़न करके सेनायें आगे बढ़ाई जाती थीं।

तीनों दलों के आगे २ रिसाले के डिवीज़न चलते थे, और वे पैदलों से एक २ वा दो ३ मंज़िल आगे रहते, मेज़ नगर की तरफ़ और मोज़ेल नदी के पार तथा उसके बहाव के ऊपरी और अधो भागों की ओर बढ़ते जाते थे। मेज़ के दुर्गों के सम्मुख बहुत सी शत्रु-चमुएं पड़ी हुई देख पड़ीं, तथा पांट-आ-मोस्सान (Pont-a-Mausson) ड्यूलुअर्ड (Dieulourd) और नान्सी नगरों से बने उस नदी पर के महत्व-पूर्ण पुल यथातथ्य अक्षत उपस्थित मिले। मेज़ और नान्सी के मध्य के रेल-पथ और तार तुरन्त नष्ट कर डाले गये, और शत्रु-सेना के मेज़ से होकर पीछे हटने की रिपोर्ट सदर में कर दी गई। इस बीच जर्मन समर-सदर भी सेण्ट-एवोल्ड तक बढ़ा लाया गया था। पस वहां से पहले दल के लिये सीधे मेज़ पर चढ़ जाने की, दूसरे दल के लिये सोल नदी के तरफ़ बढ़ने तथा कुछ अधिक घूम कर मोज़ेल नदी के उतर जाने के लिये उद्योग करने की, तथा तीसरे दल के लिये शीघ्रता पूर्वक नान्सी और लुनेविल की ओर बढ़ते ही जाने की आज्ञा कर दी गई।

मुख्य फ्रेञ्च सेना संख्या और शक्ति दोनों में पहले जर्मन दल से अधिक थी, अतः लौट कर पहले दल के ऊपर उसके प्रत्याक्रमण कर देने की संभावना थी। इस आपत्ति के निवारणार्थ दूसरे दल के दहने विंग (Wing) के दो कोरों को मेज़ के कुछ दक्षिण में रुकने और आवश्यकता पड़ने पर शत्रु के फ्लैंक पर आक्रमण करने के लिये उद्यत रहने की आज्ञा कर दी गई। मेज़ेल नदी के दहने किनारे से हो कर शत्रु-सेना का दक्षिण तरफ़ बढ़ना बिल्कुल असंभव था, क्योंकि पारस्परिक संबंध के होने से दोनों जर्मन दलों की स्थिति ही ऐसी थी। यदि फ्रेंच मेज़ होकर पीछे हटते, और नदी के दूसरे किनारे से उसके बहाव के ज़रूरी भाग की ओर उनका बढ़ना सूचित होता, तो उस दशा में दूसरे दल को उस समय तक प्रतीक्षा करने की आज्ञा थी, जब तक युवराज की चमुएं पहुंच कर उस दल के सँभालने के योग्य न बन जातीं, और इस दशा में पहले दल के लिये, नदी को मेज़ वाले दुर्ग के ऊपर कहीं पर पार कर के, शत्रु के फ्लैंक और रीअर पर आक्रमण करने की आज्ञा थी। यदि शत्रु-सेना पश्चिम ही तरफ़ हटती, तो रिसाला आगे बढ़ कर पीछे हटती हुई शत्रु की चमुओं को तंग करता, तथा दूसरा दल मेज़ेल नदी पार करके शत्रु को मार्चिंग लैन

(*Marching Line*) के फ्लैंक की ओर घूम जाता। यह भी जानना चाहिये, कि मेज़ और तियानविल में फ्रेंच-सेना के व्यूह-बद्ध होने की दशा में, उन पर सम्मुख से पहले दल से आक्रमण कराये जाने की, तथा मेज़ के दक्षिण से दूसरे दल को इस तरह पर घुमा ले आने की बात समरारंभ के पहले ही निर्णय कर ली गई थी, कि जिस में शत्रु-सेना के पीछे हटने के मार्ग पर उसका भय और प्रभाव पहुंच सके।

बोनी के पहले के रण-कार्य्य

नायड नदी पर वाले आत्म-संरक्षक मोर्चे के परित्याग करने के पश्चात् फ्रेञ्च सदर में पहले पहल मोज़ेल नदी की घाटियों में अपनी मुख्य सेना के ठहराने और इस सेना की दहनी लैन बनाने के निमित्त मैकमाआं कीचमुवों को वहीं पर तलब कर लेने का विचार किया गया था। किन्तु मैकमाआं वाली निज दहने विंग की चमुवों से संबंध और सहयोगिता न प्राप्त हो सकने पर मेज़ के दुर्ग से होते हुये मुख्य सेना को सड़क २ से वर्डेन हट जाने की आज्ञा कर दी गई। १३ अगस्त का समस्त दिन नदी पार करने के विविध प्रबंधों तथा अनेक रेलवे ट्रेनोंके पहले ही से आगे बढ़ा रखने में व्यतीत हो गया। सैलाब के आ जाने से नदी भी सहसा बहुत बढ़ गई, अतः

अस्थायी पुलों के बनाने में भी कुछ समय लग गया, और इस तरह पर फ्रेञ्च सेना का पीछे हटना ता० १५ के प्रातःकाल तक प्रारंभ न हो सका।

दुर्ग के पूर्व में फ्रेञ्च चमुएं अर्द्धवृत्ताकार लैन में पड़ीं थीं, और अनेकानेक माल-गाड़ियों और बारबर्दारी के जानवरों के नदी के पार उतर जाने तक वे सब जहां की तहां पड़ी ही रह गईं। सबेरे जो इनके कुछ रिसाले के पैट्रोल सवार गिर्दावरी करने के हेतु भेजे गये थे, उन्हें आस-पास में शत्रु की किसी बड़ी सेना के पहुंच जाने का पता न लग सका (यद्यपि जर्मन सेनायें वहां से चार ही मील के भीतर संकर्षित हो रही थीं), और पुलों की संख्या कम होने तथा रेल-पथों पर बड़ी २ ट्रेनें पड़ी रही आने से सैनिकों के पीछे हटने में विलंब हो गया।

ता० १५ को जेनरल स्टीनमेज़ के कमाण्ड में पहला दल फ्रेञ्च नीड नदी के तट पर पड़ाव किये था; अपनी औट-पोष्ट (Outpost) चौकियों के आगे कुछ पैट्रोल सवारों को बढ़ा कर आप ने इस बात का पता लगाना चाहा, कि फ्रेञ्च सैनिक तब भी पीछे हटते थे, किम्वा संग्राम देने के लिये कहीं पर अड़े थे। आप की औट-पोष्ट लैन पहले और ७-वें कोरों (दो ब्रिगेड) के एडवान्स गार्डों से बनी हुई थी, और लैन के दोनों छोरों पर रिसाले के सवार नियुक्त किये गये थे। यह लैन बारह मील की

की लंबाई में फैली हुई थी, इसके बीच में आठ मील तक पैदलों ही पैदलों की चमुएं थीं। संत्रियों और वेडेटियों (Vedettes) * की फ्रंट लैन सेण्ट बार्ब से लेकर लैक्रेनेक्सो तक फैली हुई थी।

बोर्नी का संग्राम

तीसरे कोर की फ्रेञ्च चमुएं बोर्नी प्लेटो पर दो लैनों में फैली हुई थीं; प्रायः दोपहर को उसी के आवरण में दोनों ही बाजुओं से समस्त फ्रेंच सेनायें पीछे हटना प्रारंभ कीं। वे पीछे हटती थीं, किम्वा रुक कर युद्ध देना चाहती थीं, इस बात का पता जर्मन कोर के कमाण्डर को पहले न मिल सका, और उन्होंने अपने डिवीज़नों को संग्राम के लिये प्रस्तुत कर खड़ा रख छोड़ा था। चूंकि ७-वां कोर कुछ दक्षिण में था, अतः उसको फ्रेञ्च सैनिक-संचालन का वास्तविक भेद प्रायः चार बजे सायंकाल को विदित हो गया, और इसके कमाण्डर जेनरल वान डर गोल्ट्ज ने अपने एडवान्स गार्डों को लेकर तुरंत ही उन पर आक्रमण कर दिया। पहले फ्रेञ्च चौकियों (औट-पोष्ट) में वाली सेनाओं को भगा कर उन्होंने फ्रेञ्च मोर्चे के दहने बाजू में स्थित कोल-वे नामक स्थान को उनसे छीन लिया। अब तो पीछे हटते हुए फ्रेञ्च कालम (अग्रेढ़ी-बद्ध दल) तुरंत लौट पड़े, अतः जर्मनों की उपर्युक्त थोड़ी सी सेनाओं का मुकाबिला शत्रु की अतीव प्रबल

* औट-पोष्ट चौकियों में रहने वाले अश्वारोही संत्री वेडेटीज़ कहलाते हैं।

शक्ति की सेना से पड़ गया। परन्तु पहले कोर के एड-वान्स गार्ड्स ज़ारब्रकेन और ज़ारलूई की सदरी सड़कों से शीघ्रता के साथ धावा करते अब उस रण-स्थल के समीप ही पहुंच रहे थे; और शीघ्र ही उनकी तोपख़ाने की बैटरियां आगे बढ़ कर वहां पहुंच भी गईं, तथा फ्रेञ्च मोर्चे के केन्द्र पर गोले बरसाने लगीं। जर्मन पैदलों के पहुंच जाने पर भीषण युद्ध होने लगा, और प्रतिद्वन्द्वी सेनायें कोलंबे नाले के किनारे किनारे तथा पश्चिम में प्लेटो की भुजाओं पर तक फैल कर युद्ध करने लगीं। प्रायः साठ तोपें इस समय गोले बरसा रहीं थीं, और टीले के किनारे पर दोनों ही ओर से अत्यंत ओजस्विता और वीरता प्रकट की जा रही थी, विजय-पताका कभी इधर और कभी उधर फहराती सूचित होती थी। उत्तर में मे (*Mey*) ग्राम के पास ४-थे फ्रेञ्च कोर के हटा देने पर जर्मनों को कुछ सफलता प्राप्त हुई थी, किन्तु उसी अवसर पर वहां जेनरल लैडमिरा का डिवीज़न पहुंच गया, और उसने जर्मनों को धर दबाया; अब तो इनके दहने बाज़ू में फ्रेञ्च सेना बढ़ कर उन्हें औट-फ्लैंक (Outflank) * करती मालूम हुई।

इतने में पहला जर्मन कोर भी रण-स्थल के समीप

* अपने दोनों बाज़ू पर की सेनाओं को फैला कर शत्रु-सेना के घेरने को औट-फ्लैंकिंग Out-flanking कहते हैं।

पहुंच गया, और इसके एक डिवीज़न की मुख्य २ चमुवों द्वारा फ्रेंचों का आगे बढ़ना रोक दिया गया। अब अँधेरा भी हो चला, अतः आक्रमणकारी सेनायें हट कर फ़ोर्ट सेण्ट जूलियन की ओर चली आईं।

१३-वां डिवीज़न कोलंबे के पास तब भी डँटा था, और अँधेरा होते २ में बायना के ब्रिगेड ने और दूसरे दल के निकटस्थ कोर से आये हुए १८-वें डिवीज़न ने मिल कर शत्रु-सेना को प्लेटो और ग्रीगो से निकाल कर बोर्नो वाली आदि फ्रेञ्च लैन के कुछ पीछे भगा दिया। आस-पास में अनेक छोटे-बड़े दुर्गों के रहने से अब अँधेरे में जर्मनों के लिये अधिक आगे बढ़ना असंभव हो गया, अतः कुछ रात जाते २ यह जय-पराजय-संदिग्ध संग्राम समाप्त हो गया।

समालोचनायें इस संग्राम में दोनों ही पक्ष वाले अपनी २ विजय होना बतलाते हैं; परन्तु व्यूह-विधान के नियमानुसार इस को संदिग्ध और प्रतिकर्षित (Drawn battle) संग्राम कह सकते हैं। प्रशियन योद्धा फ्रेञ्च सेना को उनके मुख्य व्यूह से हटा नहीं पाये, और उधर अपनी अधिक संख्या की सेना के रहते हुए भी फ्रेञ्च योद्धा आक्रामकों के एडवान्स गार्डों तक को दबा नहीं सके। यद्यपि प्रायः एक लक्ष फ्रेञ्च और जर्मन सेनायें रण-

स्थल के निकट ही उपस्थित थीं, किन्तु प्रशिया के केवल पांच ब्रिगेडों और फ्रांस के चार डिवीज़नों ने इस युद्ध में वास्तविक रण-कार्य्य किया था।

जिस तरह पर यह संग्राम प्रारंभ हो गया था, उस तरह पर रण-कार्य्य करने में कमाण्डों में ऐक्यता और सहकार्य्यता होना असंभव हो जाता है; पुनः प्रायः सायंकाल के समय इसका प्रारम्भ हुआ था, इसी से इसका फल संदिग्ध और अनिर्णीत रह गया। जिस तरह पर स्पायकर्न के संग्राम-काल में तोप-ध्वनि सुनते ही समीपस्थ जर्मन चमुएं रण-भूमि की ओर दौड़ पड़ीं थीं, उसी प्रकार वे इस संग्राम में भी किये थीं; इनके विरुद्ध फ्रेञ्च शाही गार्ड्स नामक चमुएं यद्यपि उस समय तीसरे कोर के पृष्ठ-भाग में ही उपस्थित थीं, किन्तु उनसे इस संग्राम में कुछ भी सहायता न बन पड़ी, यद्यपि उनके फ्रंट में, बिल्कुल ही उनकी आंखों के सामने, यह युद्ध होता रहा था। अपने पैदल डिवीज़नों के आगे अत्यन्त शीघ्रता के साथ प्रशियन तोपखानों के दौड़ आने से, तथा एडवान्स गार्ड चमुवों की लैन में पहुंच कर गोले बरसाना प्रारंभ कर देने ही से जर्मनों को कुछ थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होना संभव सका था।

जेनरल वान डर गोल्ट्ज़ का उपर्युक्त रीति पर अपने एडवान्स गार्डों से आक्रमण करवा देना केवल

किञ्चित् सफलता प्राप्त हो जाने ही से उचित ठहराया जा सकता है ; यदि कहीं आप उसमें पराजित हो गये होते, तो उनके इस कार्य की बहुत ही कड़ी आलोचना की जाती, और वे बहुत ही अदूरदर्शी और अयोग्य जेनरल ठहराये गये होते। सम्राट् की इच्छा उस समय युद्ध छेड़ने की न थी, अतः केवल अपनी उद्दंडता प्रकट करने के हेतु, तीसरे पहर के चार बज जाने पर, निष्प्रयोजन संग्राम प्रारंभ कर देना उचित कार्य नहीं कहा जा सकता है। इस समर के अपर प्रारंभिक संग्राम भी इसी तरह पर सदर की अनुमति के बिना ही छेड़ दिये गये थे ; अतः एडवान्स गार्डों की संख्या और शक्ति न्यून करने के विषय में प्रश्न तो बहुत दिनों से चला आता है, किन्तु उसको विचार-पूर्वक हल कर डालने की अब आवश्यकता मालूम होती है।

ऐसा कहा जाता है, कि फ्रेंचों के पीछे हटने में बाधा पहुंचा देने से दूसरे और तीसरे दलों के लिये मोज़ेल नदी के उतरने के अर्थ एक दिन का सावकाश मिल गया। परंतु यह बात कहां तक सत्य है, इसमें बहुत कुछ संदेह हैं। बाज़ेन ने जो पीछे हटने की आज्ञा प्रकाशित की थी, वह तो निस्संदेह अधूरी थी। इसके अनुसार १,५२,००० * योद्धाओं को एक ही सड़क से ग्रावेलाट

* इस में बोर्नी के संग्राम के हताहतों तथा मेज़ में नियुक्त किये गये गैरिज़न की संख्या शामिल नहीं है।

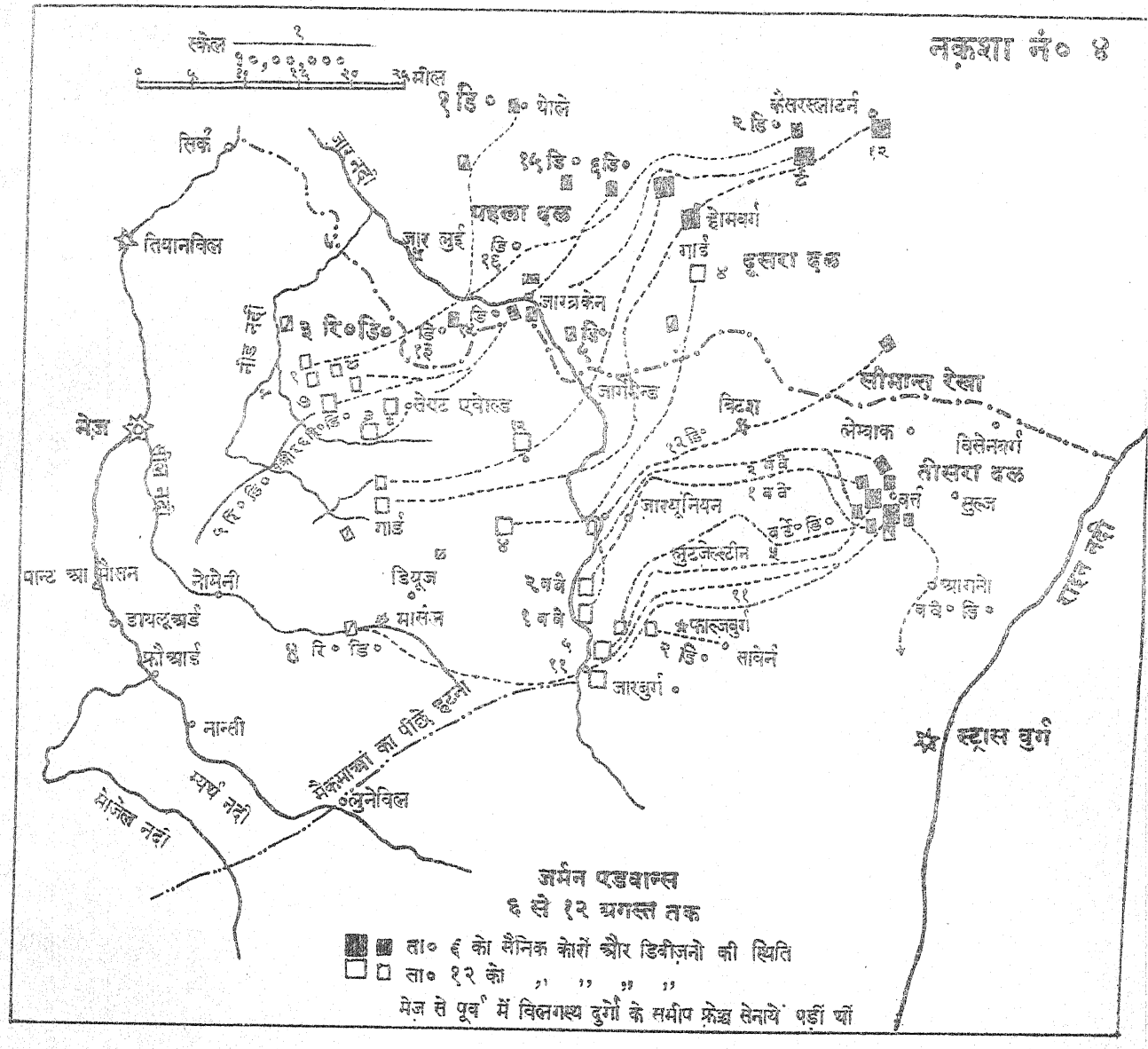
नक़शा नं० ४
स्केल १/१०,००,०००
मील
१ डि० थोले
कैसरस्लाटर्न
२ डि०
१२
सिर्क
जार नदी
१५ डि० ६ डि०
पहला दल
होमबर्ग
तियानविल
जार लुई
गार्ड
दूसरा दल
जारब्रकेन
३ रि० डि०
नीड नदी
सीमान्त रेखा
सेण्ट एवोल्ड
जार्गमेन्ड
विटश
लेम्बाक
विसेनबर्ग
मेज़
तीसरा दल
जारयूनियन
वर्त
सुल्ज
गार्ड
लुटजेल्स्टीन
पान्ट आ मौसन
नोमेनी
डियूज
आगनो
डायलूअर्ड
मार्सल
फाल्जबुर्ग
फ्रौआर्ड
सावेर्न
जारबुर्ग
नान्सी
स्ट्रास बुर्ग
मैकमाओं का पीछे हटना
लुनेविल
म्यर्थ नदी
मोज़ेल नदी
राइन नदी
जर्मन एडवान्स
६ से १२ अगस्त तक
ता० ६ को सैनिक कोरों और डिवीज़नो की स्थिति
ता० १२ को ,, ,, ,, ,,
मेज़ से पूर्व में विलगस्थ दुर्गों के समीप फ्रेञ्च सेनायें पड़ीं थीं

जाना पड़ता। ता० १४ के सायंकाल तक में अपनी सब चमुवों को ग्रावेलाट के प्लेटो पर पहुंचा कर वहां वे उन्हें संगठित और व्यूह-बद्ध कर लेना चाहते थे; तथा अपने इस अभीष्ट की सूचना भी उन्होंने महाराज तक को दे दी थी। किन्तु यदि कुछ विचार के साथ उन्होंने साधारण रीति से भी इसका हिसाब कर लिया होता, तो उनको यह अवश्य ही प्रकट हो सकता था कि उतने समय में उनकी सब चमुत्रों का वहां पहुंचना नितांत असंभव था। पीछे हटने में जिन नियमों के अनुसार चमुवों के मार्च की आज्ञा की गई थी, उनका ठीक ठीक प्रतिपालन नहीं किया जा सका, घबराहट में भिन्न २ चमुएं भिन्न २ मार्गों से चल पड़ीं, निर्णीत सदरी सड़क से केवल आधी सेना चली थी, और उसको भी वहां पहुंचने में छत्तीस घंटे लग गये! बोर्नी में रण-कार्य्य उपस्थित हो जाने पर फ्रेञ्च सेनावों का चार कालमों में विभक्त करके यथोचित रीति से पीछे हटाने में मार्ग में अनेक बाधावों के आने में तो कोई संदेह नहीं था, किन्तु वास्तविक अवस्था में कुछ विशेष अंतर किया गया, या क्या, इसमें संदेह है।

ऐसा भी प्रकट होता है, कि दुर्ग के पश्चिम भाग में हट जाने के लिये बाज़ेन ने एक साधारण आज्ञा प्रकाशित की थी, मार्च के विवरण का निर्णय आपने अपने

स्टाफ़ अफ़सरों के ऊपर छोड़ दिया था, अर्थात् कौन सी चमू किस मार्ग से और किस समय प्रस्थान करेगी, इसके विषय में आपने कुछ भी हुक्म नहीं दिया था। किसी बड़ी सेना का नदी को उतार ले आना, और उसको उसी दिन मेज़ ऐसे नगर की पतली गलियों से एक ही दिन में बाहर निकाल ले जाना अत्यंत असंभव है। यदि म्यज़ नदी तक का हट जाना एक बार निर्णय कर लिया गया था, तो पान्ट-आ-मौसन और कोर्नी के पुलों को, तथा नगर के अधोभाग में स्थित पीपे वाले पुलों को आपको काम में लाना चाहिये था, तथा अपने एक कोर के संवरण में मेज़ से होकर ट्रेनों का भेजना भी उनके लिये लाभदायक हुआ होता। यदि शत्रु उनका पीछा करने में कुछ अधिक चंचलता और ओजस्विता प्रकट करते, तो वे मोज़ेल नदी के किनारों पर रोक दिये जा सकते थे; और इस तरह पर अनेक समानांतर सड़कों से होकर ता० १५ अगस्त तक में म्यज़ नदी के किनारे तक का हट जाना सरल हो सकता था। विलंब ही उनके लिये अधिकतर हानिकारक हुआ, महाराज के तर्क-वितर्क से तथा ऐन वक्त पर उच्चतम कमाण्ड में परिवर्तन हो जाने से शायद उपर्युक्त रीति से पीछे हटने के कुछ प्रबंध ता० ११ या १२ अगस्त से प्रारंभ नहीं किये जा सके होंगे।

फ्रांस वालों के लिये इस अवसर पर सार्वत्रिक संग्राम (General Engagement) स्वीकार कर लेना उचित

था अथवा नहीं, इस विषय में सभी रण-नीतिक लोग प्रायः सहमत हैं। यदि उन लोगों ने पीछे हट जाना ही अपने मन में ठान लिया था, तो निरर्थक के संग्राम में अपने योद्धाओं का नष्ट करना उनके लिये निस्संदेह अनावश्यक था। तीसरे पहर के कुछ थोड़े से घंटे में कोई महत्व की विजय प्राप्ति नहीं की जा सकती थी। इसके सिवाय मेज़ का दुर्गों का सुरक्षित दशा में न होने का जो बहाना पेश किया गया है, वह कदापि ग्राह्य नहीं हो सकता है। पहले तो यही संभव नहीं था, कि जर्मन लोग तुरंतही उनदुर्गों के उड़ाने के लिये (Storm) उद्यत ही हो जाते, और यदि किंचित् उद्योग भी करते, तो आत्म-संरक्षक फ्रेञ्च सेना के लिये उनके किसी रीअर गार्ड की चमुओं से सहायता प्राप्त हो सकती थी, और उसमें उनको अवश्यं-भावी विजय भी मिल गई होती।

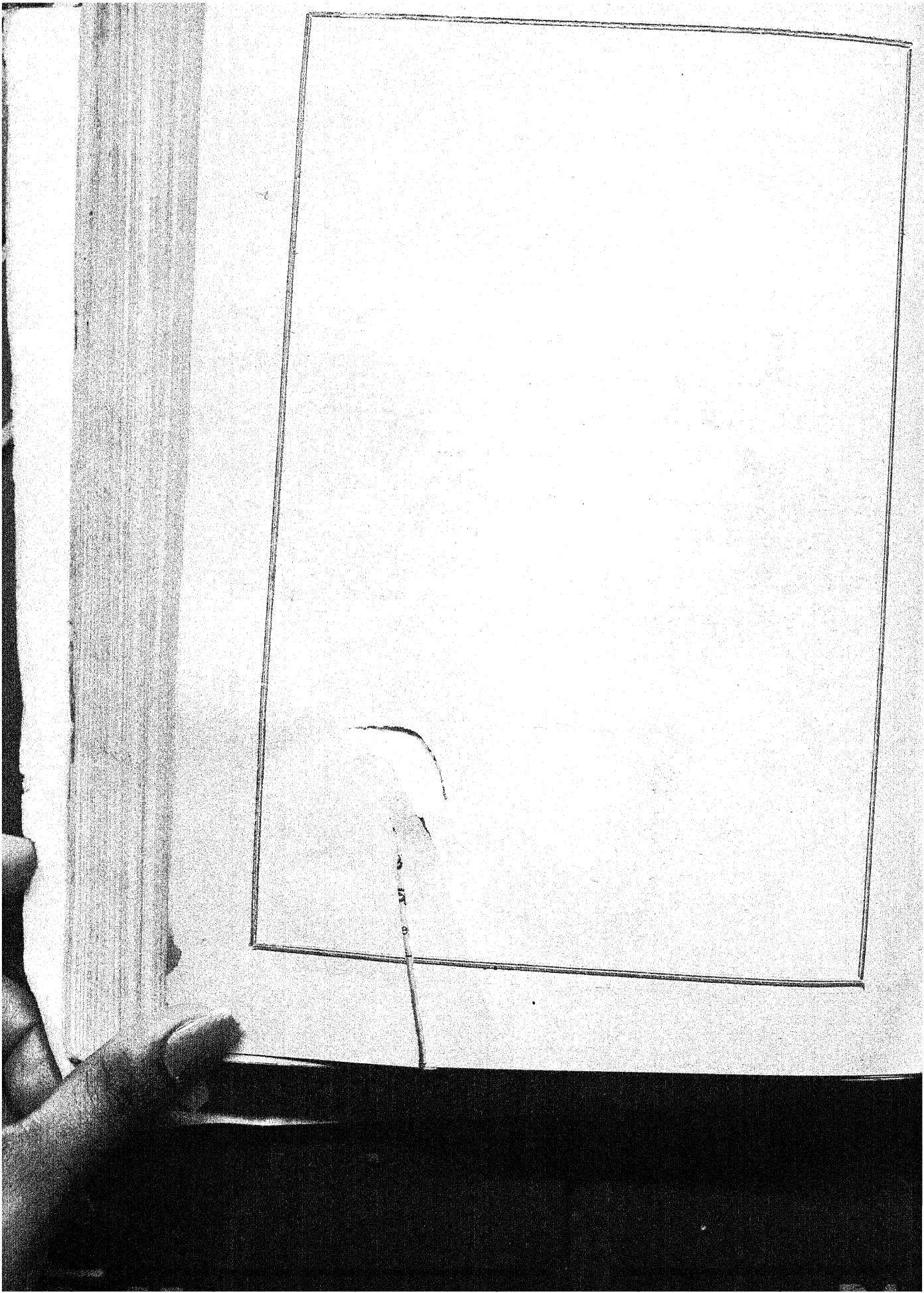

अध्याय ७

वियानविल-मार्स-ला-टूर

जर्मनों का एडवान्स—१५ अगस्त की स्थितियां—फ्रेञ्च सेनाओं का पीछे हटना—१५ अगस्त की स्थितियां—समालोचनायें—जर्मनों का एडवान्स—वियानविल-मार्स-ला-टूर का दोपहर तक का संग्राम—समालोचनायें—संग्रामोत्कर्ष एक बजे तक—दो बजे तक—तीन से पांच बजे तक—पांच से सात बजे तक—समालोचनायें।

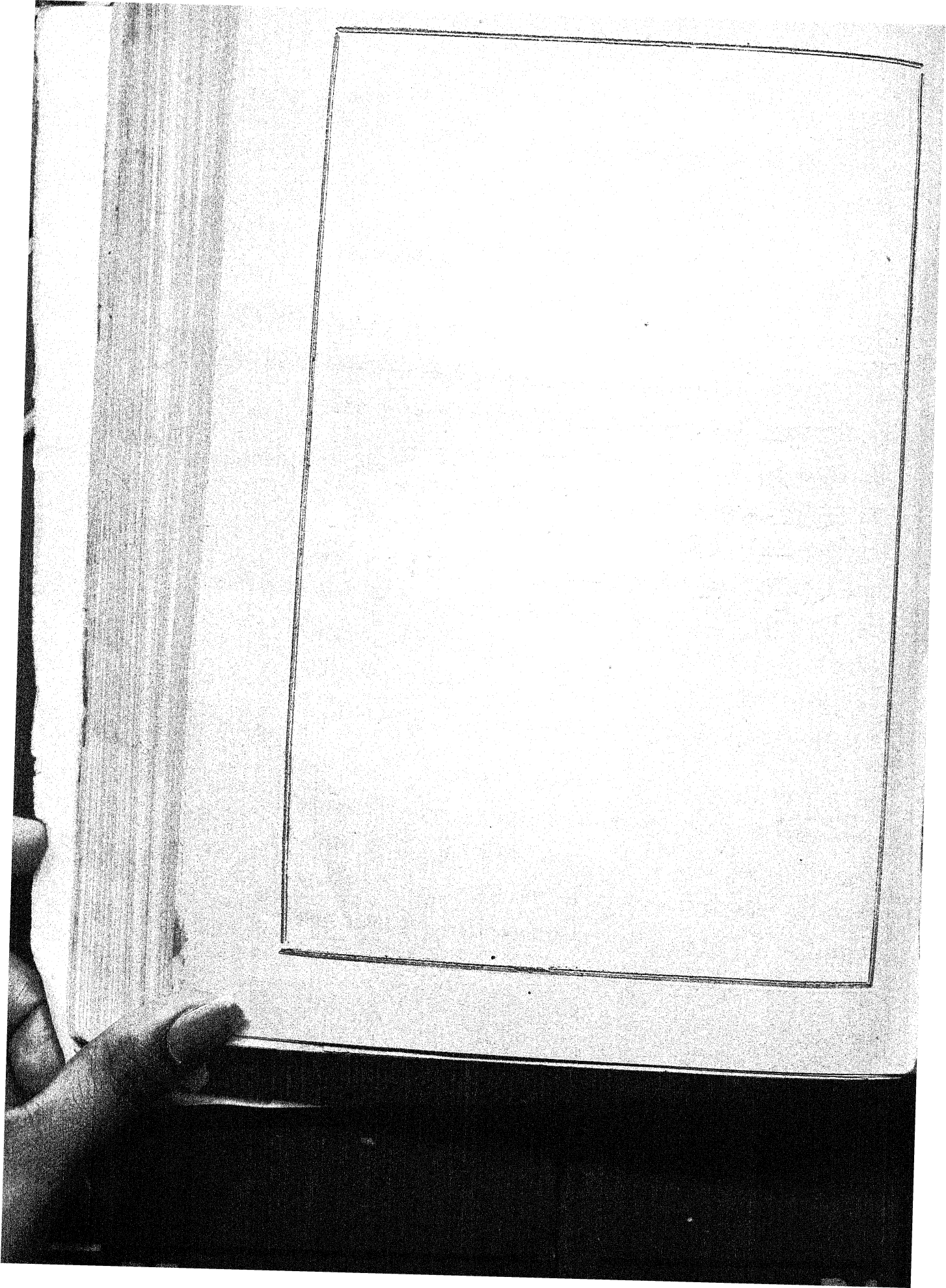

अध्याय ७

वियानविल-मार्स-ला-टूर

जर्मनों का एडवान्स

बो नों के संग्राम के कारण जर्मन दलों के एडवान्स में कुछ भी विघ्न पड़ने नहीं पाया, क्योंकि संग्राम प्रारंभ होने के पहले ही सभी चमूवों के पूर्व-निर्णीत मार्च प्रायः समाप्त हो चुके थे। मेज़ नगर को पूर्व दिशा में जो यह संग्राम हो गया था, और जिसके कारण ऐसी दुर्दशा में फ्रेंच-सेना फँस गई थी, वह अतर्कित नहीं हो पाया था, किन्तु उसके लिये सब रण-प्रबंध पहले ही से रच लिये गये थे; और चूंकि उस दिन के तीसरे पहर से यह संग्राम प्रारंभ हुआ था, केवल इसी कारण से एक ही डिवीज़न की चमुएं इसमें योग देने के लिये प्रस्तुत हो सकी थीं, अन्यथा और भी डिवीज़नों की चमुएं अवश्य ही वहां पर संकर्षित हो आई होतीं।

ता० १४ अगस्त की रात में, जिस समय पहला दल रण-भूमि के आस-पास में पड़ा हुआ था, दो दूसरे जर्मन कोर (१०-वां और गार्ड) पान्ट-आ-मौसन और ड्यलू-अर्ड के पास मोज़ेल नदी के तट पर पहुंच गये। एक अपर कोर (४-था) वहां से केवल ७ मील पर तथा तीन

दूसरे कोर (३-रे ९-वें और ११-वें) उस नदी के तट से प्रायः एक मंज़िल पर पहुंच गये थ। रिसाले वालों के पश्चिम तरफ़ बढ़ कर गिर्दावरी करने पर उन्हें शत्रु-सेना का कुछ भी पता न मिला था।

फ्रेञ्च सेनावों द्वारा अपने पहले दल के ऊपर प्रत्याक्रमण किये जाने की आशंका दूर करने के लिये ता० १५ के सबेरे ही समुचित प्रबंध कर दिये गये। दूसरे दल का ९-वां कोर रण-भूमि की ओर बढ़ा दिया गया। तथा मुख्य सेनापति की आज्ञा से ३-रे कोर का वितरण भी मुल्तवी कर दिया गया। दुर्ग के पूर्व ओर से प्रत्याक्रमण किये जाने का भय ज्यों ही न्यून पड़ गया, कि समस्त दूसरा दल पुनः पहले की भांति बढ़ कर उस नदी के घाटों को स्वाधिकार में लाने की धुनि में लग गया। समस्त आज्ञावों का मर्म साधारणतः म्यज़ नदी के पूर्व तरफ़ मार्च करने का था, किन्तु मेज़-वर्डन रोड से चलने की ख़ास हिदायत भी कर दी गई थी। उपर्युक्त संग्राम में योग देने वाले दोनों कोर (१-ले और ७-वें कोर) वहीं पर जहां वे संग्राम के पहले रहे थे, पड़े रहे आये।

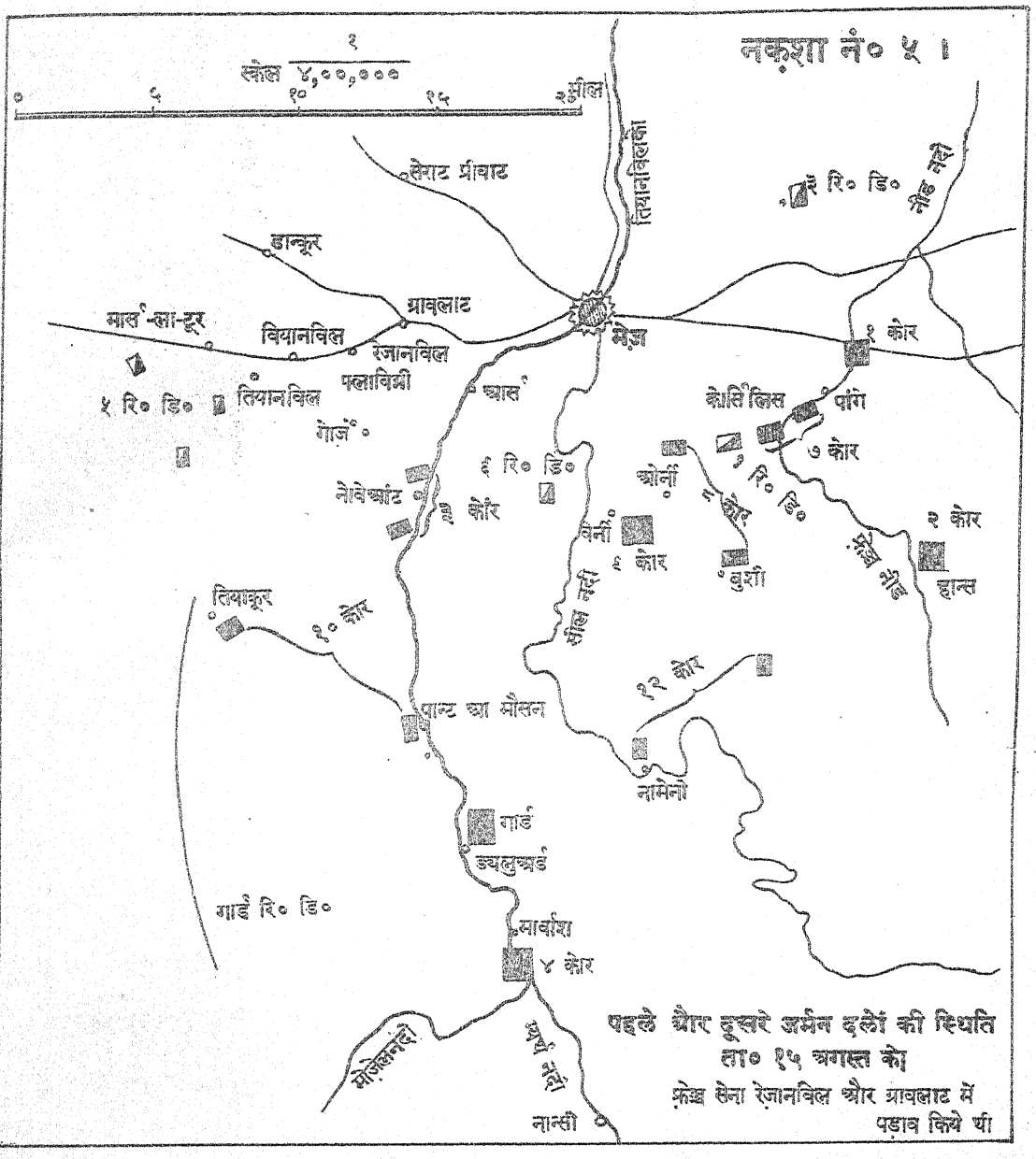

पहले और दूसरे जर्मन दलों की स्थिति
ता० १५ अगस्त को
फ्रेञ्च सेना रेज़ानविल और ग्रावलाट में
पड़ाव किये थी

१५ अगस्त की रात की स्थितियाँ

पहला दल

१-ला कोर...पांगे के उत्तर और दक्षिण में, नीड के तट पर।
७-वां कोर।
८-वां कोर पश्चिम तरफ़, ओर्नो और बुशी के समीप।
३-रा कोर...नोवीआन्ट में।
१०-वां कोर...पोन्ट-आ-मौज़न-थियाकूर में।
गार्ड कोर...ड्यलूअर्ड में।

दूसरा दल

४-था कोर...मार्बाशे में।
९-वां कोर...वेर्नों में।
१२-वां कोर...नोमेनी में।
२-रा कोर...हान्स-सर-नायड में।

तीसरा दल

मर्ते नदी के तट पर, नान्सी से लुनेविल पर्यंत।

५-वां रिसाला डिवीज़न—मेज-वर्डेन रोड के समीप।
गार्ड्स रिसाला डिवीज़न—थियाकूर के दक्षिण में, १०-वें, गार्ड, और ४-थे कोरों का फ्रंट संवरण किये।
३-रा रिसाला डिवीज़न—मेज़ के पूर्वोत्तर में, पहले दल के दहने बाज़ू में।

५-वें रिसाले डिवीज़न का संस्पर्श फ्रेञ्च रिसाले से हो जाने के बाद वह मार्स-ला-टूर के दक्षिण-पश्चिम में पड़ाव कर दिया। रेज़ानविल के समीप शत्रु की किसी बहुत बड़ी सेना के पड़ाव होने की सूचना मिली। इस तरह पर ता० १५ के सायंकाल में मेज़ से वर्डन वाली बड़ी दक्षिणी सड़क पर जर्मनों की दृष्टि थी, तथा इन लोगों का अनुमान था, कि मुख्य फ्रेञ्च सेना ब्राई रोड से होती हुई पीछे हट रही है, अतः उनके रीअर गार्ड को तंग करने के लिये केवल दो समीपस्थ जर्मन कोरों का नियुक्त कर दिया जाना समुचित समझ लिया गया। 'शत्रु-सेना अधिक दबाई जाने पर लौट कर पुनः मेज़ को वापस चली जायगी, यह ख़्याल जर्मनों के हृदय में पहले नहीं प्रवेश किया, उन का ख़्याल था, कि आगामि बड़ा संग्राम म्यज़ नदी के तट पर कहीं होगा।

१४ से १६ अगस्त तक फ्रञ्च सेना का पीछे हटना

ग्रावेलाट से मार्स-ला-टूर और डान्कूर को जाने वाली दो मुख्य सड़कों से उस समय फ्रेंच सेनाओं के पीछे हटने का प्रबंध किया गया था। दक्षिण वाली सड़क पर २-रे, ६-वें और गार्ड कोरों के आगे २ डेफोर्टन के कमाण्ड का दूसरा रिसाला डिवीज़न चलाये जाने वाला था, तथा दूसरी सड़क पर ३-रे और ४-थे कोरों के आगे २ डू बारेल का डिवीज़न चलाये जाने वाला था। इस निर्मूल समाचार

के फैल जाने से, कि जर्मन दल का एक बहुत बड़ा अंश मोज़ेल नदी को मेज़ के नीचे पार कर रहा है, जो सड़क ब्रेई से होती हुई उत्तर से गई थी, उसको फ्रेंच काम में नहीं लाये, पुनः एक बात यह भी थी, कि यह उत्तर वाली सड़क कुछ घूम कर पहाड़ियों के मध्य से भी गई थी। अनावश्यक माल असबाब के बोरों से मार्गों के अवरुद्ध हो जाने से, तथा मोज़ेल नदी पर पुलों की न्यूनता रहने से, मेज़ नगर के भीतर से होकर पीछे हटने में बहुत विलंब हो गया। दक्षिण सड़क पर वाली चमुएं ता० १५ अगस्त को मेज़ से कोई दश मील पश्चिम तरफ़ हट गईं थीं, किन्तु जब तक उनका पृष्ठ-भागस्थ कोर निर्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुंच पाया, तब तक वे वहां से अधिक आगे न बढ़ने पाईं। डे फोर्टन के रिसाले का संस्पर्श शत्रु-सेना से मार्स-ला-टूर के दक्षिण में हो गया, किन्तु थोड़ी सी झटा-पटी के पश्चात् फ्रेंच रिसाला वियानविल की ओर हट गया। उत्तर वाली सड़क पर भी कुछ थोड़े से जर्मन सवारों से झटापटी हो गई। ये सवार शायद वहां दक्षिण ओर से भटक पड़े थे। ता० १५ के सायंकाल में फ्रेंच चमुवों की अधो लिखित स्थितियां थीं:—

१५ अगस्त की रात्रि की स्थितियां ३-रा कोर, ६-वां कोर — मेज़-पेरिस रोड के दोनों किनारों पर, रेज़ानविल के समीप।

३-रा कोर— दहनी ओर, इसका एक बाज़ू पीछे निकला हुआ था।

गार्ड कोर— ग्रावेलाट में, रिज़र्व में।

४-था कोर— मेज़ से जाने वाली सड़कों पर।

फोर्टन का रिसाला डिवीज़न—वियानविल में।

बारेल का ,, ,, डान्कूर में।

समालोचनायें

मार्शल बाज़ेन का इस तरह पर शत्रु-समाचार से अनभिज्ञ रहना अतीव अद्भुत मालूम होता है, ऐसी बात केवल गिर्दावरी ही के दोष से होनी संभव नहीं थी, परन्तु इससे तो फ्रेंच इन्टेलिजेन्स डिपार्टमेन्ट (Intelligence Department) अर्थात् शत्रु-समाचार का संग्रह करने वाला मुहक्मा ही अयोग्य मालूम होता है। यदि पीछे हट जाना निश्चय कर लिया गया था, तो मेज़ के पास की नदी पर के पुलों का नष्ट न कर दिया जाना अक्षम्य मालूम होता है। यदि नदी के तट पर शत्रु-सेना के रोकने की आवश्यकता नहीं समझी गई थी, तो भी आगे वाली जर्मन चमुवों का कम से कम कुछ घंटों के लिये रोक रखना कुछ विशेष कठिन काम नहीं था। शत्रु-चमुवों के मेज़ के दक्षिण में पहुंच

जाने का समाचार उन्हें ता० १५ ही को मालूम हो गया था, परन्तु फ्रेञ्च सैनिक-संचालनों पर विचारपूर्वक देखने से ऐसा मालूम होता है, कि गोया इन लोगों ने शत्रु-सेना का नदी उतरना दुर्ग के उस भाग से समझ लिया था, जिधर तियानविल है, यद्यपि उनका वैसा ख़्याल बिल्कुल ग़लत था।

ता० १६ के प्रभात ही से पीछे हटना पूर्ववत् ज़ारी रखने के लिये ता० १५ अगस्त की रात्रि में पुनः हुक्म निकला; आज्ञापत्र में यह भी सूचना दे दी गई थी, कि वियानविल रोड पर शत्रु द्वारा आक्रमण किये जाने की संभावना है। मार्शल ले बोयफ़ (Marshal Le-Boeuf) के निवेदन पर पीछे पड़े हुए ४-थे कोर के डिवीज़न की प्रतीक्षा कर लेने के लिये दोपहर तक पीछे हटना पुनः मुल्तवी कर दिया गया। दक्षिण तरफ़ से आक्रमण के होने की प्रतीक्षा भी वहां अवश्य की जा रही थी, किन्तु कितनी संख्या और किस शक्ति की शत्रु-सेना उधर से इनके ऊपर आ सकेगी, शायद इस बात का यथार्थ अनुमान बाज़ेन को नहीं हो सका था।

जर्मनों का एडवांस

जब इस बात का ठीक २ पता लग गया, कि 'फ्रेञ्च सेनायें पीछे हट रही हैं, तब म्यज़ नदी के तट पर पहुंचने के पूर्व ही कहीं न कहीं पर आक्रमण करके उनको अधिक पीछे हट जाने

से रोक रखना ही अब जर्मनों का मुख्य उद्देश हुआ। ता० १५ के सायंकाल में जो आज्ञायें मोटके की तरफ़ से प्रकाशित हुईं थीं, उन में यह प्रकट किया गया है:—"मेज़-वर्डन वाली सड़कों ही की ओर ओजस्विता पूर्वक दूसरे दल के आक्रामक बनने ही में विजय-लाभ की पूर्ण आशा की जा सकती है।" रेलवे लैन की रक्षा के लिये पहले दल का १-ला कोर कोर्सिलिस में रख दिया गया, तथा ७-वें और ८-वें कोरों को सील नदी की ओर शीघ्रता के साथ बढ़ जाने की आज्ञा कर दी गई। प्रिन्स फ्रेडरिक चार्ल्स का यह ख़्याल हुआ, कि इस अवसर पर दूसरे दल के दहने विंग (Wing) को उत्तर तरफ़ बढ़ा देना, और बायें विंग को पूर्ववत् पश्चिम ही तरफ़ म्यज़ नदी की ओर बढ़ने देना परमोत्तम होगा। ५-वें रिसाला डिवीज़न में ६-वें को भी संयुक्त करके उन्होंने ३-रे कोर को गोर्ज़े से होकर और १०-वें कोर को थियाकूर (Thiaucourt) से होकर मेज़-वर्डन रोड की ओर बढ़ा दिया। आवश्यकता पड़ने पर इन दोनों कोरों की सहायता में ९-वां कोर भी पहुंच सकता था, तथा एक दिन के बाद उन दोनों को १२-वें कोर तथा पहले दल की अधिकांश चमुवों से भी सहायता मिल सकती थी।

५-वें रिसाला डिवीज़न के पेरिस रोड के आस-पास में पहुंचने और डे फोर्टन के रिसाले के साथ उसके

संस्पर्श और किंचित् झटापटी होने का कुछ थोड़ा सा वर्णन ऊपर किया जा चुका है। ता० १६ अगस्त के सवेरे ही १०-वें कोर के कमाण्डर ने अपने रिसाला डिवीज़न के साथ में दो अश्वारोही तोपख़ाने की बैटरियां लगा और उसे अधिक शक्तिमान् बना कर सबको गिर्दावरी करने की आज्ञा की। ३-रे कोर के कमाण्डर ने भी ऐसी ही आज्ञा ६-वें रिसाला डिवीज़न को दी, और वह गोर्ज़े के ऊपर वाले प्लेटो पर चढ़ गया। दोनों ही कोरों की पैदल और तोपख़ाने वाली चमुएं यथा-संभव शीघ्रता के साथ उनको सँभालनेके लिये आगे बढ़ाई गईं।

वियानविल-मार्स-ला-टूर का संग्राम, १६ अगस्त

ता० १६ अगस्त को प्रभात होते ही महाराज नैपोलियन अपने पड़ाव से एटेन होते हुए सड़क २ से प्रस्थान कर गये, किन्तु चूंकि तब तक लैण्डमिराल्ट का कोर दहने बाज़ू में अपने पोज़िशन (स्थान) पर नहीं पहुंच पाया था, इसी से मुख्य सेना का पीछे हटना उस तारीख़ के तीसरे पहर तक प्रारंभ न हो सका।

चार अश्वारोही बैटरियों को साथ में लिये ५-वें रिसाला डिवीज़न की शक्ति-पूर्ण गिर्दावरी प्रातःकाल के नौ बजे से कुछ ऊपर प्रारंभ हुई। रिसाले के सवारों के आवरण (Cover) में तोपख़ाने के घोड़े भी दौड़ते (Gallop)

और बैटरियों को घसीटते लिये जाते थे, और शीघ्र ही इनमें की अधिकांश तोपें वियानविल की दक्षिण-पश्चिमस्थ पहाड़ी पर लगा कर ठीक कर ली गईं, और तत्पश्चात् उस ग्राम से पश्चिमस्थ फ्रेञ्च रिसालें के कैम्प (शिबिर) पर इन तोपों से गोलों की वृष्टि प्रारंभ हो गई। इस एकाएक आक्रमण से पूर्णतः विस्मित होकर फ्रेञ्च रिसाले के स्क्वाड्रन अत्यन्त छिन्न-भिन्न हुए पीछे की ओर भाग चले, और अंत में रेज़ानविल में निज पैदल बटालियनों के शिबिर के पीछे पहुंच कर वे पुनः अग्रेढ़ी-बद्ध हुए। इधर कुछ अधिक पूर्व दिशा में, गोर्ज़े के ऊपर वाले प्लेटो पर, ६-वां रिसाला डिवीज़न चढ़ गया, और वहां से शत्रु के आउट-पोष्ट (Out-post) सवारों को मार भगाया। ड्वायस डि-सेण्ट आर्नाल्ड से लेकर ट्रानविल के टीलों पर्यंत फैले हुए शत्रु-सवारों की चौड़ी अर्द्ध-वृत्ताकार लैन को दबाती रेज़ानविल के केन्द्र से निकली लैनों पर आक्रमण करने के लिये फ्रेञ्च पैदल सेनायें आगे बढ़ीं। दोनों ही प्रतिद्वंद्वी दलों के योद्धा अब आक्रामक बन गये, किन्तु थोड़ी ही देर बाद—प्रायः दश बजे—५-वें और ६-वें पैदल डिवीज़नों के एडवांस गार्ड्स रिसाले डिवीज़न से बने हुए चाप के छोर पर पहुंच गये। (मोज़ेल नदी पार करने के बाद तीसरे

कोर के कमाण्डर ने अपने एक डिवीज़न को गोर्ज़े-वियानविल रोड पर, तथा दूसरे को ग्रानविल के मार्ग से मार्स-ला-टूर की ओर बढ़ा दिया।)

दहनी ओर, ५-वां प्रशियन डिवीज़न पश्चिम तरफ़ के टीलों पर अपने तोपख़ानों को लगा कर जय-पराजय उठाते क्रमशः गोर्ज़े की घाटी तक पहुंच गया, और निज दहने विंग (Wing) द्वारा ग्रायस-हि-सेण्ट आर्नाल्ड के उत्तरीय छोर पर स्वाधिकार कर लिया। इस डिवीज़न का बांया विंग पीछे हटा दिया गया था, और इसके तोपख़ाने पर भी संकट पड़ने की संभावना हो गई थी, कि इतने में ५२-वीं रेजिमेण्ट के वहां पहुंच जाने और अत्यंत शूरता के साथ संग्राम में योग देने से युद्ध पुनः सम-भाव धारण कर लिया; कुछ ही देर बाद नावेआंट से १०-वें कोर की कुछ सेना वहां पहुंच गई, फिर तो इन लोगों ने पलाविग्नी के दक्षिण वाले टीले पर अपना ग्रधिकार भी जमा लिया। मार्से-ला-टूर को जाने वाले तीसरे कोर के ६-वें डिवीज़न के वानविल में पहुंच जाने पर फ्रेञ्च सेना के पीछे हटने का मार्ग सर्वथा अवरुद्ध हो गया सा सूचित हुआ, और उस डिवीज़न के दोनों ब्रिगेड दहनी ओर घूम कर तथा अपनी शक्तिमती बैटरियों की सहायता में प्रयत्न वियानविल को, पुनः पलाविग्नी को शत्रु से छीन लिये।

दोपहर के समय, स्वाधिकार में आये हुए दोनों ग्रामों से लेकर सेण्ट आर्नाल्ड के वन पर्यंत, अर्थात् प्रायः चार मील में, तीसरे कोर की चमुवों तथा एक प्रवल शक्ति के तोपखाने की सेना का फ्रंट फैला हुआ था। युद्ध की दूसरी लैन में दो डिवीज़न रिसाले और एक रेजिमेण्ट पैदल थे।

अब तक फ्रास्सर्ड वाले दूसरे फ्रेञ्च कोर की चमुवों ही को इस युद्ध का कठिनतम आघात सहना पड़ा था, और वे धीरे २ रिज़ानविल की ओर हटती जाती थीं। ६-वां फ्रेञ्च कोर प्रायः पश्चिमाभिमुख हुआ रिज़ानविल और उसके उत्तरीय भागों पर अधिकार कर लिया; और इसकी गार्ड्स सेना भी ग्रावेलाट प्लेटो पर पहुंच गई। फ्रेञ्च सेना का बांया बाज़ू मेज़ में ठहरा था, और उसका दहना बाज़ू एक भयंकर तोपखाने और प्रबल रिसाले की संरक्षा में प्राचीन रोमन रोड पर पड़ा हुआ था। ४-थे कोर को अपने पीछे लिये हुए ३-रा फ्रेञ्च कोर रण-लैन की दहनी ओर बढ़ता आ रहा था।

समालोचनायें

अत्यंत ही ओजस्विता पूर्वक आक्रामकी वृत्ति धारण करके जब तक ३-रा प्रशियन कोर पराजित करके हटा नहीं दिया जाता, तब तक फ्रेञ्च सेना के लिये पीछे हटकर मार्स-ला-टूर रोड पर पहुंचना अब सर्वथा असंभव हो गया। प्रशियन आक्रामकों को

सँभालने के लिये उनके पीछे रिज़र्व सेना कुछ भी नहीं रह गई थी, पस यह समझ में नहीं आता है, कि मार्शल बाज़ेन ने अपनी अधिक संख्या और शक्ति की सेनावों के रहते हुए भी उनसे लाभ उठाने का यत्न क्यों नहीं किया। प्रत्युत् मार्शल बाज़ेन की हार्दिक इच्छा मेज़ से संबंध रखे रहे आने की थी, और इसी से उनका मुख्य ध्यान निज बांयें विंग की ओर रहा आया, गार्ड्स कोर पूरा और ६-वें कोर की कुछ चमुवों को ब्वायस डेस आगनान्स के सम्मुख आपने एकत्रित कर रखा था, यद्यपि यह स्थान नितांत ऐसा था, कि इधर से शत्रु का आक्रमण होना कदापि संभव नहीं हो सकता था।

संग्रामोत्कर्ष १२ से १ बजे तक

अपने २-रे कोर के हटते हुए योद्धावों के हृदय में नवीन रणोमंग और समरोत्साह उत्पन्न करने के लिये फ्रेंच गार्ड सेना के क्विरासियर्स (Cuirassiers) अर्थात् ज़िरहबख्तर-धारी सवारों की रेजिमेण्ट ने लौट करके निज पीछा करने वाली शत्रु की कम्पनियों पर धावा कर दिया, किन्तु मार्ग में गाड़ी-छकड़ों और अपर सैनिक सामग्रियों के मैदान में इधर-उधर पड़ी होने से इस रेजिमेण्ट को प्रशियन कम्पनियों की प्राण-संहारक अग्नि-वृष्टि के सम्मुख बढ़ने का साहस न पड़ा। उधर इस रिसाला रेजिमेण्ट को अपने ऊपर आती हुई देखकर दो प्रशियन हरज़ार

रिसाला रेजिमेण्टें स्वयं बढ़कर उस पर प्रत्याक्रमण कर दीं, अब तो फ्रेञ्च सवारों को भाग कर अपना ही प्राण बचाना कठिन पड़ गया, स्वयं सेनापति मार्शल बाज़ेन बंदी होते २ बँच गये।

तत्पश्चात् ६-वें प्रशियन रिसाला डिवीज़न को फ्रंट में बढ़ने की आज्ञा हुई; किन्तु उसके कुछ ही पहले कुछ फ्रेञ्च चमुएं रिज़ानविल में नियुक्त कर दी चुकी थीं, और उन्हीं के भयानक फैर से उपर्युक्त ६-वें रिसाला डिवीज़न का आगे बढ़ना बिल्कुल न हो सका, केवल आक्रमणकारी चमुवों के जेनरल एडवांस में किंचित् संवरण मात्र वह कर सका।

संग्रामोत्कर्ष, २ बजे तक

अब दिन के दो बज गये, और युद्ध किंचित् स्तंभित हो गया। आक्रामक चमुएं थक कर शिथिल पड़ गई थीं, उनका अम्युनिशन भी प्रायः समाप्त हो चुका था, रिज़र्व में एक भी पैदल बटालियन या तोपख़ाने की बैटरी नहीं रह गई थी। फ्रेञ्च योद्धागण क्रम क्रम से उन के दहने बाजू को दबाते बढ़ते आ रहे थे, और ऐसा प्रकट होता था, कि अपने समस्त ६-वें कोर से अब वे वियानविल की ओर शीघ्र ही आक्रमण प्रारंभ करना चाहते ही हैं।

इस संकट के अवसर पर उपर्युक्त नियुक्त सैनिक कोर पर वान ग्रेंडो के कमाण्ड के छः स्क्वाड्रन सवारों

ने सिंगल लैन (Single Line) में होकर धावा कर दिया। 'इन शूर-वीरों के धावे को न तो फ्रेञ्च पैदल ही रोकने में समर्थ होते हैं, और न तोपों के गोलों ही से उनका मुख मुड़ता है! अहा! अब तो पृष्ठ-भागस्थ पहाड़ियों पर की फ्रेञ्च बैटरियों में घोड़े जोते जा रहे हैं, और उनके संरक्षार्थ वहां भागने की तय्यारियां हो रही हैं!! परन्तु ३,००० क़दम बढ़ आने के पश्चात् इन साहसी योद्धाओं के पीछे हटाने के लिये बिगुल बज जाती है!! शत्रु की गोले-गोलियों से इनके कितने ही साहसी सवार भूमि-शायी हो गये हैं, कितनों की छाती में फ्रेञ्च सवारों के भाले गुंथ गये हैं, तथापि ये शूर-वीर प्रशियन सवार निज अभीष्ट साधन में निमग्न हैं!! अब देखो! बिगुल की आवाज़ पर उन को रुकना पड़ता है, और वे पीछे हट रहे हैं; जितने सवार प्रारंभ में प्रस्थान किये थे, उनकी केवल आधी ही संख्या पुनः स्वस्थान पर लौट आ सकी है!!' इन्हीं शूर-वीर सवारों की अपूर्व वीरता से प्रशियनों को समय मिल गया, फ्रेञ्च पैदल चमुओं का एडवांस कुछ काल के लिये रुक गया। तत्पश्चात् दोनों ओर से नई २ चमुएं दोनों ही दलों की सहायता के लिये पहुंचने लगीं।

संग्रामोत्कर्ष, ३ से ५ बजे तक

३-रे और ४-थे कोरों के पहुंच जाने पर फ्रेंच सेना प्रबल पड़ गई, और वह शत्रु सेना को दबा कर आगे बढ़ी, तथा इसमें

के चार डिवीज़न ट्रानविल के बन की ओर बढ़े। इस बन पर अपना २ अधिकार जमाने के लिये दोनों ही ओर वालों ने पूरा २ उद्योग किया, किन्तु संख्या की अधिकता के कारण एक घंटे के बाद फ्रेञ्च सेना जर्मनों को दबा लेने में समर्थवती हो गई, तीसरे जर्मन कोर के निर्बल बांये बाज़ू की सेना वहां से हट कर ट्रानविल ग्राम की ओर चली गई।

इधर, इसी बीच १०-वें जर्मन कोर को, जो उस समय थियाकूर से होता हुआ मार्च कर रहा था, युद्ध-ध्वनि सुने जाने पर रण-भूमि की ओर बढ़ने की आज्ञा की गई। इस कोर के कमाण्डर ने पहले अपने तोपखाने वालों को शीघ्रता के साथ आगे दौड़ा दिया, और वे बढ़कर तीसरे कोर की बैटरियों के साथ योग भी देने लग गये। इन सबों की संयुक्त गोलंदाज़ी से ट्रानविल बन की दोनों भुजाओं से फ्रेञ्च पैदलों का आगे बढ़ना रुक गया। अगले पैदल ब्रिगेड ने शत्रु-सेना को मार कर पुनः उसी जंगल में भगा दिया, और पांच बजते २ अपने डिवीज़न के दूसरे ब्रिगेड की सहायता से वह उस जंगल के उत्तरी किनारे पर पहुंच गया।

रण-स्थल के दहने बाज़ू में जर्मन योद्धा अपने केवल उन मोर्चों ही को, जिनपर उनका पहले ही से

अधिकार हो चुका था, स्वाधिकार में रखना चाहते थे, अतः इस अभीष्ट के सिद्ध्यर्थ रण-कार्य्य का मुख्य आघात केवल तोपख़ाने वालों ही के ऊपर पड़ा। फ्रेंच स्कर्मिशिंग लैनों (*Skirmishing Lines*) में नवीन२ चमुवों के निरंतर पहुंचते ही रहने से न्यूनाधिक ओजस्विता के साथ अविराम आक्रमण होते ही रहे आये, परन्तु इनमें कुछ अधिक सफलता न हुई। उधर शत्रु की सैनिक-संख्या की अधिकता से प्रशियन चमुवों का अधिक आगे बढ़ना भी नहीं हो सकता था। ८-वें कोर * के एक ब्रिगेड के पहुंच जाने पर रेज़ानविल के दक्षिण तरफ़ वाले टीलों के छीनने के लिये बहुत ही बड़ा उद्योग किया गया, किन्तु इसमें प्रशियनों को पराजित होकर बहुत बड़ी हानि के साथ पीछे लौट जाना पड़ा। अँधेरा हो जाने तक रण-भूमि के पूर्वीय भाग का युद्ध प्रायः स्तंभित बना रहा आया।

संग्रामोत्कर्ष, ५ से ७ बजे तक

इसी दर्मियान में पश्चिम तरफ़ फ्रेञ्च अपने दहने विंग को ब्रूविल की पश्चिम वाली गहरी घाटी तक फैला दिये, और वहां पर इन लोगों ने अपने तीन डिवीज़न रिसाले एकत्रित कर उन्हें युद्धार्थ प्रस्तुत कर रखा।

* यह कोर मोज़ेल नदी के तट से शीघ्रतापूर्वक दौड़ा कर रण-भूमि की ओर लाया गया था।

शत्रु के पृष्ठ-भाग अथवा बाजू पर चढ़ जाने के लिये ३८-वां ब्रिगेड, जिसमें पांच बटालियने थीं, मार्स-ला-टूर के उत्तर वाले खुले मैदान से आगे बढ़ा। फ्रेञ्च सेना के दहने बाजू के फ्रंट में वाली घाटी के लांघते ही उनके ऊपर शत्रु के ४-थे कोर के डिवीज़नों की भयानक गोलियां बरसने लगीं। अपने अनेक नायकों के मारे जाने पर इन नष्ट-प्रायः बटालियनों के बचे-बचाये योद्धा पीछे हट गये, इनके आधे से अधिक जवान हताहत होकर भूमि-शायी हो गये थे, और शेष ट्रानविल में पहुंच जाने पर पुनः सँभले। इस आकस्मिक सफलता से उत्साहित होकर फ्रेञ्च योद्धा भी आगे बढ़े, किन्तु दोनों बाजुवों में उपस्थित प्रशियन रिसाला रेजिमेण्टों के साहसिक चार्जों (आघातों) से वे सफल-मनोरथ न हो सके।

इस संग्राम में सब से बढ़ कर प्राण-संहारक और द्वंद्वतम युद्ध विले-सर-यरोन(Ville-sur-yron) के टीले पर जो मार्स-ला-टूर के पश्चिमोत्तर में है, हुआ था; यहां पर दोनों दलों के ५,००० सवार संमिश्रित होकर भालों और संगीनों से हाथों हाथ का युद्ध मचाये। दोनों ही ने अंत में अपनी अपनी विजय होना प्रकट किया, किन्तु वास्तविक बात यह हुई, कि युद्ध के समाप्त होने

का साहस किसी दल की पैदल सेनावों को न हो सका।

शत्रु के मोर्चों पर फिर से जेनरल आक्रमण करने के लिये उसी तारीख़ में सायंकाल के सात बज जाने पर प्रिन्स फ्रेडरिक चार्ल्स ने पुनः आज्ञा निकाली। इस आज्ञा के उचित-अनुचित के विषय में रण-नीतिज्ञ विद्वानों में बहुत कुछ बहस है। अँधेरा हो गया था, समस्त सेनायें थक कर बहुत ही शिथिल पड़ गईं थीं, अम्यूनिशन भी प्रायः समाप्त हो चला था, निरंतर पंद्रह घंटों तक घोड़ों से काम लिया जा चुका था, और प्रभात होने के पहले सहायतार्थ किसी भी नई सेना के युद्ध-स्थल में पहुंचने की भी कोई आशा नहीं थी। समस्त फ्रेञ्च दल के मार्गावरोधनार्थ केवल ३-रा प्रशियन कोर शत्रु-सेनावों के मध्य में घुस गया, और निज १०-वें कोर की सहायता से वह अपने स्थान पर डँटे रहे आने में भी सफलीभूत हो चुका, अब इस से अधिक लाभ की आशा करनी किसी प्रकार से भी उचित समझी नहीं जा सकती है, और बहुत संभव था, कि अब अधिक छेंड़ने से इतने परिश्रम से प्राप्त की हुई सफलता में भी धब्बा लग जाता। अस्तु। चारों ओर से प्रशियन चमुएं आगे बढ़ीं; किन्तु १०-वां कोर अपना कार्य्य संपादन करने में सर्वथा अयोग्य

हो गया, तथा ज्यों ही इधर ३-रे कोर के तोपखाने आगे बढ़े, कि उधर शत्रु के शाही गार्ड सेना के तोपखाने और पैदलों द्वारा उनका अधिक आगे बढ़ना तुरंत रोक दिया गया।

इस संग्राम में ८-वें और ७-वें कोरों की कुछ थोड़ी सी चमुवों तथा रिसाले के डिवीज़नों को साथ में लिये केवल ३-रे और १०-वें ही जर्मन कोरों को शत्रु के प्रायः समस्त राइन दल के साथ मुक़ाबिला करना पड़ा था; इन कोरों में सब मिला कर ६४,२२६ पैदल, १३,१७१ सवार, और २४६ तोपें थीं; जर्मनों की ओर से प्रायः ६०,००० और फ्रांस की ओर से प्रायः १,२०,००० योद्धा इस संग्राम में वस्तुतः योग दिये थे।

प्रत्येक दल के प्रायः १६,००० जवान इस युद्ध में हताहत हुये; विजयानंद प्रकट करने लिये किसी को भी दूसरे की न तो कुछ तोपें और न बंदी हाथ लगे। बारह घंटे तक निरंतर युद्ध करते रहने के पश्चात् दोनों ही ओर के योद्धा गण विश्रान्त हुए एक दूसरे के सम्मुख पड़ाव कर दिये; प्रभात होने पर क्या होगा, इसके विषय में कोई भी कुछ नहीं कह सकता था।

समालोचनायें

व्यूह-विधान संबंधी (*Tactical*) फलों पर विचार करने से इस दिन के युद्ध का वास्तविक महत्व

प्रकट नहीं हो सकता है। प्रशिया वाले फ्रांस वालों को उनके मोर्चों से निरवदेह निकाल नहीं पाये, पर उधर फ्रेञ्च भी मध्यान्ह के पहले जिन मोर्चों से हाथ धो बैठे थे, उन्हें न तो वे पुनः प्राप्त ही कर सके, और जिस मार्ग से मार्च करके वे पीछे हटना चाहते थे, उससे हो कर न उनका जाना ही हो सका। परन्तु जब रण-रचना की (*Strategical*) दृष्टि से इस युद्ध के फलों पर विचार किया जाता है, तब तो जर्मनी की साक्षात् विजय सूचित होती है। अपनी अल्प संख्या की सेना से अत्यंत साहस का कार्य्य लेकर इन लोगों ने फ्रेञ्च-सेना के पीछे हटने में बाधा पहुंचा दिया, और दोनों फ्रेञ्च दलों के मध्य में अपनी मुख्य सेना के पहुंचाने के लिये सावकाश और समय प्राप्त कर लिया।

'जेनरल बाज़ेन अपनी सेनायें अधिकतर उत्तर वाली सड़कों से पीछे हटा रहे हैं,' इसी भ्रम में पड़ कर तदनुकूल ता० १६ के सबेरे जर्मनों ने अपने सेना संचालन रचे थे। आक्रमण प्रारंभ करते समय जर्मन ३-रे कोर को भी शायद यही भ्रम हो गया था, अर्थात् शायद उस ने भी यह समझा था, कि उसका आक्रमण केवल किसी प्रबल रीअर गार्ड (*Rear Guard*) किम्वा फ्लैंकिङ्ग फोर्स (*Flanking Force*) पर हो रहा है; और उसको शायद यह नहीं मालूम था, कि मुख्य शत्रु-सेना वही थी। किसी बड़े युद्ध के होने

की उस दिन आशा नहीं की गई थी, अतएव संग्राम-भूमि की ओर भेजने के बदले १०-वें कोर को एटेन की ओर बढ़ने की आज्ञा दे दी गई थी ; इसी से सहायता पहुंचने में बहुत विलंब भी हो गया था। सदर से अनुमति प्राप्त करने के पूर्व ही ३-रे कोर का स्वेच्छानुसार युद्ध प्रारंभ कर देना कोर-कमाण्डरों की स्वतंत्रता पूर्वक कार्य्य-संपादन-प्रणाली का यहां फिर भी एक दुखद उदाहरण मिलता है। ३-रे कोर के कमाण्डर जेनरल आल्वेन्स्लेबेन का यह साहसिक कार्य्य तभी सराहनीय और उचित समझा जा सकता था, यदि फ्रेञ्च सेना का उत्तर वाली सड़कों से हटना सिद्ध हो गया होता ; किन्तु पीछे से यह बात प्रकट हो गई, कि फ्रेञ्च वस्तुतः वैसा कर नहीं रहे थे। ऐसी दशा में उनका यह कार्य्य बहुत ही भयावह था। ३-रा कोर नष्ट होने से बँच गया, इससे यह सिद्ध होता है, कि युद्ध में आक्रामक बनना बहुधा बड़े काम का होता है ; जो सेना साहस ग्रहण कर मारना प्रारंभ कर देती है, वह अंत तक प्रायः मारती ही जाती है, दूसरी को शत्रु के वार रोकने में इसके मालूम करने का, कि आक्रामक की वास्तविक शक्ति और संख्या कितनी है, प्रायः अवकाश ही नहीं मिलने पाता है। यदि गोर्ज़ प्लेटो पर के संग्राम में जर्मन सेना आक्रामक न बन कर आत्म-रक्षक बनी होती, तो शत्रु-सेना की

अधिकता से, बहुत संभव था कि, वह पराजित करके नदी की धारा में गिरा कर बहा दी गई होती।

संख्या में फ्रेञ्च सेना तीनों जर्मन दलों की अपेक्षा बहुत ही न्यून थी; पीछे हट कर अपनी सर्वत्र की चमुवों को संकर्षित और संगठित करके ही शत्रु का मुक़ाबिला करने में फ्रेञ्चों को सफलता प्राप्त होने की कुछ संभावना हो सकती थी। मोज़ेल नदी पर के पुलों को तोड़ कर उनके नष्ट न कर दिये जाने से जर्मनों को उन्हीं पर से होकर नदी पार करने का सुअवसर प्राप्त हो गया था। मार्शल बाज़ेन को इस बात की सूचना मिल गई थी, कि शत्रु की अनेकानेक चमुएं नदी को पार कर आईं हैं, अतः उत्तर से आक्रमण किये जाने की अब बहुत कम संभावना थी; उधर ही शत्रु के रिसाले भी पहले देखे जा चुके थे; अतः यदि निर्बाध पीछे हट जाना आवश्यक था, तो फ्रेञ्च सेना को चाहिये था कि वह समय को व्यर्थ नष्ट न करती, तथा अधिकतर उत्तरीय सड़कों ही से हटना उसके लिये उपयुक्त हो सकता था।

ता० १६ के सबेरे से चमुवों का पीछे हटना क्यों नहीं प्रारंभ करा दिया गया, इसका कारण समझ में नहीं आता है। यदि ४-थे कोर के मेज़ से होकर वहां पहुंचने में कुछ विलंब था, तो उसको रीअर गार्ड का

कार्य्य सपुर्द कर देने में यह दोष दूर हो सकता था, तथा गार्ड सेना को अधिकतर उत्तर के गुप्त और सुरक्षित मार्गों से चला देना था। यदि बाजुवों पर आक्रमण किये जाने का भय होते हुए भी दक्षिणी सड़कों ही से चलना अभीष्ट था, तो अपनी चमुवों का पड़ाव भी उन्हीं सड़कों के किनारे कराना उचित था। जलाभाव के विषय में भी जो संदेह था, वह दूर हो सकता था; किन्तु सड़कों पर इतस्ततः की सेना-संप्रसारण-प्रणाली से सूचित होता है, कि मार्शल बाज़ेन को उस प्रांत के दुर्गों का परित्याग कर देना स्वीकार नहीं था, तथा वे उन्हीं के आवरण में आत्म-संरक्षक बन कर युद्ध करना चाहते थे। अस्तु। इसमें भी कोई संदेह नहीं है, कि इस रीति से भी युद्ध देने में बहुत कुछ लाभ होने की संभावना थी, किन्तु सफलता प्राप्त करने के लिये हाथ-पांव बटोर कर केवल आत्म-रक्षा करने की अपेक्षा कुछ अधिक ओजस्विता प्रकट करने की भी आवश्यकता थी। यहां पर यह भी प्रकट कर देना उचित मालूम होता है, कि मार्शल बाज़ेन के हाथ में सेना का कमाण्ड आये तब तक केवल छत्तीस घंटे हुए थे; पुनः उनको इस रीति से रण-कार्य्य करने की अनुमति दी गई थी, जो उनके जातीय स्वभाव तथा इच्छा के सर्वथा प्रतिकूल थी। ता० १६ के पश्चात् फ्रेञ्च सेना का हट कर वर्डन

पहुंचना तभी संभव हो सकता था, जब वह जर्मनों को कोई बड़ी सी पराजय दे लेती, यदि वह ऐसा न कर सकती, तथा यदि मेज़ भी उसके हाथ से निकल जाता, तो उसके सत्यानाश होने में लेश मात्र का भी संदेह नहीं हो सकता था। यह बात साधारणतः स्वीकार कर ली गई है, कि यदि ता० १६ के सबेरे किंचित् ओजस्विता के साथ फ्रेञ्च आक्रामक बन कर ३-रे जर्मन कोर के दबाने का उद्योग किये होते, तो उन्हें अवश्य ही सफलता प्राप्त हुई होती, और वह जर्मन कोर निस्संदेह नष्ट किम्वा बंदी हो गया होता। तीसरे पहर को भी सहायक कोर के पहुंच जाने पर, शत्रु-सेना संख्या में उनकी सेना से बहुत कम थी। अपने बांये बाज़ू में रिज़र्वों सेना के रखने से भी सिद्ध होता है, कि मेज़ के ख़ाली कर देने की इच्छा बाज़ेन को कदापि नहीं थी; किन्तु आत्म-संरक्षक बने रह कर पीछे हटने में भी कमी सुगमता नहीं हो सकती थी। इस सापेक्षिक स्थिरता (*Immobility*) का एक मुख्य कारण फ्रेञ्च सेना का युद्ध-संगठन-विधान (*Tactics*) भी था, अर्थात् यह कि, उन लोगों को आत्म-संरक्षक की दशा में अपनी चासियर और मिट्रेल्यूज़ नामक रैफलों की फैर-शक्ति में उचित से अधिक विश्वास था। विचार पूर्वक निश्चित किये हुए स्थानों पर इन नये २ अस्त्रों की तब तक परीक्षा

नहीं हो चुकी थी, और यदि इनकी काल्पनिक शक्ति (*Theoretical Effect*) सत्य भी मान ली जावे, तो भी निर्णीत स्थानों से किये गये केवल स्थायी युद्धों (*Pitched Battle*) में ही इन अस्त्रों से काम लेकर विजय-प्राप्ति की थोड़ी-बहुत आशा की जा सकती थी । असमंजस में पड़ कर आगा-पीछा करना बहुत ही अनिष्ट-कारक हुआ । रण-रचना के कारण अकस्मात् उपस्थित हो गई अवस्था को (*Strategical Situation*) समझने और समझ कर उसका प्रतिकार रचने में फ्रेंच मार्शल को भ्रम हो गया । सेना-संचालन और रण-कौशल्य प्रकट करने के हेतु दुर्ग को केवल एक निमित्त मात्र न बना कर उसी को अपनी संरक्षा का उन्होंने मुख्योपाय समझ लिया ।

इस संग्राम में जर्मनों के रण-कार्य्य इस तरह पर हुए थे, कि क्रम २ से उनका मार कर हटा दिया जाना निस्संदेह बहुत सरल था ; और यदि यह बात हो नहीं सकी, तो इससे यह नहीं जानना चाहिये, कि जर्मन सेना का संगठन ही कुछ उचित प्रणाली का था, किन्तु इसका मुख्य कारण तो फ्रेंच सैनिकों का आलस्य और उनकी अकर्मण्यता थी ।

फ्रेंच सेना के पीछे हटने का जो सर्वोत्तम मार्ग था, वह ता० १६ के संग्राम से उनके हाथ से जाता रहा, किन्तु उसके साथ साथ कुछ काल के लिये जर्मनों की

आक्रामकीय शक्ति का भी ह्रास हो गया। वर्डन जाने की उत्तरी सड़कें अब भी खुलीं थीं, और एक प्रबल रीअर गार्ड के आवरण में उन से हो कर हट जाना फिर भी संभव हो सकता था, इन सड़कों पर मेज़ और वर्डन से रसद भी पहुंचाई जा सकती थी; किन्तु एक तो बाज़ेन की इच्छा पीछे हटने की पहले ही से नहीं थी, दूसरे ता० १६ के युद्ध की बहुत बड़ी हानि से उन्हें वहां विलंब करने का बहाना मिल गया। अनेक घटनाओं के प्रतिफल से विदित होता है, कि ता० १८ के प्रातःकाल तक जर्मनों को फ्रेंच सेना-संचालन के विषय में विश्वास नहीं था, अतः ता० १७ अगस्त के दिन भर फ्रेंच सैनिक बिना रोक-टोक स्वेच्छानुसार कार्य्य कर सकते थे।

बहुतों की सम्मति में ता० १७ अगस्त तक में बाज़ेन का मेज़ से हो कर भी हटना संभव हो सकता था; तत्पश्चात् दक्षिण-पूर्व की ओर ता० १८ के सबेरे सहसा प्रकट हो कर सील नदी के दोनों किनारों की तीन मुख्य सड़कों से वे अपनी सेना को निकाल ले जा सकते थे। ऐसी दशा में उनके फ्लैंक और रीअर गार्ड की चमुओं का मुक़ाबिला १-ले, ७-वें और ८-वें जर्मन कोरों की चमुओं से पड़ सकता था। इस तरह पर शीघ्रता के साथ कार्य्य करने से ऐसे अवसर पर, जब कि अनुपयुक्त स्थिति के कारण जर्मन कोर उन के रोकने के लिये शायद ही

सामर्थ्य रखते थे, तीनों जर्मन दलों का आवागमन-संबंध तोड़ दिया जा सकता था। इसका अंतिम परिणाम तो चाहे जो कुछ होता, किन्तु कुछ समय के लिये जर्मनों की रण-रचना-प्रणाली (*Plan of Operation*) में बहुत ही गड़बड़ी मच गई होती, तथा दक्षिण तरफ़ स्ट्रासबुर्ग की ओर शीघ्रतापूर्वक हट जाने के लिये फ्रेंच सेना के लिये यथोचित समय अवश्य ही प्राप्त हो गया होता। प्रत्युत यह भी जानना चाहिये, कि इस तरह के कठिन रण-कार्य्य संपादन कराने के लिये फ्रेंच समर-स्टाफ़, जो तब तक इतनी अयोग्यता और निर्बलता प्रकट किये था, कहां तक योग्य हो सकता था, इस में भी बहुत कुछ संदेह है। फ्रेंच कमसरियट मुहक्मा भी अपना कार्य्य यथोचित रीति से पूरा नहीं कर सका। पुनः यह भी कदापि संभव नहीं हो सकता था, कि गिर्दावरी कर शत्रु-समाचार ग्रहण करने में इतने सुप्रवीण जर्मन नेता-गण शत्रु के ऐसे सेना-संचालन का पता तुरंत नहीं लगा लिये होते, तथा निज तीसरे दल की सहायता से वे कोई ऐसी युक्ति न रच लिये होते, जिस से फ्रेंच सेना का वह कार्य्य, यदि सर्वथा असंभव नहीं, तो भयानक भी नहीं हो सकता था।

अध्याय ८

ग्रावलाट-सेण्ट प्रीवाट

फ्रेञ्च सेना-संचालन, अगस्त १७—जर्मनो की भावी रण-युक्ति—समालोचनायें—फ्रेञ्च सेना की स्थिति—जर्मन एडवान्स—९-वें कोर का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक—पहले दल का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक—दूसरे दल का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक—दहने बाजू पर आक्रमण, ६ से ८ बजे तक—केन्द्र और बांयें का आक्रमण, ५ से ८ बजे तक—समालोचनायें।

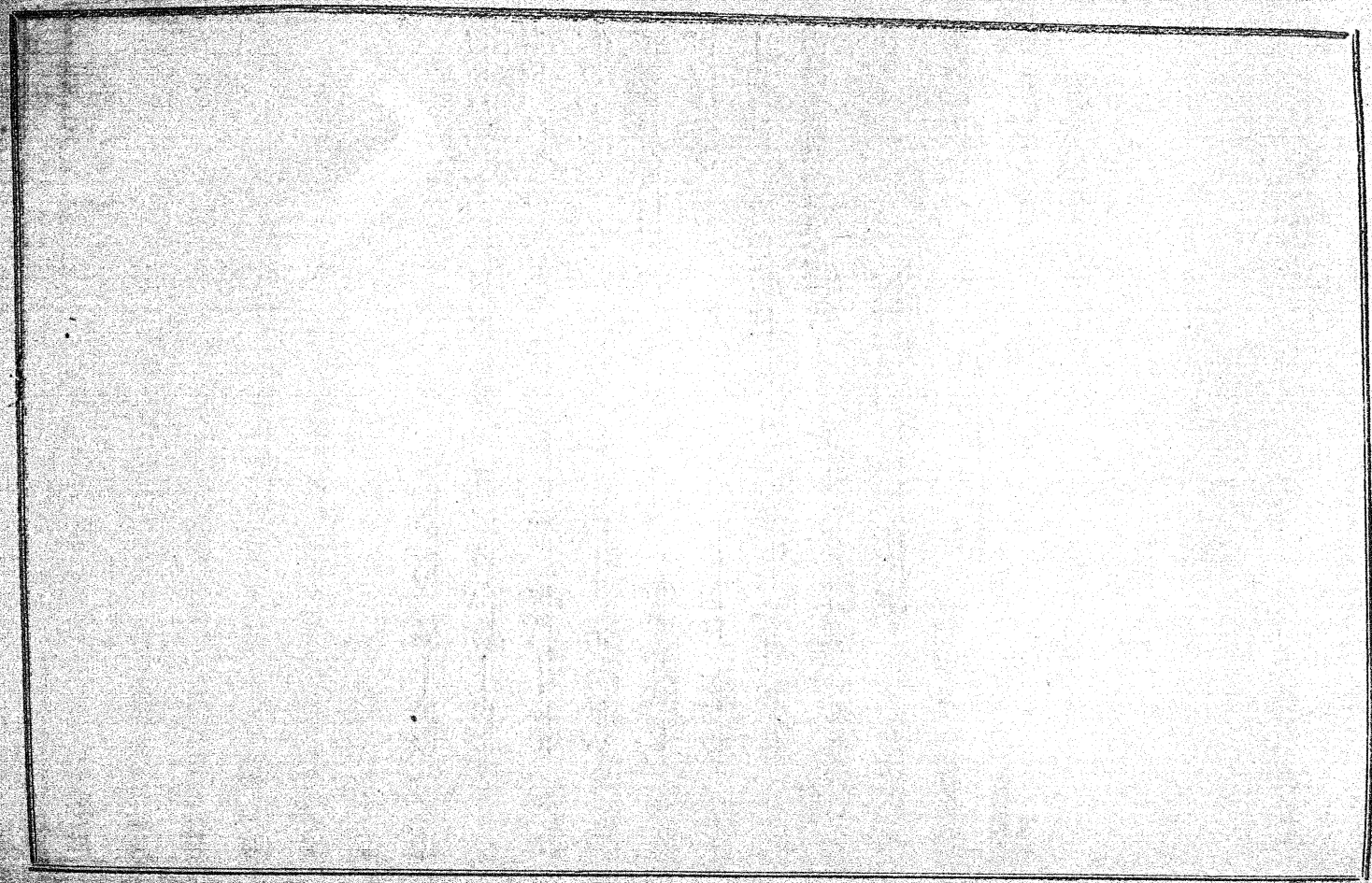

अध्याय ८

ग्रावलाट-सेण्ट प्रीवाट

फ्रेञ्च सेना-संचालन, १७ अगस्त

ता० १७ अगस्त के बड़े प्रभात ही से फ्रेंच चमुएं अपने २ पड़ाव से प्रस्थान कर मेज़ के पश्चिमस्थ एक सुदृढ़ स्थान पर पुनः वापस चली गईं, और रोज़ेरियुलिस (*Rozerieulles*) से लेकर अमान-विलर्स तक फैल कर मोर्चेबंद हो गईं। ६-वें कोर के लिये पहले वर्नविल में ठहरने की आज्ञा थी, किन्तु पीछे से उसका वह स्थान परिवर्तन कर दिया गया, और आत्म-रक्षा की साधारण लैन इस समय सेण्ट प्रीवाट से लेकर रान्कूर तक फैली हुई थी।

पीछे लौटने का मुख्य कारण बाज़ेन ने अम्यु-निशन और रसद का अभाव बतलाया है; किन्तु ता० १५ को सड़कें ट्रेनों से भरी हुईं थीं, और यदि ता० १६ वाले संग्राम के अवसर पर रसद-बर्दारी वाले कालमों को ब्रेई की ओर बढ़ने की आज्ञा दे दी गई होती, तो केवल अम्युनिशन के लिये उन को मेज़ की ओर लौटने की आवश्यकता कभी भी न पड़ती। युद्ध-स्थल के उत्तर वाले प्लेटो पर से होकर चौड़े फ्रंट में पीछे हटना, तथा

ओर्ने नामक नाले के आगे वाले मैदान में अपनी चमुवों का संकर्षित और संगठित करना सुगम था। एक बहुत बड़े और सुप्रसिद्ध आर्सेनल (*Arsenal*) * से केवल एक ही मंज़िल की दूरी पर उपस्थित फ्रेंच सेना के लिये सामरिक सामग्रियों की वास्तविक कमी पड़ना वहां के प्रबंध विभाग की बहुत बड़ी अयोग्यता सूचित करता है। सामग्री चाहने वाली सेना को सामग्रियां मंगा भेजनी चाहिए ; उनके लेने के लिये स्वयं सेना ही को अपना निर्दिष्ट पथ त्याग देना उचित नहीं है। मार्शल बाज़ेन का यह भी कथन था, कि एक सुदृढ़ तथा सुरक्षित स्थान में डँट कर युद्ध देने से शत्रु-सेना का वह प्रभाव, जो कि उसको अपनी संख्या और शक्ति के आधिक्य से प्राप्त था, मिटा देना संभव हो सकता था ; पुनः आपको यह भी आशा थी, कि वहां पर विजयी होने पर उत्तर वाले मार्गों से वे अपनी सेना को वर्डन की ओर सुगमतापूर्वक निकाल ले जा सकते थे।

जर्मनों की भावी रण-युक्ति

दूसरा दल, जो विगत संग्राम में योग नहीं दिये था, पश्चिम तरफ़ म्यज़ नदी की ओर 'मार्च' कर रहा था; इसमें के चौथे कोर ने धावा करके टूल को लेना चाहा, परन्तु विफल-मनोरथ हुआ। ता० १६ के तीसरे पहर को यह प्रकट हो गया, कि फ्रेंच सेनावों

* सामरिक सामग्रियों का भंडार।

का पीछे हटना रोक दिया गया, किन्तु उस समय निर्बल पड़े तथा शत्रु सेना से दबाये परन्तु अपने स्थान पर डँटे ३-रे और १०-वें सैनिक कोरों के लिये शीघ्र ही सहायता भेजने की आवश्यकता थी। फ्रेञ्च सेना की उपस्थित अवस्था में मेज़ के पूर्व से आक्रमण किये जाने की आशंका बहुत कम थी, इसीलिए मोज़ेल नदी के दहने तट पर दृष्टि मात्र रखने के लिये केवल १-ला कोर और ३-रा रिसाला डिवीज़न वहां पर छोड़ दिये गये।

अब पहले दल के ७-वें और ८-वें कोरों को, तथा दूसरे दल के ९-वें और १०-वें गार्ड कोरों को पेरिस रोड पर संगठित होकर तय्यार रहे आने के लिये आज्ञा कर दी गई, इस तरह पर ता० १७ अगस्त के सायंकाल में सात सैनिक कोर और तीन रिसाला डिवीज़न ११ मील के फ्रंट में ग्रावलाट से लेकर मार्स-ला-टूर के बाहर तक पड़े हुए थे। कोर कमाण्डरों की दूर-दर्शिता से इस आज्ञा का कार्य्य में परिणत होना सुगम हो गया, क्योंकि इन लोगों ने उसी तारीख़ के दिन में संग्राम होते रहने का समाचार सुन लिया था। पहले दल के ७-वें और ८-वें कोरों द्वारा प्रारंभ किये गये पार्श्व-संचालन (*Flanking Movement*) होते समय कोई गंभीर युद्ध न ठन जाय, इसका निवारण सर्वोपरि आवश्यक था, इसलिए उस तारीख़ को, दिन भर, किसी प्रकार के आक्रमण प्रारंभ

करने की सख्त मनाही कर दी गई थी। तीसरे दल की, और दूसरे दल के ४-थे कोर की सब चमुएं दक्षिण में बहुत दूर पर थीं, उनको रुके रहने और भावी घटनाओं की प्रतीक्षा करने की आज्ञा कर दी गई। सीमा प्रांत से जो पीछे २ दूसरा कोर आ रहा था, उसको पान्ट-आ-मौसान की ओर शीघ्रतापूर्वक बढ़ जाने की आज्ञा कर दी गई; वहीं से आवश्यकता पड़ने पर उससे रिज़र्व का काम भी लिया जा सकता था।

गिर्दावरी करने के लिये भेजे गये रिसाले वालों की दोपहर तक की रिपोर्टें एक दूसरे के विरुद्ध पाई गईं, उनसे यह साफ़ २ नहीं पता चलता था, कि फ्रेञ्च चमुएं उत्तर वाली सड़कों से पेरिस की ओर जा रहीं थीं, अथवा मेज़ की ओर लौटती थीं। अतएव इन दोनों ही आपत्तियों के रोकने के लिये दूसरे दल के बांये वाले सैनिक कोरों को आगे पीछे, फ्रंट खुली समानांतर लैनो (*Echelon*) में उत्तर की ओर 'मार्च' करने की आज्ञा की गई; तथा मेज़ की ओर से शत्रु-सेना का आघात रोकने के लिये पहले दल के दो सैनिक कोर उपर्युक्त कोरों के संवरण में लगा दिये गये। इस तरह पर दूसरे दल का बांया विंग डान्कूर से होकर उत्तर की दिशा में बढ़ने पर, यदि फ्रेंच सेना पीछे हटती हुई उसको मिलती, तो आक्रमण करके उसे वह रोक सकता था, और उसको सँभालने के लिये दहना विंग भी शीघ्रता करके वहां पहुंच सकता था। यदि शत्रु-

सेना मेज़ की ओर हट जाती, तो बांयें विंग को पूर्व की ओर से घूम कर शत्रु की किसी भी स्थिति को घेरने (*Envelop*) का कार्य्य दिया गया था, और शेष कोरों के दहनी ओर घूम जाने पर, सम्मुख से भी आक्रमण करने का सुभीता हो सकता था; इस दशा में ७-वें कोर को दहनी ओर के घुमाव की धूरी बनना पड़ता, अतएव उस अवस्था में प्रत्येक दल को अपने पृष्ठ-भाग की ओर घूम कर लड़ना पड़ता, और कुछ काल के लिये इनके आवागमन-मार्ग के बन्द हो जाने का भी खटका था। फ्रेञ्च सेना के लिये मेज़ का दुर्ग कुछ काल के लिये सुरक्षित मूल-स्थान (*Base*) का काम दे सकता था। पराजित होने की दशा में आक्रमणकारी जर्मन चमुवों के विनष्ट हो जाने का भय था, परंतु तीसरे दलके पहुंच जाने पर उनकी वह आशंका मिट सकती थी।

समालोचनायें

आत्म-संरक्षक बन कर रहना निश्चय कर लेने पर बाज़ेन के लिये तो अपने रिसाले वालों का पीछे हटा लेना उचित ही था, किंतु जर्मन गिर्दावरी करने वाले शांत बैठे क्यों रह गये, यह समझ में नहीं आता है। सैक्सनी के युवराज के सिवाय अपर सब रिसाले के सरदार अपने सवारों से कुछ काम न लिये। ता० १७ को युद्ध का छिड़ना यथा-संभव बँचाने के लिये

तो निस्संदेह सूचना दे दी गई थी, किंतु इसका यह मतलब नहीं था, कि अपने सदर से थोड़ी ही दूरी पर पड़ी शत्रु-सेना क्या कर रही है, इसका भी वे पता न लगाते। दो बजे दिन को मोटके ने जो आज्ञा प्रकाशित की थी, उसमें भावी घटनाओं के निवारणार्थ समुचित प्रबंध कर दिये गये थे; किंतु बहुधा यह भी कहा जाता है, कि आप की यह आज्ञा उचित समय के बहुत पहले ही प्रकाशित हुई थी, अन्यथा दूसरे दिन के भयानक संग्राम के अर्थ जो सैनिक संचालन प्रारंभ किये गये थे, उसके बहुत पहले ही फ्रेञ्च सेना की वास्तविक दशा का पूरा पूरा पता रिसाले वालों को लग गया होता।

फ्रेंच सेना की स्थिति

फ्रेंच सेना एक खुली पहाड़ी के शिखर के आस-पास चारों ओर प्रायः सात मील में फैली हुई थी; इस पहाड़ी की पश्चिम वाली भुजा चौरस और क्रम २ से उतरती हुई थी; बांये बाजू के सम्मुख का भाग खड़ी उँचाई का जंगल से भरा-पूरा था। पुनः यह पहाड़ी दो घाटियों के मध्य में थी, और ये दोनों घाटियां ज्यों ज्यों दहने बाजू की ओर बढ़ती गईं थीं; वैसी ही वैसी वे पतली और छिछली भी पड़ती गईं थीं। फ्रेञ्च सेना का बांया बाजू प्रकृति से ही सुदृढ़ था, क्योंकि इस बाजू का पृष्ठ-भाग सेण्ट क्वेन्टिन और प्लापेविल के दुर्गों से संरक्षित था। भूमि की सापेक्षिक स्थिति और वहां के सुदृढ़

मकानों (*Farm Houses*) के कारण पहाड़ी का केन्द्रस्थ भाग आत्म-संरक्षा के लिये सर्वथा उपयुक्त था। प्राकृतिक बनावट तथा सापेक्षिक स्थिति इन दोनों ही बातों में सेण्ट प्रीवाट के पास का दहना बाजू कुछ निर्बल था, क्योंकि इसका बहुतांश खुला था। इनके सिवाय निर्बलता के दो और भी गंभीर कारण थे, (१) तो जंगल, जो घाटी से फ्रेञ्च लैन तक फैला हुआ था, (२) पृष्ठ-भाग की बनाच्छादित खड़ी गहराई की घाटी, इन कारणों से सहायक सेनाओं का भेजना कठिन पड़ गया था। बांयें से दहने बाजू तक क्रम २ से दूसरे, तीसरे, चौथे और छठवें कोर पड़े थे, इनमें से छठवें कोर का बाजू भी खुला था, उधर उसकी संख्या-शक्ति भी पूरी नहीं थी, तथा वह इञ्जिनियर पार्क * से भी हीन था। रण-स्थल की दशा और तत्कालीन व्यवस्थावों पर विचार पूर्वक देखने से यही उचित मालूम होता था, कि रिज़र्व सेना इसी बाजू के पृष्ठ-देश में रखी जाती, किंतु मार्शल बाज़ेन को तब भी दक्षिण से आघात पहुंचने का भय समाया हुआ था, इसी से उन्होंने गार्ड कोर को प्लापेविल में रख छोड़ा था। दोनों बाजुवों के पृष्ठ-देश में रिसाले के सवार थे, तथा पांचवें कोर का एक ब्रिगेड मोज़ेल नदी की घाटी में पड़ा हुआ था। रण-भूमि के बायें भाग तथा केन्द्र में

* सैनिक पड़ाव के मध्य का वह स्थान, जहाँ तोपखाने रहते हैं, पार्क कहलाता है।

प्रायः सब प्रकार के मोर्चे बना लिये गये थे; किसानों मकान (*Farmsteads*) सुधार कर आत्म-रक्षा के उपयुक्त बना लिये गये थे।

जर्मनों का एडवान्स

सदर के सूचनानुसार दूसरा दल ता० १८ के प्रभात होने पर प्रस्थान किया। पूर्व-निर्णीत स्थान पर गार्ड-सेना के न पहुंच सकने के कारण इस दल के संचालन में कुछ विलंब हो गया, किंतु अंत में बांयें से प्रारंभ करके और १२-वें कोर के नेतृत्व में इस दल की सब चमुएँ फ्रंट खुली समानांतर लैन (*Echelon*) में आगे बढ़ीं; चूंकि इनका संचालन (मार्च) एक खुले प्रदेश से हो रहा था, तथा शीघ्र ही किसी भयंकर संग्राम के छिड़ जाने के भी लक्षण देख पड़ते थे, अतएव इस दल की चमुएँ एक दूसरे के बीच में अपने २ तोपखाने लिये अत्यंत सावधानी के साथ आगे बढ़ती जाती थीं।

नौ बजे सवेरे आक्रमण-कारी दल की भिन्न भिन्न चमुएं प्रायः अधोलिखित स्थानों पर उपस्थित हो गईं थीं:—

७-वां कोर—ग्रावलाट के दक्षिण में—इसके औट-पोष्ट (*Out-Post*) ब्वायस डि वाज़ (*Bois de Vaux*) के पूर्वीय किनारे तक पहुंच गये थे।

८-वां कोर—रेज़ानविल में।

९-वां कोर—कालरे फार्म में, सेण्ट मार्सेल के पूर्वोत्तर में।
गार्ड कोर—डान्कूर के पास मार्स-ला-टूर में (इसे बिलंब हो गया था)
१२-वां कोर—जार्नी में।
३-रा और १०-वां कोर—विआनविल और ट्रानविल में।

जैसे २ सैनिक कोर आगे बढ़ते जाते थे, उनके डिविज़नों के रिसाले गुप्त रीति से उत्तर और पूर्वोत्तर दिशाओं में बढ़ २ कर वैसे ही वैसे शत्रु-सेना का भी पता लेते जाते थे।

आगत रिपोर्टों से फ्रेञ्च सेनाओं का तब भी मेज़ के आस-पास में पड़ी होना प्रकट होता था ; किन्तु उत्तर में मान्टिग्नी से अधिक आगे की उनकी उपस्थिति का जर्मनों को विश्वास नहीं था। अतएव ९-वें कोर के तोपखानों द्वारा शत्रु के दहने बाजू पर आक्रमण कराने तथा अपने दोनों बाजुओं पर के कोरों द्वारा शत्रु-सेना के घिरवाने के लिये दूसरे दल को आज्ञा की गई। इस समाचार के विदित होने पर, कि फ्रेञ्च सेना के बाजू उत्तर में अधिक दूरी तक फैले हुए हैं, ९-वें कोर को अपना आक्रमण मुलतवी रखने, तथा गार्ड कोर को अमानविलर्स पर और १२-वें कोर को सेण्ट मेरी आज़ चेनिज़ (*St. Marie aux Chenes*) पर चढ़ाई कर देने की आज्ञा हुई। प्रशिया-धिराज के आज्ञानुसार पहले दल को उस समय तक अपना

आक्रमण प्रारंभ न करने की आज्ञा थी, जब तक दूसरे दल की सब चमुएँ अपने २ स्थान पर पहुंच कर सह-कार्य करने के लिये उद्यत न हो जातीं।

९-वें कोर का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक

९-वें कोर के कमाण्डर, जेनरल वान मैन्स्टीन को वर्नविल के टीले पर से देखने पर विदित हो गया, कि शत्रु-सेना का कोई शिबिर उनके सम्मुख बहुत असावधान और निश्चिंत पड़ा हुआ है। 'वह फ्रेञ्च लैन का कोई बाजू है, अथवा क्या' यह तो आप को न विदित हो सका, परंतु शत्रु को विस्मित कर स्वार्थ-सिद्ध करने का यह अच्छा अवसर हाथ आया देख कर उस लम्बे टीले के दक्षिणीय भाग पर, जो अमानविलर्स से वर्नविल तक फैला हुआ है, आप ने अपने सब तोपखानों से गोलों की वृष्टि प्रारंभ करने की आज्ञा कर दी।

पहले ही रौन्ड (*Round*) में शत्रु-शिबिर भर में खल-बली मच गई। सम्मुखस्थ टीलों पर अनेकानेक बैटरियां लगा ली गईं, तथा ओटदार खाइयों भर में पैदल योद्धाओं की सघन पंक्तियां युद्धार्थ सन्नद्ध हो गईं। आक्रमणकारी बैटरियों के लिये किसी प्रकार का आवरण (*Cover*) नहीं था, अतएव गोलों, आपनेल और मिट्रेल-ल्यूज़ गोलियों की संकर्षित अग्नि-वृष्टि से वे दबा दी गईं। अब तो शत्रु के दहने विंग को ओट-फ्लैंक करना अर्थात्

बढ़ कर घेरना तो दूर रहा, फ्रेंच केन्द्र के सम्मुखस्थ ९-वें कोर के जर्मन तोपख़ाने स्वयं ही बहुत बड़ी दुर्दशा में फँस गये। इनका पीछे हट जाना तो अब असंभव था, अतएव आगे बढ़ते हुए फ्रेंच स्कर्मिशरों (डिंव-युद्ध-कारियों) को हटाने के लिये अत्यंत शीघ्रता के साथ १८-वें डिवीज़न की बटालियनें उक्त तोपख़ानों के दोनों बाजुओं पर के किसानी मकानों (*Farm Houses*) और जंगलों पर स्वाधिकार कर लीं। यहां की प्रशियन बटालियनें उतने ही संकट में फँस गईं, जितने संकट में वहां के तोपख़ानों की बैटरियां पड़ीं थीं, और फैरों के आधिक्य से बैटरियों की तोपें बेकाम भी पड़ती जाती थीं। इतने में ९-वें कोर का दूसरा डिवीज़न कुछ अधिक उत्तर की ओर पहुंच गया, इससे उपर्युक्त बटालियनों के ऊपर की भीर कुछ न्यून पड़ी, और सायंकाल के दो बजे तक में ९-वें कोर की सब चमुएं ब्वायस डि जेनिवाज़ (*Bois de Genivaux*) से हेवानविल पर्यंत कोई ढाई मील की लंबाई में फैल कर खड़ी हो गईं। लैन के केन्द्र के साम्हने अमानविलर्स के गिर्जाघर का बुर्ज देख पड़ता था; तथा इसका बांया बाजू सैण्ट प्रीवाट और दहना मान्टिग्नी के साम्हने पड़ता था।

दोनों ही विंगों (बाजुवों) की ओर जर्मन पैदलों के बढ़ने का सब उद्योग शत्रु-सेना द्वारा निष्फल कर

दिया गया ; और इस में उनके बहुत से योद्धा काम आ गये ; पांच बैटरियां बेकाम पड़ गईं, प्रत्युत जर्मन चमुएं वहां बहुत संकट में फंस गईं। ऐसे संकट के समय में तीसरे कोर के छः बैटरी तोपखानों का वहां पहुंचना बहुत ही सामयिक हो गया, शाम्पेन्वायस (Champenois) के खलिहान (Farm) पर पुनरपि अधिकार प्राप्त हो जाने से उनकी अवस्था किंचित् परिवर्तित और अच्छी हो गई।

सायंकाल के पांच बजते २ अधिक भय की संभावना नहीं रह गई, गार्ड कोर की उपस्थिति का प्रभाव बांये बाजू पर पड़ने लगा, वर्नविल के फ्रंट में और हेबानविल पर्यंत एक सौ छः तोपों के गोले शत्रु-सेना पर प्रलयंकर अग्निवृष्टि कर रहे थे। अंत में पाच घंटे तक अविराम युद्ध करते रहने से दोनों ओर दे योद्धा-गण बहुत ही शिथिल पड़ गये, और कुछ काल के लिये रण-भूमि के इस विभाग का युद्ध-कार्य प्रायः बिल्कुल बन्द हो गया।

पहले दल का आक्रमण, १२ से ५ बजे तक

दूसरे दल के रण-स्थल में न पहुंच जाने तक पहले दल को किसी गंभीर रण-कार्य के प्रारंभ करने की पहले ही से मनाही कर दी गई थी। किन्तु दोपहर के समय वर्नविल पर की भयंकर अग्नि-वृष्टि के कारण पहले दल के कमाण्डर को अपने तोपखानों से भी गोलों की वृष्टि करवाना प्रारंभ करने की आज्ञा कर दी गई। अतएव १-वें और ८-वें कोरों की सोलह बैटरियों

से ग्रावलाट के उत्तर और दक्षिण से गोले बरसाये जाने लगे।

जर्मन मोर्चे के सम्मुख मान्से नदी की गहरी और वनाच्छादित घाटी थी। ग्रावलाट से जो मेज़ को सड़क गई है, वह इस नदी के पास एक गहरे नाले के भीतर से होकर आती है और उसके दूसरे तट की ओर उस खुले और वृक्ष-रहित टीले के मूल-भाग में वह सड़क जा कर निकलती है, जिसके समीप फ्रेंच सेना का अति सुदृढ़ और सर्वथा सुरक्षित शिविर था। लिपज़िग और प्त्रायंट डू जौर के मध्य के संकीर्ण फ्रंट (*Front*) में प्रायः साठ फ्रेंच बटालियने और सौ तोपें युद्धार्थ सन्नद्ध पड़ी थीं, तथा बायें बाजू में मोज़ेल नदी की घाटी की ओर के द्वार को रोकने में उनकी एक ब्रिगेड सेना उपस्थित थी।

जर्मन तोपखानों की पहली स्थिति शत्रु-सेना से बहुत दूर थी। मान्से नदी की घाटी से जब डिंब-युद्ध-कारी (स्कर्मिशर) जवान मार कर पीछे हटा दिये गये, तब इन लोगों ने अपनी एक सौ बत्तीस तोपों को बढ़ा कर उन्हें ग्रावलाट प्लेटो के पूर्वीय छोर पर लगाया, और उसे अपने व्यूह की दूसरी लैन बनाया। इन तोपों की संकर्षित अग्नि-वृष्टि से जब फ्रेञ्च सेना की बैटरियां

किञ्चित् शांत और शिथिल पड़ गईं, तब १५-वां डिवीज़न चौड़ा फ्रंट बनाये सदरी सड़क के दोनों बगलों की नीची भूमि से होता हुआ क्रम २ से आगे बढ़ गया। फ्रेंच मोर्चों की भयंकर अग्नि-वृष्टि से इस नीची भूमि के पूर्वीय छोर पर के जंगलों से निकलने का जर्मन चमुवों का सब उद्योग निरर्थक सिद्ध हुआ। समीपस्थ सभी चमुवों की इच्छा सेन्ट हयूबर्ट फार्म (*Farm*) अर्थात् किसानी मकानों में पहुंचने की थी, ये मकान उक्त घाटी के द्वार पर थे। सहसा धावा करके प्रायः तीन बजे इन मकानों पर फ्रेञ्च सेना ने अपना अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् शत्रु-सेना के दहने और बायें दोनों ही बाजुवों की ओर जर्मन चमुएँ पुनः बढ़ाई गईं। प्वायंट डू जौर के पास की कँकरीली खाइयों पर के आक्रमण में सफलता हुई, किन्तु बांयें बाजू में मोस्को फार्म के ऊपर जो जर्मनों ने कई एक आक्रमण किये, उनमें उनको बहुत हानि उठानी पड़ी, और अन्त में पीछे भी हट जाना पड़ा, यद्यपि उधर इन्हें अपने एक दूसरे ब्रिगेड की चमुवों से सहायता भी मिलती रही थी। दहने बाजू के बिल्कुल छोर पर ७-वें कोर के एक ब्रिगेड ने शत्रु से जस्सी नामक स्थान छीन लिया, किन्तु वहां से अधिक आगे बढ़ना इस

ब्रिगेड के लिये प्रायः असम्भव सा हो गया।

ग्रावलाट के प्लेटो पर से देखने पर पहले दल के कमाण्डर जेनरल स्टीनमेज़ को संग्राम की अवस्था अच्छी सूचित हुई। फ्रेञ्च सेना का अधिकार सेण्ट हयूबर्ट के सुदृढ़ मोर्चे से उठ गया था, और वह अब मेज़ की ओर क्रम २ से हटती हुई मालूम पड़ती थी; शत्रु के तोपखानों के फैर भी अब मंद पड़ते जाते थे। पस प्रायः चार बज जाने पर घाटी से हो कर चार बैटरी तोपखाने, तथा उनके पीछे २ पहले रिसाला-डिवीज़न के सवार आगे बढ़ाये गये। सड़क के निम्नस्थ भाग से ज्योंही इस घने कालम का अगला भाग ऊपर देख पड़ा, कि उसके सवारों और घोड़ों के ऊपर फ्रेञ्च सेना के तोपखानो और पैदलों की संहार-कारक अग्नि-वृष्टि प्रारम्भ हो गई। इस संकट-समय में चार में से केवल दोही बैटरियां लगाई जाकर फैर करने के उपयुक्त बनाई जा सकीं; रिसाले के सवार व्यूह-बद्ध न हो सके, अतः वे पुनः घाटी की नीची भूमि में भाग आये। सड़क के संकीर्ण भाग में बहुत कठिन धक्कम-धुक्का मच गया, पैदल और सवार एक दूसरे के ऊपर गिरते-पड़ते थे, और उनके ऊपर फ्रेञ्च शिबिर से गोले और गो-

लियों की भयंकर वृष्टि होती थी । अंत में फ्रेञ्च डिंब-युद्ध-कारी (स्कर्मिशर्स) जवान सदल-बल आगे बढ़े, और जर्मनों को मार कर उपर्युक्त जंगल के किनारे तक हट आये । सेण्ट ह्यूबर्ट पर अब भी जर्मनों का अधिकार बना था, किन्तु खुले मैदान से आगे बढ़ने का उनका सब प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुआ । सायंकाल के पांच बज जाने पर दोनों ओर के फैर कुछ मंद पड़ गये, दोनों ही दलों के थके हुए योद्धागण विश्राम करने लगे, अतएव कुछ काल के लिये रण-कार्य्य में विराम रहा आया ।

दूसरे दल का आक्रमण, २ से ५ बजे तक

९-वें जर्मन कोर के बांयें बाजू के संवरणार्थ हेबानविल के समीप गार्ड कोर के तोपखाने से फैर होना प्रारम्भ हुआ । इस कोर की मुख्य २ चमुएँ सेण्ट ऐल के समीप प्रायः दोही बजे पहुंच गई थीं, और इनकी बहुतांश तोपें सेण्ट प्रीवाट के सम्मुख लगाई हुई थीं । अब यह मालूम हुआ, कि शत्रु का फ्रंट रान्कूर तक फैल गया है, तथा उनकी एक एडवान्स चौकी सेण्ट मेरी आज़ चेनिज़ (*St. Marie aux Chenes*) में बैठी हुई है ; पस सैक्सनी के सैनिक कोरों के पहुंच जाने तक गार्ड कोर के पैदलों को विलंब करने की, तथा अपने एक डिवीज़न को सेण्ट मेरी आज़ चेनिज़ की

ओर भेज देने की आज्ञा की गई।

बाटिली से चल कर १२-वें कोर ने अपने एक डिवीज़न को उत्तर की ओर बढ़ा दिया, तथा कोर तोपख़ाने को साथ में लिये हुए इसका दूसरा डिवीज़न शत्रु की एडवान्स चौकियों की ओर बढ़ा। बारह बैटरियों से उस ग्राम पर गोलों की संकर्षित और कठिन वृष्टि प्रारम्भ हो गई; अंत में, सैक्सनी और प्रशिया की गार्ड चमुवों की सहयोगिता से वह ग्राम साढे तीन बजे विध्वंस कर दिया गया।

पश्चात् गार्ड सेना का तोपख़ाना हेबानविल और सेण्ट ऐल के सम्मुखस्थ एक स्थान तक बढ़ा लाया गया, तथा सेण्ट मेरी के उत्तरस्थ एक टीले पर से सैक्सनी की तोपों से फैर होना प्रारंभ हो गया। गार्ड सेना का पहला डिवीज़न सेण्ट प्रीवाट की ओर मुंह किये, तथा सेण्ट मेरी में व्यूह-बद्ध करके खड़ा किया गया; इसके संवरणार्थ (*Cover*) दूसरे डिवीज़न का एक ब्रिगेड लगा दिया गया; पुनः, इस डिवीज़न का दूसरा ब्रिगेड ९-वें कोर के संवरण में रखा गया। इधर सैक्सनी के बहुत से कोर ओर्नें की घाटी के अधोभाग में इस तरह पर फैलते हुए मार्च कर रहे थे, जिसमें वे फ्रेञ्च दल के पलैंक को घेरने का प्रयत्न करते सूचित होते।

सेण्ट प्रीवाट के ऊपर वाले अमानविल की शत्रु-स्थिति पर जो अनेकानेक तोपों से घोर वृष्टि कराई जा रही थी, उसके प्रभाव से फ्रेञ्च डिंब-युद्ध-कारी योद्धाओं को पीछे हटना पड़ा, इसमें उनकी बहुत सी तोपें भी टूट-फूट गईं ।

दहने वाला आक्रमण, ५ से ८ बजे तक

संग्राम के थँभ जाने पर सदरी स्टाफ ग्रावलाट में पहुंचा, इधर दूसरा कोर पान्ट-आ-मौसन से प्रस्थान के पश्चात् बहुत लंबी और थकावट की यात्रा करके अंत में रण-स्थल में पहुंच गया। उत्तर की ओर तोपों के दगने की उन्हें भयंकर ध्वनि सुन पड़ी, जिससे विदित हुआ, कि दूसरा दल किसी भयंकर रण-कार्य्य में फँस गया है; इस पर प्रशियाधिराज जेनरल स्टीनमेज़ को प्रायः छः बजे आज्ञा किये, कि वे अपनी सब उपस्थित चमुओं को लेकर पुनः आगे बढ़ें। ८-वें कोर के एक ब्रिगेड और ७-वें कोर की कुछ बटालियनों को मान्से की घाटी को पार करने की, तथा ब्वायज़-डी वाज़ (*Bois de Vaux*) में उपस्थित पैदल सेना को प्वायन्ट डू जौर की खदानों की ओर बढ़ने की आज्ञा हुई।

मार्शल बाज़ेन ने अपने बायें विंग में गार्डों के एक डिवीज़न को नियुक्त करके एक बार फिर उन सब से अत्यंत ओजस्विता के साथ प्रत्याक्रमण करवाया; इनके तोपखानों और पैदलों की घोर अग्नि-वृष्टि से

शत्रु-सेना को आगे बढ़ती हुई चमुएं हटा कर पुनरपि वन के किनारे तक भगा दी गईं। जब तक दूसरे कोर की अगली चमुएं घाटी को पार करके बाहर निकलें निकलें, तब तक सूर्य्यास्त हो गया, अब रण-कार्य्य प्रारंभ करने के लिये न तो समय ही उत्तम था, और न उनकी स्थिति ही अच्छी थी। रात के बढ़ते हुए अंधकार में एक चमू के योद्धा दूसरे में मिल-जुल गये, तथा शत्रु-मित्र की पहचान कठिन पड़ गई। अंत में युद्ध को बंद कर देने की आज्ञा निकली; और दस बजे रात को पामेरेनियन कोर की चमुएं रण-भूमि में फ्रेञ्च-लैन के समीप ही, और उन्हीं के सम्मुख पड़ाव कर दीं, और उन्हीं के पृष्ठ-भाग में ७-वें और ८-वें कोरों की संमिश्रित हुई चमुएं अपनी २ कम्पनियों में पुनरपि विधि-पूर्वक व्यूह-बद्ध हो गईं।

फ्रेञ्च-दल के बांये बाजू के दबाने के सब प्रयत्न निष्फल सिद्ध हो चुकने पर दोनों ओर की थकी हुई चमुएं पास ही पास रण-भूमि में पड़ीं प्रातः काल पुनरपि युद्धारंभ करने की चिंता में सो रहीं। मावसो (*Maxou*), लिपज़िग, और प्वायन्ट डू जौर शत्रु के अधिकार में चला गया, सेण्ट हयूबर्ट का फार्म (खलिहान) जर्मनों के एडवान्स का अंतिम हद्द था। पहले दल के सुदृढ़ और संकल्प-पूर्ण आक्रमण से बाज़ेन को अपना

ध्यान निज बांये बाज़ू को सबल करने में लगा देना पड़ा था, यद्यपि इस संग्राम की जय-पराजय का निर्णय रण-भूमि के दूसरे प्रांत में हुआ था।

सायंकाल हो जाने पर दूसरे कोर का युद्धार्थ आगे बढ़ाना ठीक नहीं था, स्वयं मार्शल मेटके की सम्मति में इस कोर का यथातथ्य रिज़र्व में बना रहा आना उचित हुआ होता, क्योंकि उस दशा में उससे अगले दिन के संग्राम में काम अधिक ओजस्विता के साथ लिया जा सकता था।

केन्द्र और बांये का आक्रमण—५ से ८ बजे तक

पांच बजने के कुछ ही बाद फ्रेञ्च शिविर के केन्द्र और दहने बाजू पर आक्रमण पुनः प्रारंभ हुआ। ९-वें कोर के दहने बाज़ू की चमुएं आगे बढ़ने में असमर्थ थीं, किन्तु हाल ही में उनके पीछे जो ३-रे कोर की बैटरियां पहुंच गई थीं, उनके फैरों से उपर्युक्त चमुवों का फ्रंट सुरक्षित रहा आया। हेसे प्रदेश के पैदलों और तोपख़ानों के आवरण में तीसरा गार्ड ब्रिगेड हेबानविल से प्रस्थान कर क्रम क्रम से अमानविलर्स के प्रायः ८०० क़दम के भीतर तक पहुंच जाने में समर्थवान हो गया, यद्यपि इस कार्य्य में शत्रु के भयंकर गोलों से उसके अनेक शूर योद्धा-गण हताहत होकर भूमि-शायी हो रहे।

कुछ और आगे उत्तर की ओर चौथा गार्ड ब्रिगेड सेण्ट प्रीवाट की सड़क पर के सेण्ट मेरी नामक ग्राम

के दक्षिण में बढ़ा। फ्रेञ्च सेना झांपदार खाइयों और परिखों के भीतर सघन पंक्ति में पड़ी थी, वह जर्मनों के निर्दूल गन की मार के बाहर और तोपख़ाने के गोलों से प्रायः सर्वथा सुरक्षित थी। फ्रेञ्च योद्धाओं की शास्पो (*Chassepot*) नामक बंदूकों की प्रत्येक गोली, यद्यपि वह रिकोशा (*Ricochet*) * भी होती थी, जर्मन योद्धाओं के ऊपर अपना भयंकर प्रभाव डालती थी। मुख्य फ्रेञ्च लैन के आगे वाले टीले के पश्चिम छोर तक पहुंचते पहुंचते आक्रामक जर्मन बटालियनों के प्रायः सब अफ़सरों का संहार हो गया।

उपर्युक्त सेना-संचालन के आधे घंटे बाद गार्डों का पहला ब्रिगेड सदरी सड़क के उत्तर में व्यूह-बद्ध होकर सेण्ट प्रीवाट के ऊपर सम्मुख से चढ़ चला। उस ग्राम के दक्षिण वाले टीले पर गार्ड सेना के तोपख़ानों की अग्नि-वृष्टि होती रही थी, तथा सैक्सनी की बैटरियों से रान्कूर पर गोले बरसाये जा रहे थे। इनसे सेण्ट प्रीवाट के मकानों की सुदृढ़ दीवारों को प्रायः कुछ भी हानि न पहुंची। झाड़ियों और दीवारों के पीछे फ्रंट की ओर ओटदार परिखों की क़तार की क़तार बनी थी। आक्रामकों के रोकने में अनेक तोपख़ाने और पैदल बटालियनें नियुक्त थीं, अतएव टीले की

* बंदूक से छूट कर जो गोली एक बार भूमि या किसी पदार्थ से ठोकर खाकर उछड़ती है, रिकोशा (*Ricochet*) कहलाती है।

चौरस और चिकनी भुजा की ओर बढ़ने में आक्रामकों को बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी। अब गार्ड सेना की बैटरियां भी उस ग्राम की बस्ती के एक हज़ार क़दम के भीतर पहुंचा कर शीघ्र ही लगा ली गईं। इनकी अग्नि-वृष्टि के संवरण में पैदलों की सब से आगे वाली बटालियने ग्राम की बस्ती के ६०० क़दम के भीतर तक पहुंच गईं; वहां से न तो वे आगे बढ़ने पाती थीं, और न पीछे हट सकती थीं; इसमें उनके प्रायः समस्त अफ़सर और बहुत से सिपाही काम आ गये।

इसी बीच में उनकी सहायता में कुछ सेना उत्तर से आ गई। सैक्सनी का १२-वां कोर अपने सब तोपख़ानों को रान्कूर में संकर्षित करके, अपने पैदलों को उत्तर और पश्चिम दोनों ओर से आक्रमणार्थ आगे बढ़ा दिया।

छठवें फ्रेञ्च कोर के कमाण्डर मार्शल कैनराबर्ट ने जब देखा, कि उनके दहने बाज़ू की सब चमुएं घिरी जाती हैं, तब उन्होंने अपनी उन चमुवों को एक ब्रिगेड के संवरण में, जो जौमां (*Jaumont*) की खदानों से अग्नि-वृष्टि कर रहा था, रान्कूर से हटा लिया। अब उत्तर और उत्तर-पश्चिम से सैक्सनी कोर के तोपख़ाने और पैदल सेण्ट प्रीवाट के पास पहुंचे। तुरंत चौबीस बैटरी तोपख़ानों से वहां पर संकर्षित अग्नि-

वृष्टि का धुवांधार प्रारंभ हो गया, पस रिज़र्वी गार्डों और समीप पहुंचे हुए १०-वें कोर के तोपखानों की सहायता पाते ही आवेष्टित करती हुई बटालियनें साढ़े सात बजे शाम को उस पर धावा कर दीं।

जलते हुए ग्राम की संरक्षा फ्रेञ्च सेना बहुत ही दृढ़ता के साथ अंत तक करती रही, और अब चारों ओर से अपने को घिरती हुई देखकर, आठ बजे रात को वह आत्म-समर्पण कर दी।

जौमां वाले ब्रिगेड और रिसाले के संवरण में छठवें फ्रेञ्च कोर की पराजित हुई चमुएं मोज़ेल नदी की घाटी में हट आईं। मार्शल बाज़ेन ने अपने बांये बाज़ू से जो रिज़र्व इस तरफ़ भेजे थे, वे यहां इतना विलंब करके पहुंचे, कि उनसे कुछ काम न निकला; यदि वे कुछ ही समय पहले वहां पहुंच गये होते, तो विजय-लाभ शायद फ्रेञ्चों ही को हुआ होता। फ्रेञ्च बैटरियां अब अमान-विलर्स के पूर्व में लगाई गईं, और तोप-युद्ध प्रारंभ होकर कुछ रात गये तक दोनों ओर से गोले छूटते रहे। प्रभात होने पर फ्रेंच सेना का अतीव भयानक शिविर ख़ाली पाया गया, उन लोगों ने उसको रात ही में ख़ाली कर दिया था।

आठ सैनिक कोर और रिसाले के तीन डिवीज़न इस संग्राम में योग दिये थे, सब मिलाकर इसमें जर्मनो

को ओर के १,७८,८१८ पैदल, २४,५८४ सवार और ७२६ तोपें उपस्थित थीं, किन्तु युद्ध में योग देने वालों की वास्तविक संख्या प्रायः १,००,००० फ्रेंच और १,५०,००० जर्मन जवानों की रही होगी। अपने १३,००० अफ़सर और सिपाहियों का हताहत होना फ्रेंच स्वीकार करते हैं; जर्मन सेना के प्रायः २०,००० योद्धाओं की अवश्य ही हानि हुई होगी।

समालोचनायें

रिज़र्वियों और स्वयं सेनापति मार्शल बाज़ेन का बांये बाज़ू में उपस्थित रहना प्रकट करता है, कि शालां की अपेक्षा मेज़ से आवागमन सुरक्षित रखने की मार्शल को अधिक चिंता थी। आपका दहना बाजू बहुत ही निर्बल था, और चूंकि जेनरल कैनराबर्ट के पास मोर्चों के निर्म्माण करने के हथियारों की भी कमी थी, अतएव उनके कोर के संभालने की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। यदि फ्रेंच गार्ड सेना सेण्ट प्रीवाट के संभालने में रही होती, तो इस संग्राम का परिणाम कुछ भिन्न ही हुआ होता। रात हो जाने पर जर्मनों को कुछ थोड़ी सी सफलता प्राप्त हुई थी, दूसरे दिन के युद्ध के लिये उनके पास अम्यूनिशन की अवश्य ही कमी पड़ गई होती। अम्यूनिशन का भंडार (*Arsenal*) पास होने से इस बात में फ्रेंच सेना निज शत्रु की अपेक्षा अच्छी अवस्था में थी। यदि किंचित् अधिक ओजस्विता के साथ वह आगे बढ़ कर शत्रु-सेना पर आक्रमण किये

होती, तो उसको विजय-लाभ अवश्य ही हुआ होता। मार्शल बाज़ेन सर्वथा आत्म-संरक्षक (*Defensive*) का भाव आग्रह पूर्वक ग्रहण किये रहे आये, आक्रामक होना उन्होंने शत्रु के हाथ में सौंप दिया था, इसी से उनको पराजय के साथ बहुत बड़ी हानि भी उठानी पड़ी। ता० १६ अगस्त को तथा ता० १८ अगस्त को भी जो फ्रेंच चमुत्रों ने प्रत्याक्रमण किये थे, वे दोनों ही एक-स्थानीय (*Local*) रहे आये; सदल बल होकर इन लोगों ने एक बार भी आगे बढ़ने का साहस नहीं किया। बाज़ेन की रण- युक्ति के अनुसार यह स्वीकार किया जा सकता है, कि यदि उनका पेरिस की ओर पीछे हटना संभव नहीं था, तो मेज़ की ओर वापस चले आने में समय और अवकाश मिलने की संभावना अवश्य थी, और जब तक बाहरी सहायता से उनका वहां से उद्धार होता, तब तक शत्रु की एक बड़ी सेना को वे मेज़ के आस-पास अवश्य ही बझाये रह सकते थे। किन्तु इनकी इस युक्ति के सफलार्थ मेज़ में रसद और अम्यूनिशन, इन दोनों आवश्यकीय वस्तुओं के एक बड़े मिक़दार में जमा रहने की ज़रूरत थी, किन्तु इन दोनों ही चीज़ों की कमी वहां बहुत पहले ही से प्रकट हो चली थी।

जर्मनों के लिये यहां पर युद्ध स्वीकार करना

उचित था, अथवा क्या, इस विषय पर बहुत आलोचना-प्रत्यालोचनायें हुई हैं। इन लोगों ने फ्रेंच-सेना के पेरिस की ओर के पीछे हटने के मार्ग को सर्वथा अवरुद्ध कर दिया था, अतएव म्यज़ नदी की ओर का हटना केवल बाहु-बल से संभव हो सकता था। अत्यंतम दृढ़ और सुरक्षित फ्रेञ्च शिबिर पर बहुत बड़ी हानि उठा कर आक्रमण कर देना, और केवल इसलिये, कि शत्रु-सेना, मेज़ के सुदृढ़ दुर्गों में लौट आवे, कहां तक दूर-दर्शिता का कार्य्य था, यह नहीं कहा जा सकता है। यदि युद्ध कहीं रात भर और होता रहा आता, तो इसका परिणाम कुछ भिन्न और बहुत ही भीषण हुआ होता; पराजित होने पर जर्मनों की बहुत बड़ी दुर्दशा हो गई होती। पुनः यदि आक्रमण करने में जर्मनों की ओर से कुछ विलंब कर दिया गया होता, तो फ्रेञ्चों को अपने शिबिर के अधिक भयानक और दृढ़ बना लेने का सावकाश मिल गया होता। अब तक बाज़ेन से वही बातें होती आईं, जिनसे जर्मनों को लाभ ही लाभ होते रहे। जर्मनों के सौभाग्यवश इतने काल तक आत्म-रक्षक बने रहे आने के बाद बाज़ेन के इस समय आक्रामक बनने में संदेह था। आक्रामक बन कर युद्ध करना जर्मन सेना को बहुत ही परिश्रम करके

सिखलाया गया था, और इनके ओजस्वी आक्रमणों से अब तक के संग्रामों में इन्हें लाभ भी पूरा २ हुआ था। ऐसी सेना को सहसा आत्म-संरक्षक बनाने में हानि की भी बहुत बड़ी संभावना हो सकती थी। पुनरपि, जहां इस बात का कि 'रण-कार्य्य किस प्रकार करना चाहिये,' संदेह हो, वहां पर इस पुराने नियम का पालन कि 'युद्ध करने का अर्थ आक्रमण करना है,' प्रायः सब से अच्छा होता है। ग्रावलाट का संग्राम अधिक करके रण-रचना संबन्धी (*Strategical*) संग्राम था; शत्रु-शिबिर की दूसरी ओर अपनी चमुवों को घुमा कर ले जाने ही से इसमें जर्मनों को विजय-लाभ हुआ था। युद्ध का फल चाहे कुछ भिन्न भी हुआ होता, परन्तु शत्रु-सेना का पेरिस की ओर का हटना तो इन लोगों ने पूर्णतः बंद कर दिया था। इस अनुपम रण-रचना के अनुसार सेना-संचालन (*Strntegic Movement*) का जो अपूर्व प्रभाव पड़ा था, उसको मेटने में जर्मनों की प्रबल सैनिक शक्ति के नष्ट करने की आवश्यकता थी, परन्तु फ्रेञ्च सेना की तत्कालीन अवस्था में ऐसी घटना का उपस्थित होना प्रायः सर्वथा असंभव था।

कहने को तो यह बड़ा संग्राम केवल एक हुआ था, किन्तु वस्तुतः यहां पर दो बड़े और भिन्न संग्राम

हुए थे। एक उत्तर तरफ़ दूसरे दल से, दूसरा ग्रावलाट के समीप पहले दल से। प्रशियाधिराज का सदर दहने बाज़ू में था, और पांच बजे सायंकाल के पश्चात्—अर्थात् संग्राम के कठिन अवसर पर—राजकुमार फ्रेडरिक चार्ल्स और उनके दूसरे दल पर सदर का निग्रह (*Control*) बिल्कुल नहीं रह गया था। इस दल के केन्द्र के पास, अर्थात् वर्नविल के समीप कहीं पर, शाही सदर का रहना निस्संदेह उचित था। मेज़ के आस-पास के रण-कार्य्यों में जो सफलता प्राप्त हुई थी, उसके प्रधान कारण मार्शल मोटके थे; केवल अपने अनुपमेय उद्योग, बुद्धि और कार्य्य-पटुता ही के बल से आप उन बाधाओं और प्रतिबंधकों को रोकने और दूर करने में सफलीभूत हो गये थे, जो शाही घराने के पुरुषों की ग़लती से वहां पर उपस्थित होगई थीं।

सदर स्टाफ के मुख्य अफ़सर के आज्ञानुसार इस संग्राम में पहले तो फ्रंट से आक्रमण किया जाने वाला था, पुनः दोनों बाजुवों को बढ़ा कर शत्रु-सेना घेरी जाने वाली थी। रिसाले वालों की ता० १७ वाली गिर्दावरी यथोचित न हो पाई थी, इसी से इस संग्राम पर सदर का यथोचित निग्रह भी नहीं रह सका; अतः सेण्ट प्रीवाट के समीप के टर्निंग मूवमेन्ट (*Turning*

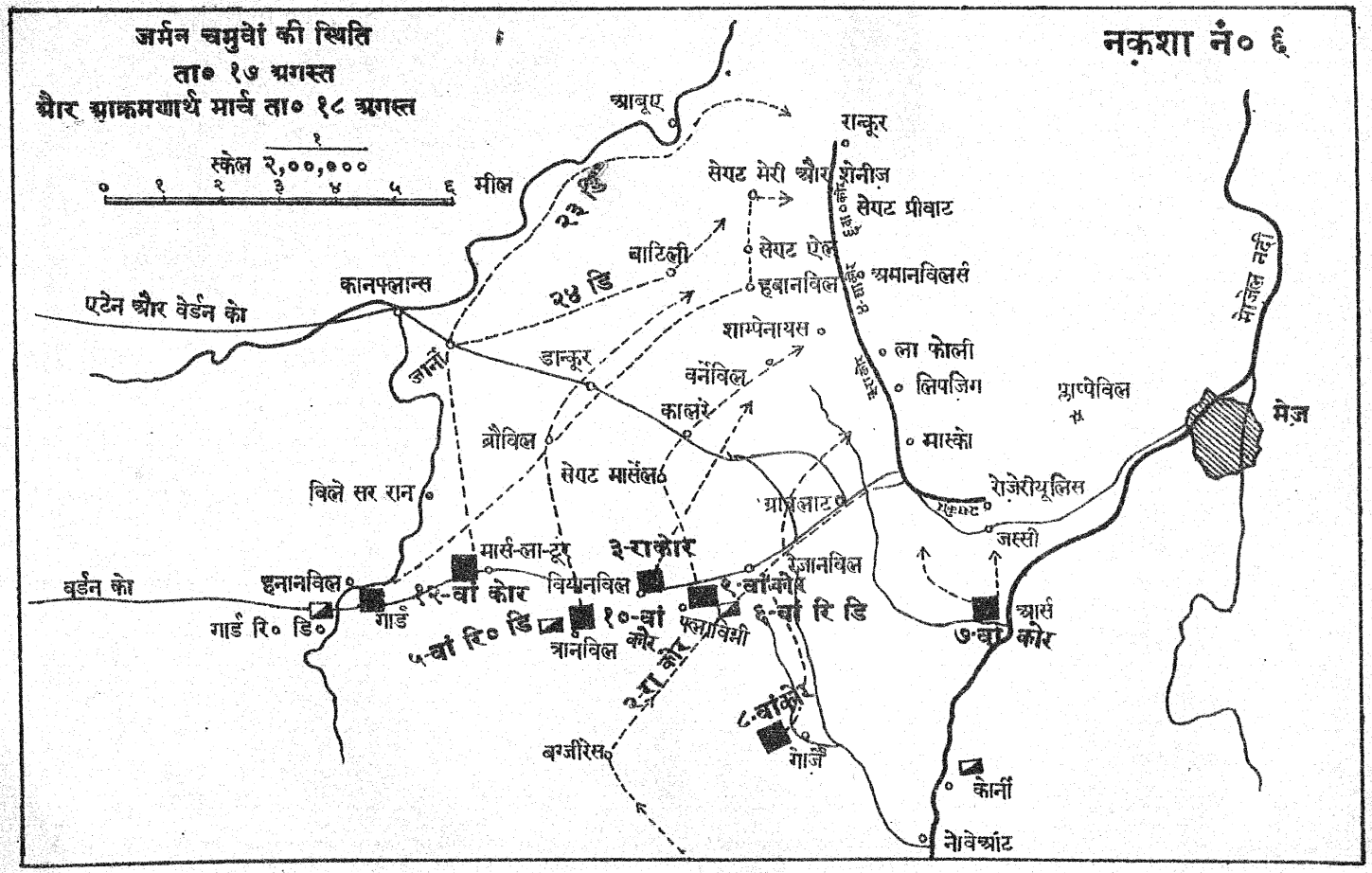

जर्मन चमुवों की स्थिति
ता० १७ अगस्त
और आक्रमणार्थ मार्च ता० १८ अगस्त
नक़शा नं० ६
स्केल १/२,००,०००
० १ २ ३ ४ ५ ६ मील
आबूए
रान्कूर
सेण्ट मेरी और शेनीज़
सेण्ट प्रीवाट
सेण्ट ऐल
हबानविल
अमानविलर्स
बाटिली
२३ डि
२४ डि
कानफ्लान्स
एटेन और वेर्डन को
जार्नी
डान्कूर
शाम्पेनायस
ला फोली
लिपज़िग
वर्नेविल
कालरे
मास्को
प्लाप्पेविल
मेज़
मोज़ेल नदी
ब्रौविल
सेण्ट मार्सेल
विले सर रान
ग्रावलाट
रोज़ेरीयूलिस
जस्सी
मार्स-ला-टूर
३-रा कोर
रेजानविल
वर्डन को
हनानविल
१२-वां कोर
वियानविल
२-वां कोर
६-वां रि डि
आर्स
७-वां कोर
गार्ड रि० डि०
गार्ड
५-वां रि० डि
१०-वां कोर
त्रानविल
फ्लाविग्नी
२-रा कोर
८-वां कोर
गोर्ज़े
बग्जीरेस
कोर्नी
नोवेआंट

movement) * में जो सफलता हुई थी, वह प्रिन्स फ्रेडरिक चार्ल्स के केवल आरंभोपक्रम (*Initiative*) से हो पाई थी। दूसरे बाजू की ओर जेनरल स्टीनमेज़ संग्राम की तत्कालीन अवस्था को शायद समझ न पाये, इसी से उन्होंने ब्वायज़ डि वाज़ से रोज़ेरियूलिस (*Rozerieulles*) पर अपना मुख्य आक्रमण तो न किया, किन्तु उसके बदले सेण्ट हयूबर्ट के आस-पास में अपने पैदलों को नष्ट किया, और सवारों को निष्प्रयोजन के कार्य्य में बका रखा। इस युद्ध में पहले दल को बहुत कम सफलता प्राप्त हुई थी; इस दल के पूरे तीन सैनिक कोर शत्रु के केवल तीन डिवीज़नों के साथ लड़ते रहे आये थे, और तथापि उनकी केवल बाहरी चौकियों (*Outposts*) पर वे स्वाधिकार कर पाये थे।

उत्तरी बाज़ू में उचित समय के पूर्व ही सेण्ट-प्रीवाट की ओर गार्ड सेना के बढ़ाने से जर्मनों को बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी; उक्त सेना के अनेक शूर योद्धा इसमें व्यर्थ हताहत हुए; वह सेना बढ़ी भी इस रीति से, कि मानो परेड में क़वायद करने जाती थी, और न कि साक्षात् युद्ध-स्थल में शत्रु के सम्मुख। शत्रु के किसी भी दृढ़ मोर्चे पर आक्रमण करने में कुछ अधिक हानि की

* शत्रु की स्थिति को दबा कर हटाने के लिए जो व्यूह-रचना की जाती है, और सेनायें एक स्थान से दूसरी को हटाई जाती हैं, उसको टर्निङ्ग मूवमेन्ट कहते हैं।

तो सर्वदा ही संभावना रहती है, किन्तु ता० १८ के इस संग्राम में जेनरल स्टीनमेज़ और वर्टेमबर्ग के प्रिन्स के अनुचित व्यूह-विधान (*Tactics*) ही से अधिकांश हानि उठानी पड़ी थी।

शत्रु-सेना के दहने बाज़ू के दबा दिये जाने और उसके पूर्णतः पराजित कर दिये जाने का समाचार प्रिन्स फ्रेडरिक चार्ल्स द्वारा मोटके के पास आधी रात से पहले नहीं पहुंचा होगा, उधर दूसरे (बांये) बाजू में पहले दल का रण-कार्य्य अधूरा और संग्राम का परिणाम असंदिग्ध नहीं हो पाया था, तथापि इस बुद्धिमान और सूक्ष्मदर्शी जेनरल ने दूसरे दिन के कार्य्यों की व्यवस्था तुरंत प्रकाशित कर दी, अर्थात् पहले तो मेज़ के मुहासिरे का प्रबंध कर दिया, दूसरे वहां से तीन कोरों को अलग करके उन्हें पेरिस की ओर एडवान्स करने की आज्ञा कर दी! युद्ध की दशा को इस तरह पर इतना शीघ्र समझ लेना, और उसपर विचार करके अविच्छिन्न आज्ञा प्रकाशित कर देना मार्शल मोटके की ही रण-दक्षता और अनुभव-शीलता का कार्य्य था!

अध्याय ९

शालां और रीम्ज़

शालां में जमाव—फ्रेञ्चों की रण-युक्ति—रीम्ज़ की ओर मार्च—ता० २५ अगस्त की स्थिति—जर्मनों की रण-युक्ति—म्यज़ दल का संविधान—जर्मनों का एडवान्स—२२ अगस्त—२३ अगस्त—२४ अगस्त—२५ अगस्त—समालोचनायें ।

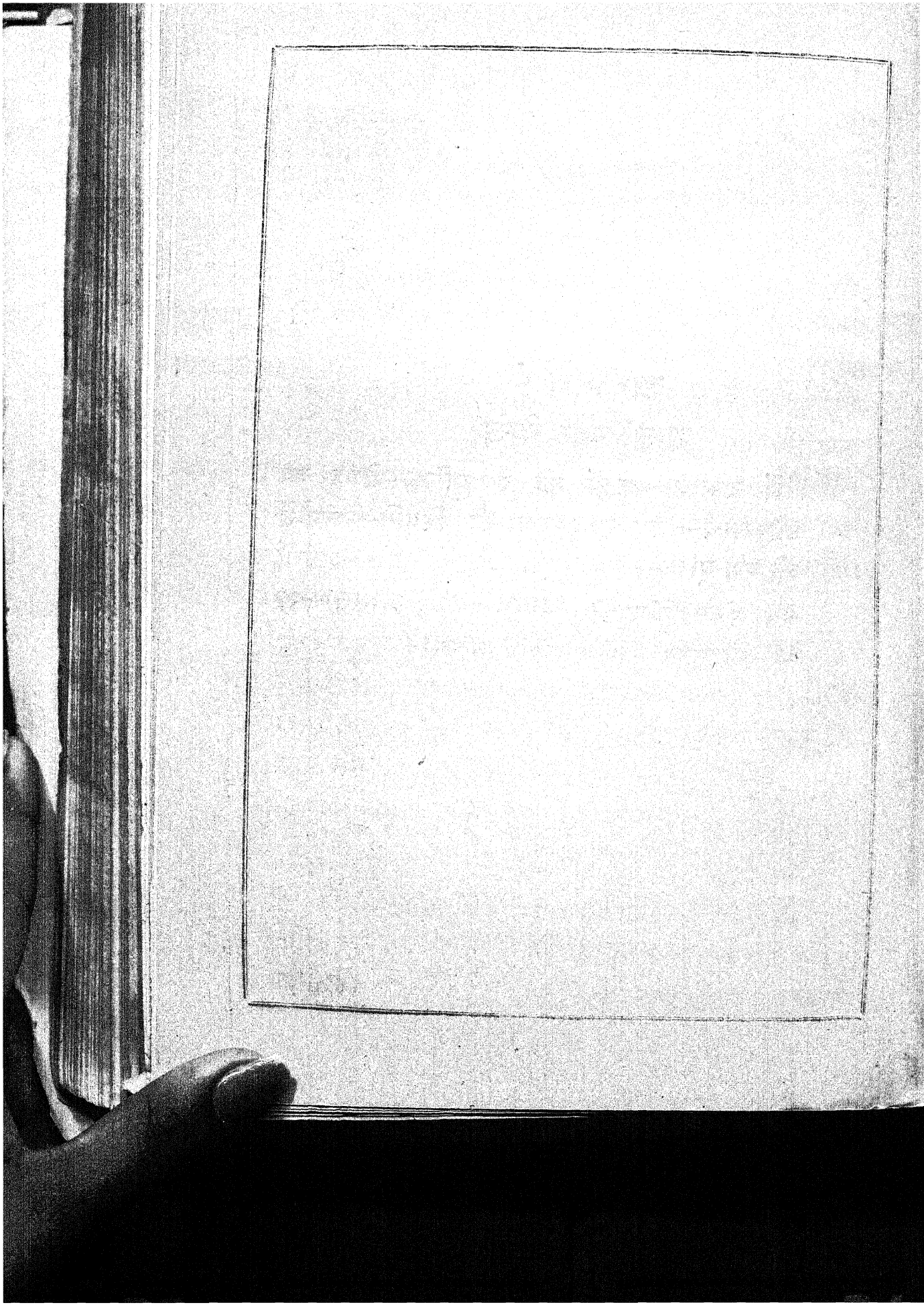

अध्याय ९

शालां और रीम्ज़

शालां में जमाव

ता० ७ अगस्त को पहले सब फ्रेञ्च सेनायें शालां में संकर्षित की जाने वालीं थीं, किन्तु विगत संग्राम के फल से उसका किया जाना अब असंभव सूचित हुआ। बाज़ेन के कमाण्ड के राइन दल का इस समय कुछ पता नहीं था, उसके विषय में केवल इतना ही मालूम था, कि ता० १६ को मो.जेल नदी पार करके वह पश्चिम तरफ़ को हटने वाला था।

वर्त्त में पराजित होने के पश्चात् पहला और पांचवां कोर, जो ज़ारब्रर्ग के पास एक में सम्मिलित कर दिये गये थे, दक्षिण-पश्चिम की ओर न्यूफ़चाटो और चोमां की तरफ़ पीछे हट गये। वहां से पहला कोर रेल द्वारा शालां को भेज दिया गया, तथा पांचवा कोर भी पीछे से वहीं पहुंच गया, इसमें की बहुत सी चमुवों को वहां पहुंचने में पैदल ही चलना पड़ा था।

वर्त्त के संग्राम में सातवें कोर का केवल एक ही डिवीज़न योग दिये था, इस कोर के शेष डिवीज़न बेल-फ़ोर्ट और लिआज्ज़ में थे। बेलफोर्ट वाले डिवीज़न

की कार्य्यवाही तो कुछ बड़े महत्व की नहीं हुई थी, किन्तु उससे फ्रेञ्च सेना की आंतरिक दशा का बहुत अच्छा परिचय मिलता है, इससे उसका यहां पर उल्लेखित कर दिया जाना उचित मालूम होता है।

इस रिपोर्ट के आने पर कि फ्रेञ्च शिबिर की अग्नि राइन नदी के दूसरे तट से देख पड़ती है, जेनरल एफ० शुन्य रखो डूए अपने डिवीज़न को मलहौज़ेन में हटा लाये। यहीं पर आपको वर्त्त की पराजय का समाचार मिला; इसमें अत्युक्ति और भय की मात्रा बहुत अधिक मिली थी; और इनके शिबिर में यहां तक ख़बर फैल गई, कि शत्रु सेना नदी उतरती चली आ रही है। केवल निज १२,००० जवानों से उस स्थान की संरक्षा में अधिक भय और हानि समझ कर, तथा उपर्युक्त ख़बर 'कहां तक सत्य है,' इसके जानने का कुछ भी उद्योग न करके आपने अपनी सेना को बेलफोर्ट में हट जाने की तुरंत ही आज्ञा कर दी। सिपाहियों को भोजन तक बनाने का सावकाश नहीं दिया गया; अतएव शीघ्र ही सब रैंकों में उन्मादकता, अव्यवस्थिता और नैराश्य छा गया। योद्धावों ने अपने २ शस्त्र और झोरे, सब इधर उधर फेंक दिये, सड़कें सिपाहियों से भर गईं, कुछ कहने पर अपने अफ़सरों को वे कुवाच्य तक कह देते थे। बिना किसी शत्रु को देखे, जो इस तरह का निन्दनीय और कायरता का कार्य्य हुआ,

और जिसके कारण से सब सेना को ऐसी जल्दी में पीछे हट जाना पड़ा, तथा जिससे शिबिर में इतनी संत्रस्तता छा गई, उसका कारण वर्दमबर्ग की एक छोटी सी सेना का उत्तमता के साथ कृष्ण वन (*Black Forest*) में केवल रण-व्याज प्रकट करना था।

ता०१२ अगस्त को, अर्थात् लिअज्ज़ वाले डिवीज़न के बेलफोर्ट में पहुंच जाने के बाद सातवें कोर में सब मिला कर २०,००० जवान और नव्वे तोपें हो गईं। यद्यपि शत्रु-सेना उस समय उनके सम्मुख स्ट्रासबर्ग में ही पहुंच गई थी, किन्तु फ्रेञ्च कोर न तो शत्रुवों के मुक़ाबिला के लिये ही आगे बढ़ा, और न पीछे लौटती हुई मैकमाआं की चमुवों से संबंध करने ही के लिये उस कोर ने कुछ उद्योग किया।

ता० १६ अगस्त के पहले तक इन लोगों को रेल द्वारा शालां जाने की भी आज्ञा नहीं की गई थी, तत्पश्चात् आल्सास प्रांत निस्सहाय अपनी भाग्य पर छोड़ दिया गया। वहां जाने का जो निकटतम मार्ग था, उससे जाने में शत्रु से आक्रमण किये जाने का भय था, अतएव बावन ट्रेनों में भर कर यह कोर पेरिस के मार्ग से वहां भेजा गया। गाड़ियों में सिपाही ठसाठस्स भरे थे, और उनको ४५० मील का लंबा सफ़र तैं करना था; फल इसका यह हुआ, कि सब योद्धा शिथिल पड़ गये। मार्ग

में भोजन इत्यादि का भी समुचित प्रबंध न होने से सिपाहियों में अस्तब्धता और उन्मादकता छा गई ।

शालां पहुंचने पर इस कोर को मुख्य सेना में संयुक्त हो जाने की आज्ञा हुई, और ता० २२ अगस्त को वह वहां पहुंचा । शिबिर से रोम्ज़ तक पहुंचने में कितनी ट्रेनों को चौबीस घंटे तक लग गये थे । यद्यपि सातवें कोर को तब तक कहीं पर शत्रु-सेना का सामना भी नहीं करना पड़ा था, परन्तु मैकमाआं की सेना में वह बहुत अव्यवस्थित दशा में पहुंचा ।

किसी सेना को रेल द्वारा लंबी सफर कराने में बहुत सावधानी रखनी चाहिये, अन्यथा बहुत काल तक गाड़ियों में सिकुड़ कर बैठे रहने में सिपाही और घोड़ा, दोनों को शिथिलता और थकावट आ जाती है, और वे शीघ्र संग्राम में योग देने के योग्य नहीं हो सकते हैं ।

शालां में एक बारहवें कोर का निर्म्माण कर लिया गया, इसमें स्पेन की सरहद्द पर का डिवीज़न, थोड़ी सी समुद्री सेना (*Marines*) की बटालियनें और कुछ नई रेजिमेंटें भरती हुई थीं । पेरिस के गार्डस मोबाइल्ज़ (*Parisian gardes mobiles*) की भी कुछ बटालियनें इस कोर में मिलाई जाने वाली थीं, किन्तु इनमें के सिपाही इतने गुस्ताख़ और झगड़ालू साबित हुए, कि अन्त में उन्हें राजधानी को, जहां जेनरल विनय (*Vinoy*)

के निरीक्षण में एक तेरहवां कोर बनाया जा रहा था, वापस भेज देना पड़ा। शत्रु द्वारा छीने गये तोपख़ानों और अपर सामरिक सामग्रियों की जगह पर नये सामान सदर से मंगवा लिये गये, तथा रिसाले के दो नये डिवीज़न भी वहां आ गये। अब पेरिस में जो सेना-संगठन हो रहा था, उसके अलावे मार्शल मैकमाओं के पास ता० २५ अगस्त को १,१३,६०० पैदल, १६,४५० सवार, और ४०२ तोपें तथा ८४ मिट्राल्युज़ेज़ तोपें थीं।

फ्रेंच रण-युक्ति

महाराज नैपोलियन शालां में एक रण-सभा एकत्रित किये, उसमें समस्त फ्रेञ्च सेना का भार मार्शल मैकमाओं के हाथ में दिये जाने का, तथा सब सेनाओं को राजधानी की ओर हटा ले आने का प्रस्ताव स्थिर किया गया; ट्रोचू राजधानी के गवर्नर नियत किये गये। इस मंतव्य के स्थिर होने के थोड़ी ही देर बाद राजधानी से एक आज्ञा-पत्र (*Despatch*) पहुंचा, उसमें महारानी की ओर से मेज़ की ओर एडवान्स करने की अनुलंघनीय आज्ञा थी। इसी बीच में वियानविल के संग्राम के विषय की भी जेनरल बाज़ेन की एक रिपोर्ट पहुंची, उसमें उन्होंने रसद और अम्यूनिशन मुहैय्या कर लेने के पश्चात् अपनी सेना को 'पश्चिमाभिमुख' चलाने का समाचार दिया था।

पेरिस की ओर हट चलने में बाज़ेन की सेना से

संबंध होना असंभव हो जाता, और वह निस्सहाय पड़ जाती। उधर मंत्रि-मंडल (*War Mintristry*) से जो दूसरा आज्ञा-पत्र आया, उसमें भी बाज़ेन से संबंध कर उनकी सहायता करने के लिये अनुलंघनीय आज्ञा थी। ता० २१ अगस्त को इस बात की पक्की ख़बर आई, कि तीसरा जर्मन दल, जो मेज़ के आस-पास के संग्रामों में कुछ भी भाग नहीं लिये था, अब शीघ्रतापूर्वक पेरिस की ओर बढ़ता जा रहा है; उस दलके रिसाले की अगली रेजिमेंटें विट्री (*Vitry*) में पहुंच गई थीं।

मार्शल मैकमाआं अब बहुत द्विविधा (*Dilemma*) में पड़ गये, उनकी अवस्था निस्संदेह बहुत शोचनीय हो गई थी। कभी तो उनकी इच्छा राजधानी को संवरण करने की होती थी, जिसमें वहां के सुदृढ़ दुर्गों और प्रचुर सामरिक सामग्रियों के आवरण में बढ़ती हुई शत्रु-सेना का सामना करने में उनको अधिकतर सुभीता और विजय-लाभ की किञ्चित् संभावना होती। कभी आपको बाज़ेन और उनकी बड़ी सेना (राइन-दल) को भी सहायता पहुंचाने की बात सूझती थी। शत्रु-सेना फ्रांस के कई एक प्रदेशों को स्वाधिकार में कर लिये थी, अतः राइन-दलको अपनी सेना में मिला कर, जहां कहीं संभव होता, वहीं पर डँट कर और शत्रु को पराजित करके विजित प्रदेशों को पुनः स्वाधिकार में लाना भी मैकमाआं का मुख्य कर्त्तव्य

था। यदि बाज़ेन की सहायता में न जाकर तीसरे दल से युद्ध लेते, तो पराजित होने की दशा में तो वे कहीं के न रहते, और विजयी होकर भी जर्मनों के एडवान्स को कुछ ही काल के लिये रोक सकते थे। पेरिस में नैपोलियन घराने का प्रभाव बहुत कुछ तो क्षीण हो ही चुका था, अब पेरिस के हट जाने में इस घराने का सिंहासन-च्युत कर दिया जाना अवश्यं-भावी था। अतएव राजनीतिक दृष्टि से बाज़ेन से संबंध कर लेना अत्यावश्यक था, किन्तु रण-नीतिक विचारों से राजधानी ही की ओर हटने में कल्याण था।

बाज़ेन अब किस युक्ति से रण-कार्य करना चाहते थे, इसके विषय का समाचार जानना मैकमाआं के लिये बहुत ही आवश्यक था। इस विषय का मेज़ को एक तार दिया गया, इसके उत्तर में अपने इच्छानुसार रण-कार्य करने की मैकमाआं को वहां से इत्तला आई।

भावी रण-कार्य के विषय में मंत्रि-मंडल ने मैकमाआं को यह सम्मति दी, कि वे अपनी चमुओं को तीन कालमों में विभक्त करके और उन्हें आर्गोनेस के मार्ग से निकाल कर म्यज़ नदी की घाटी में पहुंचाने का प्रयत्न करें। इसके लिये मार्शल को शत्रु के तीसरे दल और बेलजियम की सरहद्द के मध्य से होकर फ्लैङ्क मार्च (*Flank March*) करने की आवश्यकता थी, और उस दशा में उनके फ्रंट (*Front*) और फ्लैङ्क (*Flank*) दोनों पर एक ही

समय में शत्रु द्वारा आक्रमण हो जाने की आशंका होती थी। सौभाग्यवश, यदि मुहासिरा करने वाली जर्मन सेना के कोरों से एक २ करके मार्शल को युद्ध करना पड़ता, तो शायद वे क्रम २ से उनको पराजित भी कर सकते थे। तथापि उनको इस संचालन में भय अनेक थे; उधर यह भी संभव था, कि बाज़ेन दक्षिण तरफ़ निकल जाते, उस दशा में उनका मेज़ की तरफ़ जाकर ख़तरे में पड़ना भी व्यर्थ हो जाता। बाज़ेन वाला राइन दल किस दशा में था, तथा बाज़ेन क्या करना चाहते थे, इस विषय में कोई सत्य समाचार न मिल सकने के कारण मार्शल मैकमाआं की कार्य-पद्धति की कठिनाइयां और भी अधिक पड़ गईं; अतएव उपर्युक्त दो में से किसी भी मार्ग का अनुसरण न करके आप ने उस समय मध्य मार्गावलम्बन-वृत्ति धारण की, और रीम्ज़ में अपनी सेना को हटा ले जाने का विचार किया। इसमें उनको दो लाभ थे, प्रथम तो यह था, कि वहां पर पहुंच और शत्रु-सेना की भावी रण-रचना संबंधी चालों को देख कर उनको अपने सैनिक-संचालन में उपयुक्त परिवर्तन करने का मौक़ा था; दूसरे एक बाज़ू में रह कर वहां से पेरिस के जाने वाले कम दूरी के सब मार्गों को, संवरण करने का भी मौक़ा था।

रीम्ज़ को प्रस्थान, अगस्त २१

ता० २१ अगस्त को शालां का शिबिर ख़ाली कर देने का विचार ऐसी जल्दी

में किया गया, कि रसद, घास, वर्दियां तथा अपर सामरिक सामग्रियां को पेरिस भिजवाने के लिये बारबर्दारी का कुछ भी प्रबंध किया न जासका; अतएव शिबिर के जलाने और सामग्रियों के नष्ट करने का सब भार रीअर गार्ड सेना के जिम्मे कर शेष सेना चला दी गई। सातवां कोर समस्त, और पांचवें कोर का कुछ अंश, ये दोनो वहां पर कुछ विलंब करके पहुंचे थे, इसलिये वहां की सामरिक सामग्रियों और वर्दियों से अपने को सुसज्जित करने का उन्हें थोड़ा सा अवसर तक न दिया गया, और वे तुरंत रेल द्वारा जहां को यहां वाली अपर चमुएं प्रस्थान कर चुकी थीं, भेज दिये गये। उपस्थित अवस्था में इन कोरों के लिये यह आज्ञा बहुत ही अनुपयुक्त थी। कम से कम दो दिन के विश्राम के पश्चात् ये नये आये हुए कोर रण-भूमि के कार्य्य में योग देने के योग्य हो सकते थे; परन्तु मार्शल मैकमाआं पेरिस की ओर लौट चलने का पुनः विचार कर दिये।

पेरिस की ओर मार्च करने की आज्ञा निकल जाने के पश्चात् वाज़ेन के पास से ता० २२ को एक दस्तक (*Despatch*) पहुंचा, उसमें उन्होंने ससैन्य मानमेडी के मार्ग से लड़ते भिड़ते शालां पहुंचने की कोशिस करने का समाचार दिया था। राइन दल (बाज़ेन वाली सेना) अब तक मार्च करना प्रारंभ कर चुकी होगी, इस बात की

मार्शल मैकमाआं को पूरी २ संभावना हो गई, अतएव उनको विवश होकर अपना पूर्व-संकल्प पुनः परित्याग कर बाज़ेन की सहायता के लिये लौटना पड़ा ।

ता० २३ अगस्त को मार्शल बाज़ेन को तार द्वारा यह सूचना दी गई :—"हम भी मानमेडी की ओर प्रस्थान करते हैं, दो दिन में ऐन नदी पर पहुंच जायँगे ।"

प्रबंध के दोष से पहले दिन का मार्च प्रारंभ होने पर एक कालम दूसरे से अड़ गया, और दोनों में से कोई आगे बढ़ नहीं सका, सड़कें ट्रेनों से ठसाठस्स भर गई थीं। प्रायः सायंकाल हो जाने पर सब प्रबंध ठीक हुआ, तब सेना को कुछ आगे बढ़ने का मौक़ा मिला ; पस वह मुश्किल से उस दिन सुप (*Suippe*) नदी तक पहुंच पाई । वहां के कमसरियट (*Intendance*) मुहक्मे की अयोग्यता अब दुखद रूप धारण कर प्रकट हुई । दूसरे दिन सीधा मार्ग छोड़ रेटेल से होकर जाने की इसलिये आवश्यकता पड़ी, कि वहां पर कुछ रसद जमा थी । इस तरह पर दूसरा अमूल्य दिन भी व्यर्थ व्यतीत हो गया । ता० २५ अगस्त को फ्रेञ्च सेना की मुख्य २ चमुएं ऐन नदी के आस-पास रेटेल और वौज़्यर्स के मध्य में पड़ाव किये थीं ।

अगस्त २५ की स्थिति

मारगरेट का रिसाला डिवीज़न उत्तर दिशा में ले चेस्ने (*Le Chesne*) की ओर चला गया,

एक दूसरी रिसाला रेजिमेण्ट ग्रैंड प्रो की घाटी पर दृष्टि रखे थी। गिर्दावरी के अर्थ आगे बढ़ाने के बदले रिसाले की प्रायः सब रेजिमेण्टें अपने २ कोरों के पृष्ठ-भाग में पड़ाव किये पड़ी थीं।

प्रधान सेनापति की पशोपेशी, स्टाफ प्रबंधकारियों की अयोग्यता, तथा रसद की न्यूनता, इन तीनों कारणों से फ्रेञ्च सैनिकों का उमंग (*Morale*) भंग हो गया। नेतावों की योग्यता में सैनिकों को कुछ भी विश्वास नहीं रह गया; सब सिपाही अपने २ भोजन के प्रबंध में आप लग गये। झुंड के झुंड चारों ओर दिहातों में भ्रमण करते दीन किसानों के लिये शत्रु-सेना से भी अधिक दुखदाई हो गये। इस भयानक कार्य में ऐसी आज्ञानुलंघनी और नैराश्य-पूर्ण सेना द्वारा सफलता की बहुत कम आशा पाई जाती थी।

जर्मन रण-युक्ति

ग्रावलाट संग्राम के दूसरे दिन यह मालूम हुआ था, कि फ्रेञ्च सेना मेज़ की ओर लौट गई है, और दूर २ के दुर्गों की संरक्षा के लिये वह अब दुर्गम्य मोर्चों में डँट गई है, अतएव मार्शल मैकमाआं की सेना के साथ इसका संबंध न होने पावे, इसके लिये अब मेज़ के दुर्गों के घेरने की आवश्यकता थी।

इस समय तक दुर्गम्य और सुदृढ़ मोर्चों के संग्रामों में भी जर्मनी को विवश होकर आक्रामक बनना पड़ा था;

किन्तु मोर्चेबंद बैटरियों और साधारण लैनों में रह कर अब जर्मन तोपखानों और पैदलों को अपनी योग्यता और रण-पटुता को आत्म-रक्षा के कार्य में प्रगट करना था। संकर्षित हुई फ्रेञ्च सेनाओं को अपनी थोड़ी सी चमुओं के हलके से घेर लेना बहुत ही बड़े साहस का कार्य्य था। भीतरी लैन में होने के कारण फ्रेञ्च सेना किसी एक द्वार पर अपने को शीघ्रता पूर्वक संकर्षित कर जर्मनों की दूर २ में छिटकी हुई चमुओं से अधिकतर शक्तिमती बन सकती थी, और जब चाहती, उनको दबा कर निकल जाना उसके लिये कोई बड़ी बात नहीं थी।

नये आविष्कृत शस्त्रास्त्रों से सुरक्षित, तथा तार द्वारा समाचार पहुंचाने की सामग्रियों से परिष्कृत मोर्चों की पंक्ति में उपस्थित सेना की शक्ति से जर्मन सैनिक तब तक अपरिचित थे, और न वे यही समझते थे, कि किसी घिरी हुई सेना को पुनः स्वतन्त्रता प्राप्त करने में कितनी कठिनाइयां प्राप्त होती हैं। प्रशियाधिराज ने ता० १९ अगस्त को जो एक सैनिक आज्ञा प्रकाशित की थी, उसको देखने से जर्मन सेना की तत्कालीन अवस्था का पता लग सकता है; उसका सारांश अधोलिखित है:—

"तीनों दलों का पेरिस की ओर सम-फ्रंट में बढ़ना परमावश्यक है, जिसमें शालां उपस्थित शत्रु-सेना के नवीन व्यूह को विध्वंस करने के लिये हमारी उचित संख्या और

शक्ति की सेना वहां पर उपस्थित हो सके।"

"मेज़ में घिरी हुई शत्रु-सेना का दुर्ग से निकल कर पश्चिम तरफ़ का जाना रोकने के लिये छः सैनिक कोरों का मोज़ेल नदी के बांये तट पर ठहरा देना अच्छा होगा। उक्त नदी के तट पर रहकर वे उन टीलों से, जो विगत बार से हमारे अधिकार में आ गये हैं, शत्रु के ऐसे संचालन को रोक सकेंगे। नदी के दहने तट पर एक सैनिक कोर तथा एक रिज़र्व डिवीज़न रखे जावेंगे। शत्रु की किसी अधिक संख्या की सेना से आक्रमण किये जाने पर ये दोनों पीछे हट जांयगे।"

इञ्जिनियरी सेना के कला-कौशल से मुहासिरे की लैन के सुदृढ़ बनाने का यथोचित प्रबंध कर दिया गया। उपर्युक्त आज्ञाओं का सारांश यह था, कि चाहे जैसा पड़े, शत्रु-सेना का, मेज़ से निकलने पर, पश्चिम की ओर का बढ़ना रोक दिया जावे। मोज़ेल नदी के दहने तट के केवल मुख्य २ स्थानों, जैसे रेमिली पर, ध्यान रखने की आज्ञा थी।

चौथे दल का निर्म्माण

दूसरे दल के चार कोरों को पहले दल में संयुक्त करके उन सब का मुहासिरे के लिये

एक नवीन दल बनाया गया; तथा, ४-थे, १८-वें और गार्ड कोरों के साथ में ५-वें और ६-वें रिसाला डिवीज़नो को देकर उनसे एक चौथा दल (अथवा म्यज़ दल) बनाया गया, और सैक्सनी के क्रौन प्रिन्स (युवराज) उस दल के प्रधान सेनापति बनाये गये ।

निर्म्माण के प्रारम्भ में म्यज़ दल में ७०,००० पैदल, १६,००० सवार और २८८ तोपें थीं। ता० २० अगस्त को इस दल की चमुएँ अधोलिखित स्थानो पर उपस्थित थीं:—१२-वां कोर कानफ्रान्स में, गार्ड्स मार्सला-टूर में (वर्डन की सड़क पर); ४-थे कोर को अब तक मेज़ जाने की आज्ञा नहीं की गई थी, परंतु वह कोमेर्सी में पहुंच गया था ।

योज़ पर्वत-माला को पार करने के बाद तीसरा दल तीन कालमों में विभक्त हुआ, तथा अपने रिसाला डिवीज़नो को आगे २ किये शीघ्रता पूर्वक पश्चिमाभिमुख बढ़ता आया था । टूल पर दृष्टि रखने के लिये एक ब्रिगेड को छोड़ कर सब से आगे वाला शेष सब कोर ता० १९ को म्यज़ नदी की लैन में पहुंच गया । म्यज़ दल को भी उसी लैन में पहुंच जाने का सावकाश देने के लिये वहीं पर दो दिन का हाल्ट (विश्राम) बोल दिया गया । इस दल में १,१८,००० पैदल १९,५०० सवार ५२५ तोपें थीं।

जर्मनों का एडवान्स—२२ अगस्त

ता० २२ अगस्त के सायंकाल में म्यज़ और तीसरे दल की चमुएँ (२,२४,००० जवान, ८१३ तोपें) पश्चिमाभिमुख हुईं, पचास मील के फ्रंट में एटेन से गाण्ड्रेकूर तक फैली हुईं थीं। ५-वें, ६-वें और १२-वें रिसाला डिवीज़नों को साथ में लिये गार्ड्स और १२-वें कोर दहने बाजू के छोर पर थे। केन्द्र में ४-था कोर कोमेर्सी में था। गार्ड रिसाला डिवीज़न की कुछ सेना इसके संवरण में थी; ४-थे रिसाला डिवीज़न को आगे किये आर्नेन और ऊपरी म्यज़ नदी के किनारे २ दो लैनों में तीसरे दल की चमुएँ बांये बाजू में डँटी थीं।

रिसाले वालों की रिपोर्टों से मैकमाओं की सेना का शालों में होने का पता मिला, अतएव सब सेना को पश्चिम तरफ सेण्ट मेनेहोल्ड-विट्री की लैन में बढ़ने की आज्ञा कर दी गई (पूर्वोक्त स्थान पर एडवान्स गार्ड्स कोर को ता० २६ अगस्त तक में पहुंच जाने का निदेश था); तीसरा दल म्यज़ दल से एक मंजिल आगे था। शत्रु-सेना से अकस्मात् साम्हना हो जाने पर फ्रंट और दहने बाजू दोनों ओर से उस पर तुरंत आक्रमण कर देने की आज्ञा कर दी गई थी, जिसमें उसको विवश होकर उत्तर की ओर हटना और इस तरह पर, पेरिस से अधिकतर दूर पड़ जाना पड़ता।

अगस्त २३ प्रशियाधिराज के सदर में यह ख़बर आई, कि महाराज नैपोलियन मैकमाआं की सेना के साथ रीम्ज़ में पड़े हैं। पकड़ी हुई कुछ चिट्ठियां तथा पेरिस के समाचार-पत्रों से यह ख़बर कुछ सत्य भी सूचित हुई ; तथापि बड़े २ दर्जे के जर्मन अफ़सरों को शत्रु की स्थिति और उद्देश्य के विषय में कुछ भी निश्चय नहीं हो पाया था, और न तब तक उनके रिसाले वाले ही शत्रु-सेना से संबंध कर पाये थे।

अगस्त २४ प्रायः समस्त जर्मन चमुएं ता० २४ को वर्डन-बार ले डक - सेण्ट डिज़ीर की लैन में पहुंच गई थीं; परन्तु उस दिन का उनका वर्डन पर धावा कर उसको स्वाधिकार में कर लेने का सब उद्योग निष्फल हो गया था। ४-थे रिसाला डिवीज़न के कुछ ड्रगून सवार शालों तक बढ़ गये थे, और वे लौट कर यह रिपोर्ट दिये, कि शत्रु अपना मेग़ज़ीन जला कर तथा शिबिर ख़ाली कर कहीं दूसरी ओर प्रस्थान कर गये हैं।

अगस्त २५ अब यह निश्चय हो गया, कि फ्रेञ्च सेना रीम्ज़ की ओर चली गई है ; किन्तु वह मेज़ की दिशा के संकट-पूर्ण मार्ग का अनुसरण करना चाहती थी, किम्वा राजधानी पेरिस के संवरणार्थ लिआन में जाकर जर्मन सेना को पलैंक से रोकना चाहती थी, इसका निश्चय नहीं किया जा सका। अतएव जर्मनो ने भी अपने एडवान्स की

दिशा में तो कुछ परिवर्तन नहीं किया, परन्तु चूंकि रीम्ज़ शालां की अपेक्षा कुछ अधिक दूरी पर था, इस लिये तीसरे दल की चमुवों को एक मंज़िल बहुत कड़ी तैं करना पड़ा ; इसका फल यह हुआ, कि दोनों दलों की फ्रंट लैन साधारणत: उत्तर-पश्चिम में विट्री से डोम्बासले तक हो गई। एक रिसाले की रेजिमेण्ट, जो डनसे होकर उत्तर दिशा में भेजी गई थी, सीडान-तिआनविल लैन पर के स्टीने नामक स्थान के पूर्वोत्तर की दिशा में उपस्थित एक लकड़ी के बने रेलवे पुल को जला दी, तथा कुछ अधिक दक्षिण में बढ़ कर इसने विट्री के छोटे क़िले और एक बटालियन चलायमान (*Mobiles*) सेना को पकड़ लिया। चूंकि आर्गोनेस प्रांत अब पास ही में था, तथा वहां की प्रजा भी जर्मनों से द्वेष प्रकट करती सूचित होती थी, इससे उधर अधिक दूर तक की गिर्दावरी (*Scouting*) नहीं की जा सकी। तथापि ५-वें और ६-वें रिसाला डिवीज़नो ने अपनी एडवान्स पार्टी के सवारों को गार्ड्स और ४-थे कोरों के फ्रंट में प्राय: चौदह मील तक आगे बढ़ा कर शत्रु-सेना का हाल-चाल ले लिया।

फ्रेञ्च सर्कार अब सर्वसाधारण प्रजा को जर्मनों के विरुद्ध उभाड़ दिये थी, और उन्हें शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करने का प्रबंध कर लिये थी। फ्रेङ्क-टिरेर (*Franc-tireurs*) अर्थात् फ्रांस के शार्प-शूटर किसान साधारण वर्दियां पहने

योद्धा बनने के योग्य कदापि नहीं हो सकते थे। बड़े २ संग्रामों में तो इनका प्रभाव कुछ विशेष नहीं पड़ सकता था, परन्तु विलग पड़ी छोटी २ चमुवों के लिये ये बहुत हानिकारक और विशेष कष्ट-दायक सूचित हुए।

समालोचनायें

सैनिक अवस्था पर विचार करने से मालूम पड़ेगा, कि पश्चिमाभिमुख गामी जर्मन दल के दहने बाज़ू पर और उससे केवल दो ही मंज़िल पर उत्तर में १,५०,००० जवानों की फ्रेञ्च सेना पूर्व तरफ़ बढ़ रही थी। मैकमाओं की चालों (*Movements*) और उद्देश्य के विषय में तो जर्मन सदर में कुछ भी ठीक ख़बर नहीं लगी थी; जनरव (अफ़वाह) से जो समाचार विदित हुए थे, वे निर्मूल भी सिद्ध हो सकते थे।

ता० २५ को सबेरे जर्मन सदर में शत्रु-सेना के विषय का, पूर्व तरफ़ मेज़ की ओर, बढ़ने का समाचार निर्मूल और सर्वथा असंभव माना गया था। दूर तक फैली हुई बड़ी जर्मन सेना के फ्रंट को दहने बाज़ू की ओर परिवर्तित करने में समय की आवश्यकता थी, क्योंकि रसद पहुंचाने वाले कालमों को, जो प्रत्येक कोर के पीछे २ मार्च कर रहे थे, अतर्कित स्थान पर रसद पहुंचाने में बहुत कठिनता पड़ती। अतएव फ्रंट परिवर्तन करने की आज्ञा प्रचलित करने के पूर्व पहले ख़ूब सोच-विचार कर लेने की आवश्यकता थी। 'शत्रु की स्थिति और अभीष्ट

के विषय में पक्की ही ख़बर मिल जाने पर युद्ध में कोई कार्य्य प्रारंभ करना होता है', सच्ची ख़बर मिलने की संभावना प्रायः बहुत कम होती है, किन्तु केवल जनरव ही सुनकर, तथा उसकी सच्चाई के विषय में बिना जांच-परताल किये ही अपने सैनिक संचालनों को संकर (*Complex*) और उलटा-पलटा कर देना अनुचित है। अतः ता० २६ अगस्त के संचालन के विषय में दोनों जर्मन दलों को यह आज्ञा की गई थी, कि वे अपने मार्च की दिशा कुछ थोड़ी सी तिरछी कर दें, अर्थात् शालां की जगह पर अब वे अपना निर्दिष्ट स्थान रीम्ज़ समझ लेवें। उपर्युक्त जनरव में सत्यता की कितनी मात्रा थी, इसके निश्चय के लिये दहने विंग (*Wing*) के रिसाले को वौज़र्स और बुसान्सी की ओर गिर्दावरी करने की आज्ञा कर दी गई।

"रण-रचयिता को किसी युद्ध में प्रायः संभाव्य ही पर विचार करके अपनी रण-रचना करनी पड़ती है। शत्रु-सेना अवसरोपयुक्त अपना कार्य्य उचित रीति ही पर कर रही होगी, ऐसी ही संभावना सर्वदा करनी चाहिये।" मोटके का सिद्धांत।

तत्कालीन अवस्था में फ्रेञ्च सेना का पेरिस को अरक्षित छोड़ कर बेलजियम सीमा प्रदेश से होते हुए पूर्व दिशा में बढ़ना रण-नीतिक दृष्टि से बहुत ही अद्भुत और संकट-पूर्ण मालूम होता था, किन्तु उनका ऐसा

करना असंभाव्य नहीं कहा जा सकता था, अतएव उपर्युक्त जनरव का यथोचित लिहाज़ करके सेना-संचालन के विधान में किञ्चित् परिवर्तन कर दिया गया। उसके अनुसार म्यज़ दल को और उसके समीपस्थ तीसरे दल के दो ब्रवेरियन कोरों को उस दशा में, जब कि शत्रु-सेना के पूर्व तरफ़ मार्च करने की पक्की ख़बर उन्हें मिल जाती, उत्तर दिशा में मार्च करने की आज्ञा कर दी गई। इन कोरों के बढ़ा देने से, तथा आवश्यकता पड़ जाने पर, मेज़ वाले रिज़र्वी कोर की सहायता से शत्रु-सेना, म्यज़ नदी के पूर्व किम्वा पश्चिम में, जहां कहीं मिल जाती, वहीं पर वे अपनी अधिक संख्या और शक्ति की सेना के साथ युद्ध देने के लिये शत्रु को विवश कर सकते थे।

ता० २६ अगस्त के लिये जिन मार्चों के तैं करने की जर्मन सदर से आज्ञा निकाली गई थी, यदि उनको जर्मन चमुओं ने यथोचित रीति से तैं कर लिया होता, तो उनके दहने विंग की चमुएँ शालां वाली शत्रु-सेना की निकटतम चमूँ से, उस दिन सायंकाल के समय, प्रायः २४ मील के अंतर पर रही आतीं, और दोनों प्रतिद्वंद्वी सेनायें मेज़ नगर से प्रायः समान दूरी पर हो जातीं।

किन्तु शत्रु के वास्तविक उद्देश्य के विषय में तब तक पक्की ख़बर न मिल सकने के कारण अपने सैनिक संचालनों के लिये जर्मन सदर में जो तर्क-वितर्क हो रहे

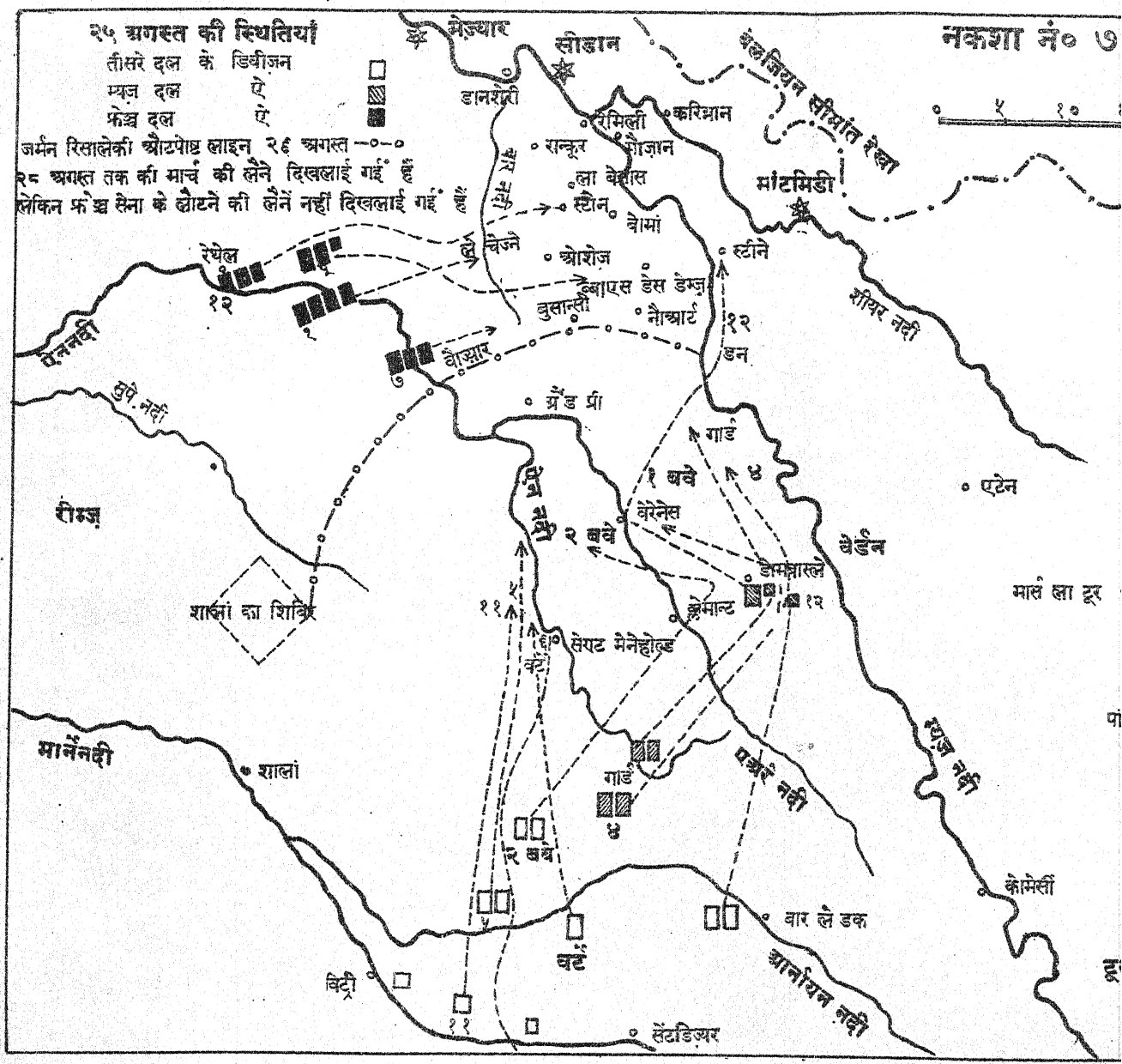

२५ अगस्त की स्थितियां
तीसरे दल के डिवीज़न
म्यज़ दल ऐ
फ्रेञ्च दल ऐ
जर्मन रिसालेकी औटपोष्ट लाइन २६ अगस्त
२८ अगस्त तक की मार्च की लैने दिखलाई गई हैं
लेकिन फ्रेञ्च सेना के लौटने की लैनें नहीं दिखलाई गई हैं
नकशा नं० ७
मेज़्यार
सीडान
डानशेरी
रेमिली
करिग्नान
बेलजियन सीमांत रेखा
मांटमिडी
रान्कूर
मौज़ान
ला बेसास
स्टीन
बोमां
स्टीने
रेथेल
ओशेज़
बाएस डेस डेम्ज़
बुसान्सी
नौआर्ट
डन
शीयर नदी
ऐन नदी
वौज़्यार
सुपे नदी
ग्रैंड प्री
गार्ड
१ बवे
२ बवे
वेरेनेस
एटेन
वेर्डन
डोमवास्ले
क्लेमान्ट
मार्स ला टूर
शालां का शिविर
सेण्ट मेनेहोल्ड
वर्टे
मार्नेनदी
शालां
गार्ड
एअर नदी
म्यज़ नदी
कोमेसी
बार ले डक
वर्टे
विट्री
आर्नायन नदी
सेंटडिज़्यर

थे, उनकी आवश्यकता अब न रह गई, क्योंकि तब तक तो जर्मन सेनापति को संदेह था, किन्तु वह उस दिन तीसरे पहर को दूर हो गया। पेरिस राजधानी की राष्ट्रीय महासभा (*National Assembly*) में बाज़ेन के निस्सहाय मेज़ में छोड़ दिये जाने के विषय में उस दिन कई एक प्रचंड वक्तृतायें हुई थीं, उनका सारांश पेरिस के समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ। पेरिस के टेम्प्स नामक समाचार पत्र से संग्रह कर तार द्वारा इसका समाचार लंडन पहुंचा, और वहां से युद्ध-क्षेत्र में वह ख़बर पहुंची, कि बाज़ेन से संबंध करने के लिये मार्शल मैकमाआं उधर ही एडवान्स कर रहे हैं। इससे उपर्युक्त जनरव अब प्रमाणित सूचित हो गया।

अतः ता० २५ को बहुत रात गये जर्मन सदर से म्यज़ दल को निज दहने विंग की ओर संकर्षित होने के लिये, तथा १ ले और ५-रे बवेरियन कोरों को साथ में लेकर उत्तर की ओर एडवान्स करने की आज्ञा निकली। शत्रु के वास्तविक उद्देश्य से परिचित होने पर क्रौन प्रिन्स (युवराज) ने मुख्य सेनापति (महाराज) से इस बात की आज्ञा चाही, कि तीसरे दल की शेष चमुवों को साथ में लेकर वे भी इस नवीन सैनिक संचालन में एक दिन पीछे से योग दें। युवराज की सम्मति से पेरिस

की ओर बढ़ने में यदि कुछ विलंब भी हो जाता, तो उससे उतनी हानि नहीं होती, जितनी उत्तर में किसी निर्णायक (*Decisive*) संग्राम के अवसर पर समस्त उपस्थित हो सकने योग्य जर्मन चमुवों के न पहुंचने पर होनी संभव थी। प्रशियाधिराज ने आपकी सम्मति स्वीकार कर ली, यदि तीसरे दल के सेनापति (युवराज) ने उपर्युक्त दूर-दर्शिता न की होती, तो ५-वें और ११-वें कोर सीडान के संग्राम में उपयुक्त अवसर पर न पहुंच पाते, उस दशा में फ्रेञ्च सेना मेज़्यर्स की ओर हट जाने में अवश्यमेव सफलीभूत हो गई होती।

अध्याय १०

बोमां

जर्मन एडवान्स, अगस्त २६—फ्रेञ्च संचालन—अगस्त २७—अगस्त २८—अगस्त २९—नौआर्ट की झटापटी—अगस्त ३०—बोमां का संग्राम—समालोचनायें ।

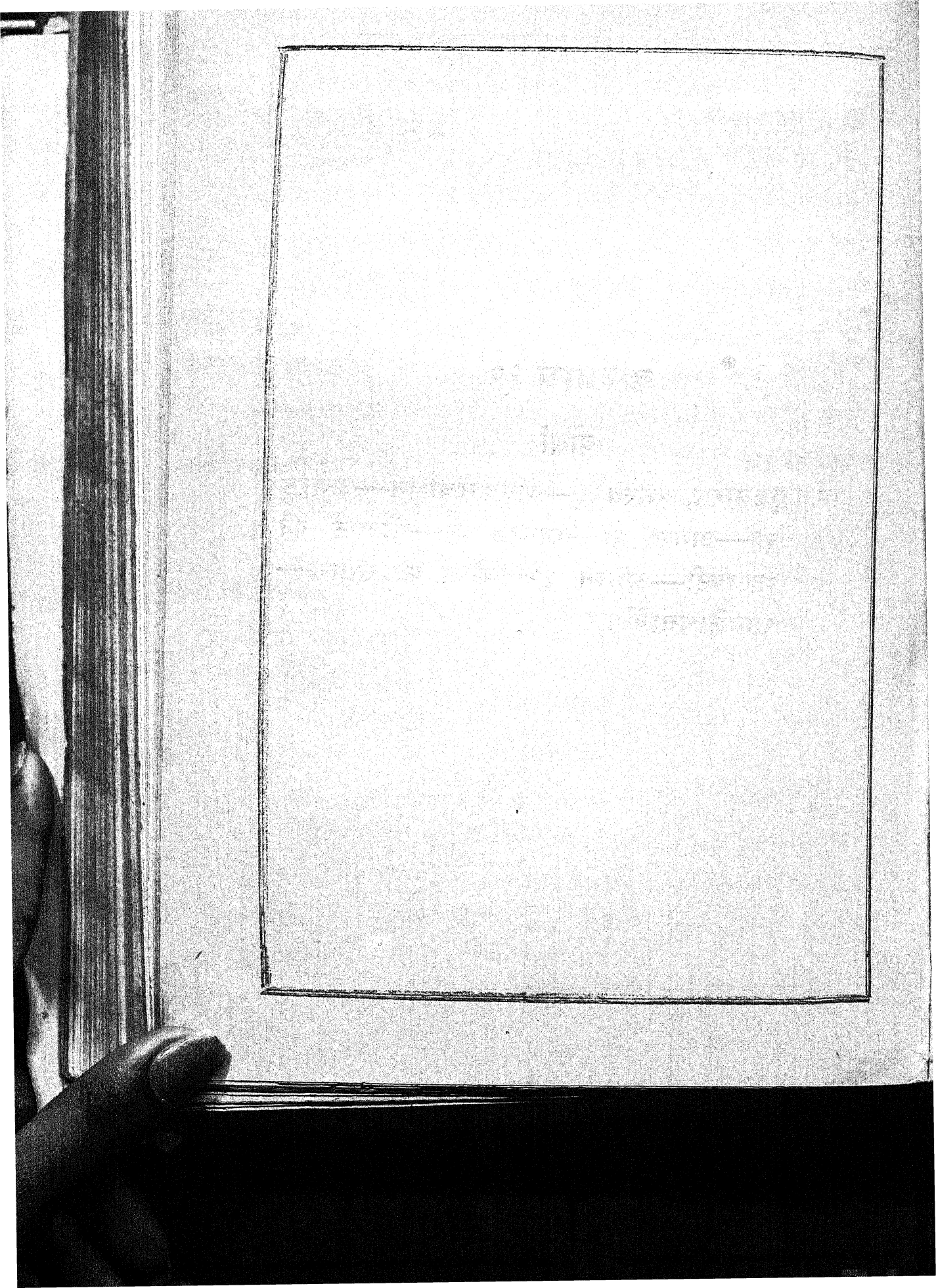

अध्याय १०

बोमां

जर्मन एडवान्स, अगस्त २६

ओ ले और जल की भयंकर वृष्टि और कठिन तूफ़ान के होते हुए भी म्यज़ दल का उत्तर की ओर का एडवान्स बंद नहीं हुआ ; इससे इसमें की चमुवों में कुछ शिथिलता आ गई, और योद्धावों को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। १२-वां कोर वार्न्नेस की ओर, और ४-थे कोर को पीछे २ लिये हुए गार्ड कोर डोम्बास्ले की ओर जाता था। तीसरा दल अपने दहने विंग की ओर समिट आया, और वह या तो रीम्ज़ की ओर, किम्वा उत्तर की ओर मार्च करने के लिये तय्यार था ; म्यज़ दल के पीछे २ मार्च करने के लिये दो बवेरियन कोरों को आज्ञा कर दी गई थी।

गिर्दावरी के हेतु जो चारों ओर रिसाले के सवार भेजे गये थे, वे डन से शालां पर्यंत चापाकार प्रदेश में गुप्त रीति से बढ़कर शत्रु-सेना का समाचार ग्रहण किये, और लौट कर उन लोगों ने सदर में यह रिपोर्ट दी, कि बुसान्सी और ग्रैण्ड प्री में फ्रेञ्च-सेना पड़ाव किये है, और कुछ फ्रेंच चमुएं वीज़र्स के आस-पास में भी पड़ीं हैं।

बाज़ेन से संबंध करने के उद्देश्य से मैकमाआं का पूर्व की ओर—मेज़ की तरफ़—का लौटना अब निश्चय हो गया ; पस अब चाहे जो कुछ पड़ता, जर्मनों के लिये मैकमाआं को रोक कर बाज़ेन से विलग रखना अतीव आवश्यक हुआ। दक्षिण से जो बड़ी सेना उधर जा रही थी, वह फलैङ्क से शत्रु-सेना पर आक्रमण कर सकती थी। मेज़ के मुहासिरा करने वाले सेनाधिप को लिख दिया गया, कि वे अपने दो कोरों को भेज कर म्यज़ नदी के दहने तट और बेलजियम सीमा-प्रदेश के मध्य वाले मार्ग को अवरुद्ध कर लें। आवश्यकता पड़ने पर, दुर्ग के मुहासिरे को कुछ काल के लिये उठा लेने की भी आज्ञा कर दी गई थी ; किन्तु बाज़ेन वाले राइन दल को मेज़ से निकल कर पश्चिम तरफ़ जाने में, चाहे जो कुछ पड़ता, रोक देने के लिये सख़्त ताक़ीद कर दी गई थी।

फ्रेञ्च संचालन

मैकमाआं के लिये उस समय के प्रत्येक क्षण यद्यपि बहुत ही महत्व के थे, और यथा-संभव अत्यंत शीघ्रता करने की आवश्यकता थी, तथापि आप अपनी चमुवों को मंद २ वौज्यर्स वाले सातवें कोर की धूरी पर घुमा (*Wheel*) रहे थे। बारहवां कोर बांये बाजू में व्यूह-बद्ध था, उधर केन्द्र में पहला कोर पांचवें में सम्मिलित हुआ उपस्थित था। सेना के बांये बाजू के फ्रंट में एक रिसाला डिवीज़न बोमां की सड़क पर

उपस्थित था, और दूसरा डिवीज़न सब सेना के पृष्ठ-भाग में पड़ा था। बोमां और बुसान्सी से होकर मांटमेडी को जाने वाली दो मुख्य सड़कों से अपनी चमुओं को बढ़ाने की मैकमाओं की इच्छा थी। किन्तु तीसरे पहर को ग्रैंड प्री और बुसान्सी में जर्मन रिसाले की छाया देखकर फ्रेञ्च शिबिर में बहुत हलचली मच गई। वौज़्यर्स में शत्रु संबंधी अनेक अत्युक्ति-पूर्ण समाचार फैल गये, यहां तक कि बरसते हुए पानी में रात भर सातवें कोर की प्रायः सब चमुएं शस्त्रास्त्र धारण किये खड़ी ही रही आईं। जर्मन चमुओं के सन्निकट पहुंचने का समाचार जब मैकमाओं को मिला, तब उन्होंने अपनी समस्त सेना को वहीं पर, जहां शत्रु-सेना बहुत भयावह प्रतीत पड़ती थी, संकर्षित कर लेने का विचार कर लिया।

फ्रेञ्च रिसाले का वितरण और आलस्य अद्भुत था। पहला रिसाला डिवीज़न एक बाज़ू में किनारे, जहां कुछ भी भय नहीं था, पड़ा था; और शेष रिसाला दूसरे कोरों के पृष्ट-भाग में निरर्थक रिज़र्व में सोता था। जर्मन दलों का, कहीं पर दक्षिण में होने का समाचार रिसाले वालों को मालूम था, तथापि उस तरफ़ गिर्दावरी करने का उन लोगों ने कुछ भी उद्योग नहीं किया, और न शत्रु के भेदिया सवारों (*Cavalry Scouts*) को मार कर भगाने ही का कुछ प्रबंध किया। ओजस्वितापूर्वक

आक्रामक बन कर कार्य्य करने में उन्हें इस बात का साफ़ पता लग गया होता, कि शत्रु द्वारा शीघ्र आक्रमण किये जाने का तब तक कुछ भी भय नहीं था, और उसी के साथ उनको यह भी मालूम हो गया होता, कि अब अधिक पूर्व तरफ़ का बढ़ना उनके सत्यानाश का हेतु होगा।

अगस्त २७ विगत वार को बहुत रात जाने पर जो आज्ञायें प्रकाशित हुई थीं, उनके अनुसार १२-वां जर्मन कोर शीघ्रतापूर्वक नदी के डन और स्टीने नामक घाटों को स्वाधिकार में लाने के लिये आगे बढ़ा; इसको सँभालने के लिये गार्ड कोर और ४-था कोर उसके पीछे २ चले, तथा तीसरे दल के आगे वाले कोर सेण्ट मेनीहौल्ड और क्लेर्मांट से उत्तर की दिशा में प्रस्थान किये। इन संचालनों के संवरणार्थ रिसाले के चार डिवीज़न लगाये गये थे, तथा सौ स्क्वाड्रनों का एक अभेद्य कम्पू (*Cordon*) वौज़्यर्स से म्यज़ नदी पर्यंत शत्रु से संबंध बनाये था।

जर्मन सेना के सन्निकट पहुंच जाने के संबंध में अफ़वाही और असत्य खबरें सुन कर वौज्यर्स में उपस्थित अपने सातवें कोर के सँभालने के लिये मार्शल ने अपने पहले कोर को चला दिया, तथा पांचवें कोर को बुसान्सी चलने की आज्ञा करके उसकी सहायता में बारहवें कोर

के। लगा दिया। शत्रु संबंधी वास्तविक समाचार विदित होने पर उपर्युक्त विधि से कार्य करने का निषेध कर दिया गया, इससे सैनिक संविधान में अधिक गड़बड़ी मच गई। दिन भरके सैनिक-संचालनों का परिणाम यह हुआ, कि बारहवां कोर ले शीने (*Le Cheine*) में पहुंच कर और सातवां कोर वोज्यर्स में पहुंच कर क्रमशः बांये और दहने बाज़ू बनाते थे; पुनः पांचवां कोर केन्द्र से कुछ आगे बढ़ गया था; तथा रिज़र्व में का पहला कोर ऐन नदी पर पड़ा था।

पहला रिसाला डिवीज़न बढ़ कर स्टोने (*Stonne*) तक चला गया, इसको डन और स्टीने की तरफ़ जाने वाली सड़कों पर दृष्टि रखने की, तथा मीज़न और रेमिली नामक स्थानों पर के नदी के घाटों पर अधिकार कर लेने की आज्ञा थी। मार्शल की इन आज्ञाओं से सूचित होता था, कि स्टीने के घाट से शत्रु को दबा कर अपनी सेना को निकाल ले जाने में उनको कुछ संदेह था, इसी से कुछ अधिक उत्तर की तरफ़ से अपनी सेना को निकालने, और इस तरह पर घूम कर साण्टमीडी पहुंचने का आप उद्योग करने वाले थे। डी फैली के कमाण्ड के पांचवें कोर के, शेष सेना से, आगे निकल जाने और पीछे हट आने का परिणाम केवल यह हुआ,

कि दोनों दलों के रिसालों की बुसान्सी में मुख-भेंट हो गई; इसके सिवाय कुछ इधर उधर और भी महत्व-हीन झटापटी हो गई।

मेज़ की ओर का 'मार्च' जारी रखने में जो अनेक दुस्तर बाधायें थीं, वे सब अब मार्शल मैकमाओं को प्रकट देख पड़ीं। आपके सम्मुखस्थ म्यज़ नदी के घाटों पर पहले ही से शत्रु का अधिकार हो गया था। शत्रु-सेना के दिन प्रति अधिकाधिक आते ही जाने से आपके दहने बाजू के दबा दिये जाने की भी बहुत बड़ी आशंका थी। आर्गोनेस के पश्चिम में बढ़ती हुई तीसरे दल की चमुओं द्वारा आपकी सेना का रीम्ज़ से आवागमन बन्द कर दिये जाने का भी भय था। यह सब सोच-विचार कर दूसरे दिन मार्ज्यार की ओर पीछे हट चलने के लिये आज्ञायें निकाली गईं, और इस बात की सूचना युद्ध-मंत्री को दे दी गई।

राजधानी से रात में उपर्युक्त आज्ञाओं के अनुसार कार्य किये जाने के विषय में बहुत ही कड़ी मनाही आ गई। वहां से यह तार आया:—"यदि आप बाज़ेन को निस्सहाय संकट में छोड़ कर इधर बढ़ेंगे, तो पेरिस में विप्लव (*Revolution*) प्रारंभ हो जायगा।"

पश्चात् एक दूसरा तार आया, उसमें मेज़ के उद्धारार्थ प्रयत्न करने की अनुल्लंघनीय आज्ञा थी। उस तार में यह भी लिखा था:—"अपने आस-पास जिस सेना को देख कर आप भय-भीत हो रहे हैं, वह मेज़ मुहासिरा करने वाली सेना का एक अंश मात्र है, तथा आप को जर्मन तीसरे दल के कुछ मंज़िल आगे होने का लाभ भी प्राप्त है।" मार्शल की इच्छा अब फिर परिवर्तित हुई, अर्थात् मांटमीडी की ओर बढ़ने के लिये नई आज्ञायें पुनः निकाली गईं।

इधर जर्मन कमाण्डरों को शत्रु के सब प्रबंधों का ठीक ठीक पता लग गया। उन लोगों ने समझ लिया, कि कुछ फ्रेञ्च सेना बुसान्सी हो कर, और शेष वेमां से हो कर आगे बढ़ रही है, तथा यह कि वह म्यज़ नदी के तट तक तब तक पहुच नहीं पाई है। जिस स्थान पर उस समय उनका चौथा दल था, वहां से, ऐसी आशा होती थी, कि वह दल शत्रु-सेना को म्यज़ नदी उतरने के पूर्व ही उसके बाम ही तट पर पकड़ सकेगा; इस दशा में मेज़ मुहासिरा करने वाले दोनों कोरों के सह-कार्य (*Co-opertion*) की आवश्यकता भी नहीं थी। अतः ता० २७ के सायंकाल में जो आज्ञायें निकलीं, उनके अनुसार आगामि कुछ दिनों तक वैा़ज्यर्स,

वुसान्सी और बोमां की ओर एडवान्स करने की सूचना थी।

अगस्त २८ ता० २८ को सवेरे सब फ्रेञ्च कोर मा़ज्यार की ओर लौटना प्रारंभ कर दिये, किन्तु पिछले निषेध (*Counter order*) के अनुसार जो मार्ग परिवर्तन करने पड़े, उसके कारण चमुवों के संविधान में बहुत गड़बड़ी मच गई। वृष्टि से लत्थ-पत्थ, कीचड़ भरी सड़कों पर क्षुधित और परिश्रांत चमुएँ भीगी और शिथिल हुईं सायंकाल होने के बहुत बाद तक भी अपने २ पड़ावों पर नहीं पहुंच पाईं। बोमां की ओर जाने वाली उत्तरी सड़क पर बारहवां कोर था, और उसके बहुत ही पीछे उसी सड़क पर पहला कोर पड़ाव कर दिये था। दक्षिण वाली सड़क से पांचवां कोर पहले दिन को ओर जाने वाला था, किन्तु अब उसको कुछ अधिक उत्तर से दबा कर मार्च करने की आज्ञा हुई, जिसमें दूसरे दिन वह नदी के स्टीने नामक घाट को स्वाधिकार में कर सके। पांचवें कोर के पीछे और उसको सँभालने में सातवां कोर नियुक्त किया गया था, किन्तु उस तारीख़ को वह निर्णीत स्थान पर न पहुंच सका। दिन भर में फ्रेञ्च सेना मुश्किल से १० मील की दूरी पूर्व तरफ़ मार्च कर सकी; सायंकाल में दोनों अगले कोर बोमां से कुछ

पश्चिम में एक ही लैन में पड़ाव किये थे।

जर्मनो की ओर १२-वां कोर म्यज़ नदी के तट पर अपने मोर्चे जमाये आगन्तुक आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहा था; म्यज़ दल के शेष कोर, और तीसरे दल के कोर उत्तर की दिशा में मार्च कर रहे थे। जब तक पीछे की सब चमुएं समिट नहीं आतीं, तब तक किसी निर्णायक संग्राम के प्रारंभ कर देने का निषेध कर दिया गया था। रिसाले वालों के लिये जहां तक निकट से संभव हो सकता, शत्रु-सेना पर दृष्टि रखने की आज्ञा थी, किन्तु उसको रोकने अथवा दबाने की सख्त मुमानियत कर दी गई थी। आर्गोनेस के पश्चिम में रिसाले के चार डिवी' ज़न और पैदलों के साढ़े तीन कोर इस उद्देश्य से रख दिये गये थे, कि यदि मैकमाआं मेज़ की ओर मार्च करने का अपना अभीष्ट परित्याग कर देते, तो उस दशा में शालां वाली सेना के पीछे हटने में बाधा पहुंचा कर उस को अपर शत्रु-सेना से उक्त कोर विलग रख सकते।

अगस्त २६　फ्रेञ्च सदर इस समय स्टेने में था। वहां पर इस समाचार के पहुंचने पर कि, सैक्सनो की चमुएं स्टीने में अधिकार करके वहां के पुल को तोड़ डाली हैं, तथा अपनी सेना के साथ पुल के सामान उपस्थित न होने से मार्शल ने कुछ उत्तर ओर झुक कर मौज़न और रेमिली के घाटों से म्यज़ नदी के उतरने का

संकल्प किया; तत्पश्चात् कैरिग्नन (*Carignan*) से होकर आप मेज़ की सड़क लेना चाहे। आप का बारहवां कोर नदी उतर गया, वहां से नदी के अधःस्थित भाग की ओर कुछ अधिक बढ़कर आप का रिसाला डिवीज़न भी नदी हल गया। कोई छः मील पश्चिम तरफ़ राकूर (*Raucourt*) नामक स्थान में आप का पहला कोर और दूसरा डिवीज़न रिसाला ये दोनों पहुंच गये। शत्रु के रिसाले से छेंड़े जाने, तथा उनके साथ डिंव-युद्ध (*Skirmishes*) में फँस जाने के कारण सातवें कोर को अपना निर्णीत 'मार्च' पूरा करने का सावकाश न मिल सका, और वह केवल ओशेज (*Oches*) में, जो बोमां से कोई नौ मील दक्षिण-पश्चिम में है, पहुंच पाया। डी फैली वाले इस पांचवे कोर को इस समय बोमां की ओर मार्च कराने की आवश्यकता समझी गई, किन्तु उसको प्रारंभ में स्टीने की ओर बढ़ने की आज्ञा कर दी गई थी, और डी फैली अपने कोर को दो कालमों में विभक्त किये वहां पर उस तारीख़ को पहुंच भी गये, क्योंकि बोमां की ओर जाने को जो आज्ञा सदर से एक स्टाफ़ अफसर द्वारा भेजी गई थी, वह, उस स्टाफ अफसर के शत्रु के रिसाले द्वारा बंदी कर लिये जाने से, उसके पास तक न पहुंच पाई। नौआर्ट में सैक्सनी की चमुवों को देख कर जनरल डी फैली ने भी अपनी सेना को ठहरा दिया,

और आगे बढ़ते हुए शत्रु का मुक़ाबिला कराने के लिये अपने एक डिवीज़न को युद्धार्थ प्रस्तुत कर लिया। अब तक फ्रेञ्च चमुवों की शत्रु के केवल रिसाले वालों से देखा-देखी होती आई थी, किन्तु यहां पर उनके पैदल और तोपख़ाने की सेनायें भी किंचित् ओजस्विता के साथ उन पर आक्रमण कर दीं।

नौआर्ट का संग्राम

यह रण-कार्य्य गिर्दावरी से बढ़ते २ एक खासा संग्राम हो गया, इस में १२-वें कोर के एड-वान्स गार्ड की चमुएं, जो म्यज़ नदी को डन में पुनरपि पार कर यहां आई थीं, नियुक्त थीं। किन्तु ज्यों ही जर्मनो का गिर्दावरी वाला उद्देश सिद्ध हो गया, अर्थात् ज्योंही उन को शुत्र की संख्या, शक्ति और स्थिति इत्यादि के विषय का यथेष्ट पता लग गया, त्यों ही वे युद्ध बंद करके नौआर्ट के दक्षिण में हट गये। फ्रेञ्च सेना अपने ब्वायस डेस डेम्स के पुराने शिबिर में लौट गई, और एक नई आज्ञा के अनुसार पहरे की आग (*Watch Fire*) को जलती हुई छोड़ वहां से बोमां की ओर चली गई।

प्रशियाधिराज के आज्ञानुसार ता० २९ के प्रभात ही से उनके पश्चिम में म्यज़ दल के तीन कोरों को आत्म-रक्षक बन कर दश बजे तक निकटस्थ बवेरियन कोरों

के पहुंचने की प्रतीक्षा करना था। चतुर्मुख से आक्रमण (*General action*) प्रारंभ करने की आज्ञा न थी, और यदि विशेष रुकावट न पहुंचती, तो सैक्सनी के युवराज को बुतान्सी-स्टीने सड़क पर बढ़ने की स्वतन्त्रता दे दी गई थी। इसी आज्ञा के अनुसार सेना-संचालन कराने में सैक्सनी के एडवान्स गार्ड से नौआर्ट में उपर्युक्त संग्राम हो गया था। १२-वें कोर के म्यज़ नदी के दूसरे तट पर उतार दिये जाने के कारण घाटों की संरक्षा का भार केवल रिसाले वालों के ऊपर पड़ गया।

कुछ अधिक पश्चिम में तीसरे दल के चार कोर इस समय म्यज़ दल के बांयें बाजू के पृष्ठ-भाग की चमुवों से केवल एक ही छोटी सी मंज़िल पर पहुंच गये थे। रीम्ज़ नगर से फ्रेञ्च सेना के आवागमन का जो मार्ग था, उसके मध्य में जर्मनो का ५-वां रिसाला डिवीज़न पहुंच गया था, तथा उनका ६-वां डिवीज़न पीछे हटते हुए फ्रेञ्च कालमों के पास ही पास उनका पीछा कर रहा था। शत्रु संबंधी अनेक समाचारों पर विचार कर के दूसरे दिन (३० अगस्त को), जब तक फ्रेञ्च सेना म्यज़ नदी उतरने भी नहीं पाती, उस पर आक्रमण कर दिया जाना निश्चय कर लिया गया। संयुक्त दलों को चौड़े फ्रंट में बोमां और ले शीने (*Le chene*) की ओर एडवान्स करने की आज्ञा कर दी गई, और जब तक

पृष्ठ-भाग में उपस्थित तीसरे दल की चमुएं युद्ध-लैन में न पहुंच जातीं, तब तक म्यज़ दल को उनकी प्रतीक्षा करने की आज्ञा कर दी गई। तोपख़ानो की केवल युद्ध वाली ट्रेनो को सेनावों के पीछे २ चलने की आज्ञा थी।

इस प्रकार ता० २९ के सायंकाल में छः सैनिक कोर और दो रिसाला डिवीज़न म्यज़ और आर्गोनेस नदियों के मध्य में, फ्रेञ्च सेना के ऊपर आक्रमण करने के हेतु एडवान्स करने के लिये सर्वथा उद्यत खड़े थे। शत्रु सेना यदि पश्चिम तरफ़ हटती, तो उधर उसको रोकने के लिये १२-वां कोर और तीन रिसाला डिवीज़न ऐन नदी के आस-पास में रख दिये गये थे। म्यज़ नदी के तट पर, यदि कोई निर्णायक संग्राम हो पड़ता, तो दोनों दलों की समस्त चमुवों को, और आवश्यकता पड़ जाने पर, मेज़ की मुहासिरा वाली सेना से भी दो कोरों के समिट आने की आज्ञा थी।

सारांश यह है, कि चारों ओर सुचतुर और दूरदर्शी मोटके का रण-जाल फैल गया था; बहुत ही उग्रता, ओजस्विता, तथा कार्य्य-तत्परता प्रकट करने ही पर अब मार्शल मैकमाह्रां और उनकी सेना इस जाल से सकुशल बाहर निकल सकती थी; पुनः ऐसे स्थान पर मार्शल के युद्ध स्वीकार करने में सर्वथा उनकी हानि ही हानि होना निश्चय था।

अगस्त ३० श्यार (*Chiers*) नदी की घाटी से हो कर माण्टमोडी जाने के उद्देश्य से रेमिली और मौज़न में म्यज़ नदी का पार करना, यही फ्रेञ्च प्रधान-सेनापति की अनेक आज्ञावों का सारांश था। इस समय तक में बारहवां कोर और पहला रिसाला डिवीज़न, ये दोनों नदी उतर चुके थे, तथा रिसाले को कैरिग्नन जाने की आज्ञा दे दी गई थी। दूसरे रिसाला डिवीज़न को लेकर पहला कोर सवेरे ही राकूर से चल दिये था, रेमिली में वह नदी उतरा था, और श्यार की घाटी से हो कर कैरिग्नन की ओर बढ़ गया था।

सातवां कोर, ओशेज़ में पड़ाव किये था, और उस को मौज़न के समीप विलर्स नामक स्थान से नदी उतरने की आज्ञा थी, किन्तु इसके नेतृत्व में कोई नौ मील की लंबी पंक्ति में मंद २ चलने वाले गाड़ी-छकड़े कर दिये गये थे, इसी से उसको उक्त घाट पर पहुंचने में विलंब हो गया। छकड़ों की इस लंबी पंक्ति पर प्रशियन रिसाले वालों की दृष्टि थी, और वे यदा-कदा उस पर अपनी तोपों से गोले बरसा कर उसे हाल्ट (*Halt*) होने के लिये विवश कर दिया करते थे। इस कोर का मुख्य अंश प्रायः एक बजे ला बेसास (*La Besace*) में पहुंचा, तब बोमां की दिशा में उसको तोपों के गंभीर नाद सुनाई दिये। जिस ओर से नाद आते थे, उस तरफ़ का जाना

जेनरल डूए ने अपने लिये उचित नहीं समझा ; क्योंकि उनको शीघ्रता पूर्वक म्यज़ नदी के तट पर पहुंच कर जहां तक शीघ्र संभव हो, नदी को उतर जाने के लिये अनुल्लंघनीय आज्ञा थी। शत्रु की बाधाओं से बँचने के लिये आपने अपने मार्च की दिशा परिवर्तन कर देना निश्चय कर लिया, अर्थात् किंचित् उत्तर से घूम कर राकूर के मार्ग से उन्होंने रेमिलो पहुंचने का विचार किया ; किन्तु अपने कोर के अगले डिवीज़न (जेनरल डूमेस्नील के कमाण्ड वाले) को उन्होंने समय पर इस बात की सूचना नहीं भेजी। इसलिये वह मौज़न ही की ओर का अपना मार्च जारी रखा, और अंत में उसका संबंध बोमां के युद्ध में योग देने वाली फ्रेञ्च चमुवों से हो गया।

पीछे हटने में फ्रेञ्च सेना के संवरण का भार पाचवें कोर के ऊपर छोड़ा गया था। रात भर मार्च करके सब चमुएँ थकी-थकाई बोमां में पांच बजे सवेरे पहुंची थीं पस जेनरल डी फैली ने उनको वहां कुछ घंटे विश्राम देना परमावश्यक समझा। नौआर्ट में जो विगतवार को कुछ झटापटी हो गई थी, उससे सिद्ध होता था, कि शत्रु-सेना वहां से दूर नहीं है ; किन्तु शत्रु संबंधी कुछ समाचार उस दिन भर न मिलने से डी फैली ने समझ लिया कि संभवतः वे स्टीने की ओर चले गये होंगे ; इसी से उसने

तीसरे पहर तक अपनी सेना को वहीं पर रोक रखना निश्चय कर लिया।

पड़ाव से थोड़ी दूर तक इधर-उधर कुछ पैट्रोल सवार तो निस्संदेह भेज दिये गये थे, किन्तु नाके-बन्दी के साधारण पहरे लगाने में, मालूम होता है, बहुत असावधानी की गई थी। बोमां के दक्षिण वाले खुले मैदान में योद्धा-गण भोजन पका रहे थे; बहुत से घोड़े पानी पिलाने के लिये नाले की ओर भेज दिये गये थे, कि इतने में, एक बजे के कुछ पहले प्रशियन तोपों के गोले, असावधान फ्रेञ्च सेना के ऊपर गिरने लगे। म्यज़ दल का ४-था सैनिक कोर फ्रेञ्च सवारों की आंख बचा कर बोमां के दक्षिण वाले बन के लांघ आने और बेख़बर पड़ी चमुवों को विस्मित और संत्रस्त कर देने में सफलीभूत हो गया।

बोमां का संग्राम, ३० अगस्त

ता० ३० अगस्त के मार्च के लिये जो सूचनायें दी गईं थीं, उनके अनुसार गार्ड सेना को रिज़र्व में लिये म्यज़ दल के दो अगले कोरों को बुसान्सी-बोमां सड़क के पूर्व तरफ़ से ख़ास बोमां के उत्तर में जाना चाहिये था; उनकी सहायता में तीसरे दल के दो बवेरियन कोरों को उसी सड़क के पश्चिम से मार्च करने की आज्ञा थी।

बोमां के दक्षिण वाले जंगल से जो चार सड़कें गई हैं, उनपर ४-थे और १२-वें कोरों के डिवीज़न मार्च कर रहे थे। आक्रमण के पूर्व तोपख़ाने से तय्यारी करा ली जाने वाली थी, और जब तक समीपवर्ती कालम युद्ध में योग देने के लिये प्रस्तुत नहीं हो जाता, तब तक किसी कालम को युद्धारंभ करने की आज्ञा नहीं थी। चौथे कोर के बांये बाज़ू में वाले डिवीज़न को वन के बाहर आते ही बोमां के दक्षिण और उत्तर वाले शत्रु के दोनों पड़ाव देख पड़े। अतएव शत्रु को विस्मित करने के इस सुअवसर को उस डिवीज़न के कमाण्डर ने ख़ाली जाने देना उचित न समझा, अर्थात् अपने समीपवर्ती डिवीज़न की प्रतीक्षा न करके उसने तुरंत युद्ध प्रारंभ कर दिया। फ्रेञ्च योद्धा भी शीघ्रता के साथ शस्त्रास्त्र ग्रहण किये, और छेंड़ी हुई मधु-मक्षियों के सदृश उनके डिंबकारियों के झुंड के झुंड धृष्ट आक्रामकों को दंड देने के लिये दौड़ चले। इसी बीच में उस डिवीज़न की मुख्य २ चमुएं भी अपनी एडवान्स गार्ड चमुवों की सहायता में पहुंच गईं, और उधर दहने बाजू में ४-थे कोर का दूसरा डिवीज़न भी रण-भूमि में प्रवेश करता दिखलाई पड़ा। पूरे कोर भर की चमुवों के इस संकर्षित आक्रमण से फ्रेञ्च सेना पराजित होकर वहां से भाग चली। उपर्युक्त दोनों डिवीज़नों की आगे वाली बटालियनें बोमां ग्राम में, तथा

शत्रु के उत्तर वाले पड़ाव तक पहुंच गईं। सब खेमे और डेरे, प्रायः सब तोपैं, बहुत सी रसद और अपर सामरिक सामग्रियां विजेता के हाथ लगीं। फ्रेञ्च सेनायें व्याकुल और सैनिक विधान से तिलाञ्जुलि दिये, एक दूसरे के ऊपर गिरती पड़ती, भाग चलीं; और किसी तरह से नगर के दूसरे तरफ़ वाले टीलों पर, जहां उनके तोपख़ाने लगाये गये थे, अड़ीं। प्रायः दो बजे पैदल योद्धाओं का युद्ध कुछ शांत पड़ा, और ४-थे कोर की चौदह बैटरियां इशिलांग (*Echelon*) * में बढ़ाई जाकर बोमां के दक्षिण वाले टीलों पर लगा ली गईं। समीपस्थ सैक्सन और बवेरियन कोरों की तोपैं भी शीघ्र ही वहां पहुंच गईं; पस इस संकर्षित और अधिक प्रभावशालिनी अग्नि-वृष्टि से फ्रेञ्च बैटरियां दब गईं। अंत में ब्वायस डि गिवाडो नामक स्थान पर अपना एक प्रबल रीअर गार्ड रखकर और उसी के संवरण में डि फैली को विवश होकर अपनी सेना वहां से पीछे हटा ले जाना पड़ा।

इसी बीच में जर्मनो के १२-वें कोर की पैदल सेना भी दहने बाजू में आकर आक्रमण में सहायता पहुंचाने लगी; यह सेना बहुत ही परिश्रम से दलदली और

* किसी सेना की चमुओं को इस रीति से खड़ी कराना अथवा चलाना, कि जिसमें वे सर्वदा एक दूसरी से समानांतर पर, किन्तु भिन्न २ लैनों में बनी रही आवें, तथा जिसमें प्रत्येक का फ्रंट उसके आगे वाली चमू से ढका न रहकर सामहना साफ़ रहा आवे।

जंगल भरे प्रदेश को लांघ कर लिटाने के आगे वाले टीलों पर पहुंच पाई थी। म्यज़ नदी के दहने तट पर बारहवें फ्रेञ्च कोर की बैटरियों की भयंकर वृष्टि से इसका उस नदी की घाटी की तराई से हो कर अधिक आगे बढ़ना असंभव था। अतएव सैक्सन कोर की कुछ बटालियनें बांये बाजू के प्लेटों पर चढ़ गईं, और गिवाडो बन से हो कर आगे बढ़ती हुईं केन्द्रस्थ चमुवों के पीछे २ ये भी आगे बढ़ चलीं।

४-थे कोर के बांये बाजू में तीसरे दल की भी कुछ सेना युद्ध में योग दिये थी। १-ला बवेरियन कोर यान्स्क घाटी में चढ़ाव की ओर बढ़ कर ला टीबोडैन (*La Thibaudine*) में पहुंच गया था, तब सहसा इस के अगले ब्रिगेड पर पश्चिम से शत्रु की एक शक्तिमती सेना ने आक्रमण कर दिया। इस सेना में सातवें फ्रेञ्च कोर के जेनरल डूमेस्नील वाले डिवीज़न की चमुएँ थीं, जो मार्शल की पहली आज्ञा के अनुसार मौज़न को जा रहीं थी। युद्ध बहुत काल तक होता रहा, परंतु जय-पराजय का निर्णय उस समय तक नहीं हो पाया, जब तक कुछ अधिक सहायक चमुएं वहां नहीं पहुंची; इधर इसी बीच में फ्रेंच सेना भी विधान-शून्य हो कर उत्तर ओर हट गई। निज ४-थे कोर की चमुवों को सँभालने के लिये

अपने एक ब्रिगेड को छोड़ कर शेष बवेरियन सेना पश्चिम तरफ़ चली गई, और सायंकाल होते २ वह राकूर में पहुंच भी गई ।

उपर्युक्त फ्रेंच डिवीज़न के शेष बचे योद्धा भाग कर तथा अपने सातवें कोर की मुख्य सेना में मिल कर उसको भी भय-युक्त और विधान-हीन कर दिये। रेमिली में बानेमेन वाला रिसाला उस समय तक नदी उतरने ही में लगा था, और इस कोर की पैदल सेना तो रात हो जाने तक भी नदी पार नहीं कर पाई थी। ला टी बोडैन में पराजित होने पर पराजित सेना के रिसाले और कुछ तोपख़ाने मौज़न पहुंचे, उधर रेमिली वाले पुल के तोड़ दिये जाने से रिज़र्वी तोपख़ाने और कुछ पैदल बटालियने नदी के बांये तट से चला कर सीडान भेज दी गईं। सातवें कोर की चमुवों की अनेक छोटी २ गरोहे अस्त-व्यस्त और उत्साह-रहित हुईं अंत में किसी तरह पर म्यज़ नदी के दहने तट पर पहुंच गईं।

युद्ध के पश्चात् फ्रेञ्च सेना का पीछे हटना कुछ योग्यता के साथ संपादन कराया गया। ब्वायस डि गिवाडो और यान्स्क की पूर्वोत्तरीय पहाड़ी पर वाली रीअर गार्ड सेनावों के संवरण में जेनरल डी फैली अपनी चमुवों को पुनः विलेनमाण्टी और माण्ट-डि-ग्रन में

व्यूह-बद्ध कर लिये। बारहवें कोर से अलग करके एक ब्रिगेड पैदल और कुछ क्विरासियर्स (*Cuirassiers*) अर्थात् ज़िरहबख़्तरी सवार सहायतार्थ मौज़न को भेज दिये गये।

बोमां छीने जाने के पश्चात् ४-थे कोर के पैदलों ही ने, जो नगर के उत्तर के टीलों तथा मुख्य सड़क के पूर्व और पश्चिम दिशाओं में फैले हुए थे, केन्द्रस्थ आक्रमण में विशेष ओजस्विता प्रकट की थी।

यान्स्क के आगे वाले पहाड़ी मोर्चे पर, जिसमें फ्रेञ्च रीअर गार्ड की सेना थी, अधिकार करने में जर्मनों को कुछ विशेष कठिनता न पड़ी; किन्तु गिवाडो नामक वन को अपने अधिकार में रखने के लिये फ्रेञ्च शूर-वीरों ने कुछ भी उद्योग शेष न छोड़ा, और बहुत ही वीरता प्रकट की, परन्तु अंत में जर्मनों की अधिक संख्या की सेना का उनपर असह्य दबाव पहुंचा, और वन के उत्तरी छोर पर प्रशियन चमुवों का अधिकार हो ही गया। कुछ काल के लिये वहां से जर्मनों का अधिक आगे बढ़ना असंभव सूचित हुआ, क्योंकि माण्ट-डी-ब्रन और विलेमाण्टी में उपस्थित पैदल चमुवों, तथा म्यज़ नदी के पूर्व में वाली बैटरियों की अग्नि-वृष्टि से खुले मैदान में खड़े जर्मन योद्धाओं का उस समय भयंकर संहार हो रहा था।

कहीं तीसरे पहर को १४-वें जर्मन ब्रिगेड के आवृत्तक

(*Enveloping*) आक्रमण से माण्ट-डी-ब्रन पर उनका अधिकार भी हो गया, तथा उस डिवीज़न के दूसरे ब्रिगेड ने यान्स्क घाटी से होकर शत्रु को मौज़न की ओर दबाना प्रारंभ कर दिया। इतने में ४-थे कोर का तोपख़ाना भी युद्ध में योग देने और मौज़न के ऊपर गोले बरसाने लगा; उधर तीन बटालियनें नगर के पास वाले ग्रामों पर आक्रमण करने के लिये दौड़ पड़ीं। कुछ दूर पर, दहने बाज़ू में, १२-वें कोर की सहायता से, वहां की चमुवों में गिवाडो वन से बढ़ कर विलेमांटी को स्वाधिकार में लाने की शक्ति आ गई। इस समय फ्रेंच सेना बहुत ही दुर्दशा में फँस गई थी, और रात हो जाने पर म्यज़ नदी के इस तट पर उपस्थित फ्रेञ्च-सेना में जर्मनों को रोकने की सब शक्ति सर्वथा शून्य पड़ गई। प्रायः ३,००० फ्रेञ्च योद्धा बंदी हो गये, और उनकी इक्यावन तोपें शत्रु के हाथ में पड़ गईं; तथा पुल के तोड़ दिये जाने पर, इनके बहुत से योद्धा केवल नदी तैर कर अपने प्राण बचा पाये।

समालोचनाय

शत्रु-सेना से आच्छादित देश में ऐसी असावधानी के साथ मैदान में डि फैली का पड़ाव कर देना, कि उसके पहुंच जाने तक आपको कुछ भी इत्तला न होना, तथा आपकी समस्त सेना का सहसा विस्मित कर दिया जाना अक्षम्य है; इसका आप कोई संतोष-प्रद उत्तर नहीं दे सकते हैं। परन्तु पराजित हो जाने

पर क्रम २ से अपनी चमुवों को सकुशल पीछे निकाल ले जाने में अलबत्ता आपकी रण-दक्षता सूचित होती है। इस समर भर में पराजित हो जाने पर फ्रेञ्च सर्वदा अपनी सेनावों को पीछे हटा ले जाने में योग्यता प्रकट किये थे, यद्यपि इस विषय में पहले लोगों ने संदेह प्रकट किया था। रण-भूमि की असमता से विजयी होने पर भी कभी भी जर्मन सेनायें अपनी विजयों से पूरा २ लाभ उठा नहीं पाईं। इस संग्राम के आरंभ में शत्रु-सेना के ऊपर जर्मन तोपखानों का बहुत बड़ा प्रभाव पहुंचा था, किन्तु पश्चात् इनसे यथेष्ट कार्य्य करते न बन पड़ा; रिसाले वालों से तो इस संग्राम के अवसर पर कुछ भी महत्व का कार्य्य न सधा। केवल ४-थे ही कोर की चमुवों को इस युद्ध का प्रायः सब आघात सहना पड़ा था; इस कोर के पैदल योद्धा दुर्दांत शत्रु को क्रम २ से, किन्तु अद्वितीय दृढ़ता के साथ, सात मील पर्यंत एक मोर्चे से दूसरे को हटाते हुए चले गये थे।

अपर संग्रामों के सदृश इसमें भी आक्रामकों को ही अधिकतर हानि उठानी पड़ी थी। इस अपूर्व विजय के लिये जर्मनों को अपने ३,५०० योद्धावों की बलि करना पड़ा, जिनमें अधिकांश ४-थे ही कोर के जवान थे। पांचवें फ्रेञ्च कोर को, तथा उनके दूसरे दो कोरों के अर्द्धांश को म्यज़ दल ने केवल पराजित ही नहीं कर दिया, किन्तु समस्त

फ्रेञ्च सेना को हटा कर एक ऐसे स्थान पर रोक दिया, जो उनकी रक्षा के लिये बहुत ही अनुपयुक्त था। मार्शल मैकमाआं की सेना का हटा कर बेलजियम सीमा-प्रदेश के भीतर भगा दिया जाना अब इतना संभव हो गया, कि प्रिन्स बिस्मार्क ने तुरंत ब्रसल्स राजधानी के अधिकारियों के पास इस विषय का एक तार दे दिया, कि यदि फ्रेञ्च सेना के योद्धा उस उदासीन राज्य के भीतर जाते ही शस्त्रास्त्र-रहित (*Disarmed*) न करा दिये जावेंगे, तो जर्मन सेनायें भी उनका पीछा करती वहां पहुंच जावेंगी। युद्ध के अवसर पर नदी के दहने तटस्थ सैक्सन रिसाले के सवारों ने मौज़न और केरिग्नन के तरफ़ म्यज़ और बार नदियों के मध्यस्थ प्रदेश की गिर्दावरी कर डाली। मौज़न के सम्मुख की विजित भूमि में ४-था कोर डेरा डाल दिया; १-ले बवेरियन कोर वालों ने राकूर में, तथा अपर सैनिक कोरों ने पश्चिम दिशा से वोमां को आने वाली सड़क के आस-पास में पड़ाव कर दिया। पहले बवेरियन कोर को छोड़ कर तीसरे दल के अपर कोरों ने ता० ३० के संग्राम में कुछ भी भाग न लिया; पहाड़ी सड़कें, जिन से होकर उनको इधर आना था, बहुत ही ख़राब दशा में थीं, तथापि लंबी २ मंज़िलें तै करके उन कोरों ने भी उस दिन म्यज़ दल से संबंध कर लिया।

वोमां के संग्राम के परिणाम का समाचार फ्रेञ्च सदर

में पहुंचने पर वहां बहुत ही चिंता हो गई। शत्रु की अधिक संख्या और शक्ति की सेनायें अब मार्शल की सेना के पास पहुंच गई थीं, अतएव मान्टमोडी की ओर का उनका बढ़ना असंभव हो गया। मौज़न में युद्ध स्वीकार करके यदि वे पराजित हो गये, तो उनको उदासीन (*Neutral*) बेलजियम राज्य की सीमा के भीतर अवश्य ही हट जाना पड़ता, और उस दशा में अंतर्जातीय नियमानुसार उनकी सेना को अपने शस्त्रास्त्र रख देने पड़ते। बहुत बाद-विवाद होने के पश्चात् पीछे हटा कर अपनी सेना को सीडान में ले जाने की बात स्थिर हुई। यहां पर फ्रेञ्च सेना के लिये रसद और अम्यूनिशन मिल सकता था। वहां कुछ काल तक विश्राम कर लेने के पश्चात् माज़्यार की तरफ़ का हटना निश्चय किया गया, क्योंकि वहीं के दुर्ग में नव-निर्म्मीत तेरहवें कोर के साथ जेनरल विनय के पहुंचने की ख़बर थी।

इस कार्य के संपादनार्थ केरिग्नन वाले पहले कोर के, और मौज़न वाले बारहवें कोर के संवरण में रात ही में सब सेनाओं के मार्च कराने की आवश्यकता समझी गई। बोमां के संग्राम के पश्चात् शत्रु द्वारा पीछा किये जाने का भय कुछ भी नहीं था, क्योंकि नदी पर के पुल टूट गये थे। तथापि प्रस्थान करते ही सेना-संविधान में बहुत ही गड़बड़ी मच गई; योद्धाओं को अपने नेताओं

की योग्यता में तनिक भी विश्वास नहीं रह गया, बार-बार पराजित होने से स्वयं उनकी भी स्वात्माभिलंबन प्रकृति जाती रही। रात अँधेरी थी; सड़कें गाड़ी-छकड़ों से भरीं थीं; एक कालम दूसरे के मार्ग में जाकर प्रायः उसको अवरुद्ध कर देता था, जिससे दोनों को आगे बढ़ने में असुविधा और विलंब होता था। सुतरां सारी सेना में अस्तव्यस्तता, शिथिलता और असंयम-शीलता छा गई।

पीछे हटती हुई उत्साह-भ्रष्ट सेना के जलते हुए मसालों को देखकर जर्मनों को यह बात तुरंत मालूम हो गई, कि मार्शल मैकमाआं की सेना अमुक दिशा में जा रही है। श्यार नदी के उत्तर तट की ओर उनके संवरण में फ्रेञ्च पहला कोर नियुक्त था, और इस तरह पर ता० ३१ के दोपहर तक अविश्रांत मार्च करके शालां वाली समस्त फ्रेञ्च सेना सीडान में पहुंच गई। तीसरे पहर को संवरण करने वाला पहला कोर भी वहीं पहुंच कर उसमें संयुक्त हो गया।

अध्याय ११

सीडान

अगस्त ३१—अगस्त ३१ की घटनायें—फ्रेञ्च-स्थिति—फ्रेञ्च व्यूह—आक्रमण की युक्ति—बाज़िलिस पर आक्रमण—डूक्रो और डे विम्फेन—पश्चिमीय आक्रमण, दस बजे से—दक्षिणी आक्रमण, १० बजे से—पूर्वीय आक्रमण, ५ बजे तक—पश्चिमीय आक्रमण, ५ बजे तक—युद्ध का अंत—समालोचनायें।

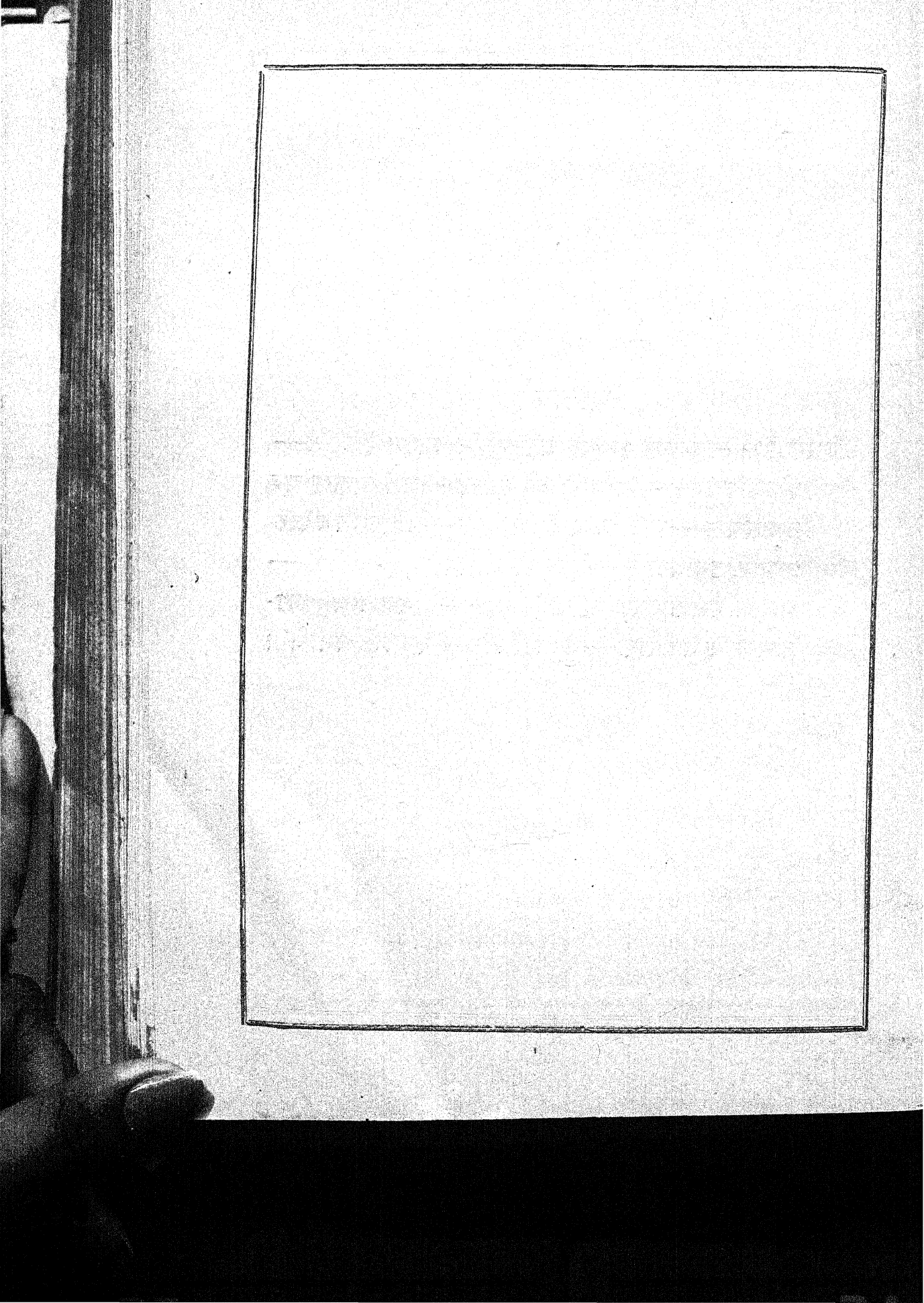

अध्याय ११

सीडान

अगस्त ३१ फ्रेंच सेना का पीछे हटना प्रकट होने पर ता० ३० को बहुत रात गये दोनों जर्मन दलों को आगे बढ़ने के लिये सूचनायें दे दी गईं। शत्रु-सेना का माण्ट-मीडी की ओर जाना रोकने का भार म्यज़ दल को दिया गया था। और इसके लिये उसको अपने दो कोरों को अपने से विलग करके नदी के दहने तट पर कर देना था। मार्ज्यार की तरफ़ का जाना रोकने के लिये तीसरे दल को सीडान के पश्चिम तरफ़ बढ़ जाने की आज्ञा थी, तथा, म्यज़ नदी के समीप वाले तट के, तोपख़ाने लगाने योग्य, सुदृढ़ स्थानों पर स्वाधिकार करके घाटी में उपस्थित किसी भी शत्रु-सेना के शिबिर और संचालनों में बाधा पहुंचाने के निमित्त उसको गोले बरसवाने का हुक्म था।

गार्ड और १२-वें कोर बोसां के पूर्व में लेटाने नामक घाट से नदी को पार किये, और अपने २ रिज़र्व डिवीज़नों को आगे किये केरिग्नन और डूज़ी की ओर एडवान्स किये। मार्ग में इन दोनों कोरों ने म्यज़ और श्यार नदियों के मध्य के सब ग्रामों को नष्ट-भ्रष्ट कर

दिया। शत्रु-सेना के विधान-रहित मार्च के चिह्न स्थान स्थान पर देख पड़ते थे; यहां खेमे, वहां छकड़े और रसद, इधर अम्युनिशन और उधर बोरे, ऐसी ही सब चीज़ें सड़कों और खेतों में बिथरी हुई पड़ीं थीं। पृष्ठ-भाग वाली शत्रु की चमुएं डूज़ी में मिलीं, और वहां से वे मार कर भगा दी गईं; रिसाले वाले सीडान के समीप तक बढ़ गये। सायंकाल तक में १२-वां कोर डूज़ी में अपना अधिकार कर लिया, उधर गार्ड कोर भी रेलवे लैन की दूसरी तरफ़ में पहुंच गया। इन दोनों कोरों की आउट-पोष्ट (*Out-post*) चौकियां चापाकार लैन में म्यज़ नदी से बेलजियम सीमा प्रदेश तक मिवान नदी वाले फ्रेञ्च शिविर से प्रायः पांच मील की दूरी तक फैल गईं। रण-स्थल के छूटे हुए सामानों को एकत्रित करने का बहुत बड़ा काम ४-थे कोर के जिम्मे कर दिया गया था, इसलिये वह मौज़न में ही ठहर गया।

३१ अगस्त की घटनायें

तीसरे दल को उत्तर दिशा में बढ़ने, म्यज़ नदी के दक्षिण वाले टीलों पर तोपख़ानों के लगाने, तथा नदी के ऊपर पुल तय्यार करने की आज्ञा थी। १-ला बवेरियन कोर रेमिली को, ११-वां कोर डान-शेरी की ओर, तथा वर्टेमबर्ग वाला डिवीज़न माज़्यार की ओर, कुछ अधिक पश्चिम तरफ़ हट कर नदी की ओर प्रस्थान किये। दूसरी लैन में २-रा बवेरियन कोर और ५-वां

कोर रहे ; तथा ६-वां कोर और एक रिसाला डिवीज़न पृष्ठ-भाग में बहुत दूरी पर ऐन नदी की लैन में थे। संकर्षित दलों के बांये भाग में किञ्चित् अधिक दूरी पर ६-वां रिसाला डिवीज़न माज्यार की ओर बढ़ता जाता था।

प्रातःकाल के कोहिरे में रेमिली से प्रस्थान करके ४-था रिसाला डिवीज़न नदी के दक्षिणी तट की गिर्दावरी सीडान के स्वयं फाटक तक कर आया। कोहिरा के हटते ही सब क़िस्म की चमुवों के बड़े २ पड़ाव दुर्ग के उत्तर में देख पड़े, तब अश्वारोही तोपख़ानों से रेलवे लैन पर गोले बरसवा कर रेल-गाड़ियों का आना जाना जर्मनों ने बंद करवा दिया। डानशेरी में कोई फ्रेञ्च सेना नहीं मिली, किन्तु वहां से जर्मनों का पश्चिम तरफ़ का अधिक आगे बढ़ना जेनरल विनय के कोर द्वारा, जो माज्यार से उधर बढ़ आया था, रोक दिया गया।

म्यज़ दल और तीसरे दल के मध्य के आवागमन को सुरक्षित रखने का भार १-ले बवेरियन कोर को दिया गया था। नदी के इस तरफ़ वाले कगार पर से अपनी बैटरियों से गोले बरसा कर जेनरल वान डर टैन (*Von der Tann*) ने बिथरी हुई फ्रेञ्च चमुवों को वहां की नीची भूमि से भगा दिया, और बाज़िलिस में वाले रेल के पुल को उनसे छीन लिया। इनकी एक बटालियन सेना

नदी पार करके उस ग्राम को गई, परंतु वहां पर डँटे रहने की अपने में शक्ति न समझ कर वह पुल पर लौट आई, और अत्यंत सावधानी से उसकी रक्षा करती रही। नदी के बहाव की ऊपरी ओर, कुछ बढ़कर, दो पीपे के पुल बना लिये गये; उधर बवेरियन तोपों के गोलों से बाज़िलिस के समीपवर्ती ग्रामों (*Sububrs*) के कुछ अंश भी जल कर भस्म हो गये।

बवेरिया वालों के बांये बाजू में ११-वां कोर डान-शेरी पर चढ़ गया, और वहां के रेल वाले पुल को नष्ट कर डाला; तथा, अपने एडवान्स गार्ड की सेना से नगर को स्वाधिकार में रख कर वहीं पर पीपे का एक और भी पुल बना लिया। बांये बाज़ू के बिलकुल छोर पर, वर्टेम बर्ग और ६-वें रिसाले डिवीज़नों का मुक़ाबिला जेनरल विनय के (तेरहवें) कोर से, जो उस समय पूर्व तरफ़ बढ़ने का उद्योग कर रहा था, पड़ गया। अगली जर्मन चमुवों के समीपतम सहायता में ५-वें और २-रे बवेरियन कोर लगाये गये थे।

ता० ३१ अगस्त के सायंकाल में दोनों प्रतिद्वंद्वी सेनायें एक दूसरे की देखा-दृष्टि में हो गईं, उनकी अगली चमुवों में तो प्रायः संपर्क भी हो गया था। जेनरल मैकमाआं का निर्भीक फ्लैङ्क-मार्च निष्फल हुआ, और उसका प्रधान कारण फ्रेञ्च सेना का दूषित संविधान

(*Organisation*) था। अब मैकमाआं की सेना सीडान के क्षुद्र दुर्ग के आस-पास चापाकार लैन में अड़ जाने के लिये विवश कर दी गई। आप की सेना के मुक़ाबिले में विजयोत्साह में उबलती, तथा संख्या में भी बहुत बड़ी जर्मन चमुएं चौड़े फ्रंट में वितरित अपने संकीर्ण मोर्चे में डंटी थी।

पूर्व से म्यज़ दल को और दक्षिण से तीसरे दल को अपनी ओर आते देख फ्रेञ्च मार्शल इस बात के समझने में, कि 'अब उनका कल्याण केवल तुरंत पीछे हट जाने में है,' कदापि भूल नहीं कर सकते थे। यह कार्य्य भयानक था, तथा इसके करने में फ्लैङ्क से आक्रमण होने का भी भय था। ये दोनों बातें यद्यपि स्वतः प्रकट थीं, तथापि ऐसा न करने में सर्वथा सत्यानाश भी था; इससे मार्शल ने जो तुरंत पीछे हट चलने की उस समय आज्ञा नहीं की, उसका एक मात्र कारण यही हो सकता है, कि उनकी सब चमुएं बहुत ही शिथिल और अत्यंत ही उत्साह-हीन हो गईं थीं।

इतने कठिन मार्चों के करने के पश्चात् मोटके ने अपनी सेना को एक दिन विश्राम देने का पहले विचार किया था; किन्तु विलंब करने में जब उनको शत्रु के निकल भागने की संभावना सूचित हुई, तब तो आपने दूसरे ही दिन प्रातःकाल से आक्रमण प्रारंभ कर देने की आज्ञायें प्रचलित कर दीं।

फ्रेञ्च-स्थिति रण-रचना संबंधी अवस्था (*Strategic Situation*) पर यदि कुछ ध्यान न दिया जावे, तो फ्रेञ्च सेना की तत्कालीन स्थिति डँट कर आत्म-रक्षा करने के लिये सर्वथा सुयोग्य थी। दक्षिण और पश्चिम, इन दोनों दिशाओं में तो वह म्यज़ नदी की चौड़ी घाटी से सुरक्षित थी, और यदि नदी में उस समय एक बांध डाल दिया जाता, तो उस घाटी में सीडान से लेकर बाज़िलिस के पश्चिम तक चारों ओर पानी ही पानी भर जाता, उस दशा में किसी शत्रु-सेना को उससे होकर निकलना यदि असंभव नहीं, तो दुस्साध्य अवश्य हो सकता था। नदी के दूसरे तट के टीलों से सीडान के क्षुद्र दुर्ग के ऊपर तोपों के गोलों का पूरा २ प्रभाव पहुंच सकता था, अतएव न तो वह आत्म-रक्षा ही के लिये सुयोग्य था, और न पराजित होने की दशा में, उसके भीतर जाने ही से फ्रेञ्च सेना की रक्षा हो सकती थी। उत्तर तरफ़ इन टीलों में सब से ऊँचा कैलवर डिली (*Calvair d' Illy*) नामक एक धुस्स था, यहीं पर फ्रेञ्च सेना के दोनों फ्रंटों का सम्पर्क होता था, जिनमें से एक फ्रंट तो पूर्व-मुख का, और दूसरा फ्रंट उत्तर-पश्चिम मुख का था। फ्रेञ्च स्थिति की पूर्वीय सीमा गिवान नदी की घाटी से प्रतिबद्ध थी, जहां से प्रतिपक्षी सेना के आगमन

के प्रत्येक विन्दु पर अत्यंत प्रभाव-कारक अग्नि-वृष्टि की जा सकती थी। रण-स्थल के पश्चिमोत्तरीय भाग के फ्रंट में वह नाला बहता था, जो इलि और फ्लोइंग नामक ग्रामों के सन्निकट से जाता है, पहाड़ियों की क्रमानुगत शृंखलावों से आत्म-रक्षा के योग्य अनेक प्राकृतिक दुर्ग बन गये थे, तथा ब्वायस डिला गरेन* नामक बन और अपर कुञ्जों के संयोग से संवरणार्थ (*Cover*) वहां पर अनेक उपयुक्त स्थान भी उपस्थित थे। इस मोर्चे पर पश्चिम दिशा से चढ़ाई करने के लिये म्यज़ नदी के घुमाव के चारों ओर से चक्कर देकर ऐसी सड़क से चलना पड़ता था, जिसमें सब लक्षण गुफा (*Defile*) के मिलते थे। पूर्वीय फ्रंट की रक्षा बाज़िलिस ग्राम के सुदृढ़ बने गृहों से सम्यक प्रकार से होती थी, किन्तु इस ग्राम की कोनेदार (*Salient*) स्थिति से इस पर दो ओर से आक्रमण करने का सुविधा था। म्यज़, गिवान और फ्लोइंग नालों से बने इस त्रिभुजाकार प्रदेश में शालां वाली जेनरल मैकमाआं की सेना निज फ्रंट को अपनी स्थिति की तीनों भुजावों की ओर प्रकट करती जर्मन आक्रमण की प्रतीक्षा करती पड़ी थी।

* कैलवर डिली से प्रारंभ होकर जो प्रदेश सीडान की ओर गया है, उसके केन्द्र में जो बड़ा वन है, उसी को ब्वायस डिला गरेन कहते हैं।

फ्रेञ्च-व्यूह

ता० १ सितंबर को, प्रभात होते ही, बारहवां फ्रेञ्च कोर बालन और ला मान्सेल नाम के दो टीलों पर डँट गया, और अपने एक ब्रिगेड को बाज़िलिस की ओर बढ़ा भी दिया। कुछ अधिक उत्तर में पहला कोर अपना फ्रंट पूर्व दिशा में किये और गिवान की घाटी पर अपना प्रभाव डालते पड़ा था; यह डेनी (*Daigny*) और गिवान नामक ग्रामों पर भी अपना अधिकार कर लिये था। फलोइंग और इन्हीं ग्रामों के मध्य में, पश्चिमोत्तर दिशा में अपना फ्रंट किये, और दो रिसाला डिवीज़नो को साथ में लिये सातवां कोर उपस्थित था। दो ब्रिगेडों को छोड़ कर शेष पांचवें कोर का केन्द्रीय रिज़र्व बनाया गया था, और उक्त दोनों ब्रिगेड सातवें कोर के दोनों बाज़ुवों के पृष्ठ-भाग में रखे गये थे।

फ्रेञ्च सेनाधिकारियों ने उस दिन के रण-कार्य्य के लिये कोई आज्ञा प्रकाशित नहीं की थी, जिससे सिद्ध होता है, कि उस दिन में उन लोगों ने अपनी सेना को विश्राम देना चाहा था।

आक्रमण की युक्ति

जर्मनो को अब तक भी विश्वास होता था, कि फ्रेञ्च सेना माज़्यार की ओर फिर भी हटने के लिये यथाशक्ति उद्योग करेगी। उसी विश्वास के

अनुसार आक्रमण प्रारंभ कर देने के लिये सब चमुवों में सूचनायें भेज दी गईं। इस कार्य्य के लिये केवल एक ही सड़क थी, जिससे होकर फ्रेञ्च सेना पीछे हटती; अतएव उसको अवरुद्ध करने के लिये तीसरे दल के बांये बाज़ू में वाला कोर नियुक्त कर दिया गया। अपने उपर्युक्त अभीष्ट के साधनार्थ म्यज़ दल को पूर्व दिशा से, और बवेरियन कोर को दक्षिण से आक्रमण करना था, तथा ५-वें और ११-वें कोरों को शीघ्रता पूर्वक म्यज़ नदी उतर कर शत्रु के पीछे हटने का मार्ग अवरुद्ध करना था। रण-भूमि की अवस्था देखने से प्रकट होता था, कि पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं से मुख्य आक्रमण कराया जाने वाला था, और कुछ सेना से, जिसमें मुख्य कर तोपख़ाने की थी, म्यज़ नदी के दूसरे तट पर से शत्रु-सेना का दक्षिण ओर का निकलना पूरी तौर पर बंद कर दिया जाने वाला था।

बाज़िलिस पर आक्रमण

बाज़िलिस पर का आक्रमण ता० ३१ से ही प्रारंभ हो गया था, और पुनः दूसरे दिन सवेरे ही से वहां का संग्राम शुरूअ हो गया; इसमें १-ला बवेरियन कोर नियुक्त किया गया था। अगले ब्रिगेड के रेल और पीपे के पुलों से होकर म्यज़ नदी के पार करते समय घाटी पर गहरा कोहिरा छाये था।

ग्राम के बाहरी भाग के पहरे पर फ्रेञ्च सेना के एक भी जवान उपस्थित नहीं मिले, तथा भीतरी गैरिज़न में भी मेरीन (*Marine*) अर्थात् समुद्री सेना का केवल एक ही ब्रिगेड उपस्थित था, जो विस्मित करके जर्मनो द्वारा तुरंत बंदी कर लिया गया। पृष्ठ-भाग के मकान आत्म-रक्षा के उपयुक्त बना लिये गये थे, और रह २ कर सात घंटे पर्यंत ग्राम के गली-कूचों में विषम संग्राम होता रहा, जिसमें दोनों ओर के योद्धाओं ने पूरी २ शूरता और दृढ़ता प्रकट की। तोपख़ाने नौ बजे के आस-पास पुलों को पार कर पाये, और समस्त बवेरियन कोर बाज़िलिस और ला मान्सेल में, कुछ उत्तर की ओर दबाये, युद्ध में योग देता रहा। १२-वें कोर का एडवान्स गार्ड डूज़ी (*Douzy*) से आकर ला मान्सेल से फ्रेञ्च सेना को हटा दिया, और बवेरियन कोर से संबंध कर लिया। उधर ४-थे कोर के दो डिवीज़न भी उसकी सहायता के लिये शीघ्रता पूर्वक बढ़ते आ रहे थे। अंत में बवेरियन योद्धाओं ने दश बजते २ बाज़िलिस को शत्रु से छीन लिया। इस में यहां की साढ़े पंद्रह बटालियन सेना रण-कार्य्य में योग दिये थी। ग्राम के बाहर तब भी युद्ध होता रहा था।

इक्को और डि विम्फेन

अभाग्यवश ला मान्सेल के एक टीले पर मार्शल मैकमाआं बड़े सवेरे ही घायल हो

गये, और फ्रेञ्च सेना का कमाण्ड जेनरल डूक्रो के हाथ में चला गया। माज़्यार की ओर का तुरंत हट जाना आवश्यकीय समझ कर इस जेनरल ने अपनी सेना को सात बजे इली में जमा होने के लिये आज्ञा कर दी। उस समय जो चमूएं युद्ध कर रहीं थीं, उनका तो उसने रीअर गार्ड (पृष्ठ-संरक्षक) बनाया, और उन्हीं के संवरण में दूसरी लैन के डिवीज़नों को उत्तर तरफ एडवान्स करवाया। अभी डूक्रो के आज्ञानुसार कार्य पूरी तौर पर प्रारंभ भी नहीं हो पाया था, कि इतने में जेनरल डि विम्फेन ने रण मंत्री (*War Minister*) का एक गुप्त आज्ञा-पत्र इस विषय का पेश किया, कि यदि किसी कारण से मार्शल मैकमाआं कमाण्ड करने के अयोग्य हो जावें, तो उनकी जगह पर सेना के प्रधान सेनापति डि विम्फेन बनाये जावें।

प्रशियन युवराज के कमाण्ड की सेना का डान शीरी में म्यज़ नदी पार कर आने का पता डि विम्फेन को लग गया था, इससे उन्होंने पश्चिम तरफ़ के हटने में सफलता प्राप्त होना असंभव समझा। परन्तु म्यज़ दल की संख्या और शक्ति को कम अनुमान करके केरिग्नन से होकर बाज़ेन से संबंध कर लेना ही आपको संभव सूचित हुआ। दश ही मिनट पहले जिन चमुवों को पीछे हटने की आज्ञा हुई थी, और जो पीछे हटना प्रारंभ भी कर दिये

थीं, उन्हीं को घूम कर अब शत्रु के सम्मुख बढ़ना पड़ा। ला मान्सेल और उसके उत्तर वाले टीले पर बहुत ही भयानक युद्ध प्रारंभ हो गया। इसी बीच में, यानी बाज़िलिस छीने जाने के कुछ ही पहले, १२-वें जर्मन कोर के अगले डिवीज़न ने बढ़कर वहां पर अत्यंत ही आवश्यक समय पर सहायता पहुंचाई; और इसके आक्रामक बन कर ओजस्विता पूर्वक युद्ध करने से गिवान नदी की घाटी में डेनी नामक स्थान तक जर्मनों का अधिकार हो गया; उधर पूर्वीय टीलों पर तोपख़ाने की भयानक बैटरियां भी लगा ली गईं। उसी समय (दश बजे) गार्ड कोर, जो विलर्ससेर्नै के मार्ग से वहां पहुंचा था, ऊपरी गिवान नदी के उत्तरी टीलों में से दो मुख्य स्थानों पर अपनी बैटरियां लगा कर फ्रेञ्च सेना के ऊपर गोलों की भयंकर वृष्टि भी प्रारंभ कर दिया।

पूर्व की दिशा में दबा कर निकल जाने का डि विम्फेन का पहला सब प्रयत्न निष्फल हो गया; उधर तीसरे दल के आगे बढ़ आने से फ्रेञ्च सेना के लिये जो पश्चिम तरफ़ वाला निकल जाने का मार्ग था, वह भी अब अवरुद्ध हो गया।

पश्चिमीय आक्रमण, १० बजे से।

आक्रमणार्थ बहुत सबेरे ही प्रस्थान कर देने के लिये जो विगत वार को आज्ञायें निकल चुकी थीं, उनके अनुसार ५-वें कोर को अपने पीछे २

लिये हुए ११-वां जर्मन कोर उस दिन छः बजे सबेरे ही म्यज़ नदी को पार किया, और शीघ्रतापूर्वक डानशीरी से सीडान-रीग्ने-आज़-ब्त्रायस-माज्यार वाली सड़क से आगे बढ़ा। वर्टेमबर्ग वाला डिवीज़न नदी को, बहाव की ओर, कुछ अधिक नीचे से पार किया, और रेलवे लैन के किनारे से माज़्यार की ओर अपनी दृष्टि डाले रहा। आगे वाले पैट्रोलों को शत्रु की उपस्थिति के कोई चिह्न देख नहीं पड़े। गिवान नदी की घाटी की ओर से गंभीर तोप-नाद सुन पड़े, जिससे सीडान के मोर्चे ही में युद्ध प्रारंभ हो जाना सूचित हुआ, तब युवराज ने घाटी वाली सड़क से, जो सेण्ट मेज्जेज़ में उसे पार कर ऊपर आई थी, अपनी सेना को एडवान्स करने की इसलिये आज्ञा कर दी, कि जिसमें वह शत्रु के पश्चिमीय निर्गम-मार्ग को बंद कर सके, और इस तरह पर फ्लेइग्नेज़ (*Fleigneux*) में पहुंच कर म्यज़ दल से उनकी सेना का संबंध भी हो जावे। माज़्यार से किये गये शत्रु के आक्रमण से अपने कोर के पृष्ठ-भाग की रक्षा के लिए वर्टेमबर्ग वाले डिवीज़न को लगा दिया।

घाटी से निकलते ही युवराज की आगे वाली बटालियनों ने सेण्ट मेन्जेज़ और फ्लोइंग वाली फ्रेञ्च चमुवों को मार भगाया, और ११-वें कोर के तोपख़ाने फ्रेञ्च व्यूह के पश्चिमीय द्वार के सम्मुख लगा लिये गये। फ्रेञ्च

रिसाले की तीन रेजिमेण्टों ने इसी बीच में जर्मनो की एक निर्बल पथ-दर्शक (*Escort*) रिसाले और पैदल की छोटी सी सेना पर आक्रमण कर दिया, किन्तु 'नीडल गन' नाम की तोपों के प्रलयंकर और शीघ्र-संचालित गोलों से संत्रस्त हो कर वे रेजिमेण्टें भी शीघ्र ही पीछे हट गईं ।

इस तरह पर प्रायः दश बजे—अर्थात् बाज़िलिस के छीने जाने, और ला मान्सेल और डेनी पर के आक्रामकीय फ्रेञ्च सैनिक संचालनों के रोक दिये जाने पर—११-वें कोर के सब तोपखानों से गोलों की भयंकर वृष्टि प्रारंभ हो गई थी, और उससे माज़्यार की पश्चिम वाली सड़क बंद हो गई थी ।

अब पैदल योद्धाओं के प्रबल २ कालम घाटी से निकल २ फलेइग्नेज़ की ओर मार्च करने लगे, तथा पहले के लगाये हुए तोपखानो की लैन के बांये बाजू में ५-वें कोर के तोपखाने भी बढ़ा कर लगाये जाने लगे। शालां वाली फ्रेञ्च सेना पर उस समय प्रायः चारों ओर से गोलों और गोलियों की प्रलयंकर वृष्टि प्रारंभ हो गई । अब इस फ्रेञ्च सेना के निकल जाने के लिये केवल एक ही प्रदेश शेष रह गया था, परंतु वह था बेलजियम का उदासीन राज्य ।

दक्षिणीय आक्रमण, १० बजे से

इधर जिस समय पश्चिम और पूर्व इन दोनों दिशाओं में घोर संग्राम हो रहे थे, उधर

उसी समय २-रा बवेरियन कोर सीडान के दक्षिण वाले विन्दु की ओर, जहां उसे पहले ही से जाने को कह दिया गया था, एडवान्स कर रहा था। फ्रेनो (*Frenois*) और वाडेलिन्कूर (*Wadelincourt*) के आस-पास के टीलों पर संयुक्त होकर, तथा कुछ अधिक पूर्व में लगाये हुए ४-थे कोर के तोपखानों की सहायता में 'बवेरियन तोपखानो की प्रलयंकर बैटरियां' शत्रु-सेना के दक्षिणीय निर्गम मार्ग को सर्वथा बंद कर दीं।

रण-रचना की दृष्टि (*Strategical sense*) से तो जर्मनों के विजय-लाभ में अब कुछ संदेह नहीं रह गया, अब चारों ओर से ठोकरें देकर फ्रेञ्च-सेना पर केवल यह प्रकट कर देना, कि उनका अधिक उद्योग करना व्यर्थ है, शेष था।

पूर्वीय आक्रमण—५ बजे तक

बाज़िलिस के छीने जाने के बाद ला-मान्सेल के पश्चिम से तोपखानों की एक प्रबल लैन से गोलों की अति भयंकर वृष्टि प्रारंभ की गई, और यद्यपि फ्रेञ्च योद्धाओं ने जर्मनों के एडवांस को बहुत ही वीरता के साथ रोकने का प्रयत्न किया, किन्तु वे फ्रेञ्च व्यूह की ओर बढ़ते ही आये, और उनका बढ़ना रोकने में फ्रेञ्च सेना सफलीभूत न हो सकी। २-रे बवेरियन कोर और ४-थे कोर की सहायक चमुवों के पहुंच जाने से अंत में फ्रेञ्च सेना फान्ड डि गिवान नाले और बालन ग्राम के बाहर तक मार कर हटा दी गई।

हाल के आये हुए बवेरियन ब्रिगेडों ने उस ग्राम के छीनने, और कुछ काल के लिये अपना अधिकार उस पर स्थिर रखने में सफलता प्राप्त की, और यद्यपि एक उग्र प्रत्याक्रमण से व्याकुल होकर प्रायः एक बजे उनको विवश होकर वहां से अधिकार उठा लेना पड़ा था, पर अंत में बालन ग्राम को शत्रु से वे पुनः छीन लिये, और तब से युद्ध के अंत तक प्रायः अपने अधिकार में रखे ही रहे आये ।

सैक्सनी के युवराज (*Crown Prince*) की १२ वें कोर के लिये आदि आज्ञा यह थी, कि वह इली के समीपस्थ टीलों तक जावे, और गार्ड कोर को साथ में लेकर ऐसा उद्योग करे, कि जिसमें फ्रेञ्च सेना बेलजियम सीमा के भीतर निकल जा न सके । डेनी (*Daigny*) ग्राम और ब्वायस डि गरेन (*Bois de garenne*) नाले पर स्वाधिकार रखकर १-ला बवेरियन कोर उपर्युक्त दोनों कोरों के संचालन के संवरण में लगाये जाने वाला था। वाज़िलिस में जो संग्राम हुआ था, उसमें दोनों ओर की चमुएं इतनी थक कर शिथिल पड़ गईं थीं, कि १२-वें कोर से उपर्युक्त संचालन करते नहीं बन पड़ा, इसी से दोपहर हो जाने के बहुत पीछे २३-वां सैक्सनी डिवीज़न पश्चिम बगल वाली घाटी तक पहुंच पाया । इधर एक और दो बजे के बीच में, अर्थात् जब तक वाज़िलिस के पास की

संग्रामावस्था कुछ बहुत शोचनीय नहीं हो पाई थी, जेनरल डि विम्फेन ने निज प्रथम युक्ति (*Plan*) के अनुसार केरिग्नन की ओर से दबा कर निकल जाने के उद्देश्य से अपनी सब चमुवों को एक स्थान पर संकर्षित हो आने के लिये सूचनायें भेज दी थीं। संभव है, उनकी यह आज्ञा कोर-कमाण्डरों के पास पहुंची ही न हो, किम्वा बहुत विलंब करके पहुंची हो, परन्तु उसका फल केवल इतना ही हुआ, कि डि विम्फेन की सूचनावों के अनुसार प्रायः तीन बज जाने पर केवल दो डिवीज़न सेना मान्ट डि गिवान नाले से प्रस्थान कर टीले से होती हुई पूर्व तरफ़ को बढ़ चली।

गार्ड कोर के बांये 'विङ्ग' की चमुवों की सहायता से सैक्सनी के मार्च करते हुए डिवीज़न पर का शत्रु का यह आक्रमण निष्फल हुआ ; फ्रेञ्च सेना प्लेटो की ओर मार कर हटा दी गई। ज्योंही डेनी के पश्चिमस्थ टीलों पर उस डिवीज़न का पैर सुदृढ़ रूप से जम गया, कि १२-वें कोर के समस्त तोपखानों से गोलों की वृष्टि प्रारंभ हो गई। इस समय फ्रेञ्च योद्धावों का उत्साह सर्वथा शिथिल हो गया सा सूचित होता था, उनके सैकड़ों जवान बंदी भी हो गये थे।

कुछ अधिक उत्तर में गार्ड कोर की एडवान्स चमुवों ने गिवान पर बिना किसी विशेष परिश्रम के ही अपना

अधिकार कर लिया, तथा गार्ड रिसाला घाटी में उतर कर इली ग्राम के उत्तर में तीसरे दल की चमुवों से संबंध कर लिया। ब्वायस डि गरेन पर जर्मनों का अधिकार होना अब भी शेष था। समस्त गार्ड कोर की बैटरियों से गोलों की संकर्षित और अत्यंत घोर वृष्टि वहां के बन पर की जाने लगी, और उसी तोपख़ाने की वृष्टि के संवरण में घाटी में का पैदलों का १-ला गार्ड डिवीज़न दो बजे के कुछ ही बाद पश्चिमीय टीलों पर चढ़ दौड़ा। तब तो युद्ध का बहुत ही भयानक दृश्य वहां उपस्थित हो गया। पूर्व तरफ़ गार्ड और १२ वें कोरों की चमुएं दबाती जाती थीं, उधर पश्चिम और उत्तर से तीसरे दल की चमुएं अपना चंगुल समेटती आ रही थीं। कहीं कहीं पर तो फ्रेञ्च योद्धावों के समूह ऐसी दुर्दशा में भी अपनी स्वाभाविक वीरता प्रदर्शित कर लड़ते ही जाते थे, पर सहस्र २ योद्धा अब निराश हो २ इस समय आत्म-समर्पण (*Surrender*) कर दिये। पांच बज जाने पर यह युद्ध बन्द हुआ, और गार्ड कोर की मुख्य मुख्य चमुएं कलवर डिल्ली (*Calvaire d'Illy*) के प्लेटो पर पहुंच भी गईं।

पश्चिमीय आक्रमण— ५ बजे तक

तीसरे दल की पैदल सेना अपने तोपख़ानों के पीछे २ क्रम २ से घाटी से बाहर निकली, और उत्तर तरफ़ फैल गई। ११ बजे तक में ५-वें कोर की बैटरियां फलेइग्नेज़ (*Fleigneux*)

के दक्षिण की ऊँची भूमि पर, तथा ११ वें कोर के तोपख़ानों के बांये बाज़ू में एकत्रित करके लगा दी गई; फिर तो इधर से २६ बैटरियों से, और उधर गिवान घाटी की पूर्वीय भुजा पर की गार्ड कोर की बैटरियों से गोलों की भयंकर वृष्टि होने लगी। इसका फ्रेञ्च सेना पर बहुत ही हानिकारक प्रभाव पहुंचा। घाटी की खुली भुजा पर की सेना इस अग्नि-वृष्टि से बिलकुल ही उत्साहहीन हो गई; उसका आगे बढ़ने का प्रयत्न सर्वथा नष्ट कर दिया गया। शत्रु से छीने गये पलोइंग और इली ग्रामों में जर्मनों की सहायक सेनायें क्रम २ से निरंतर आती ही रहीं, और दोनों ग्रामों के बीच में, रह २ कर, डिंग-युद्ध-कारी योद्धा गण (*Skirmishers*) धावा करते ही रहे आये।

इस आक्रमण की भयानकता को समझ कर डि विम्फेन ने अपने पांचवें और पहले कोरों की चमुओं को जेनरल डूए की सहायता में भेज दिया, और स्वयं रण-भूमि के दूसरे भाग में निज बारहवें कोर की सहायता में पहुंच गये। उस समय यह फ्रेञ्च कोर बवेरिया वालों के आघात से व्याकुल होकर पीछे हट रहा था। डूए के पास इस समय सहायक सेनाओं का पहुंचना परम आवश्यक था, किन्तु वहां पहुंचने के लिये उन को खुली रण-भूमि से होकर इधर से उधर और उधर से इधर आना-जाना पड़ा, जहां पर पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से

जर्मन तोपख़ानों से गोलों की घोर वृष्टि होती थी। इस आकुलता का फल यह हुआ, कि प्रायः दो बजे के क़रीब फ्रेञ्च जेनरल को कलवर डिली का अपना सुदृढ़ मोर्चा ख़ाली कर देना पड़ा, और उनकी सेना की अनेक बटालियने ब्वायस डि गरेन के अरक्षित मोर्चे में चली आईं।

सातवें फ्रेञ्च कोर की चमुवों में से एक डिवीज़न अब भी बज़ल के उत्तरस्थ एक सुदृढ़ स्थान पर डँटा था। उसपर जर्मनों के ५-वें कोरों की प्रायः सत्तरह बटालियनों ने बहुत ही ओजस्विता के साथ आक्रमण किया; ये दोनों कोर उस समय धीरे २ पलोइंग के समीप संकर्षित हो रहे थे, और अब पूर्व तरफ़ वाले टीले की खड़ी भुजा पर चढ़ने का प्रयत्न करने लगे। इस संचालन को रोकने के लिये जेनरल डूक्रो ने जेनरल मारगरेट के रिसाले से पलोइंग की पूर्व वाली भूमि पर चार्ज करवा दिया, जिस में, यदि संभव हो सके, तो वह घूम कर शत्रु की बढ़ती हुई लैन के बाज़ू को दबा सके। चार्ज तीन बार किया गया, और यद्यपि जर्मन डिंब-युद्ध-कारियों को कुचलते फ्रेञ्च सवार आगे निकल जाने में सफलीभूत हो गये, किन्तु उन डिंब-युद्ध-कारियों के पीछे की लैन में सहायक योद्धावों (*Supports*) की जो गहन पंक्ति थी, उसको बेधने में वे सवार सफलीभूत न हो सके, और उस उद्योग में उनके स्क्वाड्रन के स्क्वाड्रन अश्वारोही भूमि-शायी हो गये। इस

उद्दंड चार्ज में फ्रेञ्च रिसाले की आधी संख्या हताहत हो गई, तथापि फ्रेञ्च सेना की उस दिन की अवश्यं-भावी घटना की दशा को परिवर्तित करने में वह रिसाला समर्थ-वान न हो सका। उधर इस सहसा-कृत रण-कार्य्य से प्रशियन पैदल जवानों को कुछ विशेष हानि भी उठानी नहीं पड़ी, और अब सवारों के पग लड़खड़ाते हुए देख, वे दमदमाते हुए आगे बढ़े, तथा कज़ल पर धावा करके उसको वे स्वाधिकार में कर लिये। फ्रेञ्च सेना वहां से हट कर ब्वायस डि गरेन के अपने अंतिम मोर्चे में जा अड़ा।

संग्राम का अंत

तीसरा पहर प्रारंभ होते होते युद्ध-स्थल के प्रत्येक विभाग से फ्रेञ्च सेनायें हट २ कर सीडान के क्षुद्र दुर्ग के आस-पास में एकत्रित होने लगी थीं। तीन बज जाने पर इतनी अस्तव्यस्तता छा गई, कि मान-मर्द्दित फ्रेञ्च जवान अपने २ अफ़सरों की न तो आज्ञा ही सुनते थे, और न उनके धमकाने ही पर कुछ कान देते थे। प्रशियाधिराज ने शत्रु सेना के ऊपर उसकी वास्तविक शोचनीय अवस्था को प्रकट कर दिखाने के लिये फ्रेना (*Frenois*) के आस-पास के टीलों पर अपने बवेरियन तोपख़ाने लगवाये, और वहां से सीडान के दुर्ग पर गोलों की संकर्षित और प्रलयंकर वृष्टि प्रारंभ करवा दिये। अब तो दुर्ग के अनेक विभागों से धूएं के

स्तंभ आकाश की ओर चढ़ते हुए देख पड़े, तथा ज्यों ही इधर से बवेरियन रैफल धारी पैदल सेना दुर्ग के टोर्सी नामक फाटक के उड़ाने की तय्यारी करने लगी, कि उतने में बुर्ज पर शरणागत-स्वीकार का स्वेत झंडा उठा दिया गया।

शरणागत के नियमों के विषय में रात भर वाद-विवाद होता रहा, दूसरे दिन ११ बजे समस्त फ्रेञ्च सेना के शस्त्रास्त्र-रहित करके बंदी कर लिये जाने की बात तैं पाई। इस विजय के लिये जर्मनों को अपने ४६० अफ़सरों और ८,५०० जवानों का बलिदान करना पड़ा; फ्रेञ्च सेना के १७,००० जवान हताहत हुए, तोपख़ानों की संकर्षित मार से इनमें से अधिक योद्धा काम आये थे। २१,००० जवान युद्ध के अवसर ही में पकड़ कर बंदी बना लिये गये थे, और युद्ध के अंत में ८३,००० जवानों ने आत्म-समर्पण किया। इस तरह पर इसमें सब मिला कर १,०४००० फ्रेञ्च योद्धा सामरिक बंदी हुए थे। म्यज़ नदी के घुमाव से जो इजेज (*Iges*) नामक प्रायद्वीप बनता है, उसी में फ्रेञ्च सेना के सब बंदी एकत्रित किये गये। ११-वें कोर और १-ले बवेरियन कोर की चमुओं को इन बंदियों को, दो दो हज़ार जवानों की गरोह बना कर, सड़कों से एटेन और पान्ट-आ मौसन पहुंचाने की आज्ञा हुई। वहां पहुंचने पर मेज़ मुहासिरा करने वाली सेना के चार्ज में वे दिये जाने वाले थे, और तत्पश्चात् क्रम २ से उन्हें

जर्मनी भेजने की आज्ञा थी।

समालोचनायें

तोपख़ानों के गोलों ही का इस युद्ध में पूर्ण महत्व था, उन्हीं से फ्रेञ्च सेना को विशेष हानि उठानी पड़ी थी; अतएव सीडान का संग्राम विशेषतः तोपख़ानों का संग्राम था। बाज़िलिस के संग्राम में तोपों से गोले बरसाये जाने के पहले पैदल सेना से भी रण-कार्य्य अवश्य लिया गया था, किन्तु अपर स्थानों के संग्रामों में तोपख़ानों से गोले बरसा २ कर पहले शत्रु के व्यूह शिथिल कर लिये गये थे, तत्पश्चात् पैदलों से धावा करा कर सरलता पूर्वक वे तोड़े गये थे; ५-वें और ११-वें कोरों की वितरित (*Deployed*) बैटरियों को अग्नि-वृष्टि करके पहले कुछ देर तक अपने ही फ्रंट की रक्षा करनी पड़ी थी; तथा सेण्ट मेञ्जेज़ की घाटी वाली सड़क से इतनी कम हानि उठा कर उनका बाहर निकल आना बहुत ही अद्भुत और अवर्णनीय मालूम होता है। कम चौड़ाई (*Depth*) के एक व्यूह पर दो ओर से आक्रमण करने में क्रास फैर (*Cross Fire*) * की आवश्यकता पड़ गई, और उसके द्वारा फ्रेञ्च सेना का एक तरफ़ से रण-भूमि के दूसरे विभाग में जाना पूर्णतः बंद कर दिया गया; उधर युद्ध के अंत में गोलों के फूटने से फ्रेञ्च योद्धाओं के

* क्रास फैरः—जब दो या अधिक जगहों से फैर होकर गोलियां और गोले फैर की लैनों को पार कर जाँय।

लिये आत्म-रक्षार्थ कोई सुरक्षित स्थान ही शेष नहीं रह गया।

प्रारंभ से अंत तक जर्मन पैदल सेना को ओपेन आर्डर (*Open Order*) * में लड़ना पड़ा था। उत्तम फ्रेञ्च रैफलों के सम्मुख जर्मन सेना का श्रेणी-बद्ध (कालम में) होकर एडवान्स करना असंभव था, और सहायक (सपोर्ट) योद्धावों के कंपनी-कालम बहुत काल तक अपने संगठित विधान (क्लोज़ फ़ार्मेशन †) को स्थिर रख नहीं सके। उत्तम व्यूह-रचना से जो लाभ हो सकते हैं, उसका वर्णन इस अध्याय में यथा-स्थान किया जा चुका है; ओपेन आर्डर के व्यूह-विधान में, तथा एक कंपनी के योद्धावों के दूसरी में संक्रमण हो जाने में जो बुराइयां हो सकती थीं, उनका परिष्कार जर्मन योद्धावों की संयमता और निज नायकों के प्रति उनकी असीम भक्ति से, तथा रेजिमेण्टल अफ़सरों की अपने सिपाहियों के ऊपर प्रभाव पहुंचाने की योग्यता इत्यादि से हो सकता था।

फ्रेञ्च रिसाले के उद्दंड धावों के बहुत ही कम प्रभाव पड़े थे, और इससे इस सिद्धान्त का, कि आधुनिक अग्नि-वृष्टि के रण-कार्य्य में निश्चल और स्थिर बुद्धि वाली पैदल सेना को अश्वारोही योद्धावों से बहुधा बहुत कम

* ओपेन आर्डर :—सिपाहियों का दूर २ खड़े होकर युद्ध करना।

† क्लोज़ फार्मेशन :—सिपाहियों का कंधे से कंधा मिला कर श्रेढ़ी-बद्ध खड़े होकर युद्ध करना।

भय हो सकता है, यहां एक नवीन उदाहरण मिलता है।

दश दिन का यह रण-नृत्य, जिसको शालां दल के विरुद्ध मार्शल मोटके ने रचा था, आक्रामकीय समर का एक बहुत ही अनूठा चरित्र कहा जा सकता है। एक नया फ्रेञ्च दल शालां में एकत्रित हुआ था, उधर मेज़ मुहासिरा करने वाली चमुवों के सिवाय शेष सब जर्मन सेनायें चौड़े फ्रंट में वितरित हुईं पेरिस नगर की ओर मार्च करती जा रही थीं। मार्शल बाज़ेन और उनकी सेना के उद्धारार्थ जो फ्रेञ्च समर-मंत्रियों ने मार्शल मैकमाआं के पास आज्ञा भेजी थी, वह देखने में साहसिक तो अवश्य-मेव थी, किन्तु रण-रचना की दृष्टि से उसका कार्य्य में परिणत किया जाना कदापि उचित कहा नहीं जा सकता था। फलैङ्क मार्च करते समय, आगे बढ़ती हुई जर्मन सेना से अपने को सुरक्षित रखने के लिये फ्रेञ्च सेनाधिपों को दो बातों पर ध्यान देना उचित था:—एक तो शत्रु की दृष्टि बचा कर उनसे कुछ दूर आगे निकल जाने के लिये समुचित समय प्राप्त कर लेना, और दूसरे, अपनी बड़ी सेना के संचालन के लिये काफ़ी जगह का रखना। शालां से जिस दिन फ्रेञ्च दल प्रस्थान किया, उस दिन उत्तर में सब से अधिक दूरी पर जो जर्मन कोर था, वह भी वर्डेन में पहुंच चुका था; अतएव उस फ्रेञ्च दल को, उस मुक़ाम और बेलजियम सीमा के मध्य से एक मंज़िल तैं

करना था। चाहे फ्रेञ्च सेनाधिप जितनी शीघ्रता करते, फिर भी म्यज़ दल के रिसाले की आंख बचा कर उतनी बड़ी सेना का निकाल ले जाना साधारणतः असंभव था, पस माण्टमीडी या एटेन के आस-पास में कहीं पर उनका शत्रु-सेना से संस्पर्श हो जाना अवश्यं-भावी था। यदि उत्तर दिशा में सैन्य-संचालन योग्य अधिक विस्तार का प्रदेश रहा होता, तो कुछ लंबा चक्कर देकर फ्रेञ्च सेना का निकाल ले जाना संभव हो सकता था, उस दशा में मैकमाआं की चाल गुप्त रह सकती थी, तथा जर्मनों को उनकी इस चाल का पता न लगना संभव हो सकता था। किन्तु उत्तर में थोड़ी ही दूरी पर बेलजियम का उदासीन (*Neutral*) राज्य प्रारंभ हो जाता था, उधर दक्षिण में एक ही मंज़िल पर शत्रु-सेना ही पड़ी थी, अतएव फ्रेञ्च सेना के मार्च के लिये बीच में बहुत ही संकीर्ण प्रदेश बँच जाता था। अपनी वास्तविक चाल को गुप्त रखने, और शत्रु की आंख बचा कर अधिक सावकाश प्राप्त करने के लिये फ्रेञ्च सेनाधिपों को उचित था, कि अपनी कुछ सेना से ट्याज-संचालन करा कर जर्मन दलों को मेज़ से दूर, पेरिस या दक्षिण ओर, किसी तरफ़ बहका ले जाते, किम्वा किसी दूसरी धोखे की चाल से मेज़ की ओर के अपने लौटने के अभीष्ट को उनसे गुप्त रखते। पर यह चाल फ्रेञ्चों से न बन पड़ी, बात उलटी हो गई; जर्मन चमुएं

मध्य में उपस्थित थीं, और भीतरी लैन में होने के कारण फ्रेञ्च सेना के मुक़ाबिले में पहुंचने के लिये, उनको फ्रेञ्च चमुवों की अपेक्षा वस्तुतः कम फ़ासला भी तैं करना पड़ गया।

उपर्युक्त अवस्था में रण-रचना संबंधी जो कठिनाइयां फ्रेञ्च सेना के लिये उपस्थित थीं, वे तो थीं ही, उनके सिवाय शालां दल युद्ध के लिये सर्वथा सन्नद्ध भी नहीं था, प्रत्युत उतना चैतन्य नहीं था, जितना उसको वैसी कठिन अवस्था में होना चाहिये था। रसद के भंडार तो निस्संदेह अनेक स्थानों पर संचित कर लिये गये थे, किन्तु चमुवों में उनकी वितरण-प्रणाली में अनेक दोष थे, जिन से सैनिकों को बहुत बड़ा कष्ट था। प्रधान सेनापति इस बात का कभी निर्णय नहीं कर पाये, कि वे अपनी रण-रचनायें युद्ध की अवस्था देखकर करते, अथवा महाराज नैपोलियन और उनके कुटुम्ब की लाभ-हानि पर ध्यान देकर। इन सब असुविधावों के होते हुए भी फ्रेञ्च सेनाधिपों के लिये किसी ख़ास अवसर पर कोई साधारण सफलता प्राप्त कर लेना कुछ विशेष असंभव नहीं हो सकता था।

रीम्ज़ और रेथेल की ओर जाने में फ्रेञ्च सेनापति का यद्यपि बहुत समय व्यर्थ नष्ट हो गया था, तथापि आगे बढ़ती हुई जर्मन सेना के बाज़ू में, ता० २५ अगस्त

को, १,५०,००० जवानों की फ्रेञ्च सेना उपस्थित थी, और यदि शीघ्रता के साथ उससे काम लिया गया होता, तो म्यज़ दल के उत्तरीय कोर क्रम २ से उससे पराजित कराये जा सकते थे। वह सेना बाज़ेन के उद्धारार्थ मेज़ में पहुंच सकती थी, या नहीं, इसमें तो मत-भेद है, किन्तु यदि सुअवसर पर बाज़ेन भी उसी ओर के निकलने (*Sortie*) का प्रयत्न कर दिये होते, तो बहुत संभव था, कि निज शालां दल से संबंध कर लेने में वे सफल-मनोरथ हो सके होते।

शालां दल को जब शीघ्रतापूर्वक व्यूह-बद्ध होने और आगे बढ़ने का अभ्यास ही नहीं था, तब तो राजधानी के सुदृढ़ दुर्गों ही में हट जाने में उसका कल्याण था। वहां पर दृढ़ता के साथ डँट कर उस का लड़ना संभव हो सकता था; और वहां पर वह सेना शत्रु-सेना द्वारा सर्वथा घिर भी नहीं सकती थी। यदि राजनैतिक विचारों से वैसा करना उचित नहीं समझा गया था, तो उस दशा में भी उत्तर-पश्चिम में, लेआन की ओर, मैकमाआं का हट जाना, और अपने पीछे २ बहुत सी जर्मन सेना को उधर ही लेते जाना अधिकतर लाभदायक हो सकता था। राजधानी में उपस्थित नियत (रेगुलर) सेना से पेरिस को अपनी रक्षा करने के लिये छोड़ देना था—और ऐसा तो अंत में पेरिस को विवश होकर करना ही पड़ गया था। अपने एक बाज़ू में एक बहुत बड़ी फ्रेञ्च

सेना के रही आने से, जर्मन दलों का तब अधिक आगे बढ़ना भय-पूर्ण हो जाता; और चाहे कुछ लाभ होता, या नहीं, पर शेष फ्रेञ्च सेना के लिये, और पेरिस को आत्म-रक्षार्थ प्रस्तुत होने के लिये, समय अवश्य मिल सकता था। फ्रेञ्च सेना का अति मंद और शोचनीय मार्च, उनके रिसाले वालों की दोष-पूर्ण गिर्दावरी, और उनमें शत्रु-सेना का पता लेने की अयोग्यता—जिसके कारण पूर्व-कथित नौआर्ट और बोमाण्ट में उनके अकस्मात् विस्मित कर दिये जाने की घटना हुई थी—तथा प्रधान सेनाधिपति का उद्देश्य-हीन होना और आगा-पीछा करना, ये और ऐसे ही अनेक छोटे-बड़े दोष फ्रेञ्च सेना में पैदा हो गये, इन्हीं सब कारणों से उसको उस दिन अपने संहार-कारक आत्म-समर्पण की लज्जा उठानी पड़ गई।

सीडान में ता० ३१ को जो निष्प्रयोजन फ्रेञ्च सेनाधिप ने विलंब किया था, उसका भी कारण समझ में नहीं आता है। अपनी सेना को वैसे बुरे स्थान में फँस गई पाकर मार्शल और उनके स्टाफ़ अफ़सरों के मन में ऐसा नैराश्य छा गया, कि उस तारीख़ के अंतिम घंटों को वे लोग व्यर्थ नष्ट कर डाले। मैकमाआं की सम्मति में ता० १ सितंबर के सबेरे तक भी माज़्यर की ओर का हट जाना संभव था; पस यह नहीं समझ में आता है, कि जिस मार्ग से जाना था, उसके पलेङ्क को अपने रिसाले

से आपने निर्झरी क्यों न करा ली ; म्यज़ नदी पर के पुलों को नष्ट क्यों न करा दिया ; तथा, जिस घाटी के बीच से अपनी चमुवों को निकालना था, उसको स्वाधिकार में रखने का आपने प्रयत्न क्यों नहीं किया। मार्शल मैकमाआं का सवेरे ही घायल हो जाना अवश्य ही शोकप्रद हुआ ; परंतु यह नहीं समझ में आता है, कि संग्राम की अगली लैन में प्रधान सेनापति के रहने का प्रयोजन क्या था। मालूम होता है कि सेनापति के साथ ही साथ सब सदर स्टाफ़ सीडान को चला गया था, और इस तरह पर युद्ध की वास्तविक अवस्था का डूक्रो को पता देने वाला ही वहां कोई नहीं रह गया। उधर डूक्रो के आज्ञानुसार ज्योंही फ्रेञ्च चमुवों का पीछे हटना प्रारंभ हुआ, कि मंत्रि-मंडल की गुप्त आज्ञा का लाभ उठा कर डि विम्फेन प्रधान सेनापति बन सब कमाण्ड अपने हाथ में कर लिये, और पुनरपि पूर्व दिशा में बढ़ाने के उद्देश से सब पीछे हटती हुई चमुवों को अपने २ मोर्चे में लौटा लाये। मालूम होता है, कि शत्रु-सेना की तत्कालीन संख्या और शक्ति से ये दोनों ही जेनरल अनभिज्ञ थे ; जितनी जर्मन सेना वहां पहुंच गई थी, उसको वे समझ नहीं पाये थे ; उनकी जान में केवल सैक्सनी के युवराज के कमाण्ड वाला म्यज़ दल मात्र वहां पहुंचा था! उन दोनों कमाण्डरों में से किसी को भी यह खबर न हो पाई, कि प्रशियन

युवराज के कमाण्ड का प्रायः समस्त तीसरा दल उस समय वहां पहुंच गया था!

बहुत से लोग यह कहते हैं, कि जर्मनी वाले अपनी रण-रचना करने में आवश्यकता से अधिक सावधानी करते थे। ऐसे लोगों के अनुसार जर्मनों को ता० २५ अगस्त के संग्राम के बाद अपनी सेना का कुछ अंश पेरिस राजधानी की ओर भेज देना चाहिये था। किन्तु ऐसा करने में उनको लाभ-विशेष कुछ भी नहीं हो सकता था। राजधानी इतनी सुरक्षित और दुर्गम्य थी, कि उसको धावा करके ले लेना असंभव था, और इधर फ्रेञ्च सेना के ऊपर जर्मनों को जो संख्या-आधिक्य का लाभ प्राप्त था, वैसा करने में वह भी न रह गया होता।

जिस नियम से जर्मन दलों की रण-रचना वाला चक्र घुमाया गया था, उसका प्रत्येक अंश इस योग्य है, कि उसपर विचारपूर्वक ध्यान दिया जावे। जब तक पलैङ्क की ओर का मैकमाओं का सेना-संचालन संदेह-पूर्ण था, तब तक भिन्न २ कोरों को केवल भिन्न २ गति से मार्च करने की आज्ञा की गई थी, अर्थात् किसी कोर को बड़ी और किसी को छोटी मंज़िल तैं करना पड़ता था। उनके मार्च की दिशा में तब तक कोई परिवर्तन नहीं किया गया था। बाज़ेन के उद्धारार्थ मैकमाओं के लौटने की ज्यों ही कुछ गुमगुमाहट हुई, त्यों ही सब कोरों के

कमाण्डरों के पास इस विषय की, कि वे दहनी तरफ़ लौटने के लिये तय्यार रहें, आज्ञायें पहुंच गईं। जन-रव के सुनने पर तय्यारी मात्र रही आई, कार्य्य कुछ नहीं किया गया; और अंत में उस विषय की सच्ची ख़बर मालूम हो जाने पर ही सब चमुवों को उत्तर दिशा में प्रस्थान करने की आज्ञा हुई थी। सेनावों के संचालन के विषय में पहले पहल तो ऐसे प्रबंध किये गये थे, कि जिसमें उनका संकर्षण यज़ नदी के पूर्वीय तट पर हो सकता था, परन्तु उनके संचालनों के देखने से ऐसा प्रकट होता था, कि मानो वे नदी के पश्चिम वाले ही तट पर आक्रमण का प्रबंध रच रहे थे।

दोनों प्रतिद्वंद्वी दलों के सदरों से जो आज्ञायें निकलती थीं, उनकी रीति-भांति (*System*) और लेखन-प्रणाली (*Style*) में भी ज़मीन-आसमान का अंतर रहता था। जर्मन सदर से थोड़े शब्दों में मुख्य २ सूचनायें (*General Instructions*) दे दी जाती थीं; मातहत अफ़सरों और सैनिक नेतावों को उस उद्देश को कार्य्य में परिणत करने के लिये देश-कालानुसार अपनी बुद्धि से कार्य्य करने की स्वतंत्रता दे दी जाती थी। इसके विरुद्ध फ्रेञ्च सदर से अनेक कोरों की एक २ चमू के लिये सूक्ष्मतापूर्वक कार्य्य निरूपण कर दिये जाते थे, सैनिक कमाण्डरों को आवश्यकतानुसार अपनी बुद्धि से कार्य्य करने की कुछ

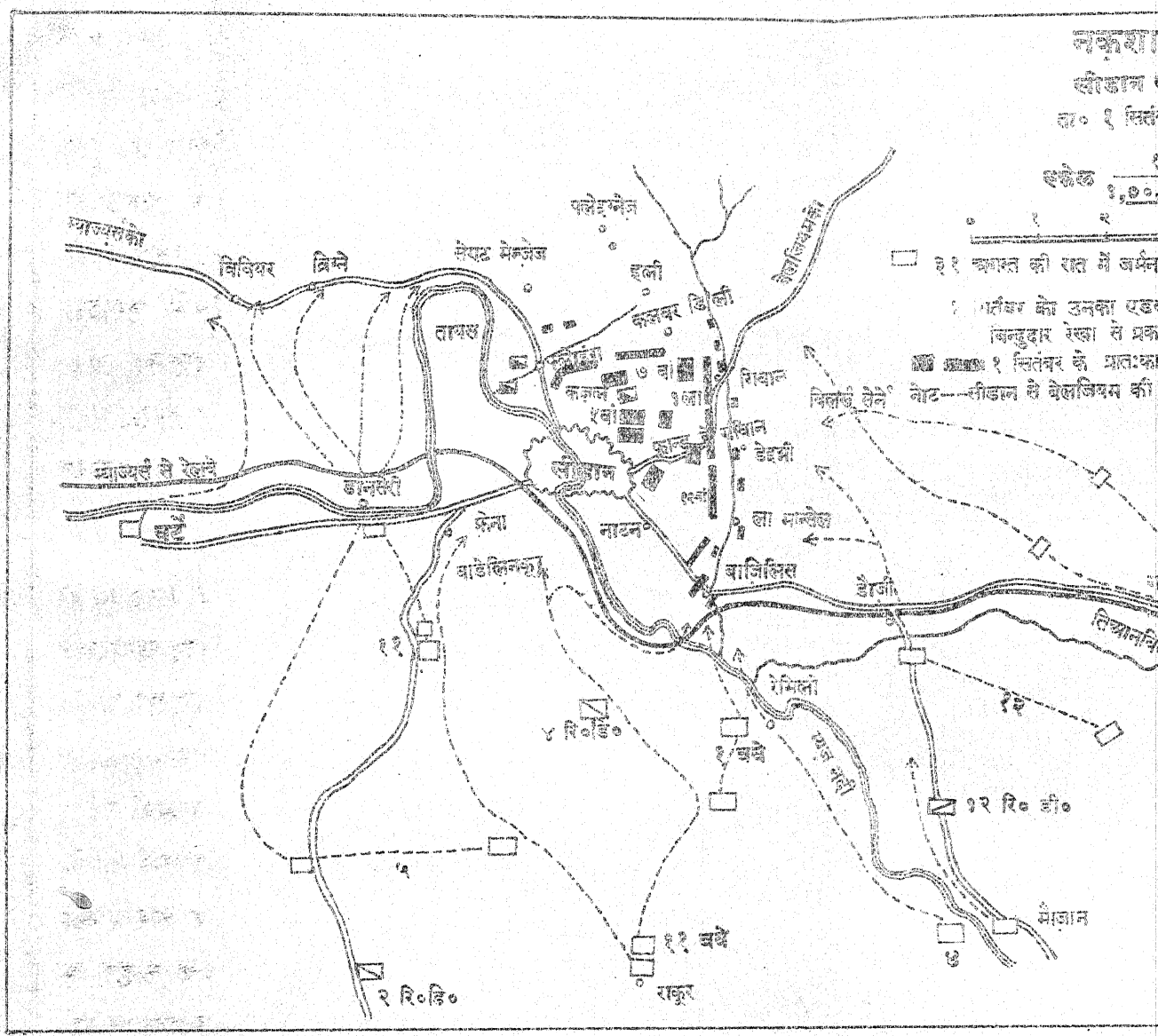

सीडान
ता० १ सितं
स्केल
१,७०,
० १ २
३१ अगस्त की रात में जर्मन
बिन्दुदार रेखा से प्रक
१ सितंबर के प्रातःका
नोट—सीडान से बेलजियम की
म्याज्यर्स को
विवियर
ब्रिग्ने
सेण्ट मेन्ज़ेज
पलेइग्नेज़
इली
कलवर डिली
तायस
बेलजियम को
गिवान
डेइग्री
ला मान्सेल
बाजिलिस
डौजी
सीडान
डानसरी
बर्टे
फ्रेना
बाडेलिनकूर
नाटन
रेमिली
मौज़ान
राकूर
११
४ रि०डि०
१ बघे
१२ रि० डी०
११ बघे
२ रि०डि०

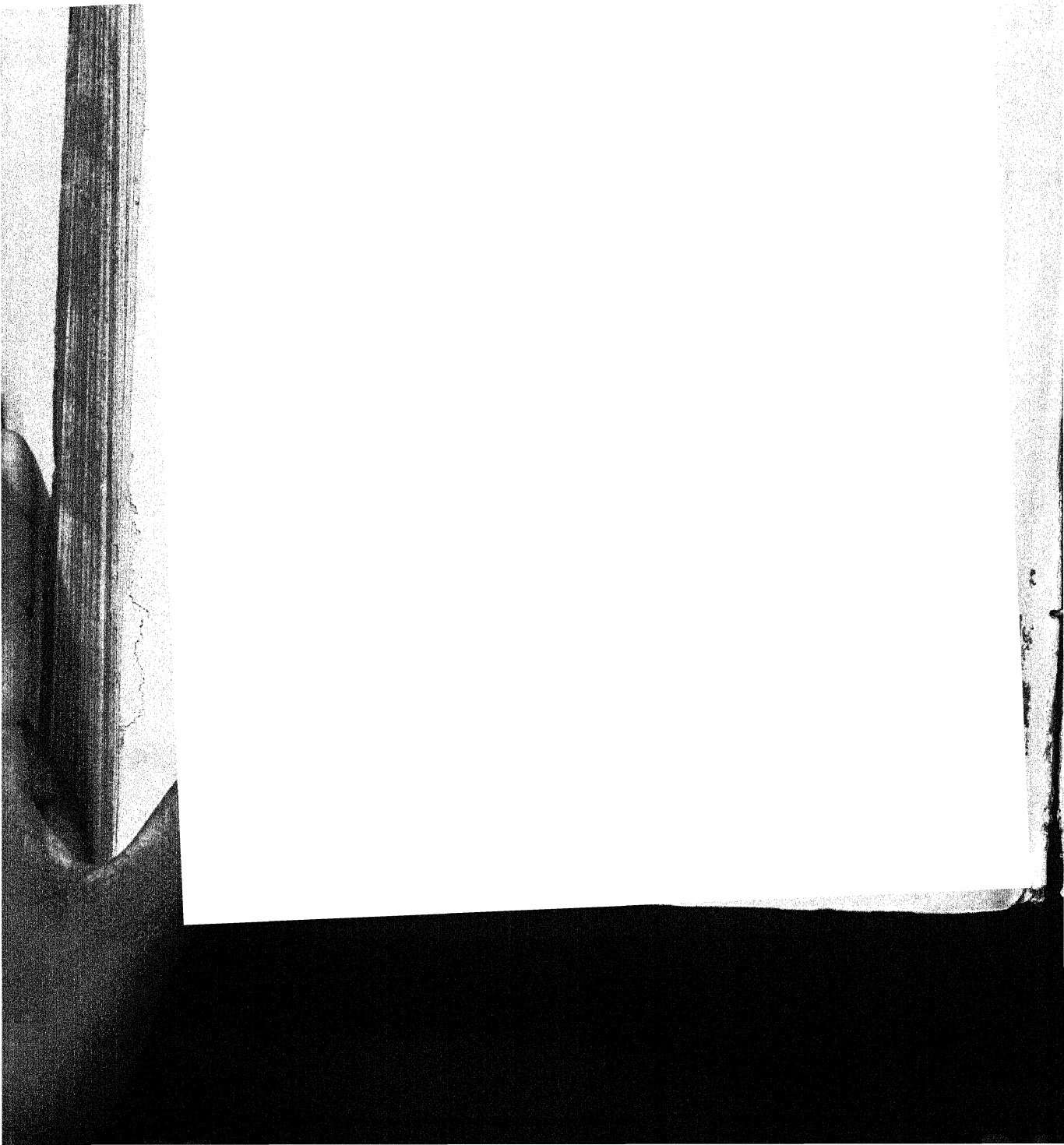

दी जाती थी। निर्णीत मार्ग से एक इंच भी इधर उधर हटने का उनको अधिकार नहीं था। प्रधान सेनापति को भी पूरे अधिकार प्राप्त नहीं थे; राजधानी में बैठे २ स्टाफ़ अफ़सर और मंत्रि मंडल भावी रण-रचनायें करते और उनके अनुसार चलने के लिये प्रधान सेनापति को विवश करते थे। मौक़े पर उपस्थित कमाण्डरों को अपनी बुद्धि के अनुसार उचित कार्य्य करने में भी बहुधा आगा-पीछा करना पड़ता था। इस सर्वाधिकार-संकर्षित शासन-प्रणाली (*Over-centralized Administrative System*) का जो भयंकर परिणाम अवश्यं-भावी था, वह ऊपर प्रकट ही किया जा चुका है।

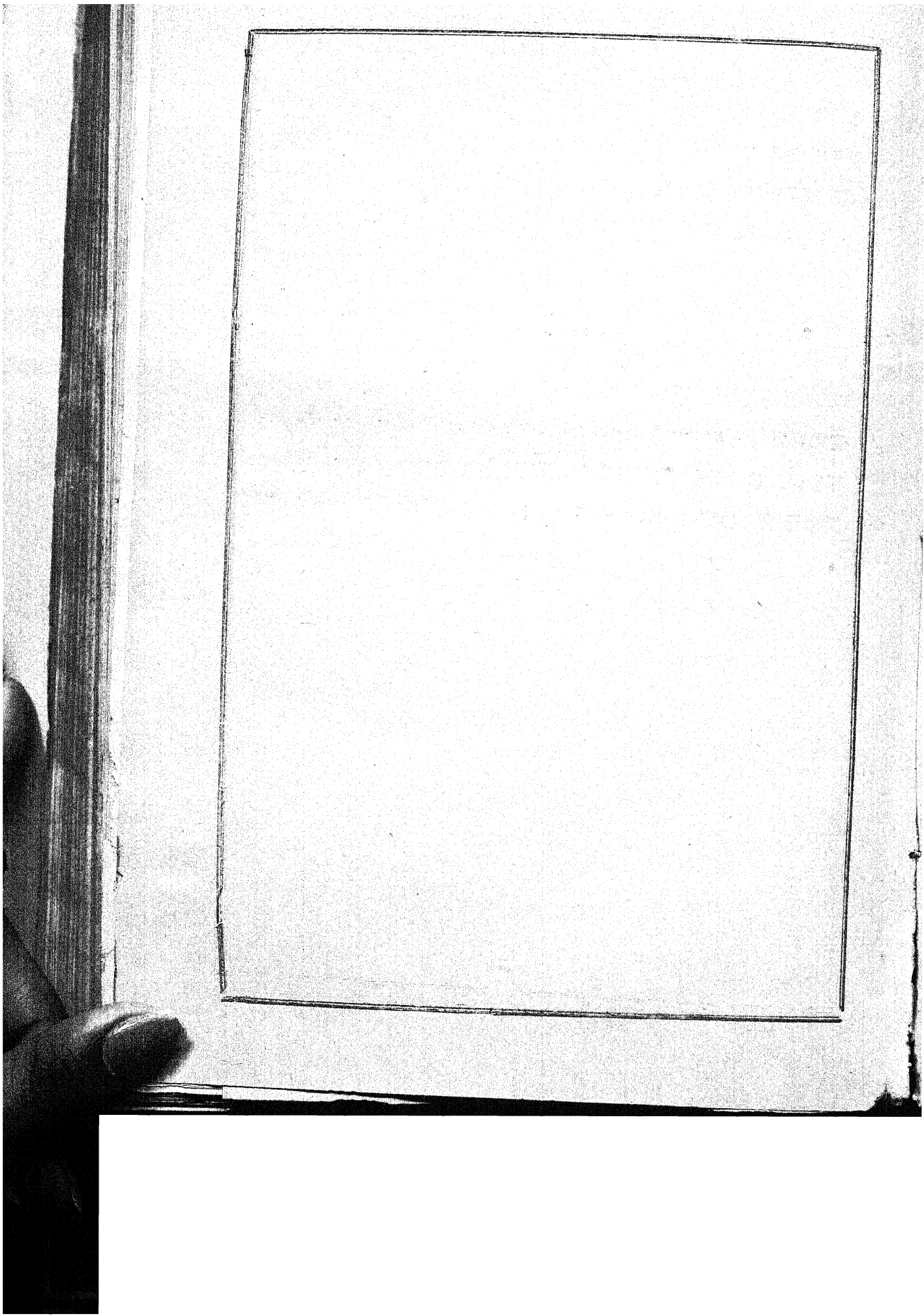

अध्याय १२

मेज़

मेज़ का मुहासिरा—२६ अगस्त का निष्करण-प्रयास—न्वायसविल का संग्राम, ३१ अगस्त—१ सितंबर—समालोचनायें—अक्तूबर का मुहासिरा—निष्करण-प्रयास, ७ अक्तूबर—आत्म-समर्पण—समालोचनायें।

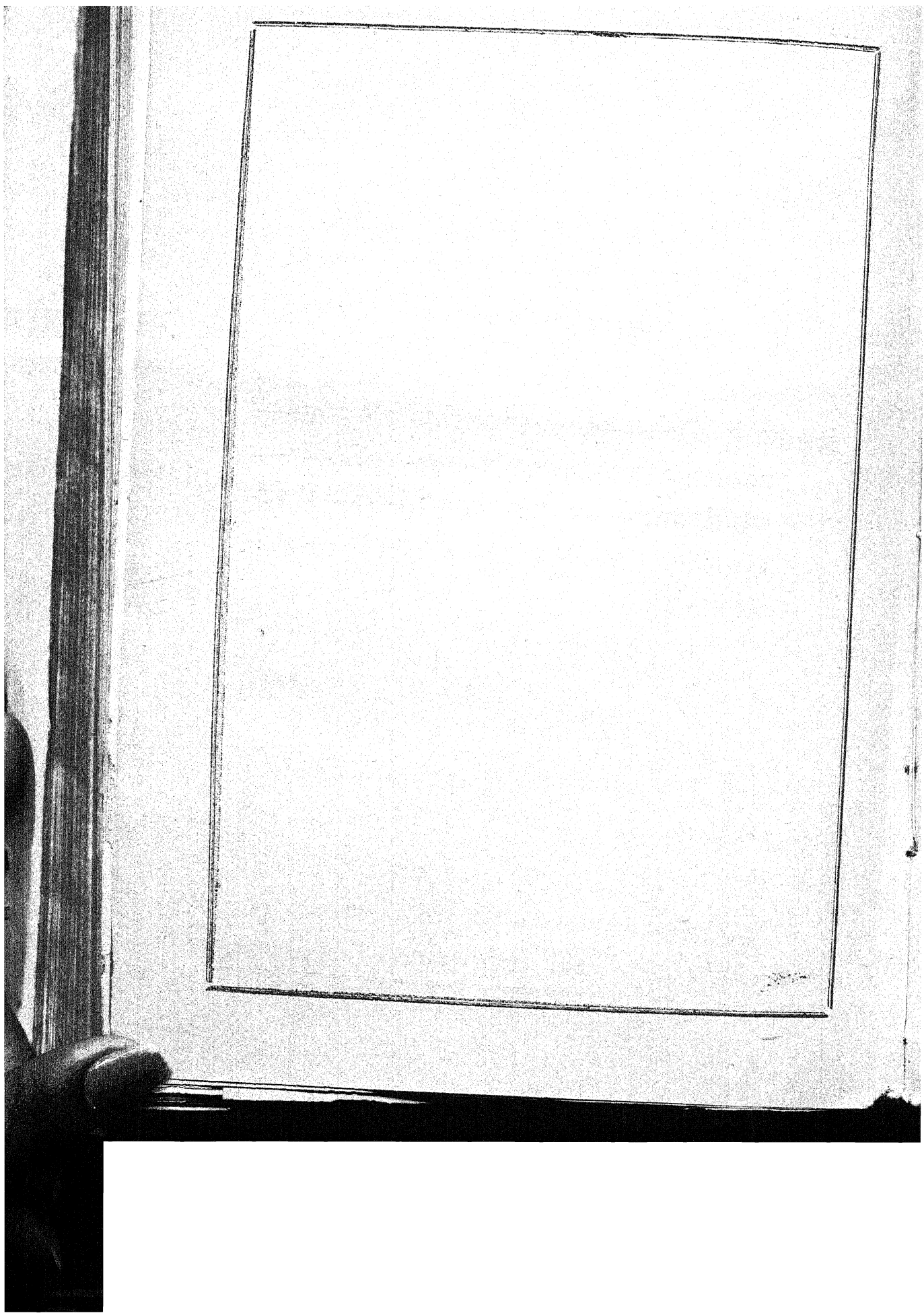

अध्याय १२

मेज़

मेज़ का मुहासिरा

ज़ और तीसरे दलों के उस संचालन से जिससे सीडान की अपूर्व विजय और उतनी फ्रेञ्च सेना को आत्म-समर्पण करना पड़ा था, प्रायः आधी जर्मन चमुवों को मेज़ के आस-पास में स्थिर हो जाना पड़ा था। जिस उद्देश से पहले रण-रचना की गई थी, उसके अनुसार, वहां के दुर्ग के मुहासिरा करने की बात नहीं ठहरी थी, पश्चिम दिशा में मुख्य सेना से एडवान्स कराते समय एक डिवीज़न रिज़र्व चमुवों से उस स्थान पर केवल दृष्टि मात्र रखने का उस समय विचार किया गया था। विलगस्थ दुर्गों के घेरे में राइन सेना (फ्रेञ्च) के हट आने से, उनके मुहासिरा करने की आवश्यकता विशेष कर इसलिये पड़ गई, कि जिसमें वह सेना वहां से निकल कर मैदान में वाली अपर फ्रेञ्च दलों से संबंध न कर सके।

ग्राबलाट वाले संग्राम की रात में जिन स्थानों में जर्मन कोर पहुंच गये थे, वहीं पर पड़ाव करके दूसरे

दिन विलगस्थ दुर्गों के सम्मुख प्रायः दो मील की औसत दूरी में वे बढ़ गये। नव-निर्मीत म्यज़ दल में जो चमुएं नियुक्त कर दी गईं थीं, उनके सिवाय इस मुहासिरे के लिये समस्त पहला दल (१-ला, ७-वां और ८-वां कोर); दूसरे दल के चार कोर (२-रा, ३-रा, ९-वां और १०-वां कोर); एक रिज़र्व डिवीज़न, और दो रिसाला डिवीज़न; अर्थात् सब मिला कर १,५४,४६० पैदल, १४,४३५ सवार और ४६५ तोपैं उपस्थित थीं। दुर्ग के भीतर मार्शल बाज़ेन के कमाण्ड में प्रायः २,००,००० योद्धा उपस्थित थे।

उत्तर तरफ़ अधः स्थित (*Lower*) मोज़ेल की दोनों भुजावों पर, जो जंगलों से आच्छादित थीं, १०-वां कोर स्वाधिकार किये था, तथा सेण्ट प्रीवाट से जरसी तक की विजित रण-भूमि पर २-रे और ८-वें कोर रखे गये थे। ऊपरी मोज़ेल के दोनों तटों पर ७-वां कोर नियुक्त था, तथा तीसरे और ९-वें कोरों के साथ में एक रिसाला डिवीज़न देकर उन सब का जेनरल रिज़र्व बनाया गया था, और वह दुर्ग के पश्चिमीय भाग में पड़ा था। नदी के दहने तट पर, पूर्वोत्तर की दिशा में रिज़र्व डिवीज़न उपस्थित था, तथा एक चौड़े चापाकार प्रदेश में, फेली और सर्विग्नी से लेकर आर्स लैक्रानेवसी

तक १-ला कोर फैला हुआ था। १-ले और ७-वें कोरों के मध्य एक रिसाला डिवीज़न द्वारा संबंध बनाया गया था। अगली लैन की चौकियों का घेरा अट्ठाईस मील से कुछ ऊपर था, पस ऐसी दशा में किसी वास्तविक आक्रमण के रोकने में जर्मनों को मैदानी मोर्चे बंदियों का सहारा लेना आवश्यक था, चूंकि बाज़ेन का आभ्यंतरिक उद्देश्य पश्चिम तरफ़ दबा कर निकलने का सूचित होता था, इसलिये जर्मन चमुएँ अधिकतर नदी के बांये तट पर रखी गईं थीं। कोर-कमाण्डरों के कार्य्यानुसरण के लिये अधोलिखित नियम नियत कर दिये गये थे:—उत्तर और दक्षिण दिशाओं से फ्रेञ्च गैरिज़न का निष्करण-प्रयास होने पर पुलों पर अधिकार रखने वाली जर्मन चमुत्रों को बढ़कर सम्मुख से रोकने की आज्ञा थी, और समस्त उपस्थित चमुवों से उसपर फ्लैङ्क से भी आक्रमण किया जाने वाला था। यदि पश्चिम तरफ़ से फ्रेञ्च निकलने का उद्योग करते, तो नदी के बांये तट पर वाली समस्त चमुवों को अपनी पूरी २ शक्ति प्रकट करके शत्रु को रोकने की आज्ञा थी; तथा यदि बाज़ेन पूर्व दिशा से दबा कर निकलने के लिये कुछ अधिक ओजस्विता प्रकट करते सूचित होते, तो उधर से उनको निकल जाने देने में अपनी

ओर से कुछ विशेष आपत्ति डालने की अधिक आवश्यकता नहीं रखी गई थी ।

मुहासिरे की लैने शीघ्र २ आत्म-रक्षा के उपयुक्त बना ली गईं, और उनके पीछे सड़कें, आवागमनोपयुक्त सुरक्षित मार्ग, तार, मेगज़ीन, सामरिक अस्पताल, शत्रु के सैनिक-संचालनों पर दृष्टि रखने की चौकियां इत्यादि भी तय्यार कर ली गईं । चूंकि कुछ दिनों तक निकलने के लिये, शत्रु-सेना ने कुछ भी उत्सुकता प्रकट नहीं की, इसलिये मुहासिरे की लैने क्रम २ से आगे बढ़ा ली गईं, और वैसे ही वैसे, उत्तमोत्तम और सुरक्षित स्थानों को अधिकार में कर २ के, जर्मन चमुएं अधिकाधिक सुगठित होती गईं ।

शालां वाली फ्रेञ्च सेना के विषय में समाचारों की अब कुछ उद्विग्नता के साथ प्रतीक्षा की जा रही थी । शालां और मेज़ इन दोनों जगहों की फ्रेञ्च सेनाओं में कुछ गुप्त बात चीत होती थी, इसकी इत्तला जर्मन सदर में थी, पस मोटके को यह दृढ़ विश्वास हो गया, कि दोनों ओर की शत्रु-सेनायें फ्रांस के उत्तरीय सीमा-प्रदेश में कहीं पर मिलने का प्रबंध रच रही हैं ।

मार्शल मैकमाओं के शालां से प्रस्थान करने की ख़बर तार द्वारा ता० २५ अगस्त को जर्मन सदर में

पहुंची, परन्तु वहां इस बात का पता न चला, कि मार्शल किस तरफ़ अपनी सेना ले गये। मेज़ में भी कुछ गोल-माल होता देख पड़ा, अर्थात् दुर्गस्थ चमुएं उत्तर-पूर्व की ओर दिन भर जाती हुई देख पड़ीं। तिआनविल की ओर शायद शत्रु-सेना निकलने का प्रयत्न करे, ऐसी संभावित घटना के निवारणार्थ १-ले और ९-वें कोर उत्तर तरफ़ भेज दिये गये, तथा १०-वें कोर की कुछ बटालियनें नदी के दहने तट पर, रिज़र्व डिवीज़न के सहायतार्थ उतार दी गईं।

ब्राई और तिआनविल वाले अधिकतर उत्तरी मार्गों से होकर अपने पश्चिम तरफ़ के मार्च को पुनरपि प्रारंभ करने की स्वेच्छा मार्शल बाज़ेन ने ता० १९ अगस्त को ही महाराज पर प्रकट कर दी थी; और उनको यह विश्वास था, कि शालां वाली फ्रेञ्च सेना वर्डन की ओर बढ़कर उनसे संबंध करने का प्रयत्न करेगी। अतएव शत्रु-सेना का म्यज़ की तरफ़ का बढ़ना यथा-संभव न्यून करने के उद्देश्य से उन्होंने अपनी सेना के एक बहुत बड़े अंश को नदी के दहने तट पर आकर्षित किया। यदि आप के इस प्रस्तावित निष्करण-प्रयास में सफलता हुई होती, तो तिआनविल की ओर फ्रेञ्च सेना के बढ़ाने में आप को अवश्य ही सुगमता हो गई होती।

अगस्त २६ का निष्फल-प्रयास

उपर्युक्त उद्देश से फ्रेञ्च सेना का एक बहुत बड़ा अंश ता० २६ अगस्त के दोपहर को सेण्ट जूलियन नामक दुर्ग के पूर्व में एकत्रित हुआ। जर्मनों की अगली चौकियों के योद्धा मार कर भगा दिये गये, किन्तु कुछ अधिक आगे बढ़ कर ओजस्विता पूर्वक मुहासिरे की लैन तोड़ कर निकल जाने का उद्योग करते फ्रेञ्च सेना से नहीं बन पड़ा, और अंत में, आगे बढ़ी हुई सब फ्रेञ्च चमुओं को लौट कर अपने २ मोर्चों में चले आने के लिये आज्ञा हो गई। ऐसा मालूम होता है, कि तत्पश्चात् कोर कमाण्डरों की जो एक सभा हुई थी, उसमें अम्यूनिशन की कमी तथा दुर्गों और फ्रेञ्च मोर्चों की दशा सापेक्षिक अरक्षित होने से सैन्य-संचालन करना अनुचित समझा गया था। उनका उपर्युक्त रण-कार्य्य सेना-संचालन-व्याज किम्वा परेड की क़वायद कहा जा सकता है; और यह भी मालूम होता है, कि मार्शल बाज़ेन के ऊपर सामरिक लाभों की अपेक्षा तत्कालीन राजनैतिक अवयवों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता था। मेज़स्थ फ्रेञ्च सेना का तब भी इतना प्रभाव शत्रु-सेना और उसके कार्य्यों पर पड़ सकना संभव था, जिसमें संधि की शर्तें अधिकतर नम्र कराई जा सकतीं, अथवा पेरिस की ओर बढ़ती हुई जर्मन सेना के आवागमन के लंबे मार्ग पर वह बहुत बड़ा धक्का पहुंचा सकती थी।

मार्शल मैकमाआं के सोडान की ओर मार्च करने का सच्चा समाचार उसी दिन रात को जर्मन सदर में पहुंचा; पस इनकी सेना का म्यज़ पार करना रोकने के लिये मेज़ की मुहासिरे वाली सेना से दो कोरों को अलग कर लेने की भी आवश्यकता पड़ गई, अर्थात् २-रे और ३-रे कोर वहां से हटा कर पश्चिम की ओर भेज दिये गये, इससे मुहासिरे वाली सेना संख्या और शक्ति दोनों में कुछ और भी न्यून पड़ गई। किन्तु नव-निर्म्मीत १३-वें कोर के उस समय वहां से थोड़ी ही दूरी पर पहुंच आने की भी ख़बर वहां हो गई थी। मैकमाआं के मार्च का समाचार बाद को बाज़ेन के पास भी पहुंचा गया था, और इस बात की सूचना भी जर्मनों को मिल चुकी थी, पस 'बाज़ेन शीघ्र ही किसी ओर से दबा कर निकलने का अवश्य ही उद्योग करेंगे' इसका भी निश्चय जर्मन सदर में था। पश्चिम तरफ़ से निकल जाना तो प्रायः असंभव था, पस केवल दक्षिण-पूर्व की ओर की लैन भेद कर बेलफोर्ट की ओर का, किम्वा उत्तर दिशा की ओर का दबा कर तिआनविल की ओर निकलने का उनका प्रयत्न करना किञ्चित् अधिक संभावित सूचित हुआ। उत्तर की ओर निकल कर मार्च करने में बहुत भय और अनेक बाधायें थीं, किन्तु उधर ही से जाने में मैकमाआं की शालां वाली सेना से संबंध होना निश्चय था, जिधर से

प्रस्थान करने की सूचना भी बाज़ेन को मिल चुकी थीं।

न्वायसेविल का संग्राम

ता० ३१ के प्रातःकाल—अर्थात् जिस दिन शालां दल सीडान में पहुंचा—बाज़ेन का राइन दल मेज़ से प्रस्थान करने के लिये तय्यार हुआ। कोहिरा फटते ही योद्धावों के लंबे २ कालम नदी को पार करते देख पड़े, तथा सैनिकों की अनेक बड़ी २ गरोहें सेण्ट जूलियन दुर्ग के समीप देख पड़ीं।

मेज़ के अधोभाग में मोज़ेल नदी के ऊपर पीपे के कई एक पुल तय्यार कर लिये गये थे, और दोपहर तक में पांच फ्रेञ्च कोरों के नदी उतर जाने, तथा रेटानफे से लेकर उस नदी तक की मुहासिरे की लैन पर आक्रमणार्थ उनके प्रस्तुत हो जाने की पूर्ण २ आशा की गई थी। इस धावे (*Sortie*) को रोकने के लिये वहां पर केवल दो जर्मन डिवीज़न उपस्थित थे; किन्तु प्रभात होने पर प्रिन्स फ्रेडरिक चार्ल्स ने नदी के बांये तट से कुछ थोड़ी सी सहायक सेना दहने तट पर भेज दी। दक्षिण दिशा की मुहासिरे की लैन तो प्रथम ही से निर्बल थी, किन्तु जेनरल स्टीनमेज़ ने उधर से भी यथा-शक्ति कुछ चमुएं उस तट पर भेज दीं। नदी उतारने के लिये ९-वें कोर के दोनों डिवीज़न भी संकर्षित कर रखे गये थे।

सेण्ट बार्ब्रे के प्लेटो वाली सड़क से, तथा मालराय से होकर जाने वाले सीधे मार्ग से निकल कर तिआनविल

के आस-पास में पहुंचने की मार्शल बाज़ेन की इच्छा थी, और उसके साथ ही, यदि आवश्यकता हुई, तो मोज़ेल के बांये तट पर भी आप अपना अधिकार क़ायम रखना चाहते थे। पूर्वोत्तर से निष्करण का धावा करा कर आप जहां तक संभव होता, कुछ काल तक शत्रु को इस संभ्रम में, कि फ्रेञ्च सेनायें उत्तर दिशा की मुहासिरे की लैन तोड़ा चाहती थीं, किम्वा जर्मनों के दक्षिण वाले आवागमन मार्ग पर वे धक्का पहुंचाने का प्रयत्न कर रही थीं, रखना चाहते थे। इसके सिवाय पूर्व दिशा में भी अपने अधिकार की भूमि बढ़ाने की इसलिये आवश्यकता थी, कि जिसमें सीधे मार्ग से उत्तर तरफ़ एडवान्स करने में उन का दहना बाज़ू सुरक्षित रहा आ सकता, क्योंकि सर्विग्नी में लगाये हुए जर्मन तोपख़ानों के गोलों का प्रभाव मैदान में मोज़ेल नदी के तट तक पहुंचता था। चूंकि सेण्ट बार्बे की ओर की भूमि इस योग्य थी, कि फ्रेञ्च चमुएं अपना व्यूह चौड़े फ्रंट में बना सकतीं, तथा उधर की शत्रु की सैनिक शक्ति भी कुछ निर्बल थी, इसलिये उस प्रदेश से होकर जाने में कुछ काल तक सफल-मनोरथ होना अधिक असंभव सूचित न हुआ। अंतिम फल क्या होगा, यह तो निश्चय तौर पर नहीं कहा जा सकता था, पर यह संचालन-कार्य्य भयंकर अवश्यमेव था। नदी के बांये तट की मुहासिरे वाली चमुओं का उत्तर दिशा में बढ़

जाना संभव था, तथा जेनरल मान्तेफेल की शेष शक्तिमती चमुएं भी फ्रेञ्च सेना के दोनों बाजुवों तथा पृष्ठ-भाग में लगा कर कष्ट-दायक हो सकतीं थीं। पुनः, यदि बाज़ेन तिआनविल में पहुंच भी जाते, तो लक्सेमबर्ग और बेल-जियम के सीमा-प्रदेश के सन्निकट से अपनी सेनावों को आगे बढ़ाने में शत्रु सेना के एक बहुत बड़े अंश से उनके बाज़ू पर आक्रमण हो सकता था। यह कार्य्य भय-पूर्ण निस्संदेह था, परन्तु इस भय-मार्ग से जाने के अलावे दूसरा कोई उपाय भी उनके उद्धार का नहीं था, मैकमाआं का शालां दल भी इस समय पूर्व दिशा में एडवान्स कर रहा था, पस ऐसा करने में यह भी संभव था कि शत्रु-सेना का ध्यान शालां दल की ओर खिंच जाता।

मोज़ेल नदी के दहने तट पर फ्रेञ्च चमुवों के संकर्षित किये जाने के प्रबंध की बहुत बड़ी शिकायत की गई है। इस कार्य्य में जितना ही समय बीतता था, उतना ही अधिक लाभ चौड़े फ्रंट में फैली हुई शत्रु-सेना को होता था। फ्रेञ्च सेना के चौथे और छठवें कोर पुलों पर एक दूसरे के सम्मुख से आकर धक्कम-धुक्का कर दिये, और पूर्व-निर्णीत अपने २ स्थानों पर वे एक बजे तक नहीं पहुंच पाये। गार्ड सेना तीन बजे के पूर्व अपने स्थान पर नहीं पहुंची, रिज़र्व तोपख़ाना छः बजे, तथा रिसाला नौ बजे रात को वहां पहुंच पाया। दोपहर हो

जाने पर मार्शल बाज़ेन अपने सरदारों को एकत्रित कर एक सभा किये थे, और वहां पर दो बजे आक्रमण कर देने के लिये उन्होंने ज़बानी आज्ञा की थी। जब तक चौथा कोर फ्रंट से सेण्ट बार्बे प्लेटो पर आक्रमण करता, तब तक में तीसरे कोर को साथ में लेकर मार्शल ले बोयफ (*Le Bœuf*) को सेण्ट बार्बे प्लेटो को लांघ जाने (*Outflank*) की आज्ञा थी। तीसरे कोर के पीछे २ दूसरा कोर जाने वाला था, और आगे बढ़ते समय उसके दहने बाज़ू की रक्षा करने की इसको आज्ञा थी। इधर गार्ड सेना जब तक पीछे रिज़र्व में रही आती, तभी तक में छठवें कोर को सीधे मालराय रोड से आगे निकल जाना था।

तीसरे पहर के प्रारंभ में कोई महत्व के सेना-संचालन नहीं हुए, और जर्मनों ने अपनी कुछ सहायक चमुएं पीछे भी हटा ली थीं, कि इतने में, सायंकाल के चार बज जाने पर, सेण्ट जूलियन दुर्ग के भारी २ तोपों के गंभीर नाद सुन पड़े, जिनसे सार्वत्रिक (*General*) आक्रमण की सब को सूचना हुई।

सेण्ट बार्बे के मोर्चे पर, जिसपर पहले दल की बहुत सी चमुएं स्वाधिकार किये थीं, शीघ्र आक्रमण होने की संभावना पहले ही से प्रकट होती थी। कुछ वादविवाद के पश्चात् सर्विग्नी-फैली की फ्रंट लैन से युद्ध करना निश्चय

किया गया, क्योंकि तोपख़ाने से काम लेने योग्य उधर अच्छा मैदान पड़ गया था। एन्टिली से एक लैण्डवर (*Landwehr*) * ब्रिगेड तलब कर लिया गया, और उस की जगह पर वहां ९-वें कोर की चमुएं भेज दी गईं। सर्विग्नी-फैली लैन के ग्रामों के फ्रंट में दश बैटरी तोप-ख़ानों से गोलों की भयंकर वृष्टि प्रारंभ हो गई।

कुछ बैटरियों की शक्तिमती लैन के संवरण में चौथा फ्रेञ्च कोर सर्विग्नी और फैली ग्रामों पर आक्रमण करने के लिये व्यूह-बद्ध हुआ। प्रथम दोनों दलों के तोपख़ानों से द्वंद्व युद्ध प्रारंभ हुआ, और उसमें जर्मनों की जीत रही, तथा वे बहुत काल तक शत्रु के पैदल योद्धावों को आगे बढ़ने से रोके रहे। कुछ अधिक दक्षिण में तीसरे कोर की बैटरियां वालियर नामक नाले के दोनों तटों पर लगा ली गईं, तथा पैदल जवान अत्यंत ओजस्विता के साथ शत्रु की चमुवों को दबाते न्वायसेविल, माण्टाय और पलैनविल नामक ग्रामों को उनसे छीन लिये, और उन २ जर्मन चौकियों के योद्धावों को मार कर दक्षिण में भगा दिये।

रण-स्थल के इस विभाग में तो यह थोड़ी बहुत सफलता हो रही थी, उधर सर्विग्नी के सम्मुख के अगले मोर्चे पर फ्रेञ्च चौथा कोर और छठवें कोर का एक

* पृष्ठ १२३ देखो।

डिवीज़न, ये दोनों मिल कर बहुत ही दृढ़ता के साथ आक्रमण कर रहे थे, और अन्त में वहां से जर्मन तोपखानों को विवश होकर पीछे हट जाना पड़ा। कुछ काल के लिये उस ग्राम के बाहरी भाग पर फ्रेञ्च सेना का अधिकार भी हो गया, किन्तु प्रत्याक्रमण करके जर्मनों ने फिर वहां पर अपना अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् चारों ओर का युद्ध-कार्य्य बंद सा हो गया; किन्तु नौ बजे रात को एक फ्रेञ्च डिवीज़न बिना फैर किये अंधेरे में आगे बढ़ गया, फिर तो संगीन और तलवारों का भीषण संग्राम प्रारंभ होगया, और अंत में वहां का जर्मन गैरिज़न मार कर भगा दिया गया। परंतु फ्रेञ्च सेना का यह विजय स्थायी न हो सका, क्योंकि आस-पास की जर्मन चमुएं शस्त्रास्त्र धारण कर तुरंत वहां पहुंच गईं, और फ्रेञ्च आगन्तुकों को वहां से मार कर भगा दीं।

ता० ३१ अगस्त के तीन-चार घंटे के युद्ध का फल यह हुआ, कि सर्विग्नी वाला १-ला जर्मन डिवीज़न अधिक शक्तिमती शत्रु-सेना के मुक़ाबिले में तो अवश्य डँटा रहा आया था, किन्तु कुछ अधिक दक्षिण में फ्रेञ्च सेना मुहासिरे की लैन को भेद्य कर आगे निकल गई थी; उधर न्वायसेविल के शत्रु के हाथ में चले जाने से सेण्ट बार्बे के प्लेटो पर वाली जर्मन सेना के घेरे जाने का बहुत बड़ा भय हो गया था।

सितम्बर १ का संग्राम

प्रभात होने पर युद्ध के फिर भी प्रारंभ होने की बहुत ही अधिक संभावना थी, इसलिये ९-वें कोर की शेष सेना भी नदी के दहने तट पर उतार दी गई ; इसका एक डिवीज़न मालराय-फ़ेली की लैन में, और दूसरा डिवीज़न सेण्ट बार्वे के समीप रिज़र्व में रख दिया गया; पुनः ९-वें कोर के बांये बाजू में वाले १-ले कोर की सहायता के लिये एक ब्रिगेड सेना कोर्सिलेस से उत्तर दिशा में भेज दी गई।

बहुत सबेरे ही एक प्रशियन ब्रिगेड सारलूई रोड पर इसलिये वितरित हो कर व्यूह-बद्ध हो गया था, कि जिसमें वह अपने पहले डिवीज़न के बांये बाजू में शत्रु-सेना के अधिक बढ़ने को रोक सके। कोहिरा फटते ही न्वायसेविल पर तोपख़ानों के गोले ओले की भांति गिरने लगे, और अंत में धावा करके जर्मन योद्धा उस ग्राम पर अपना अधिकार कर लिये। इतने में दो अपर फ्रेञ्च ब्रिगेड वहां पहुंच गये, और उनकी सहायता से आक्रामक मार कर भगा दिये गये। अधिक दक्षिण में माण्टाय और फ्लैनविल पर फ्रेञ्च अधिकार हो गया ; और इस कार्य्य में तोपख़ानों ही से मुख्य कर सफलता मिली थी। अब उत्तर और दक्षिण, दोनों दिशाओं से अनेकानेक तोपें रेटानफे के आस पास में लगाई जाने लगीं, और वे इस तरह पर गांस दी गईं, कि उनके मध्य

से होकर दूसरे और तीसरे फ्रेञ्च कोरों को अधिक आगे बढ़ने का साहस न हो सका। सर्विग्नी के दक्षिण में लगी हुई तोपों की बैटरियों से प्रायः दो घंटे तक न्वाय-सेविल पर गोलों की जो घोर वृष्टि हुई, उसका बहुत ही भयानक प्रभाव पड़ा। उस ग्राम में चारों ओर आग लग गई; समीपस्थ शत्रु की सब तोपों का मुंह बंद कर दिया गया, वहां पर अधिक सहायक सेनाओं के लाने का उनका उद्योग सर्वथा नष्ट कर दिया गया। प्रायः ग्यारह बजे उस ग्राम पर जर्मनों का अधिकार हो गया; तथा फ्रेञ्च सेना के दहने विंग का युद्ध अब बिल्कुल शांत पड़ गया।

उत्तर वाले फ्रंट में छठवां कोर दो मर्तबे फैली पर आक्रमण किया, और दोनों बार पराजित करके पीछे हटा दिया गया, उधर चौथा कोर सर्विग्नी के सम्मुख वाले अपने मोर्चे ही में विश्राम करता रह गया। जेनरल कैन-राबर्ट के कोर से कुछ दूर पर, पश्चिम तरफ़ का फ्रेञ्च सेना का एडवांस, थोड़ी देर के लिये सफल होता सा देख पड़ा था, पर अंत में जर्मनों के ९ वें कोर की कुछ चमुवों की सहायता में वहां रिज़र्व वाला डिवीज़न भी पहुंच गया, और फ्रेञ्च सेना का उधर से भी निकलना रोक दिया गया। दोपहर तक में चारों ओर का संग्राम समाप्त हो गया, और सब फ्रेञ्च सेना पुनः मेज़ के विलगस्थ

दुर्गों के हलके के भीतर वापस चली गई।

न्वायसेविल के संग्राम में कुल मिला कर १,२०,००० फ्रेञ्च योद्धा रण-कार्य्य में योग दिये थे, और उनको रोकने के लिये ७०,००० जर्मन जवान युद्ध किये थे, किन्तु वास्तविक अग्नि-वृष्टि के कार्य्य में इनमें से भी प्रायः आधे ही जवान शामिल रहे थे। प्रत्येक दल के प्रायः तीन २ हज़ार योद्धा हताहत हुए थे। सीडान के आत्म-समर्पण के दिन शेष फ्रेञ्च सेना संग्राम-भूमि से हट कर मेज़ के दुर्गों के भीतर घुस गई, और वहां से उनके सकुशल निकल आने की अब बहुत ही कम आशा सूचित होती थी।

समालोचनायें

स्वयं मार्शल बाज़ेन के कथन से यह प्रकट होता है, कि ता० ३१ के संग्राम में जो विलंब और आलस्य आपने प्रदर्शित किया था, उसका उद्देश यह था कि जिसमें, जहां तक संभव हो, अधिक से अधिक शत्रु-सेनायें नदी के दहने तट पर चली आवें; इससे उन्होंने दो लाभ सोचे थे, प्रथम यह कि, मैकमाआं को अपनी चमुवों के चलाने में सुगमता हो जाती, और दूसरे जर्मनों को यह पता, कि फ्रेञ्च सेना नदी के बांये तट पर तिआनविल के आस पास की ओर बढ़ना चाहती थी, न चलता। जब कि मार्शल बाज़ेन के येही उद्देश थे, तब आप उस तरफ़ की मुहासिरे की लैन भेद कर आगे क्यों

बढ़ गये थे, यह समझ में नहीं आता है। चाहे बात जो रही हो, परन्तु यह बात साफ़ ज़ाहिर है, कि फ्रेञ्च योद्धाओं ने रण-कार्य्य उत्साह-रहित मन से किया था; उन लोगों का वास्तविक उद्देश क्या था, इसका भी उन लोगों ने निश्चय तौर पर निर्णय नहीं कर लिया था; ऐसी दशा में यह कब संभव था, कि उनको इस कार्य्य में सफलता होती।

अब तक के सब संग्रामों में जर्मनों को आक्रामक बन कर लड़ना पड़ा था, परंतु अब की बार इन लोगों को आत्म-रक्षकीय युद्ध में अपनी रण-दक्षता की परीक्षा देने का अवसर मिला था। संकर्षित तोपखानों की, तथा संयमता से किये गये नियम-बद्ध फैर करने वालों की उपयोगिता के इस युद्ध में भी अनूठे उदाहरण मिले हैं; अर्थात् जहां कहीं अवसर मिला, फ्रेञ्च बैटरियां दबा दी गईं, उनके पैदल जवानों का आगे बढ़ना सर्वथा रोक दिया गया। न्वायसेविल ग्राम पर जो तोपों से गोले बरसवाये गये थे, उससे प्रकट होता है, कि उचित संख्या की तोपों से आधुनिक रीति से फैर कराने पर कोई भी ग्राम सुरक्षित नहीं रह सकता है। ओटदार खाइयों (*Shelter Trenches*) और मैदानी मोर्चों (*Field Entrenchments*) से प्रकट कुछ कार्य्य नहीं सधा। जर्मन पैदल चमुवों को आत्म-रक्षक बन कर तो रण-कार्य्य करना था, परन्तु वे उमंग में बहुधा आगे बढ़ २ कर प्रत्याक्रमण भी कर

बैठतीं थीं।

मुहासिरे की लैन को तोड़ कर निकल जाने का फ्रेञ्च सेना का पहला उद्योग निष्फल हो गया। उसी के साथ ही यह भी प्रकट हो गया, कि यदि अपनी लैन के भीतर आवागमन का पूरा पूरा प्रबंध जर्मनों ने कर लिया होता, तो उसको तोड़ते समय फ्रेञ्च सेना को मार हटाने के लिये अपने अगल-बगल के मोर्चों से उस ख़ास मौक़े पर वे इतनी सहायता एकत्रित कर सकते थे, कि उससे शत्रु-सेना के फलैङ्कों पर आक्रमण करने से उन पर अनिष्टकारक प्रभाव पड़ जाता। मुहासिरे का हलका (*Ring*) ठोस और तड़कीला नहीं था, किन्तु वह किसी लचीली चेन (*Chain* जंज़ीर) के सदृश था; दबाये जाने पर यदि हलके की कड़ी एक ओर को लचकती थी, तो अगल-बगल की कड़ियां तुरंत उसी ओर को खिंच आती थीं।

अक्तूबर का मुहासिरा

न्वायसेविल से निकलने में नाकामयाब होने पर और निज शालां दल की सीडान वाली गति सुनने पर कुछ २ ऐसा संभव मालूम होता था, कि अब दूसरी बार यदि मेज़ वाली फ्रेञ्च सेना पुनः निकलने का उद्योग करेगी, तो वह दक्षिण दिशा से दबा कर निकलने का प्रयत्न करेगी। स्ट्रासबर्ग वाली फ्रेञ्च सेना अब भी शत्रु के मुक़ाबिले के लिये स्वतंत्र थी; बेलफोर्ट पर तब

तक जर्मनो का कुछ भी प्रभाव नहीं पहुंचा था, जर्मनो के आवागमन-मार्ग को तोड़ कर निकलने में जो लाभ थे, वे उनको प्रकट देख पड़ते थे। इन सब बातों को सोच-विचार कर दक्षिण और दक्षिण-पूर्व वाले मुहासिरे के कोरों में अधिक सहायक चमुएं भेज दी गईं; नवागत १३-वां कोर ऐसे मौक़े पर रख दिया गया, कि वहां से वह सील नदी की घाटी में अधोभाग की ओर जाने वाली सड़कों का संवरण कर सकता।

इधर घिरी हुई फ्रेञ्च सेना इस प्रतीक्षा में शांत धारण किये बैठी रही, कि जर्मन सेना विवश होकर कुछ दिनों में स्वयमेव मुहासिरा हटा लेगी। साधारण गैरिज़न और नगर-निवासियों के लिये रसद वहां पर महीनों के लिये थी, किन्तु समस्त राइन दल के वहां पर घिर जाने से रसद अब केवल चालीस दिन और चल सकती थी। घोड़ों के लिये घास की भी बहुत न्यूनता थी। मुहासिरा करने वाले जर्मनों को भी बेकाम-काज शांत बैठे रहने और मौसम की ख़राबी से बहुत बड़ा कष्ट था; ४०,००० योद्धा बीमार पड़ कर अस्पताल सेवन करते थे। २,००,००० मनुष्यों और ३०,००० घोड़ों के लिये रसद और घास मुहैया करना कुछ सरल काम नहीं था, क्योंकि मेज़ के आस पास का देश अधिकतः नष्ट कर डाला गया था। कुछ काल के लिए वहां के मुहासिरा के हटा लिए जाने की भी

बात चल गई थी; किन्तु सामरिक घटनायें ऐसी शीघ्रता से होती गईं, कि इसके करने की नौबत नहीं आई। मुहासिरे का कार्य्य साहसिक तो अवश्यमेव था, किन्तु बहुत भयावह नहीं कहा जा सकता था।

सितंबर मास के प्रारंभ ही से साधारण मांस के स्थान पर रसद में घोड़ों की मांस मेज़ में दी जाने लगी थी, और ऐसा मालूम होता था, कि अब फ्रेञ्च सेना बहुत दिन तक दुर्ग में अड़ न सकेगी। आस-पास के ग्रामों से यथा-संभव रसद एकत्रित करने के लिये उस महीने में ता० २२ से २७ तक चारों ओर कई एक धावे किये गये। इन क्षुद्र रण-कार्य्यों में फ्रेञ्च योद्धाओं ने बहुत चुस्ती प्रकट की, और इनमें अफ्रीका, मैक्सिको और दूसरे उपनिवेशों का उनका अनुभव बहुत ही लाभकारी सूचित हुआ। जैसे ही जैसे मुहासिरे के दिन अधिकाधिक बढ़ते जाते थे, वैसे ही वैसे फ्रेञ्च सेना के उद्धार की आशा न्यून पड़ती जाती थी। सैनिकों की शक्ति, रण-कार्य्य की योग्यता, और उत्साह इत्यादि का ह्रास होता जाता था; उनके घोड़ों की संख्या भी कम पड़ती जाती थी, उधर दुर्ग के चारों ओर घेरे के शत्रु-निर्मित मोर्चे अधिकाधिक सुदृढ़ होते जाते थे।

सितंबर के अंत तक में स्ट्रासबर्ग और तूल, इन दोनों स्थानों की फ्रेंच सेनाओं ने आत्म-समर्पण कर दिया,

अतएव ऐसा संभव प्रतीत पड़ा, कि फ्रेञ्च सेना, यदि अब निकलने का प्रयास करेगी, तो वह दक्षिण के बदले उत्तर ही दिशा की मुहासिरे की लैन को दबावेगी। तिआनविल का गैरिज़न रसद एकत्रित करने में अधिक कार्य्य-तत्परता प्रकट कर रहा था, अतएव यदि मेज़ वाली सेना निकल कर उधर जाने पाई, तो मार्ग में पड़ाव करने के लिये उसको सुरक्षित और सुखद स्थान मिल सकते थे। इसलिये तिआनविल के तरफ़ की मुहासिरे की लैन में अधिक सेना कर दी गई, तथा स्वयं तिआनविल के सम्मुखस्थ सेना की संख्या अधिक कर दी गई।

अपने दुर्गों पर की तोपों की अग्नि-वृष्टि के संवरण में फ्रेञ्च सेनायें ता० २ अक्तूबर को लेस्सी और लेडान-शैम्प में सुदृढ़ रूप से डँट गईं, और ता० ७ अक्तूबर के निष्करण-प्रयास के लिये तय्यार होने लगीं।

अक्तूबर ७ का निष्करण-प्रयास

नदी के बांये तट पर वाले बेलेव नामक ग्राम की ओर बहुत ही चंडता के साथ आक्रमण प्रारंभ हुआ, और शीघ्र ही मोज़ेल नदी की घाटी भर में युद्धाग्नि प्रज्वलित हो उठी। बाज़ेन शायद थोड़ी सी सेना अपने साथ में लेकर स्वयं एक ओर से दबा कर निकल जाना चाहे थे, परन्तु अंत में उनको ऐसा करने का साहस न पड़ सका। अगली चौकियों पर कुछ काल के लिये फ्रेञ्च सेना का अधिकार भी हो गया था, किन्तु

रात होते होते तक में जर्मन जवान पुनः अपनी सब चौकियों को शत्रु से छीन लिये। इस प्रयास में बाज़ेन ने अपनी रिज़र्वी चमुवों से युद्ध में योग नहीं दिलाया था।

यह भी संभव है, कि अंतिम असली रण-प्रयास के लिये उपर्युक्त रण-प्रयास शत्रु की तटस्थ शक्ति की परीक्षा मात्र के लिये ही किया गया था। किन्तु अब उस वास्तविक अंतिम रण-प्रयास होने की आशा नहीं सूचित होती थी, क्योंकि एक तो इस परीक्षा ही के प्रयास में उनकी हानि-संख्या अधिक हो गई थी, दूसरे उस समय ऋतु भी ख़राब हो गया था।

आत्म-समर्पण

१० अक्तूबर को एक सामरिक सभा में यह स्थिर किया गया, कि आत्म-समर्पण के लिये शत्रु से सम्मान-पूर्ण नियम प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाय, और यदि शत्रु अनुचित और अपमान सूचक नियम करने का भय दिखलावे, तो अंतिम मरने-मारने पर सन्नद्ध होकर निकलने का उद्योग किया जाय। राज-संस्था के विनष्ट हो जाने, तथा देश में किसी संस्थिर गवर्नमेण्ट के न होने से कुछ दिनों तक संधि-विषयक बात-चीत होती रही आई। बाज़ेन की सेना मैदान में पराजित हो चुकी थी, मेज़ के दुर्गों से मुहासिरे की लैन को दबा कर निकल जाने का उसका सब उद्योग निरर्थक सिद्ध हो चुका था, अतएव अब उसको शत्रु के मनमाने

नियम स्वीकार करने पड़े, और यदि वह उन नियमों को स्वीकार कर आत्म-समर्पण नहीं कर देती, तो उस दशा में मेज़ के दुर्गों में पड़े रह कर उसको भूखों मरना पड़ता। ता० २७ अक्तूबर को आत्म-समर्पण के व्यवस्था-पत्र पर उभय दलों के कमाण्डरों के हस्ताक्षर हुए, और उसके अनुसार समस्त राइन दल, जिसमें सब मिला कर १,७३,००० जवान थे, निज शस्त्रास्त्र रख कर सामरिक बन्दी बने; मेज़ के दुर्ग, उन में की कुल सामरिक सामग्रियां और रसद विजेता के हाथ लगीं।

समालोचनायें

१,१०,००० योद्धाओं की सेना का एक सुदृढ़ दुर्ग के भीतर किसी ऐसी सेना द्वारा घेर लिया जाना, जो कदाचित् संख्या और शक्ति दोनों में उससे अधिक नहीं थी, ऐसी विलक्षण बात है, जिसका कोई कारण विशेष अवश्य रहा होगा। किसी केन्द्रस्थ स्थान से—मेज़ के दुर्गों से—जहां पर उनके १,३०,००० योद्धा युद्ध के लिये सब समय प्रस्तुत हो सकते थे, मुहासिरे की ३३ मील घेरे की लैन को किसी एक स्थान पर तोड़ने के लिये, उस स्थान पर संख्या और शक्ति दोनों में जर्मनों की अपेक्षा फ्रेञ्च अधिक सेना एकत्रित कर सकते थे। अब तक ऐसा समझा जाता था, कि किसी ऐसे सुदृढ़ शिबिर के मुहासिरे के लिये, जिसके संरक्षार्थ चारों ओर स्थायी मोर्चे और दुर्ग बने हों, तथा जिसके

भीतर कोई शक्तिमती सेना डँटी हो, शिबिरस्थ सेना से कम से कम तीन गुनी सेना की आवश्यकता होती है। समर की आधुनिक अवस्था में अब इस सिद्धान्त में परिवर्तन करने की आवश्यकता हो गई है; इस में कई एक कारण आ पड़े हैं, प्रथम और प्रधान कारण तो वर्तमान युग के भयंकर शस्त्रास्त्र यानी रैफल और तोपें हैं; दूसरा कारण आज-कल की अद्भुत व्यूह-रचना है; तीसरा कारण तार और रेल का आविष्कार है, इनके द्वारा मुहासिरे के भिन्न २ भागों में शत्रु के आगमन की सूचना तुरंत पहुंचाई जा सकती है, और उन २ विभागों से रेल द्वारा आक्रमण के स्थान पर शीघ्रता और सरलता के साथ सैनिक सहायता भी पहुंच जाती है। यदि आस-पास का प्रदेश मुहासिरे के उपयुक्त हुआ, तो अपनी सेना से दूनादून सेना का किसी स्थान पर घेर रखना संभव हो सकता है, बशर्ते कि घेरे के वृत्त भर में मोर्चों के खोदने और बनाने के लिये क़ाफ़ी वक्त मिल जाये। पुनः अब ऐसा भी मालूम होता है, कि दुर्गों से किसी बड़ी मैदानी सेना की रक्षा नहीं हो सकती है; अस्थायी, और स्थाई, इन दोनों तरह के मोर्चों से किसी मैदानी सेना को आक्रमणार्थ प्रस्तुत होने के लिये कुछ समय मिल सकना संभव हो सकता है। परन्तु मैदानी सेना का मुख्य कार्य्य इधर-उधर चल-फिर कर युद्ध करने

का है, दुर्ग में घिर जाने पर उसकी संचालन-कारिता नष्ट हो जाती है। निर्बल सेना के लिये कोई बड़ा और सुरक्षित कैम्प चुम्बक के सदृश आकर्षक होता है, किन्तु ऐसे कैम्प के मोर्चों के भीतर अधिक काल तक घिरे रहे आने में वही कैम्प उस सेना के नाश का कारण भी बन सकता है, मैदानी सेना के दुर्ग व्यूह-रचना में सेना-संचालन की धुरी बनाया जा सकता है, अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर मैदानी सेना किसी दुर्ग को अपना क्षण-कालीन मूल-स्थान (*Base*) बना सकती है, और रण-रचना के लिये वहीं से होकर अपनी चमुएं इधर से उधर और उधर से इधर भेज सकती है। दुर्ग ही से ऐसी सेनाओं के लिये जहां-तहां रसद इत्यादि सुरक्षित भेजी जा सकती हैं; परन्तु विचलित सेनाओं के लिये दुर्ग सर्वथा और सर्वदा संरक्षक नहीं बन सकते हैं।

यदि किसी सेना को, कुछ काल के लिये, विवश होकर किसी मोर्चे-बंद कैम्प में हट ही आना पड़े, तो अपने सुरक्षित और दृढ़ स्थान से इस तरह का लाभ उठाने का शायद इसका मुख्य उद्देश होना चाहिये, कि जिसमें उसका वहां पर सर्वथा घिर जाना असंभव बना रहा आवे, अर्थात् मुहासिरे के प्रारंभ में उसको इधर-उधर आक्रामकीय संग्राम करते रहना चाहिये, किसी तरफ़ आक्रमण करके वहां पर उसको उस समय तक डँटे रहना

चाहिये, जब तक चारों ओर से मुहासिरे की सेना इधर खिंच न आवे, और तब भीतरी लैन में घूम कर मुहासिरे के दूसरे भाग में आक्रमण कर देना चाहिये। ऐसा करते रहने से यदि शत्रु के पास कोई बहुत ही बड़ी सेना नहीं हुई, तो किसी सेना का मुहासिरा कर लेना साधारण सेना से बहुत ही कठिन हो जाता है।

यहां तक तो बड़ी २ सेनाओं की बात हुई; किन्तु यदि किसी मोर्चेदार कैम्प के भीतर वहां के साधारण गैरिज़न के सिवाय एक या दो सैनिक कोरों की कुछ कार्य्य-तत्पर (*Active*) और चंचल (*Mobile*) चमुएं पहुंच जांय, तो कैम्प के घेरे का विस्तार बढ़ जाने से उसके मुहासिरे के लिये बहुत ही बड़ी सेना की आवश्यकता पड़ जाती है। इन सिद्धान्तों के अनुसार जब बाज़ेन अपनी बड़ी सेना को लेकर मेज़ में लौट आये, तब उनको अधो-लिखित दो में से एक रीति के अनुसार रण-कार्य्य करना उचित था; (१) मेज़ में कुछ विशेष शक्ति का चलायमान गैरिज़न छोड़ और मुहासिरे की लैन को कहीं पर भेद्य कर या तो खुले मैदान में निकल जाना चाहिये था; (२) अथवा ता० १८ अगस्त के पश्चात् ऐसी ओजस्विता के साथ रण-कार्य्य कराते रहना चाहिये था, जिसमें उनका वहां पर पूर्णतः घेर लिया जाना असंभव बना रहा आता। बाज़ेन ने मुहासिरे के एक्याम भर में केवल न्वायसेविल

ही के संग्राम मात्र में किञ्चित् ओजस्विता प्रकट की थी, लेकिन उसमें जो कुछ सफलता हुई भी, तो उसका आपने कुछ सदुपयोग नहीं किया, और न उन्होंने अपनी अधिक संख्या ही से कुछ विशेष लाभ उठा पाया। यदि फ्रेञ्च स्टाफ़ कुछ अधिक योग्य हुआ होता, तो ता० ३१ अगस्त के प्रातःकाल ही, कुछ दिन चढ़ते २, चमुवों का संकर्षण हो गया होता, उस दशा में जर्मन घेरे के भेदने के लिये उनको प्रायः दिन भर का अवसर मिल जाता। उस संग्राम को, जिसमें समय, तत्परता और शीघ्रता के साथ सेना-संचालन कराना, ये ही बातें परमावश्यक थीं, तीसरे पहर के चार बज जाने पर प्रारंभ करना, और तब तक का सब समय तय्यारी ही में व्यर्थ कर देना, साफ़ २ सूचित करता है, कि बाज़ेन और उनके स्टाफ़ अफ़सर-गण अपना अंतिम उद्देश ही नहीं निर्णीत कर लिये थे। बाज़ेन का तिआनविल की ओर का प्रस्थान करना उचित था अथवा अनुचित, इसमें मत-भेद है। यदि वे वहां पहुंच भी गये होते, तो मोज़ेल नदी के बांये तट वाली शत्रु-सेना अवश्य ही वहां तक उनका पीछा करती, और उनको उस स्थान पर, जो लक्सेमबर्ग के उदासीन राज्य के सीमा-प्रांत के अत्यंत ही समीप था, युद्ध देने के लिये विवश हो जाना पड़ता।

निष्करण-प्रयास के लिये सब से अच्छी दिशा दक्षिण-

पूर्व की थी। स्वयं जर्मन सैनिक आज्ञाओं से विदित होता है, कि उस दिशा से निकलने में—कम से कम मुहासिरे के प्रारंभ में—फ्रेञ्च सेना रोकी नहीं जा सकती थी। यदि रेल-गाड़ियां वहां पर छोड़ भी दी गईं होतीं, तो भी फ्रेञ्च सेना शत्रु के मुख्य २ आवागमन मार्गों को काटती निकल जा सकती थी, तथा रसद और अपर सामरिक सामग्रियों के प्राप्त होने में भी उसको विशेष कठिनता झेलनी नहीं पड़ती। ऐसा करते समय फ्रेञ्च सेना को शत्रु के सैनिक संचालनों में भी अनेक विघ्न पैदा करने का अवसर मिल सकता था। इस फ्रेञ्च सेना की अंतिम गति क्या हुई होती, इसका मालूम करना कठिन है; बहुत काल तक उसके स्वतंत्र रही आने की तो संभावना नहीं थी, परन्तु मान लिया, कि वह पकड़ भी ली गई होती, तो मेज़ के दुर्ग तो शत्रु के हाथ में जाने से बँच गये होते।

मार्शल बाज़ेन के ऊपर जो अराजकता (*Treason*) का दोष लगाया गया था, वह यद्यपि सिद्ध नहीं हो सका, तथापि यह बात कभी अस्वीकार नहीं की जा सकती है, कि ग्रावलाट संग्राम के बाद जो सामरिक समाचार (*Despatches*) आपने मार्शल मैकमाआं के पास भेजे थे, वे धोखा-दायक अवश्य थे; उनसे ऐसे अर्थ निस्संदेह निकलते थे, जिनके अनुसार रण-कार्य्य करने की बाज़ेन की इच्छा कदापि नहीं थी। अपनी सेना

को नदी के इस और उस पार बारंबार ले आना, और ले जाना, यह जानते हुए भी, कि मैकमाआं की सेना उन्हीं के उद्धार के लिये आ रही है, परन्तु इस समाचार को गुप्त कर रखना ; सामरिक सामग्रियों की न्यूनता के विषय के उनके असत्य बयान—इत्यादि बातें ऐसी हैं, जिनसे स्वतः सिद्ध है, कि बाज़ेन निश्चय तौर पर कभी भी मेज़ के दुर्गों को छोड़ कर निकलने की इच्छा नहीं रखते थे। उनकी ऐसी इच्छा का क्या कारण था, कहा नहीं जा सकता है—चाहे किसी जातीय अहंकार को लिये हुए कोई राजनैतिक कार्य्य इसमें सधता रहा हो, अथवा जो सामरिक प्रख्याति उन्होंने पहले प्राप्त कर ली थी, मेज़ से निकलने पर पराजित हो जाने में उसके नष्ट होने की संभावना थी, इस स्वाभाविक भय से उनकी वह इच्छा हुई हो, परंतु इतने बड़े और प्रसिद्ध फ्रेञ्च मार्शल के ऊपर यह संदेह करना, कि उसने लोभ-वश होकर अपने देश के प्रति नमकहरामी की थी, अनुचित और अनावश्यक है। वह मनुष्य, जिसको अपने बल और बुद्धि में विश्वास है, जिसकी इन्द्रियां आकस्मिक घटनाओं से शिथिल पड़ गई हैं, उपस्थित बाधाओं के रोकने में जो असमर्थ हो गया है, तथा जो इस बात को अपने मन में भी स्वीकार करने के लिये उद्यत नहीं है कि वह उस दशा को पलट देने के लिये असमर्थ नहीं

है, संभव है, कि इसी तरह पर अनुत्साहित हृदय से कार्य्य करता उस समय तक अवसर टालता जाता है, जब तक उसके सौभाग्य के दिन पुनरपि न पलटें। चाहे असली कारण जो रहे हों, परंतु बाज़ेन की इस संस्थिरता और आलस्य का परिणाम बहुत ही भयानक हुआ। फलैङ्क मार्च के लिये मार्शल मैकमाओं कदापि नहीं प्रस्थान किये होते, यदि उनको इस बात का पूरा २ विश्वास न रहा होता, कि बाज़ेन अपनी सेना लेकर उधर से उनके सहकारी बनेगें। परंतु इन दोनों फ्रेञ्च दलों में म्यज़ नदी के अधो भाग में यदि कहीं पर मिलान हो भी गया होता, तो भी इनकी दशा संकट-रहित नहीं हो सकती थी, क्योंकि प्रथम तो वह प्रदेश ही आत्म-रक्षा के योग्य नहीं था, दूसरे उदासीन बेलजियम राज्य की सीमा भी वहां से बहुत समीप पड़ती थी।

अध्याय १३

पेरिस

सामाजिक संस्था का पतन—पेरिस के संरक्षक मोर्चे—जर्मनो की भावी रण-युक्ति—जेनरल विनय का पीछे हटना—पेरिस पर चढ़ाई—शेटिलान का युद्ध—पेरिस का मुहासिरा—पेरिस के अधः-पातन की युक्ति—समालोचनायें—तूल का अधः पातन—स्ट्रासबर्ग का मुहासिरा—समालोचनायें।

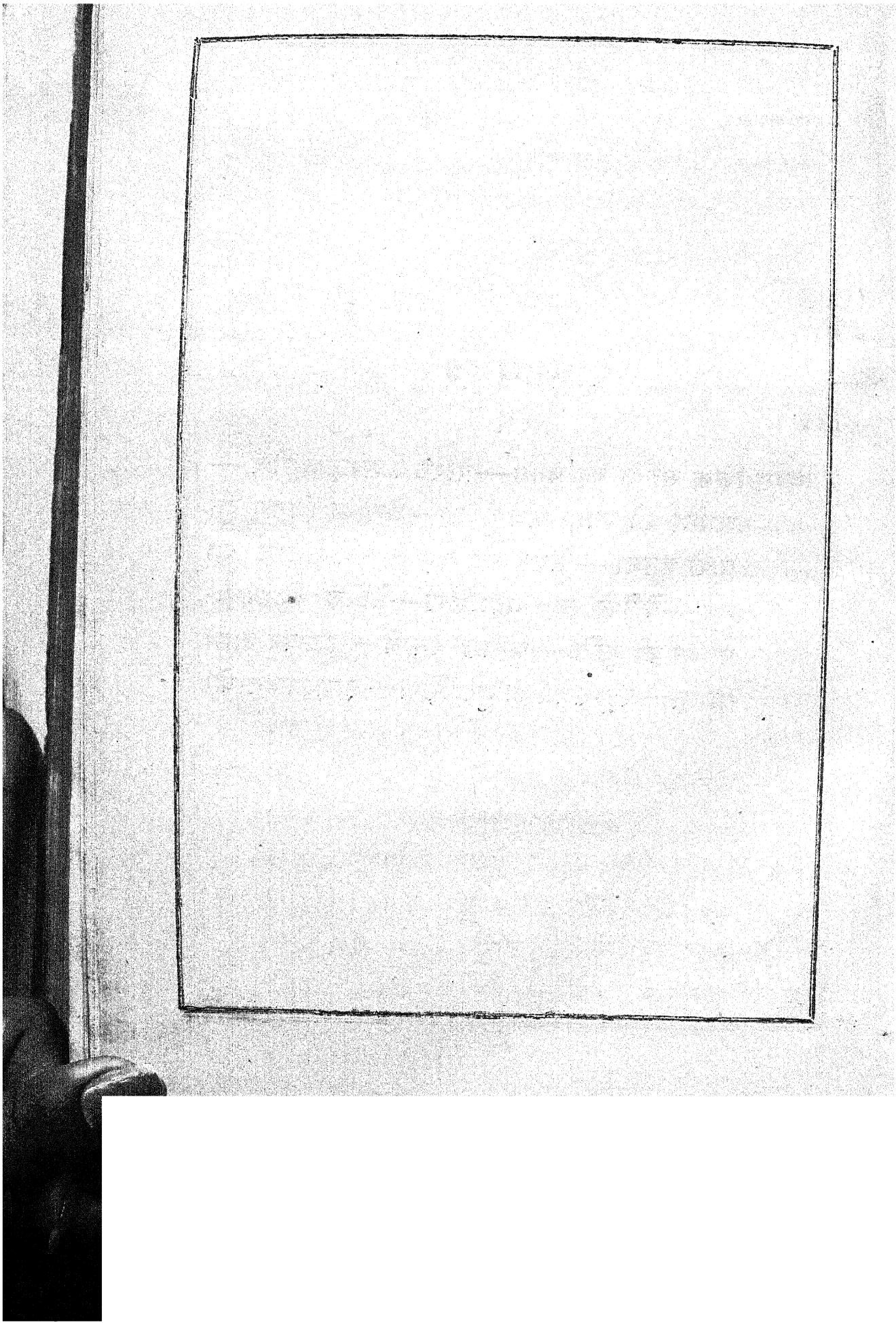

अध्याय १३

पेरिस

साम्राजिक संस्था का पतन

सीडान की संहार-कारणी घटना का समाचार ज्योंही पेरिस में पहुंचा, कि वहां के समग्र निवासी महाराज नैपोलियन के रण-प्रबंध से सर्वथा असंतुष्ठ हो गये; और उसका परिणाम यह हुआ, कि बिना किञ्चित् रक्त-पात हुए ही वहां की प्राचीन साम्राजिक संस्था (*Empire*) ता० ४ सितंबर को विनष्ट हो गई, और देश की संरक्षा के लिये जेनरल ट्रोशू के नेतृत्व में एक स्थायी गवर्नमेण्ट निर्म्माण की गई। 'प्राणावशेष तक युद्ध' यही इस गवर्नमेण्ट ने अपना सिद्धांत निश्चित किया, सब की सम्मति से संधि-प्राप्त्यर्थ फ्रांस की भूमि से 'सूची अग्र न दातव्यम्' का उद्देश्य रखा गया।

पेरिस के संरक्षक मोर्चे

राइन दल मेज़ में घिर गया था, शालां दल सीडान में बंदी हो चुका था, अतएव अब फ्रांस देश की संरक्षा केवल पेरिस की शक्ति पर निर्भर थी। दो ओर गहरी नदियों से, और शेष दिशाओं में पहाड़ियों की दुहरी दीवारों से आवृत होने से राजधानी पेरिस की प्राकृतिक आत्म-संरक्षक शक्ति बहुत

बड़ी आंकी जाती थी। भातरी शहर-पनाह की सुदृढ़ दीवारों के अलावे नगर के चारों ओर सोलह बहुत ही दृढ़ दुर्ग (बुर्ज) बने हुए थे, किन्तु पहला दोष तो इनमें यह था, कि ये पहाड़ियों के भीतरी भाग में बने थे, और दूसरे इनकी स्थिति बस्ती के इतने समीप में थी, कि आधुनिक रीति के शस्त्रास्त्रों के लिये वे उपयुक्त संरक्षक नहीं हो सकते थे। बाहरी भाग की पहाड़ियों के उच्च २ शिखरों पर अनेक प्रकार के मोर्चे बनवाने का विचार किया गया था, किन्तु उनके बनाने के लिये समय, और उनपर अधिकार रखने के लिये सावकाश न रह जाने से, ऐसे प्रभावकारक स्थान शत्रु के हाथ में जाने के लिये स्वयमेव परित्याग कर दिये गये।

बुर्जों पर तोपें इत्यादि चढ़ा ली गईं, और बड़े २ मार्के की समुद्री तोपों से वे अधिकतर दृढ़ बना लिये गये।

तेरहवें और नव-निर्मीत चौदहवें कोरों, जहाज़ी सेनाओं, समुद्र-तट-रक्षकों और पुलिस इत्यादिकों के मिलाने पर पेरिस के गैरिज़न में ८०,००० जवान थे; इनके अलावे दूसरी लैन के लिये १,१५,००० जवान गार्ड मोबाइल्ज़ (*Garde Mobiles*)* सेना के थे, तथा एक

* अध्याय २ पृष्ठ ७५ पंक्ति १७ देखो।

सौ तीस बटालियने नेशनल गार्ड्स (*National guards*) अर्थात् राष्ट्र-संरक्षक नाम की सेना में थीं। सोन नदी में कुछ तैरती बैटरियां और थोड़े से गन-बोट्स (*Gun-boats*) अर्थात् तोप-नौकायें थीं। भावी युद्ध में कार्य्य देने और रसद इत्यादि पहुंचाने के लिये कुछ ऐसी सुदृढ़ रेल-गाड़ियां भी उपस्थित थीं, जिनपर तोपों के गोलों का कम प्रभाव पहुंच सकता था।

मेज़स्थ राइन दल के लिये रसद इत्यादि का मूल-स्थान पेरिस ही था; परन्तु ज्योंही स्वयं इसी नगर में शत्रु के आ जाने की आशंका हुई, फिर तो अपने ही लिये बहुत सी रसद और सामरिक सामग्रियां एकत्रित की जाने लगीं। रसद की अपर सामग्रियों के सिवाय यहां पर ३,००० बैल, ६,००० शूकर और १,८०,००० भेंड-बकरियां उपस्थित कर ली गईं। इन सब तय्यारियों से ऐसा विश्वास होता था, कि बीस लक्ष जन-संख्या की यह राजधानी कई सप्ताह तक मुहासिरा बहन कर सकेगी।

जर्मनी के लिये वहां तक पहुंचने में अभी अनेक विघ्न थे; मेज़, स्ट्रासबर्ग, और अनेक ऐसे २ क्षुद्र दुर्गों के मुहासिरे में, जिनसे उनके लंबे आवागमन के मार्गों पर आघात पहुंच सकते थे, उसके तीनों दलों के बहुत बड़े २ अंश नियुक्त थे। बारबर्दारी तथा प्रायः २,००,०००

सामरिक बंदियों के पहरे के लिये बहुत से योद्धाओं की आवश्यकता थी ; उधर पिछले संग्रामों में जो इनकी सैनिक क्षति—विशेषतः अफ़सरों की—हुई थी, वह भी सरलता पूर्वक पूरी नहीं की जा सकती थी। सेनायें ज्यों २ आगे बढ़ाई जातीं थीं, त्यों ही त्यों अधिकाधिक सैनिकों की आवश्यकता रेल-पथों की संरक्षा और रसद इत्यादि के पहुंचाने के लिये होती जाती थी। इस तरह पर चारों ओर वितरित कर दिये जाने पर, सीडान के पश्चात् युद्धार्थ केवल १,५०,००० योद्धाओं से अधिक मैदानी रण-भूमियों में काम देने के लिये उपस्थित नहीं किये जा सकते थे। अब पेरिस ही दोनों दलों का निर्दिष्ट स्थान सूचित होता था ; पस जिस दिन शालां दल ने सीडान में आत्म-समर्पण किया, पश्चिमाभिमुख एडवान्स के लिये उसी दिन सब चमुएं यथोचित रीति पर वितरित कर दी गईं।

जर्मनों की भावी रण-युक्ति

सीडान के पश्चात् जिस युक्ति के अनुसार रण-रचना करना उचित बोध हुआ, उसके निर्णय करने में जर्मन सेनाधिपों को बहुत विलंब नहीं लगा। उन लोगों ने तुरंत मालूम कर लिया, कि फ्रांस के सदृश अधिकार-संकर्षित देश के दमनार्थ राजधानी ही का तोड़ना (*Reduction*) परमावश्यक था, उसके

टूटते ही स्वेच्छित रीति पर संधि लिखवा लेने की उनको पूरी २ आशा थी।

अब सीडान के पास के संकुचित स्थानों से चमुवों को निकाल २ कर उनको इस तरह पर प्रस्सारित करने की आवश्यकता देख पड़ी, कि जिसमें दोनों जर्मन दलों की चमुएं चौड़े फ्रंट में पेरिस की ओर मार्ने नदी के उत्तर और दक्षिण दोनों दिशावों से एडवान्स कर सकें। ता० २५ अगस्त को मैकमाआं का बाज़ेन के उद्धारार्थ पूर्व तरफ़ लौटने का समाचार निश्चय तौर पर मालूम हो जाने पर जर्मन चमुवों को भी अपने मार्च की दिशा परिवर्तित कर देनी पड़ी थी। अब मैकमाआं के आत्म-समर्पण के पश्चात् प्रत्येक जर्मन कोर को यह आज्ञा की गई, कि वह, यथा-संभव शीघ्र अपनी बारबर्दारी इत्यादि ठीक करके अपने पहले स्थान पर पहुंच जाय, और वहां से अपना मार्च पूर्ववत् प्रारंभ कर दे।

म्यज़ दल का पश्चिमाभिमुख का एडवान्स उस समय तक के लिये बंद कर दिया गया था, जब तक तीसरा दल दो लंबी २ मंज़िलें तैं करके मार्ने नदी के तट पर नहीं पहुंच जाता, इस कार्य्य में इसके दहने बाज़ू की चमुवों को रेथेल और रीम्ज़ से होते हुए मार्च करना पड़ा था। फ्रंट साफ़ होते ही म्यज़ दल लेआन की ओर

बढ़ चला ; इधर तीसरा दल भी मार्ने नदी के दक्षिण में इसलिए छोटी २ मंज़िलें करता आगे बढ़ चला, कि उसके आगे-पीछे के पड़े सब कोर एक लैन में हो जांय। जर्मनों को इस समय किसी बड़ी शत्रु-सेना द्वारा रोके जाने का संदेह नहीं था, तथापि अपने २ डिवीज़नों को ख़ूब आगे बढ़ाये सब कोरों को शत्रु का पता लेते चलने की आज्ञा थी, और इस कार्य्य में उनकी सहायता के लिये अश्वारोही तोपख़ाने और छकड़ों में सवार करा कर पैदल चमुएं भी लगा दी गईं थीं।

जेनरल विनय का पीछे हट जाना

अब नियत फ्रेञ्च चमुवों में जेनरल विनय वाला केवल १३-वां कोर मैदान में स्वतंत्र रह गया था। यह कोर शीघ्रतापूर्वक पहले माज़्यार की ओर भेजा गया था, और सीडान वाले संग्राम के दिन इसका केवल एक ब्रिगेड रण-कार्य्य में योग दे सका था। उस संग्राम का परिणाम सुनने पर जेनरल विनय ने अपनी सब चमुवों को एकत्र कर उन्हें संगठित कर लिया, पुनरपि सब को समेटे रात्रि में रेथेल की ओर मार्च कर दिया। जेनरल विनय को यह आशा थी, कि रेथेल पर उनका एक डिवीज़न स्वाधिकार किये होगा। ता० २ सितंबर के बड़े प्रभात ही फ्रेञ्च चमुवों का संबंध शत्रु के ५-वें और ६-वें रिसाला डिवीज़नों के गुप्तचरों (*Scouts*)

से हो गया था, तथापि जब रेथेल पहुंचने में उनको केवल सात मील शेष रह गये, तब विनय को इस बात का समाचार मिला, कि रेथेल में उनका डिवीज़न नहीं है, किन्तु वहां शत्रु-सेना का अधिकार हो गया है। फिर तो आप पश्चिम तरफ़ को लौट पड़े, और रात्रि में लेआन की ओर निकल गये; पुनः वहां से अपने कोर को लिये हुए अंत में आप निर्बाध पेरिस पहुंच गये।

इधर रेथेल में उपस्थित जर्मन जेनरल ने जब सुना, कि शत्रु-सेना वहां आ रही है, तब वह वहां से उत्तर की ओर हट गया। ता० ३ सितंबर को एक दिशा से फ्रेञ्च, और भिन्न दिशा से जर्मन डिवीज़न एक दूसरे से केवल चार मील के अंतर से निकल गये थे।

ऐसी शीघ्रता के साथ मार्च करते जेनरल विनय शत्रु के गुप्तचरों से अदृष्ट और निर्बाध केवल इस कारण से निकल जाने पाये, कि जर्मन रिसाला डिवीज़नों और ६-वें कोर के पैदलों को तुरंत रीम्ज़ बढ़ आने की आज्ञा दे दी गई थी। जर्मन सदर में यह (असत्य) समाचार सुन पड़ा था, कि रीम्ज़ में कोई शत्रु-सेना जमा हो रही है।

पेरिस पर चढ़ाई

ता० १५ सितंबर को मार्ने नदी के उत्तरस्थ म्यज़ दल के तीन कोर तथा उसी नदी के

दक्षिणस्थ तीसरे दल के तीन कोर पेरिस से तीस मील पूर्व में विलर्स-काटेरेट से रोज़ाय तक की लैन में पहुंच गये। प्रत्येक दल के आगे २ दो दो रिसाला डिवीज़न चलते थे; उधर तीसरे दल के पृष्ठ-भाग में वर्टेमबर्ग वाला डिवीज़न और वे दोनों सैनिक कोर चले आरहे थे, जो सीडान के बंदियों को मेज़ पहुंचा कर लौटे थे।

मेाज़ (*Meaux*) में उपस्थित जर्मन सदर से म्यज़ दल के लिये यह आज्ञा निकली, कि वह उच्चस्थ (*Upper*) पेरिस में मार्ने नदी से लेकर अधःस्थ पेरिस की सीन नदी तक चौड़ी चापाकार लैन में उत्तर दिशा से मुहासिरा करे। तीसरे दल के लिये यह आज्ञा थी, कि जैसे २ उसकी पृष्ठ-भागस्थ चमुएं जुटती जांय, तैसेही तैसे वह अपने बांये बाज़ू की कुछ चमुवों को सीन नदी के पार उतारने का प्रबंध करे, म्यज़ दल से संबंध बनाने के लिये अपने रिसाले डिवीज़न को बढ़ा कर पेरिस के पश्चिम में ले जावै; और यदि संभव हो सके, तो उस से ल्वायर प्रदेश की ओर गिर्दावरी भी करावै। राजधानी के उद्धारार्थ यदि दक्षिणी प्रदेशों से कोई शत्रु-सेना आती मालूम पड़े, तो मुहासिरे में इधर-उधर थोड़ी सी निर्बल चमुवों को व्याजार्थ रख कर

तीसरे दल की शेष चमुवों को एक या दो मंज़िल आगे बढ़कर ऐसी शत्रु-सेना को रोकने की भी आज्ञा थी।

उन चमुवों का, जिन्हें पेरिस नगर के उत्तरी भाग का मुहासिरा सिपुर्द था, उधर मार्च करते समय पुलों की मरम्मत के सिवाय और कुछ रुकावटें नहीं पड़ीं, अतएव म्यज़ दल ने निज उत्तरी विभाग के मुहासिरे का कार्य्य शीघ्र निर्विघ्न समाप्त कर लिया।

ता० १८ सितंबर को तीसरे दल का ५-वां कोर सीन नदी को विलेनेव-सेण्ट जार्जेज़ के समीप जाकर पार किया, और उसके पश्चात् ६-वें कोर की कुछ चमुएं वहीं पर उतर कर पार कीं; उधर, कुछ ही और दक्षिण में, २-रा बवेरियन कोर उनके बाज़ू की संरक्षा में उपस्थित था। पेरिस के समीपतमस्थ पहुंचे कालम के एडवान्स गार्ड की कुछ चमुवों का मुक़ाबिला चौदहवें फ्रेञ्च कोर की कुछ विलगस्थ सेना से हो गया, और उनके द्वारा वह फ्रेञ्च सेना पराजित करके शैटिलन प्लेटो के छोर पर भगा दी गई। शहर-पनाह के बाहरी भाग में जो कुछ टीले थे, उनके महत्व को समझ कर फ्रेंच जेनरल ड्रूक्रो ने उनको स्वाधिकार में कर लेना चाहा, और इसके लिये सदर में आपने निवेदन कर भेजा, कि तेरहवां कोर उनके कमाण्ड (मातहती) में कर दिया जावे, पर वहां

आपके इस निवेदन पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया।

शैटिलन का झगड़ा

ता० १९ सितंबर को बहुत सबेरे ही जब ५-वें कोर का ९-वां डिवीज़न वर्सैलिज़ की ओर बढ़ता जा रहा था, शैटिलन प्लेटो की अपनी ही चौकी के समीप उसपर डूक्रो की अधिक शक्तिमती सेना टूट पड़ी, और दोनों में द्वंद्व युद्ध ठन गया। आस-पास की सब जर्मन चमुएं उस डिवीज़न की सहायता में भेज दी गईं, तथा कुछ काल के लिये ५-वें कोर के दूसरे डिवीज़न का आगे बढ़ना भी रोक दिया गया। इधर इसी बीच में २-रे बवेरियन कोर का अगला डिवीज़न, जो लांगजुमो (*Longjumeau*) से उत्तर दिशा में पेरिस की ओर बढ़ रहा था, उधर ही झुंक पड़ा; पस फ्रंट और फलैङ्क से जर्मनो ने डूक्रो की सेना पर ऐसा संयुक्त और ओजस्वी आक्रमण किया, कि वह तितर-बितर होकर पीछे हट गई। बवेरियन कोर के पेरिस की ओर बढ़ने में कुछ थोड़ी सी बाधा और भी पहुंचाई गई थी, किन्तु शैटिलन का रिडौट और वहां के प्लेटो पर के सब मोर्चे तीसरे पहर तक में जर्मन चमुवों के हाथ में आ गये, और ५-वां कोर अपने निर्दिष्ट स्थान वर्सैलिज़ में पहुंच गया।

पेरिस का मुहासिरा

सायंकाल तक में दक्षिण विभाग के रिसाले वालों ने उत्तर विभागस्थ अपने म्यज़ दल के साथियों से संबंध कर लिया, और मुहासिरे का घेरा

पूरा हो गया। इस समय जर्मन सेना के केवल छः कोर पचास मील के घेरे में पेरिस नगर का मुहासिरा कर लिये; और इनकी बाहरी चौकियां (*Out-posts*) कहीं कहीं पर नगर के इतने सन्निकट लगीं थीं, कि वे नगर के विलगस्थ (*Detached*) बुर्जों पर की तोपों की मार के भीतर पड़तीं थीं। मुहासिरे के वृत्त का समुचित विभाग और आत्म-रक्षा के लिये यथा-स्थान सेनाओं का नियोजित करना, मैदानी खाइयां इत्यादि बना कर उपस्थित मोर्चों का दृढ़ करना, इत्यादि व्यूह-विधान संबंधी कार्य्यों के करने का शीघ्र ही प्रबंध कर लिया गया।

निज सीमा-प्रदेश से आक्रामक बने शत्रु-सेना को पराजित कर २ शीघ्रतापूर्वक आगे ही आगे बढ़ते आने में प्रायः सभी कोरों की हानि संख्या का पूरा कर लिया जाना असंभव था, अतएव प्रायः प्रत्येक कोर की योद्धा-संख्या नियमित से न्यून पड़ गई थी; एवं मुहासिरे में पहले-पहल केवल १,४७,००० योद्धा और ६२२ तोपें थीं। इतनी छोटी संख्या मुहासिरे के इतने बड़े वृत्त में विभाजित किये जाने पर एक २ क़दम पर केवल एक २ पैदल जवान रखे जा सकते थे। ऐसी अवस्था में मुहासिरा करना बड़े साहस का कार्य्य था; परन्तु बात तो यह थी, कि यदि जर्मन सेना मुहासिरा नहीं करती, तो करती ही क्या! दूसरी युक्ति केवल एक ही थी, कि नगर पर धावा करके

अपनी मैदानी तोपों के बल से उसमें दाख़िल होने का वह उद्योग करती ! नगर के बाहरी मोर्चे (*Works*) और शहर-पनाह की दीवारें (*Enceinte*) ऐसी दृढ़ बनी थीं, धावा करने में सफलता की बहुत कम संभावना थी; और यदि कहीं जर्मन सेना वहां पराजित हो जाती, तो संभव था, कि इसका परिणाम बहुत ही भयानक हो जाता। देश भर में सेना-संगठन करके फ्रांस वालों को लड़ने का पुनः उत्साह बढ़ जाता। यह बड़े आश्चर्य्य की बात है, कि पेरिस ऐसे बड़े नगर का मुहासिरा इतनी थोड़ी सी सेना से जर्मनो ने कर लिया ! और उनके उस कार्य्य में फ्रेञ्च कुछ बाधा न पहुंचा पाये ! डूक्रो के पास २८,००० से अधिक योद्धा नहीं थे ! और यह संख्या पेरिस की जन-संख्या तथा वहां की उपस्थित सैनिक शक्ति के साम्हने बहुत ही क्षुद्र थी !

पेरिस के अधः पातनोपाय

मुहासिरे का कार्य्य यथोचित रीति पर समाप्त कर लेने पर जर्मनो के लिये अब इस प्रश्न का हल करना, कि राजधानी को किस उपाय से तोड़ना चाहिये, शेष रह गया। इसके लिये चार उपाय प्रकट होते थे; (१) मुहासिरे के काल-क्रमानुगत प्रभाव पर विश्वास रख बैठे रहना, अर्थात् नगर को घेर कर बाहर से रसद इत्यादि भीतर जाना पूर्णतः रोक रखना, अतएव अंत में उसके अभाव से काल पाकर वहां के

निवासियों और सैनिकों को शरणागत स्वीकार करने के लिये विवश कर देना ; (२) नगर के एक भाग पर आक्रमण करके नगर के भीतर प्रवेश करने का उपाय रचना ; (३) शहर-पनाह के बुर्जों को निज तोपों के गोलों से विध्वंश करा देना (४) स्वयं नगर पर तोपों से गोले बरसवाना। इन चारों में से कौन सा उपाय श्रेष्ठ था, यह तैं नहीं हो पाया। इनपर विचार करने में अधो-लिखित दो पहलुवों को ध्यान में रखना परमावश्यक था ; (१) फ्रांस में मुहासिरा-वहन करने की कितनी और कौन २ सी शक्ति थी ? (२) मुहासिरा करने वालों के पास आघात के कौन २ से अस्त्र थे ?

आत्म-रक्षक बनने की योग्यता फ्रेञ्च सेना में दिनो-दिन अधिक ही अधिक होती जाने की आशा थी, और अंत में यह भी संभव था, कि वह प्रबलाघात करके मुहासिरे की लैन को कहीं पर तोड़ कर बाहर निकल जाती। नगर में रसद इत्यादि कितनी है, इसका ठीक २ अनुमान नहीं किया जा सकता था ; किन्तु इस विषय के जानने वालों का कथन था, कि बहुत ही किफ़ायत से वहां की रसद दश सप्ताह से अधिक नहीं ठहर सकती थी।

सैनिक शक्ति के विषय में यह बात साफ़ ज़ाहिर थी, कि पूरी तौर पर मुहासिरा करने के लिये उस समय तक जर्मनों के पास सैनिक शक्ति बहुत कम थी, और

इसके लिये बहुत अधिक सेना की अभी आवश्यकता थी। उपस्थित कोरों की नियमित संख्या पूरी करने की, तथा सीडान से ११-वें और १-ले बवेरियन कोरों को तुरंत तलब कर लेने की भी बहुत बड़ी आवश्यकता थी।

आक्रमण अथवा गोलों की वृष्टि प्रारंभ करने के पूर्व वहां पर मुहासिरे के तोपखानों (*Siege Train*) के मँगाने की ज़रूरत थी, किन्तु जब तक तूल (*Toul*) के दुर्ग पर फ्रेञ्च सेना का अधिकार बना रहता, तब तक राइन प्रदेश से ऐसे तोपखानो का पेरिस पहुंचाना संभव नहीं हो सकता था, क्योंकि इस प्रदेश से पेरिस पहुंचने के लिये केवल एक ही रेल-पथ था, और वह तूल से होकर आया था। पेरिस के समीप के रेलवे टनेलों (*Tunnels*) * के नष्ट कर दिये जाने से जर्मनों की कठिनाइयां और भी बढ़ गईं थीं, क्योंकि इनके अभाव से उनको अपनी रसद और सामरिक सामग्रियां साधारण गाड़ी-छकड़ों में मँगाने पड़ते थे ; इसमें उनको अधिक समय के सिवाय और भी बहुत सी असुविधावों का साम्हना करना पड़ता था। जब तक रेल-पथ मरम्मत नहीं कर लिये गये, तब तक रसद और खाने-पीने के सामान पहुंचाने में जब बहुत कठिनाइयां पड़ने लगीं, तब जगह २ पर रिज़र्व मेगज़ीन

* पहाड़ों के भीतर से जो रेल-पथ बनता है, उसे टनेल कहते हैं ; इनके ऊपर पहाड़ ज्यों का त्यों बना ही रहा आता है ; भीतर ही भीतर रेल-गाड़ी जाने का मार्ग बना लिया जाता है।

क़ायम कर लिये गये। जब तक ऐसे मेगज़ीन क़ायम नहीं हुए थे, तब तक सैनिकों को खाने-पीने के सामान पहुंचाने में दिक्कतों के सिवाय रसद पूजती भी नहीं थी, इधर आई, उधर ख़र्च हुई। इन सब बातों को सोच-विचार कर जर्मनो ने यह मंतव्य स्थिर किया, कि जब तक संभव हो सके, तब तक तो वे पेरिस का पूरा २ मुहासिरा किये रहें, और अंत में, यदि आवश्यकता समझी जावे, तो अपनी समस्त उपस्थित सैनिक शक्ति से नगर पर आक्रमण करा दें। यदि नगर के सब भागों पर आक्रमण करना संभव न हो सकता, तो उसके दक्षिणी भाग के उतने अंश पर, जिसकी संरक्षा फ्रेञ्च निज इस्सी और वानवेस के बुर्ज़ों से करते थे, आक्रमण करने का विचार स्थिर कर लिया गया था। नगर पर गोले बरसाने (*Bombardment*) में प्रथम तो अम्यूनिशन का बहुत बड़ा व्यय था, इसके सिवाय उसमें ऐसे निवासियों की, जो युद्ध में कुछ भाग नहीं लिये थे, हानि होती, जिससे समस्त योरप का ख़्याल जर्मनो की ओर से बुरा हो जाता। यदि साधारण नागरिकों के ऊपर अंतिम प्रभाव डालने के उद्देश से इस कार्य्य का करना उपयुक्त भी माना जाता, तो इसका करना उसी समय अधिक प्रभावोत्पादक हो सकता था, जब बहुत काल तक नगर के भीतर घिरे रहने पर क़ादर नागरिकों का हौसिला मंद कर लिया जाता।

अब उपर्युक्त विचारों को कार्य्य में परिणत करने के लिये मुहासिरे के वृत्त को मोर्चे इत्यादि के निर्म्माण से पूर्णतः दृढ़ करने के सब प्रबंध ठीक कर लिये गये। रिडौट, तोपों के लिये गड्ढे (*Gun-pits*), ब्लाक-हौस (*Block-houses*), और ऐसे ही अनेक प्रकार के कंटक फ्रेञ्च सेना के निकलने के मार्ग में उपस्थित कर लिये गये; उपस्थित ग्राम, विलगस्थ गृह, दीवारें और कगारें आत्म-रक्षा के योग्य बना ली गईं; वृत्त के पृष्ठ-भाग भर में आवागमन के योग्य अच्छे २ मार्ग बना लिये गये; चौकियों की रक्षा के लिये बहुत सी बम्ब-प्रूफ (*Bomb-proof*) चद्दरें मँगा ली गईं। शत्रु की स्थिति और दशा की परीक्षा के लिये अच्छे २ मौकों पर उपयुक्त स्थान बना लिये गये, और उनका भिन्न २ सदरों से तार द्वारा संबंध कर, दिया गया।

समालोचनायें

इस मुहासिरा के होने के कुछ ही दिनों बाद तूल और स्ट्रासबुर्ग के दुर्गों के टूट जाने पर मुहासिरा करने वाली चमुवों की अवस्था अधिकतर सुदृढ़ हो गई।

अब चारों ओर से जर्मन सेनायें फ्रांस देश के केन्द्र की ओर संकर्षित होती चली आती थीं; मुहासिरा करने वाली सेना का जर्मन सीमा-प्रदेश से अब निरवरोध संबंध हो गया था; मध्य का लंबा, संकीर्ण और शिथिल

प्रदेश उनके अधिकार में चला आया था। तथापि सामरिक सामग्रियां ही नहीं, किन्तु रसद का भी बहुत सा भाग उनको तब भी पितृ-भूमि (जर्मनी) से मँगाना पड़ता था; अतएव यहां से वहां तक रेल-पथों की मरम्मत कर देने का पूरा २ उद्योग किया जा रहा था। ज़ारब्रकेन से कोर्सिलिज़ तक के रेल-पथ की मरम्मत में कुछ विशेष कठिनाई नहीं थी, और मेज़ के मुहासिरे के पहले ही इन दोनों जगहों के मध्य का रेल-संबंध ठीक कर लिया गया था। इस लैन का संबंध नान्सी से करने के लिये रेमिली से पाण्ट-आ-मौसान तक एक लूप (*Loop*) लैन * बनानी पड़ी, और वह मध्य-सितंबर तक में तय्यार हो गई। तूल के दुर्ग पर फ्रेञ्च सैन्याधिकार अब तक रहे आने से उसके आगे पश्चिम तरफ़ का रेल-पथ बनाना असंभव था, पस उस दुर्ग का भी तोड़ना जर्मनो के लिये इस समय परमावश्यक कार्य्य हो गया।

तूल का अधः पातन

तीसरे दल के एटापेन चमुवों द्वारा इस दुर्ग का मुहासिरा कराया गया था; मैदानी तोपख़ानों से जो इस दुर्ग पर गोले बरसाये गये थे, उनका उसपर कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था। ज्योंही उत्तरी जर्मन प्रदेश के सीमा-प्रान्तीय भाग पर आक्रमण होने की आशंका न रह गई, त्योंही १७-वें डिवीज़न और एक

* किसी रेलवे की मुख्य लैन की एक ऐसी शाखा को लूप लैन कहते हैं, जो उससे निकल और घूम कर फिर उसी में आ मिलती है।

लैण्डवर डिवीज़न को संयुक्त करके एक नये (१३-वें) सैनिक कोर के बनाने की व्यवस्था कर दी गई। कुछ दिनों तक यह नव-निर्म्मित कोर मेज़ में रहा आया, बाद को तूल के तोड़ने तथा मेज़ और पेरिस के मध्य के देश पर अधिकार रखने की इसे आज्ञा की गई। मैदानी तोपख़ानों की गोलंदाज़ी निरर्थक सिद्ध होने पर इस दुर्ग के अधः पातन के निमित्त कुछ मुहासिरे की तोपें मंगा कर उनसे दुर्ग पर गोलों की भयंकर वृष्टि कराई गई ; अंत में ता० २३ सितंबर को यहां का गैरिज़न शरण स्वीकार किया। अब रेमिली से होती हुई ज़ारब्रकेन को, तथा नान्सी से होती हुई पाण्ट-आ-मौसान की रेलवे लैने जारी हो गईं, इनसे होकर पेरिस नगर के आठ मील के भीतर तक जर्मनो को अपनी सब सामग्रियां पहुंचाने का सुभीता हो गया।

पेरिस के आस-पास की सब रेलवे लैनो के सुधारने और मरम्मत करने की अब पूरी आवश्यकता थी ; सीन नदी की और आबे (*Aube*) नदी की घाटियों की ओर जानेवाली सदरी लैनो की मरम्मत भी वैसी ही ज़रूरत की थी। किन्तु इन सब बड़े कामों के लिये समय की आवश्यकता थी ; और इन सब से बढ़ कर अधिक आवश्यकता इस समय स्ट्रासबुर्ग के दुर्ग को तोड़ने की थी।

स्ट्रासबुर्ग का मुहासिरा

वर्त्त के संग्राम में विजय प्राप्त होने के पश्चात् ही वेडेन वाला डिवीज़न मुख्य सेना से विलग करके दक्षिण में इस नगर के मुहासिरे के लिये भेज दिया गया था, क्योंकि प्रथम तो रेलवे पथ पर इस नगर के दुर्ग का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता था, और दूसरे इसके स्वतंत्र रहे आने से जर्मनी के दक्षिणी प्रदेशों और रियासतों के लिये भी बहुत कुछ भय था। अब, जब जर्मन दलों के अधिक पश्चिम में बढ़ जाने पर, इस नगर को स्वाधिकार में करने की आवश्यकता सूचित हुई, तब वहां की मुहासिरे वाली सेना की सहायता में शीघ्र गार्ड लैण्ड-वर सेना, १-ला रिज़र्व डिवीज़न, और मुहासिरे का नियत तोपख़ाना (*Regular Siege train*), अर्थात् सब मिला कर ४०,००० जवान और भी भेज दिये गये। दुर्ग की दीवारें और परिखायें (*Defences*) बहुत ही बुरी अवस्था में बेमरम्मत पड़ी हुई थीं, और वर्त्त के संग्राम के पश्चात् जब भगेड़ों की बड़ी भीर नगर में पहुंची, तब तो वहां वालों के भय का ठिकाना नहीं रह गया। दुर्ग के गैरिज़न में लैन की केवल एक रेजिमेण्ट सेना थी; अब दूसरी चार बटालियनो, आस-पास की रिज़र्वी सेनावों, मैकमाओं की सेना के भगे सिपाहियों, चलायमान योद्धावों (*Mobiles*) और नैशनल गार्डों (*National Guards*) को जोड़-बटोर कर वहां पर प्रायः २३,००० जवान एकत्रित कर लिये गये;

परन्तु इनमें इञ्जिनियरी सेना की कोई भी चमुएं नहीं थी। इस बात का पता लग जाने पर, कि इस नगर के आत्म-रक्षक मोर्चे बेमरम्मत तथा दुर्ग का गैरिज़न निर्बल है, जेनरल वान वर्डर (*Von Werder*) ने अपने मैदानी तथा मुहासिरे के तोपखानों से गोले बरसवा (*Bombardment*) कर नगर को स्वाधिकार में कर लेना चाहा। ता० २४ अगस्त की रात से गोलों की वृष्टि प्रारंभ कराई गई, और केवल बारकों, मेगज़ीनों तथा सर्कारी मकानों ही के ऊपर यद्यपि गोले मारे जाते थे, पर साधारण प्रजावर्ग के माल व असबाब की भी उनसे बहुत बड़ी हानि हुई, और नगर के कई घरों में आग लग गई। इस प्रकार दो दिन तक गोले बरसाये गये, पर वहां का गरिज़न शरणागत होता नहीं मालूम हुआ; अतएव नियमानुसार मुहासिरा करना ही उपयुक्त सूचित हुआ। ता० २९ अगस्त को मुहासिरे की पहली समानांतर लैन नगर के ढालुएं समतल तट की ओर बैठा दी गई। दुर्गस्थ फ्रेञ्च सेना यद्यपि बारंबार निकल २ कर जर्मन योद्धाओं पर आक्रमण करती जाती थी, पर अपनी प्रबल मुहासिरे की तोपों के आवरण में ये वीर योद्धा क्रम २ से शहर-पनाह के सब फाटक बंद करने में सफलीभूत होते गये। अब ता० २७ सितंबर को, अर्थात् तीस दिन के मुहासिरे के बाद गिर्जाघर के मीनार के ऊपर संधि-सूचक स्वेत झंडा

प्रकट कर दिया गया। इस प्रसिद्ध दुर्ग के टूटने पर पेरिस पहुंचने के लिये जर्मनों को एक दूसरा रेल-पथ खुल गया, और उसके द्वारा राजधानी के मुहासिरे के लिये गार्ड लैण्डवर डिवीज़न भी पहुंचा दिया गया। दुर्ग के गैरिज़न में जर्मनों ने अपना एक रिज़र्व डिवीज़न मात्र छोड़ दिया; यहां की शेष सेना से एक नवीन कोर (१४-वां) निर्म्माण किया गया, और वह जेनरल वर्डर के कमाण्ड में ऊपरी सीन-नद-प्रदेश के परास्त करने के लिये भेज दिया गया।

समालोचनायें

युद्ध की ऐसी अवस्था में अब फ्रेञ्च राष्ट्र की प्रतियोगिता अधिक समय तक नहीं ठहर सकती थी। मेज़ और पेरिस, ये दोनों नगर शत्रु के प्रबल दलों से घिरे हुए थे; स्ट्रासबुर्ग और देश के अपर छोटे २ दुर्ग टूट चुके थे; विजित प्रदेशों पर अधिकार रखने के लिये जर्मनी से रिज़र्वी सेनायें नित्य शीघ्रता पूर्वक, आती जाती थीं; राइन से लेकर पेरिस पर्यंत के चौड़े प्रदेश पर प्रायः दश लाख शस्त्रास्त्रधारी जर्मन योद्धा अधिकार किये थे। रण-भूमियों में कार्य्य देने योग्य अब बहुत ही थोड़ी सी नियत सेनायें फ्रांस में स्वतंत्र बँची थीं, शेष सब सामरिक बंदी बन चुकी थीं; घोड़ों की बहुत कमी और सामरिक सामग्रियों का प्रायः सर्वथा अभाव था। तथापि फ्रेञ्च राष्ट्र का अहंकार

अभी तक सर्वथा दमन नहीं हो पाया था, और इन सब बातों के होते हुए भी राजधानी में इतने दिनों तक मुहासिरा वहन कर डँटे रहने की निस्संदेह सामर्थ्य थी, कि जिसमें दूरस्थ सूबों में सेनायें एकत्रित कर वहां भेजने का अवसर मिल जाता। मार्शल बाज़ेन मेज़ के आस-पास में शत्रु की बहुत बड़ी सेना को बझाये हुए थे; मेज़ से उनकी सेनाओं के निकल आने, तथा उनसे पेरिस के आस-पास के रण-कार्य्यों में सहायता भी मिलने की, चंद हालतों में, संभावना थी। जर्मनों का आवागमन-मार्ग बहुत लंबा, और कई स्थान पर निर्बल और भेदनोपयुक्त था; बहुत सी जगहों में ये मार्ग ऐसे विकट प्रदेशों से गुज़रते थे, जो आक्रामकीय कार्य्य और प्रतिद्वंद्वी आघात के लिये सर्वथा उपयुक्त थे।

फ्रांस के सदृश समृद्धशाली और जन-पूर्ण देश में, जहां के निवासियों का स्वदेशानुराग प्रसिद्ध है, तथा जहां के योद्धाओं को अपनी वीरता और योग्यता का बहुत बड़ा अहंकार था, थोड़े ही दिनों में एक बहुत बड़ी सेना का एकत्रित हो जाना कोई कठिन कार्य्य नहीं सूचित होता था; किन्तु इस विषय में, कि ऐसी रंगरूटों की सेना से वह कहां तक शत्रु के नियत और रणाभ्यस्त सेना का मुक़ाबिला कर सकेगा, बहुत संदेह था। पेरिस के अधिकारियों ने यह मशहूर करके, कि फ्रेञ्च सेना की

पराजय वहां के कुछ अफ़सरों की नमकहरामी, रिशवत-ख़ोरी तथा धोखेबाज़ी से, पुनः कुछ राजनैतिक कारणों से हो गई है, समस्त राष्ट्र की आत्मा को उत्तेजित कर लिया था। पुनः १७९३ में समस्त प्रजा के उत्तेजित होकर उभड़ने से जो लाभ देश को हुए थे, उनका भी उनको ध्यान था; अतएव वे समझते थे, कि शायद वैसा करने में इस बार भी उनको सफलता प्राप्त हो जाय। अस्थायी राष्ट्र-संरक्षक गवर्नमेण्ट तुरंत देश-रक्षा के प्रबंध में निमग्न हो गई। प्रायः मध्य-सितंबर में बहुत से अधिकार-लब्ध प्रतिनिधि तूर (*Tours*) नामक नगर को भेजे गये, पीछे से उनके कार्य्य में मांशियर गाम्बेटा (*Gambetta*) भी सहायक हो गये; आप नव-स्थापित गवर्नमेण्ट के बहुत बड़े पक्षपाती थे, आपके शामिल होने से उपर्युक्त प्रतिनिधियों को लोगों के उत्तेजित करने और सेना की भरती में बहुत बड़ी सहायता मिल गई।

फ्रांस देश में सैनिकों और सामरिक सामग्रियों की तो न्यूनता थी ही, पर इनके सिवाय वहां पर सैनिक-संविधान का भी पूरा २ अभाव था। अफ़सरी के पदों पर बहुधा ऐसे नव-युवक भी भर्ती हो जाते थे, जिनको युद्ध-कार्य्य का कुछ भी अनुभव नहीं था; स्टाफ़ में, तथा नव-स्थापित गवर्नमेण्ट की ओर से राज-प्रबंध के लिये, सहसा, बिना सोचे बिचारे, इतरेतर मनुष्य भर्ती कर लिये गये थे; इस बात

की जांच का, कि ऐसे मनुष्यों से उन २ पदों का कार्य्य योग्यतापूर्वक संपादन होगा, या क्या, न तो समय ही था, और न किसी को ख़्याल ही था। बँचे-खुचे रिज़र्वियों, भिन्न २ डीपों के रंगरूटों, सीमा-प्रदेश से भगे सिपाहियों, पेन्सन-प्राप्त वयोवृद्ध योद्धाओं को जोड़-बटोर कर कुछ नियत चमुएं बनाई गईं; चलायमान गार्ड सेना (*Gardes mobiles*) के सिवाय कुछ स्थिर (*Sedentary*) गार्ड सेना भी बनाई गई, तथा वालंटीयर कोरों के निर्म्माण के लिये क़ानून पास किये गये। मेज़ के अधःपात के बाद बीस वर्ष से चालीस वर्ष के मध्य के, देश भर के, सभी जवानों को देश की संरक्षा के लिये सेना में उपस्थित होने के लिये सर्व-व्यापी व्यवस्था कर दी गई। इन अनुलंघनीय व्यवस्थाओं के प्रभाव से प्रायः सात लाख जवानों की सेना एकत्रित हो गई; इन लोगों ने कुल चार मास तक शत्रु के मुक़ाबिले में रण-भूमि में युद्ध-कार्य्य देने का वचन दिया था। उदार नियमों पर ठीके दे २ कर नये २ आर्सेनेल (*Arsenals*) अर्थात् सामरिक सामग्रियों के बनवाने के कारख़ाने खुलवाये गये; पुनः स्वदेश के महाजनों तथा धनी-मानी पुरुषों के पास स्वदेश-सेवा करने की अपील कर ५ के आवश्यकतानुसार तोपें, अम्यनिशन, वर्दियां और अपर सामरिक सामग्रियां शीघ्रतापूर्वक जोड़-बटोर ली गईं।

नये भरती रंगरूटों को यथा-संभव शीघ्र सैनिक शिक्षा देने के निमित्त देश भर में अनेक कैम्प खोल दिये गये। प्रबंध ये सब बहुत ही अच्छे थे, किन्तु युद्ध की घटनायें ऐसी शीघ्रता के साथ होती गईं, कि इन प्रबंधों से कुछ लाभ सिद्ध होने का अवसर ही नहीं मिल सका। स्थानीय संरक्षा (*Local Defence*) के लिये सब देश चार बड़े २ कमाण्डों में विभक्त कर दिया गया,—उत्तरी, पश्चिमी, केन्द्रीय और पूर्वी हल्के। जैसे २ सैनिक शिक्षित होते गये, वैसे ही वैसे बटालियनो से लेकर कोर तक निर्म्माण होते गये, और अंत में इन्हीं कोरों से प्रादेशिक दल बनाये गये ; इन्हीं दलों से इस समर के अंत में प्रजा-तंत्रिक गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बहुत बड़ा काम निकला था। पेरिस के मुहासिरे को उठा देना, इन सब नव-निर्म्मीत दलों का मुख्य उद्देश था, और येन-केन-प्रकारेण अपने उसी उद्देश को कार्य्य में परिणत करने के लिये इन दलों की अनेक रण-रचनायें की गई थीं। फ्रांस की महिमा अब पेरिस ही में रह गई थी ; रण-रचना में सुशिक्षित शत्रु के विरुद्ध फ्रेञ्च राष्ट्र के शस्त्रास्त्र धारण कराये देश भर के अशिक्षित नव-युवकों से बनी हुई प्रादेशिक सेनाओं के रण-कार्य्यों के समझने में इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिये, कि अहंकारी फ्रेञ्च राष्ट्र की समझ में देश की जय-पराजय केवल राजधानी ही के टूटने पर हो सकती

थी, और उसी की रक्षा में वह राष्ट्र अब तन-मन-धन की निछावर करने के लिये उद्यत था।

इतने में मार्शल बाज़ेन की सेना के आत्म-समर्पण का समाचार भी प्रकट हुआ, इसको सुनते ही सारा फ्रांस दहल उठा। राजधानी शत्रु-सेना से घिरी हुई थी, देश की समस्त नियत सेना सामरिक बंदी बन गई थी, इससे फ्रांस की दशा अत्यंतम शोचनीय हो रही थी। मध्य-सितम्बर में वहां की अस्थायी गवर्नमेण्ट की तूर (*Tours*) में एक बैठक हुई, और स्वदेश-निवासियों के प्राकृतिक अहंकार को उत्तेजित करने के उद्देश्य से राइन-दल की अद्वितीय वीरता की वहां बड़ाई गाई गई। फ्रेञ्च राष्ट्र की मान्सिक उच्च आशाओं के सर्वथा विनष्ट हो जाने का दुखद दृश्य उस सभा के सभी सभासदों के मुख की शुष्क आभा से प्रतिबिम्बित होता था।

अक्टूबर मास के अंत तक में संधि के लिये फ्रेञ्च अधिकारियों की ओर से जितने उद्योग हुए, वे सब निरर्थक सिद्ध हुए। फ्रेञ्च राष्ट्र का अभिमान तब तक इतना दमन नहीं हो पाया था, कि वह शत्रु के कर्ण-कटु नियमों को सुनता और अंगीकार करता। अब वह 'प्राणावशेष तक' शत्रु का मुक़ाबिला करने के लिये सन्नद्ध हुआ। कुछ थोड़े से क्षुद्र दुर्गों को छोड़ कर देश का सब पूर्वोत्तरीय भाग आक्रामकों के हाथ में चला गया

था ; राजधानी को भी स्वाधिकार में कर लेना, तथा उसके उद्धारार्थ बाहर से जो प्रादेशिक सेनायें वहां आती थीं, उन्हीं का हटाना अब जर्मनों के लिये शेष काम था। मेज़स्थ बाज़ेन की समस्त सेना के आत्म-समर्पण कर देने पर, युद्धारंभ में सीमा लांघ कर आये हुए दोनों जर्मन दलों की बहुत सी चमुएँ अब अपर रण-कार्य्यों में भी योग देने के लिये ख़ाली हो गई थीं। पहले दल के तीन कोर राजधानी को उत्तर से मुहासिरा करने वाली सेना के संवरण में नियुक्त कर दिये गये, तथा युवराज फ्रेडरिक चार्ल्स के कमाण्ड (नेतृत्व) में दूसरे दल के चार कोर मध्य-ल्वायर प्रदेश में उन सेनाओं के समाचार लेने के लिये, जो वहां पर शीघ्रता पूर्वक भरती की जा रही थीं, भेज दिये गये।

तत्कालीन सामरिक अवस्था पर विचार करने से प्रकट होता है, कि तीनों जर्मन दल, झपटते, फ्रांस देश में घुस आकर, राजधानी के आस पास के एक बड़े प्रदेश पर अपना अधिकार जमा लिये। लाखहां जवान रण-कार्य्य के अनेकानेक कामों के संपादनार्थ जर्मनी से उस देश में लाये गये थे ; अतएव जिस ज़िले या ग्राम से इन दलों की अनियां निकलती थीं, वहां की खाने-पीने की सामग्रियों का किञ्चित् विध्वंश कर दिया जाना या लूट लिया जाना कुछ आश्चर्य्य-जनक नहीं हो सकता था; तथापि इतनी

बड़ी सेना के लिये इस तरह पर रसद का पूरा पड़ना असंभव था, और खाने-पीने का बहुत सा सामान उनको पितृ-भूमि (जर्मनी) से मँगाना पड़ता था। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये प्रत्येक दल के साथ रसद-रसानी के इन्स्पेक्टर नियत थे; आवागमन मार्गों को सुरक्षित रखना, रसद जमा कर उसको यथोचित स्थान पर पहुंचाना, बीमारों और घायलों को लौटा कर जर्मनी भेजना, इतने कार्य्य उनके जिम्मे किये गये थे। जैसे २ सेनायें आगे बढ़ाई गईं, वैसे ही वैसे रेल्वे लैनों के सन्निकट बड़े २ मेगज़ीन खोल दिये गये। पहुंचाने के सुभीते के लिये इनका संबंध छोटे २ दूसरे डीपों से बनाया गया था। इन में से दूर से दूर भी जो डीपो थे, वे भी पृष्ठ-भागस्थ चमुवों से एक मंज़िल से अधिक अंतर पर नहीं पड़ते थे। फ्रांस में जितनी सामग्रियां प्राप्त हो सकती थीं, वे पहले इन अनेक डीपों में जमा की जाती थीं, पश्चात् वहां से साधारण गाड़ी-छकड़ों और सैनिक बारबरदारियों द्वारा रण-भूमि की भिन्न चमुवों के पास अलग २ वितरित की जाती थीं। अब, जब दोनों दल पश्चिम में बहुत दूर तक बढ़ गये, और उनमें की अनेक चमुवों के लिये फ्रांस देश के ग्रामों में समुचित रसद मिलना कठिन हो गया, तब आवश्यकतानुसार जर्मनी से भी सामान मँगाने का प्रबंध कर दिया गया।

इस समर की अनेक घटनाओं से यह सिद्ध होता है, कि रेल-पथों से युद्ध का गहरा संबंध है, उनको ध्यान में रख कर रण-रचनायें की जाती हैं, जिन मार्गों से रसद इत्यादि के भेजने का सुभीता होता है, साधारणतः उन्हीं मार्गों से सेनायें मार्च कराई जाती हैं। पेरिस के मुहासिरे में जितने जर्मन कोर पहले पहुंचे थे, उन सब के लिये रसद मुहैया करने का केवल एक रेल-पथ खुला था, और यदि फ्रेञ्च सेना केवल कुछ ही दिनों के लिये इस पथ को बंद कर देती, अथवा रोक भी सकती, तो जर्मनों को उसी क्षण अपना राजधानी वाला मुहासिरा उठा लेना पड़ता।

सड़कों और रेल-पथों की रक्षा का भार लैण्डवर विभाग के सैनिकों के जिम्मे किया गया था, और स्वाधिकार में आये हुए फ्रेञ्च प्रदेशों का शासन-प्रबंध सैनिक और मुल्की (सिविल) अफ़सरों के हाथ में कर दिया गया था।

प्रायः समस्त नियत फ्रेञ्च चमुओं के बंदी बन जाने पर इस युद्ध का पहला काण्ड समाप्त हो गया। सूबों में इधर-उधर संग्राम तब भी होते जाते थे; किन्तु राष्ट्रीय उद्गार का जो परिणाम होना था, वह अब प्रत्यक्ष प्रकट था। उत्तरीय जर्मन संघति के सुशिक्षित और युद्ध-परिमार्जित योद्धाओं के सम्मुख अयोग्य और

गँवार मनुष्यों की अधिक संख्या की सेना का भी ठहरना सर्वथा असंभव था। दोनों देशों की राष्ट्रीय शक्ति के इतने बड़े अपव्यय से जो यह महा विकराल समर प्रारंभ हुआ था, वह प्रायः सात मास में ही समाप्त हो गया।

इति।

शेष-संग्रह

और

तालिका

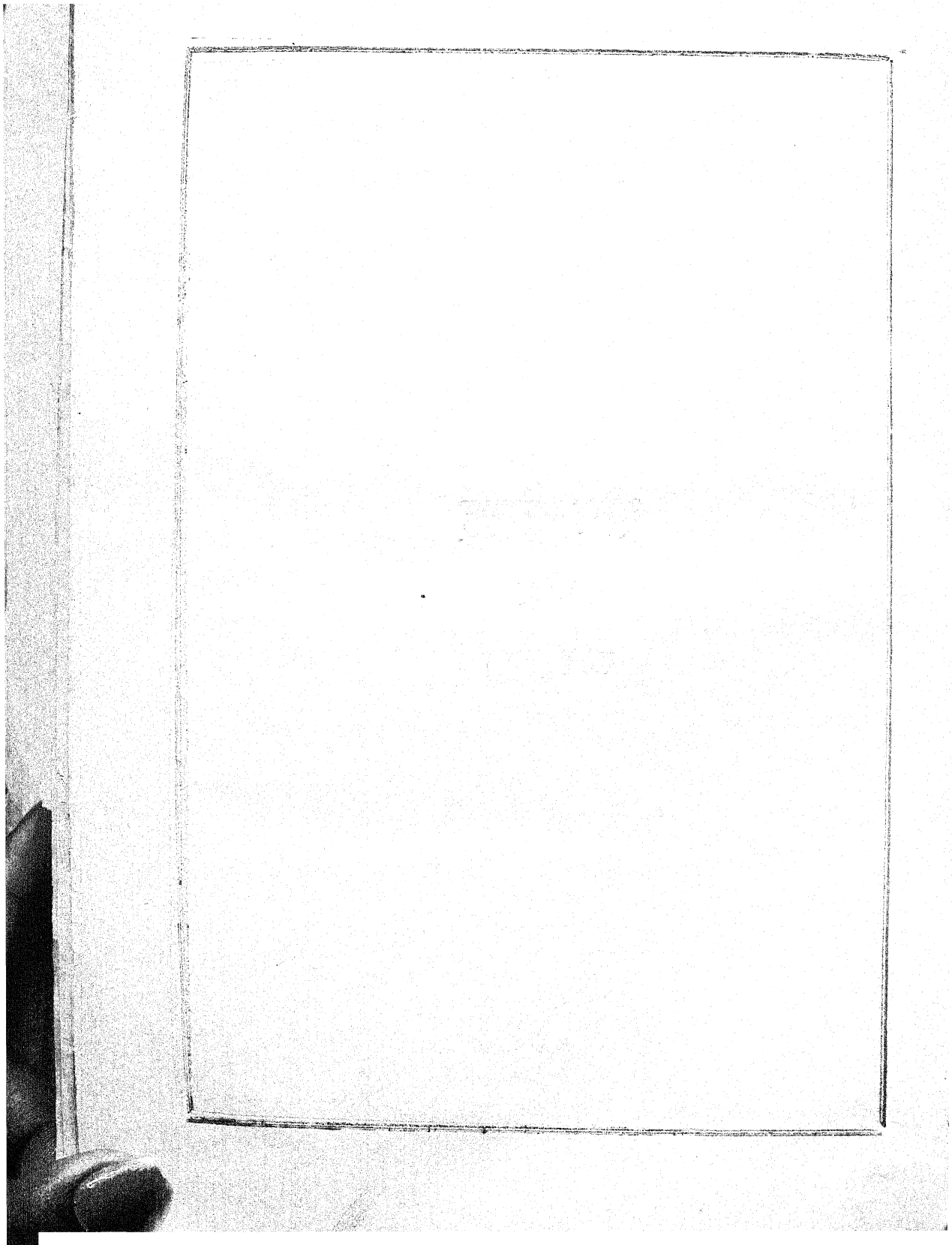

शेष-संग्रह १

श्री मान् प्रशिया-नरेश महाराज विलियम के कमाण्ड में जर्मनों की रण-भौमिक सेनायें—अगस्त १८७० ई०

स्टाफ़ के प्रधान अफ़सर :—जेनरल वान मोल्टके

		पैदल	घुड़सवार	तोपें
पहला दल (जेन० वान स्टीनमेज़)	७-वां कोर (जेन० वान ज़ास्ट्रो) ८-वां कोर (जेन० वान गोयबेल) ३-रा रिसाला डिवीज़न	५०	३२	१८०
दूसरा दल (प्रिन्स फ्रेडिरिक चार्ल्स)	गार्ड कोर (वर्टेमबर्ग के राजकुमार) ३-रा कोर (जेन० वान अल्वेन्सलेबेन द्वितीय) ४-था कोर (जेन० वान अल्वेन्सलेबेन प्रथम) ६-वां कोर (जेन० वान मानस्टीन) १०-वां कोर (जेन० वान वायट्सरेट्ज़) १२-वां कोर (सैक्सोनी के युवराज) ५-वां रिसाला डिवीज़न ६-वां रिसाला डिवीज़न	१५६	१४८	५४६
तीसरा दल (प्रशिया के युवराज)	५-वां कोर (जेन० वान किर्कबाक) ११-वां कोर (जेन० वान बोस) १-ला बवेरियन कोर (जेन० वान-डेर टैन) २-रा बवेरियन कोर (जेन० वान हार्ट-मैन) वर्टेमबर्ग रिसाला डिवीज़न बेडेन रिसाला डिवीज़न ४-था रिसाला डिवीज़न	१२८	१०२	४८०
सहायक चमूएं (नवागत)	१-ला कोर (जेन० वान मान्तेफेल) २-रा कोर (जेन० वान फ्रानसीकी) ६-वां कोर (जेन० वान टम्पलिङ्क) १-ला रिसाला डिवीज़न २-रा रिसाला डिवीज़न १७-वां पैदल डिवीज़न गार्ड लैण्डवर डिवीज़न १-ला लैण्डवर डिवीज़न २-रा लैण्डवर डिवीज़न ३-रा लैण्डवर डिवीज़न	१४०	१००	३७८
	मीज़ान ...	४७४	३८२	१५८४

अगस्त, १८७० में युद्धार्थ उपस्थित होने योग्य समस्त सैनिक शक्ति का लेखा

	रण-भौमिक सेना			गैरिज़न और डीपो की चमुएँ			कार्य्योपयुक्त सैनिक शक्ति (अ-युद्धकर्त्तावों के मिलाने पर)		कैफ़ियत
	पैदल	रिसाला	तोपें	पैदल	रिसाला	अश्वारोही तोपें	योद्धा	घोड़े	
उत्तरीय जर्मन संघति ...	३,८५,६००	४८,०००	१,२८४	२,३७,७००	२२,४००	४०८	९,८२,०६४	२,०९,४०३	* यह जोड़ मूल ग्रंथ में है, परंतु अशुद्ध मालूम होता है। अनुवादक।
बवेरिया ...	५०,०००	५,५००	१९२	३८,८००	१,८९०	२४	१,२८,९६४	२४,०५६	
वर्टेमबर्ग ...	१५,०००	१,५००	५४	८,०००	९००	१२	३७,१८०	८,८७६	
बेडेन ...	११,७००	१,८००	५४	१३,०००	७००	१८	३५,१८१	८,०८३	
मीज़ान ...	४,६२,३००	५६,८००	१,५८४	२,९७,५००	२५,८९०	४६२	११,८३,३८९	२,०५,३७३*	

फ्रान्स-नरेश श्रीमन्महाराज नैपोलियन के कमाण्ड में फ्रेञ्च रण-भौमिक सैनिक शक्ति स्टाफ़ के प्रधान अफ़सर :—मार्शल ले बोयफ़

	बटालियने	स्काडन्स	तोपैं	मिट्रेलल्यु-ज़ेज़ तोप	संख्या शक्ति	
					योद्धा	घोड़े
शाही गार्ड	२४	२४	६०	१२	४०,२३१	८,०४५
पहला कोर (मैकमाआं)	५२	२८	९६	२४	२५,८८४	४,७७४
दूसरा कोर (फ्रास्सर्ड)	३९	१६	७२	१८	३७,७२५	७.९३४
तीसरा कोर (बाज़ेन)	५२	२८	९६	२४	२८,५९१	५,४५९
चौथा कोर (लैडमीरा)	३९	१६	७२	१८	२४,७८०	५.१८८
पांचवां कोर (डी फैली)	३९	१६	७२	१८	३३,७०१	४,८३१
छठवां कोर (कैनराबर्ट)	४९	२४	११४	६	२०,३४१	३,७०५
सातवां कोर (एफ. डूए)	३८	२०	७२	१८	२१,५३७	६,८८३
रिसाला रिज़र्व	...	४८	३०	६	५,१८९	४,७९४
तोपख़ना रिज़र्व	...	...	९६	...	*२०९	*५८
मीज़ान ...	३३२	२२०	७८०	१४४	२,३८,१८८	५१,६७१

*मुतफ़र्रिक़

तीसरे और म्यज़ दलों की शक्ति, २२ अगस्त सन् १८७० ई०

		पैदल	रिसाला	तोपें
म्यज़ दल (सैक्सोनी के युवराज)	गार्ड कोर ...	२०,०२७	४,२१५	६०
	४-था कोर ...	२४,६१६	२,१५७	८७
	१२-वां कोर ...	२५,०८५	३,५७०	६६
	५वां रिसाला डिवीज़न ...	...	४,१४७	१२
	६-वां रिसाला डिवीज़न ...	...	२,१५८	६
	मीज़ान म्यज़ दल का ...	७०,०२८	१६,२४७	२८८
तीसरा दल (प्रशिया के युवराज)	५-वां कोर ...	१८,५७४	२,११०	८४
	६-वां कोर ...	२३,६५३	१,२७८	८४
	११-वां कोर ...	२०,६३८	१,२३६	८३
	१-ला बवेरियन कोर ...	२०,८१७	२,३६६	६६
	२-रा बवेरियन कोर ...	२०,७८३	३,६८५	६६
	बर्टेमबर्ग डिवीज़न ...	१३,३२२	१,५२७	५८
	२-रा रिसाला डिवीज़न ...	८	३,६२४	१२
	४-था रिसाला डिवीज़न ...	...	३,४३५	१२
	मीज़ान तीसरा दल ...	१,१८,०६५	१६,५६७	५२५
	मीज़ान दोनों दलों का ...	१,८८,१२३	३५,८१४	८१३

शालां दल की शक्ति, २५ अगस्त सन् १८७० ई०

अनुमानन प्रायः १,५०,००० जवान

		बटालियने	स्काड्रन्स	तोपें	मिट्रेलल्युज़ेज़ तोपें
शालां दल (मार्शल मैक माआन्)	१-ला कोर (डूक्रो)	५६	२४	६६	२४
	५-वां कोर (डी फैलीं)	३२	१६	७२	१८
	७-वां कोर (डूए)	३८	१२	७२	१८
	१२-वां कोर (लेब्रन)	४०	२४	१५०	१८
	रिज़र्व रिसाला	...	३६	१२	६
	मीज़ान ...	१६६	११२	४०२	८४

शेष-संग्रह २

संधि-पत्र

सी डान के संग्राम में महाराज नैपोलियन और उनकी बहुत बड़ी सेना के बंदी हो जाने के पश्चात् फ्रांस में पुनरपि प्रजा-तंत्रिक संस्था का आविर्भाव हुआ, और जेनरल ट्रोशू उसके नेता नियुक्त हुए। जर्मनो ने पेरिस का मुहासिरा ता० १९ सितंबर तक में पूरा कर लिया। ता० २८ अक्तूबर को मेज़स्थ सेना ने आत्म-समर्पण किया, फिर आर्लियन्स में फ्रेञ्च सेना को बहुत बड़ा पराजय उठानी पड़ी। २७ नवंबर को अमीन्स में, २३ दिसंबर को हाल्यू में, ३ जनवरी को बपामे में, १८ जनवरी को बोवे में, तथा १९ जनवरी को सेंट क्वेन्टिन में बड़े २ संग्राम हुए। अब पेरिस वालों को शत्रु का मुक़ाबिला करना कठिन प्रतीत पड़ा; नगर के चारों ओर शत्रु-सेनायें फैल गईं थीं, और दिन-रात नगर के ऊपर गोलों की भयंकर वृष्टि होती थी, इससे उनकी दशा दिन-प्रति शोचनीय होती जाती थी। संधि का प्रस्ताव पनरपि किया गया; इस बार फ्रेञ्च जाति का बहुत कुछ मान-मद्दन हो चुका था, अतएव विजेता के नियमों को स्वीकार करने में उसको

बहुत विलंब न लगा। पेरिस के साथ संधि के प्रारंभिक नियम ता० २८ जनवरी सन् १८७१ ई० को स्थिर हुए, इनके अनुसार पेरिस नगर के आस-पास के सब दुर्ग और २० करोड़ फ्रांक (१२ करोड़ रुपये) तुरंत नगर-निवासियों को शत्रु के हवाले करने पड़े। तब तीन सप्ताह के लिये युद्ध विसर्जन किया गया। इस अवकाश में फ्रांस की राष्ट्रीय सभा का चुनाव होने वाला था, ताकि संधि करने, अथवा युद्ध के जारी रखने का, देश की सम्मति से, सभा को झगड़ने का अधिकार प्राप्त हो जाता। ८ फरवरी को राष्ट्रीय सभा का चुनाव हुआ। बोर्दो नगर में यह सभा संगठित हुई, और उसकी ओर से ता० १७ फरवरी को प्राशियर तेयर संधि के नियम तैं करने के लिये भेजे गये। आप ता० २१ को वर्सैलिज़ पहुंचे, और अंत में ता० २६ को संधि-पत्र पर दोनों ओर के नेताओं के हस्ताक्षर हो गये। फ्रेञ्च राष्ट्रीय सभा ने भी ता० १ मार्च को उन नियमों को स्वीकार कर लिया। संधि के मुख्य २ नियम अधोलिखित हैं:—

(१) लोरेन प्रांत का पंचमांश, मेज़ का ज़िला, और प्रायः कुल आल्सास प्रांत जर्मनी के अधिकार में दे दिये गये। आल्सास प्रांत में बेलफोर्ट और उसके आस-पास की थोड़ी सी भूमि फ्रांस के अधिकार में

शेष रही आई।

(२) फ्रांस से जर्मनी को ३ अरब रु० युद्ध-व्यय के लिये मिलना स्थिर किया गया।

(३) जब तक युद्ध-व्यय का सब रु० फ्रांस जर्मनी को अदा नहीं कर देता, तब तक इस देश के कुछ विभागों पर जर्मनी का अधिकार रहा आने वाला था।

स्थायी संधि-पत्र पर दोनों साम्राज्य के स्वामियों के हस्ताक्षर ता० १० मई सन् १८७१ को हुए थे, और २१ मई को दोनों देशों की राज्य-संस्थाओं ने उसे स्वीकृत किया था। युद्ध-व्यय की अंतिम किस्त ता० ५ सितंबर सन् १८७३ को दाखिल हुई, अतएव उसी मास के १३ तारीख़ को जर्मनों ने फ्रांस का देश सर्वथा ख़ाली कर दिया।

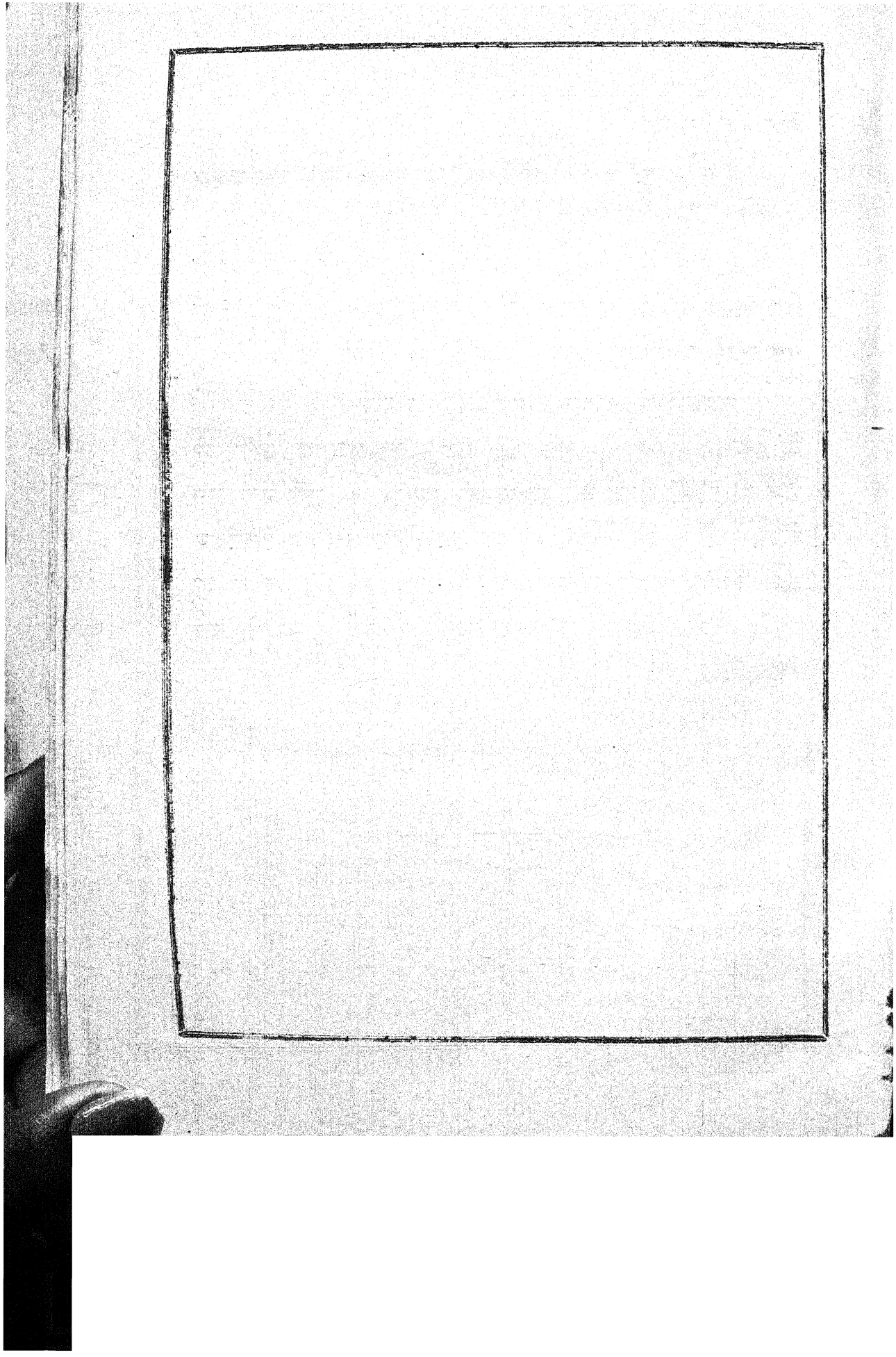

तालिका १

(वर्णानुक्रम से)

अ

अबेकेन ११२
अमानविलर्स २७७-८५-९९
अमीन्स ऽ।८
अलग्ज़ैण्डर द्वितीय, ज़ार, १०३
अल्बेष्टहौज़रहाफ़ १७८

आ

आगनाम्स, ब्वायस डेस, २५९
आगनेा, १४०-७२, २२७
आनविल, २५७
आर्गोन्नेस, ३१५-२५-३८-४५
आर्नाल्ड, सेण्ट, ब्वायस डे, २५६
आर्नेन, ३२३
आर्मिनियस, ९६
आर्लियम्स, १०
आर्स, १३७, ३९८
आलिवर २३, ३७, ७०
आल्वेन्स्लेबेन, २६८
आल्सास प्रांत, ३११

इ

इजेज़, ३८२
इज़ैबेला, ४३
इन्ग्लैन्ड्स, १२८
इमान्युएल, विक्टर, ४०

ए

एटमा, ९
एटेन, २५५, ३८६
एपिनाल, १४१
एबरबाक, १७४
एम्ज, ४३, ५४, ७२, ११५
एर्साज़, १२३
एवोल्ड, सेण्ट, १६१-९४, २३१.....
एल्सासहौज़ेन, १८०-८५

ऐ

ऐन, नदी, ३१८-४६
ऐन्टन, कार्ल, ४४
ऐन्टिली, ४०८
ऐल, सेंट, २९२-९३

ओ

ओपेन आर्डर, ३८४
ओर्नी, २४९
ओर्ने, २७८-९३
ओशेज़, ३४२-४६

क

कज़ल ३८०
करिग्नन, (कै, क), ३४२-४६-५६-७१...
काडाइन फाक्स, ७१
कानफ्लान्स, ३२२
कावलेन्टस, (लेञ्ज़), १३७
कामेक, जेन०, १९७, २०८
कार्ल ऐन्टन, ४४
कार्लोविञ्जियन, २१
कार्ल्सरूहे १०१
काल १४१
कालरे फार्म २८५
काल्मर १६३
किर्कबाक, जेन०, १७७
कृष्णवन, १४२, ३११
कैनराबर्ट, २९८, ३००...
कैलवरडिली (क), ३६६-७८
कैसरस्लाटर्न, १५४-६०-९४
कोनिगग्राटज़ (कानिग्राज़), १५, १९, ७२, १०४
कोमेर्सी, ३२२
कोर्टिस, ५३
कोर्नी, १३७
कोर्सिलिस, २५४, ४१०

कोलोन, १४१
कोलंबे नाला, २३७
क्रास फैर, ३८३
क्लेर्मान्ट, ३३६
क्लोज़ फार्मेशन ३८४
क्विरासियर्स, ३५३
क्वेन्टिन, सेंट, २८२, ऽ।≡

ग

गन्स्टेट, १७८
गरेन, व्वायस डि ला, ३६७
गाम्बेटा, लियां ८६, ४५१
गांड्रेकूर ३२३
गार्डस मोबाइल्स (ल्ज़) १२७.....
गालेनबर्ग १९८
गिफर्ट बन १९७, २००
गिवाडो, व्वायस डी, ३५०
गिवान नदी ३६२
गिवान, फान्ड डी, ३७५
गोज़े, २५४
गोल्ट्ज़, वान डर, जेन०, २३६
गोल्डेनब्रेम, २०३
ग्रामां, ६४, ८२
ग्रावलाट (वे), २५०-७९-८९, ३०३-९७
ग्रासवाल्ड, १७४
ग्रीगी, २३८
ग्रैंड प्री, ३१९-३३
ग्वेल्फ्स, ३९

च

चार्ल्स सप्तम, २१, ४४
चासेपाट (शास्पो), १३२, २९७
चुंगी घर, २०३
चेनीज़, सेण्ट मेरी आज़, (शेनीज़), २८५-९५
चेस्ने (चेज़्ने), ले, ३१८

ज

जर्मर्सहिम, १५३
जस्सी, २९०
ज़ार (सार), नदी, १३८, २०१...
ज़ारबर्ग (बुर्ग) ३०९
ज़ारब्रकेन, १५९-७१-९३ .....
ज़ार-यूनियन २३१
ज़ारलूई (सार), १४१, २१०-३१, ४१०
ज़ारेबुर्ग २३१
ज़ार्गेम्येन्ट (म्यन्ड), १३६-९३, २१०...
जार्नी, २८५
ज़िगमारिंगेन (सिग), ६१, ७४
जूलियन, सेण्ट, फोर्ट, २३८, ४०२
जेना १११
जेनिवाज, व्वायस डि, २८७
जौमां, २९८
जौर नदी १७४
जौर, प्वायंट डू, २८९-९४

ट

टाइल, ४८
टीबोडैन, ला, ३५१
टूल (तूल) १३७, ४१६
टेगस नदी ९
टैन, वान डर, जेन०, ३६३
टैम फ्यूज़, १३२
ट्रानविल (त्रा), २५६-६२
ट्रीव्ज़, १४१-६०
ट्रोश् (चू), जेन०, ३१३, ४२९, ऽ।≡

ड

डक, बार ले, ३२४
डन, ३२५-३३
डानशेरी (शी), ३६२
डान्कूर, २५२
डायट, २८
डिज़ीर, सेंट, ३२४
डीजान, १४१
डूप, १६३, ३४७-७९...
डूक्रो, १६३, ३७१...
डूज़ी, ३६१-७०
डूमैस्नील, जेन०, ३४७
डेनी, ३६८-७४
डेम्स, व्वायस डेस, ३४३
डेल ब्रक, ४८
डोम्बास्ले, ३२५-३३
ड्यूज़ रोड २३१
ड्युलुआर्ड (ड्यलुअर्ड), १३७, २३२-४७

त

तालीरां, १२
तिआनविल, १३७, २२६-५३, ४०१...
तिलसिट, १२०
तुर्की, १८१
तूर ४५१-५४
तूल (ट्रूल), १३७, ४१६
तेयर, ३६, ८४, SII

थ

थियाकूर, २४६-५४-६२
थैरसा, मौरया, ११

द

दारु, ६०

न

नशातेा (न्यूफशाटो), २२७, ३०६
नाप, १६१
नान्सी १४१, २३२ .....
नायड (नीड), फ्रेञ्च, २२७-२६-४६...
नीदरआन्न, १८२
नीदरवाल्ड, १७६
नील, २७
नैपोलियन तृतीय, २१,.....
नैपोलियन बोनापार्ट, ६, २१४
नोमेनी, २३१-४६
नोवीआंट (नोवे), २४६-५७
नौआर्ट, ३४२-८६
न्यूकिर्क्यन (न्यायन), १४१-६४
न्यूफ्साच, १३६
न्यूवेलर, १७४
न्यायसेविल, ४०८
न्यायस्टाट (न्यू), १४१

प

पांगे, २४६
पांट-आ-मौसान (सेान), १३७, २३२-४७-८०-६४, ३८२
पाम्रेरेनियन कोर, २६५
पार्क इञ्जिनीयर, २८३
पिजन्नेर, कोल्ल डू, १६५
पोलीनीज़, २०
पेटिट-पीयर (पीथरी), १४०, २३१
पेरिस, ३१५-२३ ३०-३६, ४२६ ५३
पेल्ट्रे, २३८
पैलंटिनेट (पला), १३६
प्रिम ५०
प्री. ब्रैंड, ३१६-३३.....
प्रीवाट, सेंट, २७७-८३, ३०५
प्रेग, १५
प्रेशडोर्फ, १७३
प्लापेविल, २८२
प्वायन्ट डू लौर २८६-६४

फ

फाकेनम्टीन, १८२
फान्ड डी गिवान, ३७५
फार्वाक १५७
फार्वाक की घाटी, १६६, २०५
फाल्सबुर्ग, २२८-३१
फाल्स्टर २०५
फिलिप आगस्टस, २१
फैली, डी, १८२, ३३७-६८.....
फोर्टन, डे, २५०
फ्यूज़िलीयर्स, १६७
फ्रांशाय (शाई), वाल, १६७, २०२
फ्राश्विलर १७४-८१
फ्रास्सर्ड, जेन०, १५६-६२-६५,२५८...
फ्रेडेरिक १२
फ्रेडेरिक, चार्ल्स, प्रिन्स, १५२, २५४, ३०५, ४०४ ५५.....
फ्रेनेा (फ्रना) ३७५-८१
फ्रौआर्ड, १३७
फ्लाविग्नी, २५७
फ्लेाग्नेज़ (फ्लेनाज़), ३७३-७८
फ्लैनविल, ४०८
फ्लोइंग, ३६७
फ्लोरेन्स, १०५

ब

बंड, २८
बपामे ऽ ■
बवेरिया, १६. ६६.....
बाज़िलिस, ३६३
बाज़ेन १६३, २२७-४१-५६ .....

बाज़्ले (बाल) १३६.....
बान्नेमेन, १८१, ३५२
बार-ले-डक, ३२४
बारेल, डू, २५०
बार्बे, सेंट, २३६, ४०४
बालन, ३६८-७५
बिंग्येन, १४१
बिट्स, १४०-७२-८७-९३, २२८.....
बिस्मार्क, प्रिन्स, १५, ५६, ८०, ६५६...
बुकर, ५०
बुशांसी, ३२७-३३
बुशी, २४९
बूर्वां, १०
बूर्स, ८९
बेडेन, १६, ९६.....
बेनेडिटी, ४३...
बेज़ानशां, १४१
बेलफोर्ट, १३८, २२८, ३०९, ४०३, ऽ॥
बेलेव, ४१७
बेसास, ला, ३४६
बेसिन, १३६
बोज़ानविल, १५७
बोमां (बोमांट), ३३४ ३९-४८-८९...
बोयफ, ले, ६४, ८६, २५३, ४०७...
बोर्दो, ऽ॥
बोर्नी, २३४
बोले, १५७
बोवे, ऽ॥=
ब्रन, मांट डी, ३५२
ब्रशमिल, १७८
ब्रूसल्स, ३५६
ब्रूमेथ, १६३
ब्रेविल, २६३
ब्रेई (ब्रीई) २५१-७७
ब्रैन्डेनबर्ग १२

म

मगयार्स, १०४
मर्त्त, १३८, २४९
मलहौज़ेन ३१०
माक्सौ १३७-५०
मांट-डी-ब्रन ३५२
मांट मेडी (मान), ३१७-३७-८६
मांटाय, ४०८
मांटिग्नी, २८५
मांतेफेल, जेन०, ४०६
मान्से नदी, २८९
मान्सेल, ला, ३६८
मायेन्स १४२
मारगरेट, जेन०, ३१८-८०
मारबाचे (र्बाशे), १३७, २४९
मार्स-ला-टूर, २५०-७९, ३२२...
मार्सेल, सेंट, २८५
मार्सेलेज़, राग, ८७
मालराय ४०४
मिट्रालल्येज़ (ल्युज़), १३, २८६
मिन्ट्स (मेज़), १३७-५१
मिशेल, १७४-७९
मे, २३७
मेज़, १३७ .....
मेज़्येर (माज़्यार), १४१, ३३०-३८-६१...
मेञ्जेज़, सेंट, ३७३
मेटेर्निक, १२
मेन नदी,, ७१, ८२
मैनेहोल्ड सेण्ट, ३२३
मेरी-आज़-चेनीज़, सेण्ट, २८५
मैकमाआं, मार्शल, १५७-९३.....
मैक्सिको, ४१६
मैनहिम, १३७-५२
मैन्स्टीन, २८६
मैरिया थैरसा, १२
मोज़ेल नदी, २२६-४०-५१-७८.....
मोटके, वान, १८, १०६.....
मोर्सब्रान, १७९
मोस्को, २९०
मौज़ान (ज़न) ३४१
म्यज़ नदी, २४२-७८, ३१५.....
म्यूनिच, ९७
म्यलहौज़, १४०

य

यरोन, विलेसर, २६४
यान्स्क, ३५२
युवराज, प्रशिया, १५३
यूलेनबर्ग, कौन्ट, ११३

योज़. पर्वत-माला, १३६-४६-६२-७१-६४ ..... ३२२

र

रस्टाट, १४६
राइन, ४४६
राइस्टा, ४०
राकूर, ३४२
रादरबर्ग, १६५
रान्कूर, २७७-६८
रिकशाफेन (रेक-), १६३-७२ ८५
रिकोशा. २६७
रिग्ने, आज़ ब्वायस, ३७३
रिशलिये, ७
रीम्ज़ ३१२-१६-२४-३३-८७ ....
रून, वान, २६
रेज़ानविल, २५०-८४
रेटांनफे ४०४-१०
रेटेल, ३१८-८७, ४३३
रेनिश प्रदेश, १३६
रेपर्टसबर्ग १६८
रेमिली, ३२१-३७
रोज़ रियुलिस, २७७, ३०५
रोज़ाय, ४३६
रोमन रोड २५८

ल

लक्सेमबर्ग, २७ १३६, ४०६
लटज़ लस्टीन, २३१
लंडन, ३२६
लांग ज़ुमो ४३७
लांग्र, १४१
लांगेन सुल्ज़बाक १७५
लिआंस (आंज़) १५७, ३०६-२४
लिपज़िग, ६७, २८६-६५
लियां गाम्बेटा, ८६, ४५१
लिवोपोल्ड, ४३, ५५
लूई १४-वां, ८, २१
लूई, महारानी, ६४
लूथर, दूत, ४६
लूथर, पादड़ी ५
लूनविल, १४१, २२७
लेआन, ३८८, ४३३
लेटाने, ३५१-६१
लेडानशैम्प, ४१७
लेम्बाक, १६३
लेस्सी, ४१७
लैक्वेनेक्सी, २३६, ३६८
लैडमीरा (मीराल्ट), जेन०, २३७-५५
लैएडवर, १२३.....
लैएडस्ट्रम, १२३
लैएडौ, १५३
लोरेन प्रांत, ऽ॥
लौटर (ला-), १३६-६३
लौटरबर्ग, १३६
ल्यूकान ७
ल्वायर प्रदेश, मध्य, ४३६-५५

व

वरसैलिज़ ऽ॥, ४३७ (वर्से)
वर्टेमबर्ग, १६, ६८.....
वर्डून (वे-), २३४-५४, ३२४, ४०१...
वर्डूर, ४४६
वर्त्त, १६४-७१, ३१०
वर्नेविल, २७७-८६, ३०४
वर्म्स, १३६
वाइल्डबाड ४३
वाकिन्जेन, जेन०, २०१
वाज़, ब्वायस डी, २८४-६४
वाटरलू, १८
वाडर्न, १५२
वाडेलिकूर, ३७५
वानवेस ४४३
वायना (वि-), १२
वारेन्नेस, ३३३
वालियर ४०८
विट्री, ३१४-२३
विएटरबर्ग, २०१
विनय, जेन०, ३१२-६३, ४३४
विम्फेन डं, जेन०, ३७१
वियानविल, २५१, ३१३
विलर्स, ३४६-७२, ४३६
विलेनमांटी ३५२

विलेनेव ४३७
विसेनबुर्ग, १४१-६४
वेरडेल, सेंट, १६१-६४
वेर्नी, २४६
वेलिंगटन, ११६
वेस्टाफेलिया ६, १४
वौज़्यर्स, ३१८-२७

श

शाम्पेन्वायस, शाम्पेनो, २८८
शार्नहोर्स्ट, ४०, १०३
शार्ला, १४१, २२६, ३००.....
शास्पो (चासेपाट), २६७
शीने, ले, ३३७-४४
शेल्सविग-हाल्स्टन (श्चे), ४०, १०३
शैटिलन, ४२७
शोमां, १४१
श्यार नदी, ३४६-५८
श्रापनेल १३३, २८६
श्लेनिज़, ४८
श्लेस्टाट १३६

स

सर्विग्नी, ३६८, ४०५.....
सार लूई (ज़ार-) ४१०
सालाज़ारे मज़ारेडो ४५
सावर्न (-वे-), १३८-८२, २२७.....
सीडान ३३०-५२-६१.....
सीन-नद-प्रदेश, ४४६
सीन नदी, ४३१-३६
सील नदी, १३८, २३२-५४-७३, ४१५-३१
सुप नदी, ३१८
सुल्ज़, १६३-७३
सेप, डिपो ६७
सेर्क (सिरेक), १३६-५७
सेर्न, ३७२
सैडोवा, २७
सोलफेरीनो, १६
स्टटगार्ट, १००
स्टिफ्ट वन, १६७
स्टियर्लिंग, १६५-६८.....
स्टीने, ३२५-३६
स्टीनमेज़, जेन०, १५२-६२, २३५-६१, ३०५, ४०४.....
स्टोने, ३३७
स्ट्रासबुर्ग (बर्ग), १३७-५०-८८.....
स्पाकबाक, १७६-७८
स्पायकर्न, १६३, २२१

ह

हान्स-सर-नीड (नायड), २४६
हाल्यु, ऽ।८
हेनरी द्वितीय, २१
हेबानविल २८७
हैनावर ३६
हैल्सबर्ग १२
होपन्ट्ज़ोल्लर्न, १२, २२
होमबुर्ग १४१
ह्यूबर्ट फार्म, सेंट २६०
ह्यूबर्ट, सेंट ३०५

तालिका २

अ	
अबेकेन	Abeken
अमानविलर्स	Amanvillers
अमीन्स	Amiens
अलग्ज़ैण्डर	Alexander
आ	
आगनान्स, ब्वायस डेस	Ognons, Bois des
आगनेा	Haguenau
आनविल	Onville
आर्गोन्नेस	Argonnes
आर्नाल्ड, सेंट	Arnould, St.
आर्नैन	Ornain
आबे नदी	Aube, The
आर्मिनियस	Arminius
आर्लियन्स	Orleans
आर्स	Ars
आलिवर	Ollivier
आल्वेन्स्लेबेन	Alvenslaben
आल्सास	Allsance
इ	
इजेज़	Iges
इज़बेला	Isabella
इन्टेन्डन्स	Intendance
इमान्युएल, विक्टर	Emmanuel victor
इली	Illy
इस्सी	Issy
ए	
एटना	Aetna
एटापेन	Etappen
एटेन	Etain
एपिनाल	Epinal
एबरबाक	Eberback
एम्ज़	Ems
एर्साज़	Ersatz
एवोल्ड, सेण्ट	Avold, St.
एल्सासहौज़ेन	Alsasshausen
ऐ	
ऐन, नदी	The Aisne
ऐन्टन, कार्ल	Anton, Karl
ऐन्टिली	Antilly
ऐल, सेंट	Ail, St.
ओ	
ओर्नी	Orny
ओर्ने	Orne
ओशेज़	Oches
क	
करिग्नन, कैरिग्नान, केरिग्नन	Carignan
काटरेट	Cotterets
काडाइन फार्क्स	Caudine Forks
कानफ्लान्स	Canflans
काबलेन्टज़, काबलेञ्ज	Coblents
कामेक, जेन०	Kameche, Gen.
कार्ल ऐन्टन	Karl Anton
कार्लोविञ्जियन	Carlovingian
कार्ल्सरूहे	Karlsruhe
काल	Kehl
कालरे फार्म	Caulre Farm
काल्मर	Colmar
किर्कबाक, जेन०	Kirchbach Gen.
कृष्ण वन	Black Forest
कैनराबर्ट, जेन०	Canrobert, Gen.
कैलवरडिली	Calvair d'Illy
कैसरस्लाटर्न	Kaisarslautern
कोनिगग्राटज़, कानिग्राज़	Koniggratz

कोमेर्सी	Commercy
कोर्टिस	Cortes
कोर्नी	Corny
कोर्सिलिस	Courcelles
कोलोन	Cologn
कोलंबे	Colombey
क्लेर्मान्ट	Clermont
क्विरासियर्स	Cuirassiers

ग

गन्स्टेट	Gunstett
गरेन, ब्वायस डि ला,	Garrenne, Bois de la
गाम्बेटा, लियां	Gambetta, Leon
गांड्रेकूर	Gondrecourt
गार्डस मोबाइल्स ,, मोबाइल्ज़	*Gardes Mobiles*
गालेनबर्ग	Galenberg
गिफर्ट बन	Giffert Wood
गिवाडो	Givodeau
गिवान नदी	The Givonne
गिवान्, फान्ड डी	Givonne, Fond de
गोज़े	Gorze
गोल्टज़, वान डर,	Goltze, von der,
गोल्डेन ब्रेम	Golden Bremm
ग्रामां	Gramont
ग्रावलाट, ग्रावेलाट	Gravelotte
ग्रासवाल्ड	Grasswald
ग्रैंड प्री	Grand Pre
ग्वेल्फ्स	Guelphs

च

चार्ल्स सप्तम	Charles VII
चासेपाट, शास्पो	Chassepot
चुंगी घर	Custom House
चेनीज़, सेएट मेरी आज़	Chenes, St. Marie aux
चेस्ने, ले चेज़्ने, ले	Chesne Le.

ज

जर्मर्सहिम	Germersheim
जस्सी	Jussy
ज़ार नदी	The Saar
ज़ारबर्ग	Saarberg
ज़ारब्रकेन	Saarbrucken
ज़ार-यूनियन	Saar-Union
ज़ारलूई सार लूई	Saarlouis
ज़ारेबुर्ग	Saarebourg
ज़ार्गेम्यैन्ट जार्गेम्यन्ड	Saargemund
जार्नी	Jarny
ज़िगमारिंगेन सिगमारिंगेन	Sigmaringen
जूलियन, सेएट फोर्ट,	Julien, St. Fort
जेना	Jena
जेनिवाज़, ब्वायस डि	Genivaux, Bois de,
जौमां	Joumont
जौर नदी	The Jauer
जौर, प्वायंट डू	Jour, Point du

ट

टाइल	Thile
टीबोडैन, ला	Thibaudine, La
टूल तूल	Toul
टेगस नदी	The Tagus
टैन, वान डर, जेन०	Tann, Von der Gen.
टोर्सी	Torcy
ट्रानविल त्रानयिल	Tronville
ट्रीव्ज़ ट्रीव्स	Treves
ट्रोचू ट्रोशू जेन०	Trochu, Gen.

ड

डक, बार ले	Duc, Bar le
डन	Dun

डानशेरी / डानशीरी	Donchery
डान्कूर	Daucourt
डायट	Diet
डिज़ीर, सेंट	Dizier, St.
डीजान	Dijon
डूए, जेन०	Douay
डूक्रो	Ducrot
डूज़ी	Douzy
डूमेस्नील, जेन०	Dumesnil, Gen.
डेनी	Daigny
डेम्स, ब्वायस डेस	Dames, Bois des.
डेलब्रक	Delbruck
डोम्बास्ले	Dombasle
ड्यूज़ रोड	Dieuze Road
ड्युलुआर्ड / ड्यलुअड	Dieulourard

त

तालीरां	Talleyrand
तिआनविल	Thionville
तिलसिट	Tilsit
तुर्को	Turkos
तूर	Tours
तूल / टूल	Toul
तेयर	Thieurs

थ

थियाकूर	Thiaucourt
थेरसा, मैरिया / टेरीस्सा ,,	Theresa Maria

द

दारु	Daru

न

नशातो / न्यूफशाटो	Neufchateau
नाए	Nahe
नान्सी	Nancy
नायड / नोड	Nied
नीदरब्रान्न	Niederbronn
नील	Niel
नैपोलियन / नेपोलियन	Napolean
नोमेनी	Nomeny
नोवीआंट / नोवे आंट	Noveant
नौआर्ट	Nouart
न्यूकिर्क्यन / न्वायनकिर्क्येन	Neunkirchen
न्यूब्रसाच	Neu Brisach
न्यूवेलर	Neuweiler
न्वायसेविल	Noisseville
न्वायस्टाट / न्यूस्टाट	Neustadt.

प

पांगे	Pange
पांट-आ-मौसानमौसोन	Pont-á-Mousson
पामेरेनियन	Pomeranian
कोर	Corps
पार्क, इञ्जिनीयर	Park, Engineer
पिजन्नेर, कोड डू	Pigeonnier, Col du
पीरीनीज़	Pyrenees
पेटिट-पीयर ,, पीयरी	Petite Pierre
पेरिस	Paris
पेल्ट्रे	Peltre
पैलेटिनेट	Palatinate
प्रिम	Prim
प्री. ग्रैंड	Pre, Grand
प्रीवाट, सेंट	Privot, St.
प्रेग	Prague
प्रेशडोर्फ	Preuschdorf.
प्लापेविल	Plappeville

फ

फाकेनस्टीन	Falkenstein
फान्ड डी गिवान	Fond de Givonne
फार्बाक	Forbach

फाल्सबुर्ग	Phalsbourg
फाल्स्टर	Folster
फिलिप आगस्टस	Philip Augustus
फैली, डी, जेन०	Failly, De, Gen.
फोर्टन, डे, जेन०	Forton De, Gen.
फ्यूज़िलीयर्स	Fusiliers
फ्रांशाय / फ्राशाई / वान	Francois, Von
फ्राशविलर	Froschviller
फ्रास्सर्ड, जेन०	Frossard, Gen.
फ्रेडेरिक / फ्रेडरिक	Frederick
फ्रेनो / फ्रेना	Frenois
फ्रौआर्ड	Frouard
फ्लाविग्नी	Flavigny
फ्लेइग्नेज़ / फ्लनाज़	Fleigneux,
फ्लैनविल	Flanville
फ्लोइंग	Floing
फ्लोरेन्स	Florence

ब

बंड	Bund
बपामे	Bapaume
बवेरिया	Bavaria
बाईसेट्रे	Bicetre
बाज़ेलिन	Bazeilles
बाज़ेन	Bazaine
बाज़्ले (बाल)	Basle
बान्नेमेन	Bonnemain
बार-ले-डक	Bar le Duc
बारेल डू	Barrail, du
बार्बे, सट	Barbe, St.
बालन	Balan
बिन्येन	Bingen
बिटश	Bitsch
बिस्मार्क	Bismarck
बुकर	Bucher
बुशांसी	Busancy
बुशी	Buchy
बूर्बों	Bourbon
बूर्स	Bourse
बेडेन	Baden
बेनेडिटी	Beneditti
बेज़ानशां	Beusancon
बेलफोर्ट	Belfort
बेलेव	Bellevue
बेसास, ला	Besace, La
बोज़ानविल	Bouzonville
बोमां / बोमांट	Beaumont
बोयफ, ले, जेन०	Boeuf, Le, Gen.
बोर्दो	Bordeaux
बोर्नी	Borny
बोले	Boulay
बोवे	Bowe
ब्रन, मांट डी	Brune, Mont de
ब्रशमिल	Bruch Mill
ब्रसल्स	Brussels
ब्रूमथ	Brumath
ब्रूविल	Bruville
ब्रेई (ब्रीई)	Briey
ब्रैन्डेनबर्ग	Brandenburgh

म

मगयार्स	Magyars
मर्त्त	Meurthe
मलहौज़ेन	Mulhausen
माक्सौ	Maxau
मांट-डी-ब्रन	Mont-de-Brune
मांट मेडी / मानमेडी	Montmedy
मांटाय	Montoy
मांटिग्नी	Montigny
मांनेफेल, जेन०	Manteuffel, Gen.
मान्सी नदी	The Mance
मान्सेल, ला	Moncelle, La
मायेन्स	Mayence
मारगरेट, जेन०	Margueritte, Gen.
मारबाचे / मार्बाशे	Marbache
मार्ने	Marne
मार्स-ला-टूर	Mars la-tour

मार्सेल, सेंट	Marcel, St.
मार्सेलेज़	Marseillaise
मालराय	Molroy
मिट्रालल्येज़ / मिट्रलल्यूज़	Mitraileuse
मिन्ट्स (मेञ्ज)	Maintz
मिशेल	Michel
मे	Mey
मेज	Metz
मेज़्येर / माज़्यार	Mezieres
मेन्जेज़, सेंट	Menges, St.
मेटेर्निक	Metternick
मेन नदी	The Maine
मैनेहोल्ड, सेएट	Menehould, St.
मेरी-आज़- चेनीज, सेएट	Marie aux Chenes, St.
मैकमाशां, जेन०	Macmohon, Gen
मैक्सिको	Maxico
मैनहिम	Mannheim
मैन्स्टीन	Manstein
मैरिया थैरसा	Maria Theresa
मोज़	Meaux
मोज़ेल, नदी	Moselle, The
मोटके	Moltke
मोर्सब्रान	Morsbronn
मोस्को	Moscou
मौज़ान	Mouzon
म्यज़ नदी	Meuse, The
म्यूनिच	Munich
म्यलहौज़	Mulhouse

य

यरोन, विले सर	Yron, ville sur
यान्स्क	Yoncq
योज़, पर्वत माला	Vosges, The Mount,
यूलेनबर्ग, कौन्ट	Eulenburg, Count

र

रस्टाट	Rastadt
राइस्टा	Reichstag
राइन	Rhine, The
राकूर	Raucourt
रादरबर्ग	Rotherberg
रान्कूर	Raucourt
रिकशाफेन / रेकशाफेन	Reichshoffen
रिकोशा	Ricochet
रिग्ने, आज़ ब्वायस	Vrigne, aux Bois
रिशलिये	Richelieu
रीम्ज़	Rheims
रून, वान	Roon, Von
रेज़ानविल्ल	Rezonville
रेटानफे	Retaufe
रेटेल	Rethel
रेनिश प्रदेश	Rhenish Prov.
रेपर्टसबर्ग	Reppertsberg
रेमिली	Remilly
रोज़ाय	Rozoy
रोज़ेरियुलिस	Rozerieulles
रोमन रोड	Roman Rd.

ल

लक्सेमबर्ग	Luxemburg
लट्ज़ेल्स्टीन	Lutzelstein
लंडन	London
लांग जुमो	Long Jumeau
लांगेनसुल्जबाक	Langensuzbach
लांग्र	Langres
लिआंस (लिआंज़)	Leons
लिपजिग़	Leipzig
लियां गाम्बेटा	Leon Gambetta
लिवोपोल्ड	Leopold
लुई	Louis
लूथर, दूत	Lother
लूथर, पादड़ी	Luther
लूनविल	Luneville
लेआन	Laon
लेटाने	Letanne
लेडानशैम्प	Ladonchamps
लेम्बाफ	Lembach
लेस्सी	Lessy
लैक्वेनेक्सी	Laquenexy
लैडमीरा / लैडमीराल्ट	Ladmirault
लैण्डवर	Landwher

लैण्डस्ट्रम	Landstrum
लैण्डौ	Landau
लोरेन प्रांत	Lorain Prov.
लौटर (लाटर)	Lauter
लौटरबर्ग	Lauterbourg
ल्यूकान	Lucon
ल्वायर प्रदेश	Loir Prov.

व

वरसैलिज़ / वर्सेलिज़	Versailles
वर्टेमबर्ग	Wurttemberg
वर्डन (वेर्डन)	Verdun
वर्डर, जेन०	Werder, Gen.
वर्त्त	Woerth
वर्नविल	Verneville
वर्म्स	Worms
वाइल्डबाड	Wildbad
वाकञ्जेन, जेन०	Volkingen, Gen.
वाज़ ब्वायस डी	Vaux, Bois de
वाटरलू	Waterloo
वाडर्न	Wadern
वाडेलिकूर	Wadelincourt
वानवेस	Vanves
वायना (वियना)	Vienna
वारेन्नेस	Varennes
वालियर	Vallier
विट्री	Vitry
विण्टरबर्ग	Winterberg
विनय, जेन०	Vinoy, Gen.
विम्फेन, डे,	Wimpffen, De
वियानविल	Vionville
विलर्स	Villers
विलेनमांटी	Villenmonty
विलेनेव	Villeneuve
विसेनबुर्ग	Weissenburg
वेण्डेल, सेंट	Wendel, St.
वेर्नी	Verny
वेलिङ्गटन	Wellington
वेस्टाफेलिया	Westaphalia

श

शाम्पेन्वायस / शाम्पेनो	Champenois
शार्नहोर्स्ट	Scharnhorst
शालां	Chalon
शास्पो / चासेपाट	Chassepot
शीने, ले,	Cheine, Le
शेल्सविग-होल्सटन, श्वेल्सविग-होल्सटन	Schleswig-Holstein
शैटिलन	Chatillon
शोमां	Chaumont
श्यार नदी	Chiers, The
श्रापनेल	Shrapnel
श्लेनिज़	Schleinitz
श्लेसस्टाट	Schlestadt

स

सर्विग्नी	Servigny
सारलूई / ज़ारलूई	Saarlouis
सालाज़ारे / मज़ारेडो	Salazar y Mazarredo
सावर्न	Saverne
सीडान	Sedan
सीन नदी	Seine, The
सील नदी	Seille, The
सुप नदी	Suippe, The
सुल्ज	Sulz
सेप, डिप्टी	Sepp, Deputy,
सेर्क (सिरेक)	Sierck
सेर्नं	Cernay
सैडोवा	Sadowa
सोलफेरीनो	Solferino
स्टटगार्ट	Stuttgart
स्टिफ्ट वन	Stift Wood
स्टियरिंग	Steiring
स्टीने	Stenay
स्टीनमेज़, जेन०	Steinmetz, Gen.
स्टोने	Stonne

स्ट्रासबुर्ग स्ट्रासवर्ग	Strassburg	हेनरी	Henery
स्पाकबाक	Spachbach	हेबानविल	Habonville
स्पायकर्न	Spichern	हैनोवर	Hanover
		हैप्सवर्ग	Hapsburgh
ह		होएन्टज़ोलर्न	Hohentzollern
हान्स-सर-नीड	Hans-sur-Nied	होमबुर्ग होमवर्ग	Homburg
हाल्यू आलुआन	Hollain	ह्युबर्ट, सेंट	Hubert, St.

इति-शंस्तु